" समर्पण "

परम पूज्यनीय, विभाते स्मरणीय, परम श्रद्धेय, निरन्तर
आध्यमार्ग प्रदर्शक, चूडामणे, अनुत्तर तत्वावबोधी,
परोपकार परायण, अखिल सद् गुणालंकृत, करुणालय
प्रतिदिन प्रशस्य विशारदशिरोमणी गांभिर्यादि,
यथा नामधारक, शासनदीपक, शासन प्रभा-
वक, आगमोद्धारक परम गीतार्थ, मम
आत्ममार्ग प्रदर्शक, स्वर्गीय अनेक गुण
विभूषित श्रीमज्जिन वीरपुत्र श्री आनंद-
सागर सूरिश्वरजी म० सा० के कर-
कमलों में यह "श्री सुखानन्द
स्वाध्याय संग्रह" नामक लघु-
पुस्तिक समर्पण करती हूं।

आपश्री की चरणकिंकरी
वीर शासन सेविका
रम्भा विजय

卐 पुण्य स्मारक ग्रन्थमाला पुष्पांक नं० ३६ 卐

"श्रीमत् सुखसागर जिन आनन्दसागर सूरि० पुण्य सद गुरुभ्योनम:"

"श्री सुखानन्द स्वाध्याय संग्रह"

"संग्राहिका"

"पूज्यपाद गणाधीश्वर श्रीमान् सुखसागरजी म० सा० के समुदाय के प्रातः स्मरणीय प्रखरवक्ता विद्वद्वर्य स्वर्गीय खरतरगच्छाचार्य श्री मज्जिन वीरपुत्र आनन्दसागर सूरिश्वरजी म० सा० के वर्तमान पट्टधर गणाधीश शांतमूर्ति श्रीमान् हेमेन्द्रसागरजी म० सा० आर्यपुत्र पं० व्याख्यान वाचस्पति श्रीमान् उदयसागरजी म० सा० की आज्ञानुयोयना स्व० प्र० यथानाम धारिका श्रीमती पुण्य श्रीजी म० सा० की शिष्या वर्तमान प्रव० श्रीमतीजी वयोवृद्ध चम्पा श्रीजी म० सा० एवं प्र० विचक्षण श्रीजी म० सा० की अन्तेवासिनी श्रीमतीजी स्व० हीर श्रीजी म० सा० की शिस्या रत्न श्रीमती रतिश्रीजी म० सा० की शिष्या श्रीमती विदुषी रत्ना विशारद श्रीमती रम्भाश्रीजी मा. सा. विजय प्रभाश्रीजी महाराज साहिब"

"उपदेशिका"

श्रीमती विदुषी रत्ना विजय प्रभा श्रीजी म० सा० विशारद के सदुपदेश से सिवनी, नागपुर, अमलनेर इत्यादि कई गांवों के भाविक भक्तों द्वारा प्रदत्त द्रव्य मे।

"प्रकाशक"

"श्री पुण्य सुवर्ण ज्ञान हीर पीठ"

प्रमथा पृति
१०००

वीर सं० २४७८
विक्रम सं० २०२६
पुण्य सं० ५२

॥ मूल्य पठन पाठन ॥



श्री जिन आनन्द सागर सूरिश्वरजी म०





श्री उदयसागरजी म०



पूज्या श्रीमती विदुषी हीरश्रीजी

महाराज साहब की शिष्या

जन्म वि. सं. १९५४ माघ सुदी ५ कोकन



दिक्षा वि. सं. १९७६ फागुन सुदी ७ फलोदी

श्रीमती विदुषी रतिश्रीजी

महाराज साहब



ॐ नमः

॥ वीतरागाय नमः ॥

श्रीमद् सुखसागर आनन्द सद्गुरुभ्यो नमः

* श्री स्वाध्याय पुण्य, सुवर्ण ज्ञान हीर पीठमाला *

॥ श्री आत्मरक्षा नमस्कार मन्त्र ॥

ॐ परमेष्ठि-नमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्र,-पंजरामं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षाऽतिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ नमो सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलम् ।
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देह रक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥८॥

॥ नवकार मंत्र ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥
नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥
नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ सव्व पावप्पणासणो ॥ ७ ॥
नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥
पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

॥ श्री सप्तस्मरणादि प्रारभ्यते ॥

१. * बृहद्-अजितशांति मरणम् *

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं । जय गुरुसंति गुण करे, दोवि जिनवरे पणिवयामि ॥ गाहा ॥ १ ॥ ववगय मंगुलभावे, तेहं विउलतव निम्मल सहावे । निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ सब्भावे ॥ गाहा ॥ २ ॥ सव्व दुक्खप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं । सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजियजिण ! सुह प्पवत्तणं, तवपुरिसुत्तम ! नाम कित्तणं । तह य धिइ मइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संतिकित्तणं ॥ मागहिआ ॥ ४ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस

विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमं सणयं ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥ पुरिसा! जइ दुक्खवारणं, जइ अविमग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय पणिवइअं। अजिअं महमविअ सुनय नय निउणमभयकरं, सरण मुवसरिअ भुवि दिविअ महिअं सयय मुवणमे ॥ संगययं ॥ ७ ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि निहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संतिमुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ सोवाणयं ॥ ८ ॥ सावत्थि पुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ विच्छिन्न संथिअं, थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमाणवरगंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थ बाहु धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लक्खणो वचिअ सोमचारु रुवं सुइ सुहमणाभिराम परम रमणिज्जवर देव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ वेड्ढओ ॥ ९ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं

॥ रासालुद्धओ ॥ १० ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टि भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर निगम जणवयवई बत्तीसारायवर सहस्सा-णुयाय मग्गो । चउदस वर रयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवई, चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छन्नवइ गामकोडि सामी आसीज्जो भारहंमि भयवं ॥ वेट्ठओ ॥ ११ ॥ तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संति थुणामिजिणं, संति विहेउ मे ॥ रासानंदिअयं ॥ १२ ॥ इक्खाग विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिव-सहा । नव सारय ससि सकलाणण, विगयतमा विहुअरया ॥ अजि उत्तम तेउ गुणेहिं महामुणि, अमिय बला विउल कुला । पणमामि ते भवभय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥ १३ ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठ रुव धंत रूप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल । दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त ते अवंद धेअ सव्वलोअ भावि अप्पभावणेय पइस मे समाहिं ॥ नारायओ ॥ १४ ॥ विमल ससि कलाइरेअसोमं, वितिमिरसूर कराइरे अतेअं । तियसवइगणाइरेअ रुवं, धरणि धरप्पवराइरेअ सारं ॥ कुसुमलया ॥ १५ ॥ सत्ते असया अजिअं, सारीरे

अवले अजिअं । तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ १६ ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेय गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रुव गुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ खिज्जिअयं ॥ १७ ॥ तित्थवर पवत्तयं तमरय रहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संति सुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणि सरण मुवण मे ॥ ललिअयं ॥१८॥ विणओणय सिरिरइ अंजलि रिसिगण, संथुअं थिमिअं । विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुअमहिं, अच्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गय सरय दिवायर समहिअ, सप्पमं तवसा । गयणंगण वियरण समुइय चारण, वंदिअं सिरसा ॥ किसलयमाला ॥ १९ ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं । देवकोडिसय संथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ सुमुहं ॥२०॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजियं, पयओ पणमे ॥ विज्जु विलसिअं ॥ २१ ॥ आ गया वर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं । ससंभमो अरण खुभिअ, लुलिअ चल कुडलं गय तिरीड सोहंत मउलिमाला ॥ वेढ्ओ ॥ २२ ॥ जं सुर संघा सासुर संघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता । आयर भूसिय संभम पिंडिअ, सुट्ठु सुविम्हिअ सव्वबलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परुविअ, भासुर

भूसण भासुरिअंगा । गाय समोणय भत्ति वसागय, पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ रयणमाला ॥ २३ ॥ वंदिऊण थोऊण तोजिणं, तिगुणमेवयपुणोपयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ खित्तयं ॥ २४ ॥ तं महामुणि महंपि पंजली, राग दोस भय मोह वज्जिअं । देव-दाणव नरिंद वंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ खित्तयं ॥ २५ ॥ अंबरंतर वियारणिआहिं, ललिअ हंसवहु गामिणिआहिं । पीणसोणिथण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ दीवयं ॥ २६ ॥ पीण निरंतर थणभर विणमिय, गायलयाहिं । मणिकंचण पसिढिल मेहल सोहिअ, सोणितडाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर सतिलय वलय, विभूसणियाहिं । रइकर चउर मनोहर सुंदर, दंसणियाहिं ॥ चित्तक्खरा ॥ २७ ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमाकमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि । अवंग तिलयपत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं, भत्ति सन्निविट्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया पुणो पुणो ॥ नारायओ ॥ २८ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअंजिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं, पयओ पण-मामि ॥ नंदिअयं ॥ २९ ॥ थुअवंदि अस्सा रिसिगण

देवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओपणमियस्सा। जस्स जगुत्तम सासणयस्सा, भत्तिवसागय पिंडिअयाहिं॥ देववरच्छर सा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंडिअयाहिं ॥ भासुरयं॥ ३०॥ वंस सद्द तंति ताल मेलिए, तिउक्खराभिराम सद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणेअ शुद्ध सज्जगीअ पाय जालघंटिआहिं। वलयमेहला कलाव नेउराभिराम सद्द मीसए कए य, देवनट्टिआहिं हाव भावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमा कमा॥ तयं तिलोय सव्व सत्तसंतिकारयं पसंत सव्व पावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं॥ नारायओ॥ ३१॥ छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ झयवरमगर तुरगसिरिवच्छ सुलंछणा। दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ, सत्थिय वसह सीह रह चक्कवरंकिया॥ ललिअयं॥ ३२॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसायसिट्ठा तवेणपुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा॥ वाणवासिआ॥ ३३॥ ते तवेण धुअ सव्व पावया, सव्वलोअ हिअमूल पावया। संथुआ अजियसंति पायया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥ अपरांतिका॥ ३४॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअसंति जिणजुयलं। ववगय कम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं॥ गाहा ॥३५॥

तंबहुगुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अपरिसावि अ पसायं ॥ गाहा ॥ ३६॥ तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदि । परिसाविअ-सुहनंदि ममय दिसउ संजमेनंदि ॥ गाहा ॥ ३७ ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सो अव्वोमव्वेहि उवसग्गं निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ उभओ कालंपि अजिय संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ गाहा ॥ ४० ॥



२. ॥ लघु अजितशांति स्मरणम् ॥

उल्लासिक्क मनक्ख निग्गयपहा दंडच्छलेणंगिणं, वंदारुण दिसंत इव्वपयडं निव्वाड मग्गावलि । कुंदिदुज्जल दंतकंति-मिसओ नीहंत नाणं कुरुक्केरे दोवि दुज्झ सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमिणिज्जजलीहिं, खय समय समीरं जो जिणिज्जा गईए । सयलनहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजिय महव संति सो समत्थो थुणेउं

॥ २ ॥ तह विहु वहुमाणुल्लास भत्तिब्भरेण, गुणकणमवि कित्तेहामि चिंतामणिव्व । अलमहव अचिंताणंत सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्वं वच्छिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयल जय हिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठा निट्ठ दोघट्ट-थट्ठं । नमिर सुर किरीडुग्घिट्ठ पायारविंदे, सयय मजिय संती ते जिणिंदेऽभिवंदे ॥४॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिण जुअपयभत्ती ही अचिंतोरु सत्ती ॥ ५ ॥ ललिय पयपयारं भूरिदिव्वंग हारं, फुड घण रसभावो दार सिंगार सारं । अणिमिस रमणिज्जं दंसण-च्छेअ भीया, इव पणमण मंदा कासि नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणय रयपिसंगा छज्जए जाण मुती । सरभस परिरंभारंभि निव्वाण लच्छी, घण थण घुसिणंकुप्पंक पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ वहुविहनयभंगं वत्थु-णिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं । इय कुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तियलोए ताव मोहंधयारं, भमइ जय मसण्णं ताव मिच्छत्तछण्णं । फुरइ फुड फलंताणंतणाणंसु पूरो, पयड मजिय संतीझाणसूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि

करि हरि तिरहूरहंतु चोराहि वाही, समर डमर मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा । पलय मजिय संती कित्तणेभत्ति जंती, निविड तर तमोहा भक्खरा लुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ दुरिअ दारु दित्तझाणग्गि जाला, परि गय मिव गोरं चितिअं जाणरुवं । कणय निहस रेहा कंति चोरं करिज्ञा, चिर थिर मिह लच्छिं गाढ संथंभि अव्व ॥ ११ ॥ अडवि निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्तिट्ठियाणं । जलिअ जलणजालालिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि करिपरिकिएणं पक्क पाइक्क पुएणं, सयलपुहवि रज्जंछड्डिअं आणसज्जं । तणमिव पडि लग्गंजे जिणा मुत्तिमग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥१३॥ छण ससि वयणाहि फुल्लनितुप्पलाहि, थणभरनमिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं । ललिअभुअ लयाहि पीण सोणित्थलीहिं, सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरि सकिडिभकुट्ठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सास सोसोदराणि । नह मुहदसणच्छी कुच्छि कएणाइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु दुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं । पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं

जेण धाएह सिग्धं ॥१६॥ इय विजयाजियसत्तु पुत्तसिरि अजिय जिणेसर, तह अइराविससेण तणय पंचम चक्कीसर। तित्थंकर सोल सम संति 'जिणवल्लह' संथुअ, कुरु मंगल मम हरसु दुरिय मखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥



३. ॥ नमिऊण नामकं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो।
चलण जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥
सडिअ कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावण्णा।
कुट्ठ महारोगानल फुलिंग, निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्ढियच्छया। वणदव दड्ढा गिरिपाय-वव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे। संभंतभय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिय जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पासजिण चलण जुअणं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुय वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे। डज्झंत मुद्धमियवहु, भीसणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणो कमजुअलं,

निव्वाविय सलय तिहुअण भोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं । उग्ग भुअंगं नवजलय, सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिच्छूढ विसमविसवेगा । तुह नामक्खर फुड सिद्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवी सुभिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु । भयविहुर वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्त विहव सारा, तुह नाह ! पणामत्त वावारा । ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ताहिय इच्छियं ठाणं ॥११॥ पज्जलिआ नल नयणं, दूर विआरिय मुहं महाकायं । नह कुलिस घाय विअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभमपत्थिव, नहमणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स । तुह वयणपहरण धरा, सीहं कुद्धं पि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवलदंतमुसलं, दीह कहल्लाल वुड्ढिउच्छाहं । महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥१४॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उध्दुय कबंधे । कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुध्धुररिउ, नरिंद

निवहा भडाजसं धवलं । पावंति पाव पसमिण, पासजिण ! तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रणभयाइं । पासजिण नाम संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथव मुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥१९॥ राय भय जक्ख रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्ख पीडासु । संझासुदोसु पंथे, उवसग्गे तहयरयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥



४. ॥ गणधरदेवस्तुति नामकं स्मरणम् ॥

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व, सत्त संताण सुह जणयं ॥ १ ॥ नासिय सयल किलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ सुहलेसा । सिरि वद्ध-माण तित्थस्स, मंगलं दितु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढ कम्म-बीआ, बीआपरमेट्ठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धातिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पया-

संतु ॥ ४ ॥ सम्मसुत्र वायगा, वायगा यसित्रवाय वायगा वाए । पवयण पडिणीय कए, वणितु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण साहणुज्जुय, साहूणं जणिअसव्व साहज्जा तित्थप्प-भावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं, निव्वाण फलं च चरण मवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं, मंगुल मवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुयधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कयसम्मो । गुणसुट्ठिअस्स संघस्स मंगलं सम्मसिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित धम्मो, संप्पाविअ भव्वसत सिवसम्मो । नीसेस किलेस हरो, हवउ सयासयल संघस्स ॥ ६ ॥ गुणगण गुरुणोगुरुणो, सिवसुह मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाण पहुपय-डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायंग गयमुहप-मुक्खा । सिरि वंभसंति सहिआ, कय नयरक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंवा पडिहय डिंवा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि वइरुट्ठा, संतिसुरादिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जा देवीओ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं । अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिणसासण कयरक्खा, जक्खा चउव्वीस सासण सुरावि । सुहभावा संतावं, तित्थस्स सयापणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणम्मि

निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्च करावि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्द समग्गा, विहिय भव्वाण जणिय साहज्जो । गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह गुत्त खित्त जल थल, वण पव्वयवासि देव देविओ । जिण सासण ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणिनिहणंतु ॥ १७ ॥ दस दिसिवाला सखित्त-वालया नवग्गहा सनक्खत्ता । जोइणि राहुग्गह कालपास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह कालकंटएहिं, सविट्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वेमाणिआ यजे देवा । धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु दुरिआइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिअ तमोहं । तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सऽज्जवि सासणं जए जयइ । सिद्धिपह सासणंकुपह, नासणं सव्वभय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उस-भसेण पमुहा, हय भय निवहा दिसंतु तित्थस्स । सव्वजिणाणं गणहारिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तित्थाहिवेणतित्थंसमप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्मसामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दियाजे, भद्दाणि

दिसंतु सयल संघस्स । इयरसुरावि हुसम्मं, जिण गणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए । जिणदत्ताणाए ठिओ, स निट्ठि अट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥

—●—

५. * गुरुपारतंत्र्य नामकं स्मरणम् *

मयरहियं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरुजण पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चैव ॥१॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणट्ठ संदेहा । पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्त सुजइत्त सोहा, समत्त पर तित्थ जणिअ संखोहा । पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुहदाहा सिवंवतरुसाहा । संपाविअ सुहलाहा खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण जण जणिय पुज्जा, सज्जो निरवज्ज गहिअ पव्वज्जा । सिवसुह साहण सज्जा, भवगुरु गिरि-चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज सुहम्मप्पमुहा, गुणगण निवहा-सुरिंद विहिअ महा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिय जिणदेवो, देवायरिओ दुरंत

भवहारी । सिरि नेमचंदसूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ॥७॥ सिरि वद्धमाणसूरी, पयडीकय सूरिमंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्वसुह जणओ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्परण, पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि । जुगपवर सुद्ध सिद्धत, जाणओ पणय सुगुणजणओ ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह महि-वल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्काविआरिऊणं, सीहेणं व दव्वलिंगिगया ॥१०॥ दसमच्छेरय निसिविप्फुरंत संच्छंद सूरिमय तिमिरं । सूरेणव सूरिजिणे सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥१२॥ पयडिअ नवंग सुत्तत्थ, रयणकोसो पणासिअ पओसो । भवभीय भविअ जणमण, कयसंतोसो विगय दोसो ॥ १३ ॥ जुगपवरागम सार, परूवणा करण बंधुरोधणिअं । सिरि अभय-देव सूरी, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो, हरिव्व सारंग भग्ग संदेहो । गय समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्वरसो ॥ १५ ॥ भीम भव काणणंमि अ, दंसिअ गुरुवयण रयण संदेहो । नीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो, चउरणु-ओमप्पहाण सच्चरणो । असममय राय महणो, उड्ढमुहो सहइ

जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिय सावओत्थ भओ। गुरुगिरि गुरुओ सरहुव्व, सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥१८॥ जुग पवरागम पीऊस-पाण पीणिय मणा कया भव्वा। जेण जिण वल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय पवर पवयण, सिरोमणी वूढ दुव्वह खमोय। जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण-महीणं, सुगुरुणं पारतंत मुव्वहइ। जयइ जिणदत्त सूरि, सिरि निलओ पणय मुणि तिलओ ॥ २१ ॥



६. * सिग्ध मवहरउ नामकं स्मरणम् *

सिग्घ मवहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स। सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥१॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणोविहिअ भव्व सत्तसुहा। सिरि वद्ध-माण जिणतित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुरा जे, जिणवेयावच्च कारिणो संति। अवहरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणयट्ठिय पास, सामि पयपउम पणय पाणीणं। निद्दलिय दुरिय विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडि-

चक्ख पक्ख लक्खा ते। कय सुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्तसिव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडि चक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिणपणया। सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घ-हरा ॥ ६ ॥ सक्काएसासचउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण जिणभत्तो। सिरि थंभसंति जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्त-गिह गुत्त संताण, देस देवाहि देवयाताओ। निव्वुइपुर पहि-आणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपह रिउच्छिन्न कंधरा धणियं। सिवसरणि लग्ग संघस्स, रुव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंवेण। जिणचंदोऽभय देवो, रक्खउ जिण वल्लहो पहु मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो हयतिमिरो। जिण चंदाभयदेवा, पहुणो जिण वल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए-ऽभयदेव पहुत्तदायगे वंदे। जिणचंद जिणेसर, वद्धमाण तित्थस्स वुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जे य कारंति। मणसा वयसा वाउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥१३॥ जिणदत्त गुणे नाणा, इणो सया जे धरंति धारिंति। दंसिअ सिअवाय पए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥१४॥

७. * उवसग्गहरं नामकं स्मरणम् *

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भ- हिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

❀ इति सप्त स्मरणानि ❀



* भक्तामर स्तोत्रम् *

भक्तामर प्रणतमौलिमणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलित पाप तमोवितानं। सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा, वालं-वनं भव जले पततां जनानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः वाङ्गमय तत्व-बोधा, दुद्भूत बुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितय

चित्त हरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपितं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
॥ युग्मम् ॥ बुद्धयाविनापि विबुधार्चित पादपीठ, स्तोतुं समुन्नत-
मतिर्विगत त्रपोऽहं । बालंविहाय जलसंस्थित मिंदुबिंब, मन्यः
क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र !
शशांक कांतान्, कस्तेक्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्धया । कल्पांत-
काल पवनोद्धत नक्रचक्रं को वा तरीतु मलमंबुनिधिं भुजाभ्यां
॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान् मुनीश ! कर्तुं स्तवं
विगत शक्तिरपि प्रवृतः । प्रीत्याऽऽत्मवीर्य मविचार्य मृगो
मृगेन्द्रं ! नाभ्येति ? किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्मां । यत्कोकिलः किल मधौमधुरं विरौति, तच्चारु
चूतकलिका निकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव संतति सन्नि-
बद्धं, पापंक्षणात्क्षयमुपैतिशरीरभाजां । आक्रांतलोकमलिनील
मशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरकमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ ! तव संस्तवनं मयेदमारभ्यते तनुधियाऽपि तवप्रभावात् ।
चेतोहरिष्यति सतां नलिनी दलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैतिननूद-
बिंदुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्त समस्त दोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानिविकासभांजि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण

भूतनाथ, भूतैगु णैसु वि भवंत मभिष्टुवंतः । तुल्या भवंतिभवतो ननु तेनकिं वा, भूत्याऽऽश्रितं य इह नात्म समं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवंत मनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्रतोष मुपयातिजनस्य-चक्षुः । पीत्वापयः शशिकर द्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधे रशितुं कइच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक ललामभूत ? । तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरग नेत्रहारि, निःशेष निर्जित जगत्त्रितयोपमानं । बिंबं कलंक मलिनं क्वनिशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ॥ १३ ॥ संपूर्ण मंडल शशांक कला-कलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति । ये संश्रिता स्त्रि-जगदीश्वर ? नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गं । कल्पांतकाल मरुता चलिता चलेन, किं मंदराद्रि शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धूमवर्ति रपवर्जित तैल-पूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रगटी करोषि । गम्यो न जातुमरुतां चलिता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ? जगत्प्रकाशः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगंति । नांभोधरोदर निरुद्ध महाप्रभावः, सूर्यातिशायि

महिमाऽसि मुनींद्र ? लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोह महांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्व शशांक बिंबं ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ ? । निष्पन्नशालि वनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल भार नम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथात्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवंतथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच शकले किरणा कुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति । किं ? वीक्षितेन भवताभुवि येननान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ? भवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशोजनयंति पुत्रान्, नान्यासुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वा दिशो दधतिभानि सहस्ररश्मि, प्राच्येवदिग् जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस-मादित्यवर्णममलंतमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र ? पंथाः ॥ २३ ॥ त्वाम् व्ययं विभुमचिंत्य मसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं । योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-

शंकरत्वात् । धातासिधीर शीवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ? पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ ? तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तयामुनीश ? । दोषैरुपात्त विविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूरव माभाति रूपममलं भवतो नितांतं । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त तमोवितानं, बिंबंरवेरिव पयोधर पार्श्ववर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं । बिंबं वियद्विलसदंशु लतावितानं, तुंगोदयाद्रि शिरसीवसहस्र-रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात चल चामर चारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छशांक शुचिनिर्झर वारिधार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभं ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तवविभाति शशांक कांत-मुच्चैः स्थितं स्थगित भानु कर प्रतापं । मुक्ताफल-प्रकर जाल विवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्र हेम नवपंकज पुंजकान्ती, पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्रजिनेंद्र ? धतः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तवविभूति-

रभृज्जिनेंद्र ?, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । याद्दक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, ताद्दक्कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल विलोल कपोल मूल-मत्त-भ्रमद्-भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभ मिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३४॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वल शोणिताक्त-मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः । बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचल संश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल पवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलित मुज्ज्वल मुत्स्फुलिंगं । विश्वंजिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद कोकिल कंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिन मुत्फण मापतंतं । आक्रामति क्रमयुगेन-निरस्तशंकस्त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंग गजगर्जित भीमनादमाजौ बलं बलवतामपिभूपतीनां । उद्यद्दिवाकर मयूख शिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्न—गजशोणितवारिवाह—वेगावतार तरणातुर योधभीमे । युद्धे जयं विजित दुर्जयजेयपक्षा-स्त्वत्पादपंकज वनाश्रयिणोलभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभित भीषण नक्रचक्र-पाठीनपीठ भयदोल्बण वाडवाग्नौ । रंगत्तरंग शिखरस्थित यानपात्रास्त्रासं विहायभवतः स्मरणाद् व्रजंति

॥ ४० ॥ उद्भूत भीषण जलोदर भारभुग्नाः, शोच्यां दशा मुपगताश्च्युत जीविताशाः। त्वत्पादपंकज रजोऽमृत दिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद कंठ मुरुशृंखल वेष्टितांगाः, गाढं बृहन्निगडकोटि निघृष्टजंघाः। त्वन्नाममंत्र मनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयंविगत बंधभया भवंति ॥४२॥ मत्तद्विपेंद्र मृगराज दवानलाहि-संग्राम वारिधि-महोदर बंधनोत्थं। तस्याशु नाशमुपयाति भयंभियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेंद्र ! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्रपुष्पां। धत्ते जनो य इह कंठगता मजस्त्रं, तं मान तुंगमवशा समुपैतिलक्ष्मीः ॥ ४४ ॥



* कल्याणमंदिर स्तोत्रम् *

कल्याणमंदिर मुदारमवद्यभेदि, भीताभय प्रदमनिंदित मंघ्रिपद्म। संसार सागर निमज्जदशेषजंतु-पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुं। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ (युग्मम्) सामान्यतो

ऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-मस्मादृशाः कथमधीश ? भवंत्य-धीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति ? किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ? मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्, मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ? जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्य गुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगंवितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि नयान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषुममावकाशः । जाता तदेवम-समीक्षित कारितेयं, जल्पंति वा निजगिरानुपक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिन ? संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो-भवतोजगंति । तीव्रातपोपहत पांथजनान्निदाघे, प्रीणातिपद्म सरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ? शिथिली भवंति, जंतोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबंधाः । सद्यो भुजंग ममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥८॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र ? रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसिदृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन ? कथं ? भविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वा दृतिस्तरति

यज्जलमेप नून-मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं ? न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्प गरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो ध्वस्तास्तदा बत कथं ? किल कर्मचौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥ त्वां योगिनो जिन, सदा परमात्मरूप-मन्वेपयंति हृदयांबुजकोश-देशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ? भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजंति । तीव्रानला दुपलभाव मपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥ अंतः सदैव जिन ? यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे ? शरीरं । एतत् स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वद भेद बुद्धया, ध्यातो जिनेंद्र ? भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृत मित्यनु-चिंत्यमानं, किं नाम नो विष विकारमपा करोति ? ॥ १७ ॥

त्वमेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ? हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश ? सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति ? न जीवलोकः ॥ १६ ॥ चित्रंविभो ? कथमवाङ्मुख वृतमेव, विष्वक् पतत्य विरला सुर-पुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश ? गच्छंति नूनमध एव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीर हृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति । पीत्वा यतः परम संमद संगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वामिन् ? सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वां । आलोकयंतिरभसेन नंदंतमुच्चै-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहं ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छ विरशोक तरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ? नीरागतां व्रजति ? को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भोभोः ? प्रमादमवधूय भजध्वमेन-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहं । एतन्निवेदयति

देव ? जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ ? तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताकलाप कलितोच्छ्र्व सितातपत्र-व्याजात् त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिंडितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्त्रजो जिन ? नमत्त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥२८॥ त्वं नाथ ? जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो ? यदसि कर्मविपाक शून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ? दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाश हेतुः ॥३०॥ प्राग्भार संभृत नभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ ? हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्जदूर्जित घनौघ मदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारिदध्रे, तेनैव तस्य जिन ? दुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्व-

केश विकृताकृति मर्त्यमुंड-प्रालंबभृद्भयद वक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितो यः, सोऽस्याभवत् प्रतिभवं भव-दुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ? ये त्रिसंध्य-माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मल-देहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ? भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश ? मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्र मंत्रे, किं वा विपद्विष-धरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव ? , मन्ये मया महितमीहित दानदक्षं । तेनेह जन्मनि मुनीश ? पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानां ॥३६॥ नूनं न मोह तिमिरावृत लोचनेन, पूर्वं विभो ? सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबांधव ? दुःखपात्रं, यस्मात् क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ? दुःखिजन-वत्सल ? हे शरण्य ?, कारुण्य पुण्यवसते ? वशिनां वरेण्य ? । भक्त्या नते मयि महेश ? दयां विधाय, दुखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य-

मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधान-वंध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ? हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य ? विदिताखिल वस्तुसार ?, संसारतारक ? विभो ? भुवनाधिनाथ ? । त्रायस्व देव ? करुणाहृद ? मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयद व्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ? भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्रि भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र ?, सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकितांगभागाः । त्वद्बिंबनिर्मल मुखांबुज बद्ध लक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो ? रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयन कुमुदचंद्र ?, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥



॥ वृद्धशान्तिः ॥

भो भो भव्या ? शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्य श्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोकाः ? इह हि भरतैरावतविदेह

संभवानां, समस्त तीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानंतरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भटारकं गृहत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः स पंथाः" इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शांतिमुद्घोषयामि। तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयतां प्रीयतां भगवंतोऽर्हंतः, सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः। त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः, त्रैलोक्यपूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः। ॐ श्री केवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताव १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवगति २२, स्यंदन २३, संप्रति २४, एते अतीत चतुर्विंशति तीर्थंकराः।

ॐ श्री ऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९,

शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनंत १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्धमान २४, एते वर्तमान जिनाः ।

ॐ श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगु (प्ति) प्र १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनंतवीर्य २३, भद्रंकर २४, एते भावि तीर्थंकरा जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु ॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजय दुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं ॥

ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महाशेननरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ़रथ १०, विष्णु ११, वसुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, इति वर्तमान चतुर्विंशति जिन जनकाः ।

ॐ श्री मरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा, ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान जिन जनन्यः।

ॐ श्री गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुवेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४, इति वर्त्तमान जिनयक्षाः।

ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४, इति वर्त्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर शासनदेव्यः।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-मति-कीर्ति-कान्ति बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश निवेशनेषु, सुगृहीत नामानो जयंतु ते जिनेंद्रा ।

ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्या देव्यो रक्षंतु मे स्वाहाः ।

ॐ आचार्योपाध्याय प्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कंदविनाय कोपेता । ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्र देवता दयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतं । अक्षीणकोश कोष्ठा-गारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहाः । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबन्धि बंधु वर्ग सहिता नित्यं चामोद प्रमोद कारिणो भवंतु । अस्मिंश्च भूमंडले आयतन निवासिनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां, रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दौर्मनस्यो-पशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्यो-त्सवा भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु,

शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहाः। श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति विधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥१॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥२॥ ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि। संपादितहितसंपद्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥३॥ श्रीसंघ पौर जनपद राजाधिपराज संनि-वेशानां। गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु, श्रीजन-पदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसंनिवे-शानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपौरमुख्यानां शांतिर्भवतु। ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहाः। एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रा (द्य)वसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा, कुंकुमचंदनकर्पूरागरु धूपवास कुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचिवपुः, पुष्पवस्त्र चंदना भरणालंकृतः, चंदन तिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वाशांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति नृत्यंति नृत्यं मणि पुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयर निवासिनी। अम्ह

सिवं तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥१॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवतु भूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥२॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥३॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ४ ॥



॥ तिजयपहुत्त स्तोत्रम् ॥

तिजय पहुत पयासय-अट्ठ महापाडिहेर जुत्ताणं । समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥१॥ पण-वीसा य असीया, पनरस पन्नास जिणवर समूहो । नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि अ, तीसा पन्नतरी जिणवरिंदा । गहभूअ रक्ख साइणी-घोरुवसग्गं पणासेउ ॥३॥ सत्तरि पणतीसा वि अ, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहि जलजलण हरिकरि चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पण पणणा य दसेव य, पण्णट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः । आलि-

हिय नामगब्भं, चक्कं किर सव्वश्रोभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पएणत्ति, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ। चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥७॥ गंधारी महज्जाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता। माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं। विविह रयणाइ वएणो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ६ ॥ चउतीस अइसयजुआ, अट्ठ महापाडिहेर कयसोहा। तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥ ॐ वरकणय संख विद्दुम-मरगयघणसंनिहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामर पूइअं वंदे। स्वाहाः ॥ ११ ॥ ॐ भवणवई वाणवंतर जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं। स्वाहाः ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं। एगंतराइ गहभूअ-साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरिसयजंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं। दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्च-मच्चेह ॥ १४ ॥

—**—

॥ संतिकरं स्मरणम् ॥

तपागच्छ वाले नवस्मरण में बोलते हैं तथा मंगलिक की जगह।

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जय-सिरीइ दायारं, समरामि भत्त-पालग, निव्वाणी-गरुड-कय-सेवं ॥ १ ॥ ॐ स नमो विप्पोसहि–पत्ताणंसंति–सामि–पायाणं, झ्रौं स्वाहा–मंतेणं, सव्वासिव-दुरिअ-हरणाणं ॥ २ ॥ ॐ संति-नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धि-पत्ताणं, सौं ह्रीं नमो सव्वोसहि-पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥ वाणी तिहुअण-सामिणि, सिरिदेवी जक्खराय गणि पिडगा, गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नती वज्जसिंखला य सया, वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा, अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसियाउ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो, मायंग-विजय-अजिया, बंभो मणुओ, सुरकुमारो ॥७॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलोगंधव्व तहय जक्खिंदो, कुबेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमायंगा ॥८॥ देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि काली महाकाली, अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसोय सिरिवच्छा ॥९॥ चंडा

विजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी, वइरुट्टऽच्छुत्त गंधारि, अंब पउमावइ सिद्धा ॥१०॥ इअ तित्थ-रक्खणरया, अन्नेऽवि सुरासुरि य चउहावि, वंतर-जोइणि-पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो, मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरि-थुअ-महिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्म-दिट्ठी, रक्खं सरइ तिकालं जो, सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥१३॥



॥ जिनपंजर स्तोत्रम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमो नमः । एष पंचनमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः । मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयेविजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमल-प्रभसूरींद्रो, भाषते जिन पंजरं ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभ विवर्जितः । देवताऽग्रे पवित्रात्मा

षण्मासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥६॥ साधुवृंदं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धिं विधाय च। सूर्यचंद्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ सिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः। अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे-दाग्नेयीं विजितेंद्रियः। दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैऋर्न्ति च त्रिकालवित् ॥६॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः। उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्ह-न्नाकाशं पुरुषोत्तमः। रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥११॥ ऋषभोमस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने। संभवः कर्णयुगलं नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्री सुमती रक्षेद्, दंतान् पद्मप्रभो विभुः। जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥१३॥ कंठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं श्री सुशीतलः। श्रेयांसोबाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे-दनंतोऽसौ स्तनावपि। सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥१५॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे-दरो रोमकटीतटं। मल्लिरुरु पृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्। श्रीनेमिश्चरणद्वयं; श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥१७॥ पृथिवीजल-

तेजस्क-वाय्वाकाशमयंजगत् । रक्षेद्-शेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्नि सर्पादि-भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे मूर्खत्वे रोग-पीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं । तस्यकिंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्र-श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं । आसादयेत्स कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्र-पल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणि-रेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्री कमलप्रभाख्यः ॥२५॥



॥ ऋषिमण्डल स्तोत्रम् ॥

आद्यंताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं । अग्नि ज्वालासमं नाद-बिंदुरेखासमन्वितं ॥१॥ अग्नि ज्वाला समा-क्रांतं, मनोमलविशोधकं । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि

निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः। ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्व साधुभ्यः, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः। ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियस्त्वेत-दर्हदाद्यष्टकं शुभं। स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत् परं रक्षेत्तु मस्तकं। तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥७॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घंटिकां। नाभ्यंतं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफो द्व्यब्धि-पंचपान्। सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचैते ज्ञानदर्शने। चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सांतः समलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः, असिआउसा सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः। जंबूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः। अर्हदाद्यष्ट-कैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्ये संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तारस्तारामंडलमंडितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजमध्यास्य सर्वगं। नमामि बिंबमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं

जाड्यतोज्झितं । निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतं । तामसं चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं । परापरं परातीतं परंपर परापरं ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥१८॥ ईश्वरं ब्रह्म संबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुं । ज्योति रूपं महादेवं, लोकालोक प्रकाशकं ॥१९॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः, सरेफो विंदुमंडितः । तुर्यस्वर समायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वेः, वृषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र-संगत्ताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, विंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थ-कृन्मंडलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ, नादस्थिति समाश्रितौ । विंदुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थं कृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥२६॥

गतरागद्वेष मोहाः, सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाऽऽच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥३२॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु राक्षसाः ॥३७॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु वह्नयः ॥३८॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु दुर्ज्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभि रभ्युद्यतज्योति-रर्हं सर्व निधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पाताल वासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥४३॥ येऽवधि लब्धयो ये तु, परमावधि लब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४॥ दुर्जनाः भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युप शाम्यंतु, देवदेव प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी-गौरी चंडी सरस्वती ।

जयांश विजया नित्या, क्लिन्ना जिता मदद्रवा ॥४६॥ कामांगा कामवाणा च, सानंदा नंदमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वैं महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांति कीर्तिं धृति मति ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्री ऋपिमंडलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥ ४६ ॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदं । लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि-गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकं ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतै-र्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकै-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ-वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै-र्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचिद् । मिथ्यात्व-वासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः

कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलिं । अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रात-र्ये पठंति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥५६॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं । पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यतेपदमुत्तमं ॥६३॥
॥ इति श्री ऋषिमंडलस्तोत्रं ॥

॥ क्षेपकश्लोकान्निराकृत्यं मूल मंत्र कल्पानुसारेण लिखितं गणि श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः, तस्योपरि मयाऽपि लिखितमिदं स्तोत्रम् ॥



॥ नवग्रह स्तुतिगर्भितं दोसावहार स्तोत्रम् ॥

दोसावहार दक्खो, नालियायार वियासि गोपसरो । रयणत्तयस्स जणओ, पासजिणो जयउ जय चक्खू ॥१॥ कय कुवलय पडिवोहो, हरिणंकिय विग्गहो कलानिलओ ।

विहियारविंदमहणो, दियराओ जयउ पासजिणो ॥२॥ कंतीइ निज्जिणंतो, सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो। जयजंतु अभयवको; सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥३॥ उप्पलदल नीलरुई, हरिमंडल संथुओ इलाणंदो। रयणीयर दारओ मह, बुहो पसीय (ए) उ पासजिणो ॥४॥ नाहियवायवियट्ठो, नायत्थो णायराय कयपूओ। सिरिपासनाहदेवो, देवायरिओ सुहं दिसउ ॥ ५ ॥ रायावट्ट समुज्जल-तणुप्पह मंडलो महाभूइ। असुरेहिं नमिज्जंतो; पासजिणंदो कवी जयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो, संतो दुक्खावहो जयम्मि थिरो। वहुलतमा सरि सरीरो, जयचक्खु सुओ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दोसायरमायंडरहं अहो तणुविमुक्कं। लोयाभरणीभूयं, पासजिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ दुरिआइं पासनाहो, सिहावमाली नहोभवणकेऊ। दूरं तमः रासीओ, सत्तमट्ठाणट्ठिओ हरउ ॥ ९ ॥ इय नवगहथुइगब्भं, जिणपहसूरिहिं गुंफिअं थवणं। तुह पास ! पढइ जो तं, असुहावि गहा न पीडंति ॥१०॥ ●●●

॥ श्री चतुर्विंशति जिनजापपूजा गर्भितं नव ग्रह शान्ति स्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं। ग्रहशांति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥१॥ जिनेंद्राः खेचरा ज्ञेयाः,

पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टि हेतवे ॥२॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चंद्रश्चंद्रप्रभस्य च । वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानन्त-धर्मा-राः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानो जिनेंद्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाऽजितसुपार्श्वा-श्चाऽभिनंदन-शीतलौ । सुमतिः संभव स्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥५॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथे भवेद् राहुः, केतुः श्रीमल्लि-पार्श्वयोः ॥६॥ जनॉल्लग्ने च राशौ च, पीडयंति यदा ग्रहाः । तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्प-गंधादिभिर्धूपैः, फल नैवेद्यसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वासो-भिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्य-सोम-मंगल-बुध-गुरु-शुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देश-नक्षत्रवर्णकैः । स्तुताश्च पूजिता भक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥१०॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतं ॥ ११ ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली । विद्या-प्रवादतः पूर्वाद्, ग्रह शान्तिविधिर्मतः ॥१२॥

—●—

॥ ग्रह शांति विधि ॥

किस ग्रह की पीडा में किन भगवान् की नैवेद्य विलेपनादि अष्ट प्रकारी पूजा कौनसे फूलों से करनी और कौनसा जाप करना ? यह नीचे के कोष्ठक से जानें ।

ग्रह	तीर्थंकर पूजा	पुष्प	जाप
रवि	६ (पद्म०)	रक्त	ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं×
सोम	८ (चंद्र)	श्वेत	,, ,, ,, आयरि०
मंगल	१२ (वासु०)	रक्त	,, ,, ,, सिद्धाणं
बुध	१३-१४-१५-१६-१७-१८-२१-२४	पीत	,, ,, ,, आयरि०
गुरु	१-२-३-४-५-७-१०-११	पीत	,, ,, ,, आयरि०
शुक्र	६ (सुविधि)	श्वेत	,, ,, ,, अरिहं०
शनि	२० (मुनि०)	नील	,, ,, ,, लोए सव्व०
राहु	२२ (नेमि०)	नील	,, ,, ,, लोए सव्व०
केतु	१९-२३	रक्त	,, ,, ,, लोए सव्व०

×सर्वत्र १-१ माला फेरनी । जिन तीर्थंकर की पूजा करनी उन्हीं तीर्थंकर का जाप करना ।

जैसे कि सूर्य की पीडा में "ॐ ह्रीं पद्मप्रभ स्वामिने नमः।" इसी तरह ८ ग्रहों में समझना। यदि अनेक ग्रह अनिष्ट हो तो सब ग्रहों की शान्ति के लिए विविध जाति के फूलों से चोवीसी की नैवेद्यादि अष्टप्रकारी पूजा करनी और "श्रीसूर्यसोमांगारक बुध गुरु शुक्र शनैश्चर राहु केतुवः सर्वे ग्रहाममसानु ग्रहा भवंतु स्वाहा, ॐ ह्रीं अ० सि० आ० उ० साय नमः स्वाहा" इसकी एक माला फेरनी।



॥ पंचषष्टि यंत्रमयं चतुर्विंशति जिन स्तोत्रम् ॥

आदौ नेमिजिनं नौमि, संभवं सुविधिं तथा। धर्मनाथं महादेवं, शांति शांतिकरं सदा ॥१॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमं, अजितं जितकंदर्पचंद्रं चंद्रसमप्रभं ॥२॥ आदिनाथं तथादेवं, सुपार्श्वं विमलं जिनं। मल्लिनाथं गुणोपेतं, धनुषां पंचविंशतिः ॥३॥ अरनाथं महावीरं,सुमतिं च जगद्गुरुं। श्रीपद्मप्रभ नामानं, वासुपूज्यं सुरैर्नतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके, श्रेयासं श्रेयासं सदा। कुंथुनाथं च वामेयं, श्री अभिनंदनं विभुं ॥५॥ जिनानां नामभिर्बद्धः, पंचषष्टि समुद्भवः। यंत्रोऽयं राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरंतरं ॥ ६ ॥ यस्मिन् गृहे

महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः । भूतप्रेतपिशाचादि-भयं तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुणनिधानं यंत्रमेतद्विशुद्धं, हृदयकमल-कोशे धीमतां ध्येयरूपं । जयतिलकगुरुः श्रीसूरिराजस्य शिष्यो, वदति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासं ॥८॥ ॐ ह्रीं ह्रीं नमो देवाधिदेवाय श्रीअरिष्ठनेमये अचित्यचितामणि त्रिभुवनजन कल्पवृक्ष ॐ ह्रां ह्रीं सर्व समीहित सिद्धये स्वाहा ।



॥ गौतमाष्टकम् ॥

श्रीइंद्रभूति वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नं । स्तुवंतिदेवासुरमानवेंद्राः, स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥१॥ श्रीवर्द्धमानात्त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्त्तमात्रेण कृतानि येन । अंगानिपूर्वाणि चतुर्दशापि, स-गौतमो० ॥२॥ श्री वीरनाथेन पुराप्रणीतं, मंत्रंमहानंद सुखाययस्य । ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो० ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णंति भिक्षाभ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानांबर पूर्णकामाः, स गौतमो० ॥४॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवंदनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौतमो० ॥५॥ त्रिपंचसंख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षीण-

लब्ध्या परमान्नदाता, स गौतमो ०॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं संघसपर्ययेव। कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौतमो० ॥ ७ ॥ शिवं गते भर्त्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्व-मिहैव मत्वा। पट्टाभिषेको विदधे सुरेंद्रैः, स गौतमो० ॥८॥ श्री गौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये। पटंति ते सूरिपदं सदैवा-नंदं लभंते नितरां क्रमेण ॥९॥

—**—

वादीवैताल–श्रीशान्तिसूरीश्वरजी रचित—

* श्रीजीवविचार प्रकरणम् *

भुवण पईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थम्।
जीवसरुवं किंचिवि, जह भणियं पुव्व सूरीहिं ॥१॥

जीवामुत्ता संसारिणो य तस थावरा य संसारी।
पुढवि-जल-जलण-वाऊ वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥

फलिह–मणि–रयण–विद्दुम, हिंगुल–हरियाल-मण-सिल-रसिंदा।
कणगाइ–धाऊ सेढी, वन्निय–अरणेट्टय–पलेवा ॥३॥

अब्भयतूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाईओणेगा।
सोवीरं जणलुणाइं, पुढवीभेयाइइचाइ ॥ ४

भोमन्तरिक्खमुदगं, ओसा हिम करग हरितणू महिआ ।
हुंति घणोदहिमाई, भेआणेगा य आउस्स ॥ ५ ॥

इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाइया ।
अगणिजियाणं भेया, नायव्वा निउणबुद्धिए ॥ ६ ॥

उब्भामग-उक्कलिया, मण्डलि महसुद्ध गुञ्जवाया य ।
घणतणु-वायाइया भेया खलु वाऊकायस्स ॥ ७ ॥

साहारणा पत्तेया, वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया ।
जेसिमणन्ताणं तणू, एगा साहारणा ते उ ॥८॥

कन्दा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल भूमिफोडा य ।
अल्लयतिय गज्जरमोत्थ, वत्थुला थेग पल्लंका ॥९॥

कोमल फलं च सव्वं, गूढ सिराइं सिणाइ पत्ताइं ।
थोहरि-कुँआरि-गुग्गुलि, गलोयपमुहा इ छिन्नरुहा ॥१०॥

इच्चाइणो अणेगे, हवन्ति भेया अणन्त कायाणं ।
तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेयं सुए भणियं ॥११॥

गूढसिरसन्धिपव्वं, सममंगमहीरुगं च छिन्नरुहं
साहारणं सरीरं, तव्विवरियं च पत्तेयं ॥ १२

एग शरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया ।
फल-फूल-छल्लि-कट्ठामूलगपत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

पत्तेयतरुं मुत्तुं पंचवि पुढवाइणो सयललोए।
सुहुमा हवन्ति नियमा, अंतमुहुत्ताऊ अदिसा ॥१४॥

संख कवड्डुय गंडुल, जलोय चन्दणगअलसलहगाई।
मेहरि किमि पूयरगा, बेइन्दिय माइवाहाई ॥१५॥

गोमी मंकणजूआ, पिप्पीलि उद्देहिया य मक्कोडा।
इल्लियघयमिल्लीओ, सावयगोकीडजाईओ ॥ १६ ॥

गद्दय चोर कीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य।
कुन्थु गोवालिय इलिया, तेइन्दिय इन्दगोवाई ॥१७॥

चउरिंदिया य बिच्छू, ढिकुण भमरा य भमरिया तिड्डा।
मच्छिय डंसा मसगा कंसारी कविलडोलाइ ॥१८॥

पंचिंदिया य चउहा नारय तिरिया मणुस्स देवा य।
नेरइया सत्तविहा नायव्वा पुढवी-भेएणं ॥ १६ ॥

जलयर थलयर खयरा तिविहा पंचिंदिया तिरिक्खा य।
सुसुमार मच्छ कच्छव गाहा मगरा य जलचारी।२०॥

चउप्पय उरपरिसप्पा भुय परिसप्पा य थलयरा तिविहा।
गो सप्प न उलपमुहा बोधव्वा ते समासेणं ॥२१॥

खयरा रोमय पक्खी चम्मय-पक्खी य पायड़ा चेव।
नरलोगाओं बाहिं समुग्ग-पक्खी वियय-पक्खी ॥२२॥

सव्वे जल-थल-खयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति ।
कम्मा-कम्मग-भूमि अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

दसहा भवणाहि वई अट्ठविहा वाणमन्तरा हुंति ।
जोइसिया पंचविहा दुविहा वेमाणिया देवा ॥२४॥

सिद्धापन्नरस भेया, तित्था-तित्थाइ सिद्ध-भेएणं ।
ए ए संखेवेणं जीवाविगप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥

एएसिं जीवाणं सरीरमाऊ ठिई स-कायंमि ।
पाणा जोणि पमाणं जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ॥२६॥

अंगुल असंख भागो सरीर-मेगिंदियाण सव्वेसिं ।
जोयण सहस्समहियं, नवरं पत्तेय-रुक्खाणं ॥२७॥

बारस जोयण तिन्नेव, गाउआ जोयणं च अणुकमसो ।
बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥

धणुसयपंचपमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ।
तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥२९॥

जोयण सहस्समाणा, मच्छा उरगा य गब्भया हुंति ।
धणुह-पुहुत्तं पक्खीसु, भुयचारी गाउअ-पुहुत्तं ॥३०॥

खयरा धणुह पुहुत्तं, भुयगा उरगा य जोयण पुहुत्तं ।
गाउअ पुहुत्त मित्ता, समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥३१॥

छच्चेव गाउआइं, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ।
कोस तिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीरमाणेणं ॥३२॥

ईसाणंत सुराणं, रयणीओ सत्त हुंति उच्चत्तं ।
दुग दुग दुग चऊ गेविज्ज, णुत्तरे इक्कि परिहाणी ॥३३॥

बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स ।
वास सहस्सा दस तरु, गणाण तेऊ ति रत्ताऊ ॥३४॥

वासाणि बारसाऊ, बेइंदियाणं तिइंदियाणं तु ।
अउणापन्न दिणाइं, चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥३५॥

सुर-नेरइयाण ठिइ, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं ।
चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्नि य पलिओवमा हुंति ।३६॥

जलयर-उर-भुयगाणं, परमाउ होइ पुव्व कोडीओ ।
पक्खीणं पुण भणिओ असंखभागो य पलियस्स ॥३७॥

सव्वे सुहुमा साहारणा य, सम्मुच्छिमा मणुस्सा य ।
उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥३८॥

ओगाहणाउमाणं, एवं संखेवओ समक्खायं ।
जे पुण इत्थ विसेसा, विसेस सुत्ताउ ते नेया ॥३९॥

एगिंदिया य सव्वे, असंख-उस्सप्पिणी सकायंमि ।
उववज्जंति चयंति य, अणंतकाया अणंताओ ॥४०॥

संखिज्ज समा विगला, सत्तट्ठा भवा पणिंदि तिरि मणुआ ।
उववज्जंति सकाए, नारय देवा य नो चेव ॥४१॥

दसहा जियाण पाणा, इंदिय ऊसास आउ बलरुवा ।
एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥४२॥

असन्नि सन्नी पंचिंदिएसु, नव दस कमेण बोधव्वा ।
तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं भन्नए मरणं ॥४३॥

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि भीमंमि ।
पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

तह चउरासी लक्खा, संखा जोणीण होइ जीवाणं ।
पुढवाइणं चउण्हं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥

दस पत्तेय तरुणं, चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ।
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥४६॥

चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणुआण चउदस हवंति ।
संपिंडिया य सव्वे, चुलसी लक्खा उ जोणीणं ॥४७॥

सिद्धाणं नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाण जोणीओ ।
साइ अणंता तेसिं, ठिइ जिणिंदागमे भणिआ ॥४८॥

काले अणाइ-निहणे, जोणि गहणंमि भीसणे इत्थ ।
भमिया भमिहिंति चिरं, जीवा जिणवयणमलहंता ॥४६॥

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ।
सिरि-संति-सूरि-सिट्ठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥५०॥

एसो जीववियारो, संखेव रुइण जाणणा हेऊ ।
संखित्तो उद्धरिओ, रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥५१॥



॥ श्री नवतत्त्व—प्रकरणम् ॥

जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽऽसव संवरो य निज्जरणा ।
बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥१॥

चउदस चउदस बायालीसा, बासी य हुंति बायाला ।
सत्तावन्नं बारस, चउ नव भेया कमेणेसिं ॥२॥

एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पंच छव्विहा जीवा ।
चेयण तस इयरेहिं, वेय—गइ—करण—काएहिं ॥ ३ ॥

एगिंदिय सुहुमियरा, सन्नियर पणिंदिया य स बिति चउ ।
अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥४॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य, एअं जीवस्स लक्खणं ॥५॥

आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भास मणे ।
चउ पंच पंच छप्पिय, इग—विगला-सन्नि-सन्नीणं ॥६॥

पणिंदिअ त्ति चलूसा, साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ ।
इग-दु-ति चउरिंदीणं, असन्नि-सन्नीण नव दस य ॥७॥

धम्माऽधम्माऽऽगासा, तिय तिय भेया तहेव अद्धा य ।
खंधा देस पएसा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥८॥

धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अज्जीवा ।
चलण सहावो धम्मो, थिर संठाणो अहम्मो य ॥९॥

अवगाहो आगासं, पुग्गल-जीवाण पुग्गला चउहा ।
खंधा देश पएसा, परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥

सद्दंधयार उज्जोअ, पभा छाया तवेहिया ।
वण्ण गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ ११ ॥

एगा कोडि सतसट्ठि, लक्खा सत्तहत्तरी सहस्सा य ।
दो य सया सोलहिया, आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥१२॥

समयावलि मुहुत्ता, दीहा पक्खा य मास वरिसा य ।
भणिओ पलिआ सागर, उस्सप्पिणि-सप्पिणी कालो ॥१३॥

परिणामि जीव मुत्तं, सपएसा एग खित्त किरिआ य ।
णिच्चं कारण कत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे ॥१४॥

सा उच्चगोअ मणुदुग, सुरदुग पंचिंदिजाई पणदेहा ।
आइ तितणूणुवंगा, आइम-संघयण-संठाणा ॥ १५ ॥

अणसण-मूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य वज्झो तवो होइ ॥३४॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि अ, अब्भिंतरओ तवो होई ॥३५॥

बारसविहं तवो निज्जरा, य बंधो चउ विगप्पो अ ।
पयइ-ठिइ-अणुभाग, पएस-भेएहिं नायव्वो ॥३६॥

पयइ सहावो वुत्तो, ठिइ कालावहारणं ।
अणुभागो रसो णेओ, पएओ दल संचओ ॥३७॥

पड-पडिहारऽसि-मज्ज, हड-चित्त-कुलाल-भंडगारीणं ।
जह एएसिं भावा, कम्माण वि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥

इह नाण दंसणावरण, वेय-मोहाउ-नाम-गोआणि ।
विग्घं च पण नव दु, अट्ठवीस चउ तिसय दु पणविहं ॥३९॥

नाणे अ दंसणावरणे, वेअणिए चेव अंत राए अ ।
तीसं कोडाकोडी, अयराणं ठिइअ उक्कोसा ॥४०॥

सत्तरि कोडाकोडि, मोहणीए वीस नाम गोएसु ।
तित्तीसं अयराइं, आउट्ठिइ बंध उक्कोसा ॥४१॥

बारस मुहुत्त जहन्ना, वेयणिए अट्ठ नाम-गोएसु ।
सेसाणंतमुहुत्तं, एयं बंधट्ठिइ माणं ॥ ४२ ॥

संत-पय-परूवणया, दव्व-पमाणं च खित्त फुसणा य ।
कालो अ अंतर भाग, भावे अप्पाबहुं चेव ॥ ४३ ॥

संतं सुद्ध पयत्ता, विज्जंतं खकुसुमंव्व न असंतं ।
मुक्खत्ति पयं तस्स उ, परूवणा मग्गणाइहिं ॥४४॥

गइ इंदिय काए, जोए वेए कसाय नाणे य ।
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥४५॥

नरगइ पणिंदि तस भव, सन्नि अहक्खाय-खइअ-सम्मत्ते ।
मुक्खोऽणाहार केवल, दंसणनाणे न सेसेसु ॥४६॥

दव्वपमाणे सिद्धाणं, जीवदव्वाणि हुंति णंताणि ।
लोगस्स असंखिज्जे, भागे इक्को य सव्वे वि ॥४७॥

फुसणा अहिया कालो, इग सिद्ध-पडुच्च साइओऽणंतो ।
पडिवाया-भावाओ, सिद्धाणं अंतरं नत्थि ॥४८॥

सव्व जियाण मणंते, भागे ते तेसिं दंसणं नाणं ।
खइए भावे परिणामिए, अ पुण होइ जीवत्तं ॥४९॥

थोवा नपुंस सिद्धा, थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा ।
इअ मुक्खतत्त-मेअं, नव तत्ता लेसओ भणिआ ॥५०॥

जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ।
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥

सव्वाइं जिणेसर-भासिआइं, वयणाइं नन्नहा हुंति ।
इअ बुद्धी जस्स मणे, सम्मत्तं निचलं तस्स ॥५२॥

अंतोमुहुत्त-मित्तंपि, फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं ।
तेसिं अवड्ढ पुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥५३॥

उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल-परिअट्टओ मुणेअव्वो ।
तेऽणंता-तीअद्धा, अणागयद्धा अणंतगुणा ॥ ५४ ॥

जिण अजिणतित्थ तित्था, गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ।
पत्तेय सयंबुद्धा बुद्ध बोहिय सिद्धणिक्का य ॥५५॥

जिणसिद्धा अरिहंता, अजिणसिद्ध य पुंडरिआ पमुहा ।
गणहारि तित्थ सिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवी ॥५६॥

गिहिलिंग सिद्ध भरहो, वक्कलचीरी य अन्नलिंगम्मि ।
साहू सलिंगसिद्धा, थी-सिद्धा चंदणा-पमुहा ॥५७॥

पुंसिद्धा गोयमाइ, गांगेय-पमुह नपुंसया सिद्धा ।
पत्तेय सयंबुद्धा, भणिया करकंडु कविलाइ ॥५८॥

तह बुद्धबोहि गुरुबोहिया, इग समय-एगसिद्धा य ।
इग समये वि अणेगा, सिद्धा ते णेग सिद्धा य ॥५९॥

जइयाइ होइ पुच्छा, जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ।
इक्कस्स निगोयस्स, अणंतभागो य सिद्धिगओ ॥६०॥

—●—

श्री गजसारमुनि-रचित :—

॥ श्रीदण्डक-प्रकरणम् ॥

नमिउं चउवीस जिणे, तस्सुत्त वियार लेस-देसणओ ।
दंडगपएहिं ते चिय, थोसामि सुणेह भो भव्वा ॥१॥

नेरइया असुराइ, पुढवाइ-बेइंदियादओ चेव ।
गब्भय-तिरिय-मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमाणी ॥२॥

संखित्त यरी उ इमा, सरीर-मोगाहणा य संघयणा ।
सन्ना संठाण कसाय, लेसिन्दिय दुसमुग्घाया ॥३॥

दिट्ठी दंसण नाणे, जोगुवओगोववाय चवण ठिइ ।
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नी गई आगइ वेए ॥ ४ ॥

चउ गब्भ-तिरिय-वाउसु, मणुआणं पंच सेस तिसरीरा ।
थावर चउगे दुहओ, अंगुल असंख भाग तणू ॥५॥

सव्वेसिंपि जहना, साहाविय अंगुलस्स असंखंसो ।
उक्कोस पणसय धणू, नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥६॥

गब्भ तिरि सहस जोयण, वणस्सइ अहिय जोयण सहस्सं ।
नर तेइंदि तिगाऊ, बेइंदिय जोयणे बार ॥७॥

जोयणमेगं चउरिंदि, देहमुच्चत्तणं सुए भणियं ।
वेउव्विय-देहं पुण, अंगुल-संखं-समारंभे ॥ ८ ॥

देव नर अहिय लक्खं, तिरियाणं नव य जोयण सयाइं ।
दुगुणं तु नारयाणं, भणियं वेउव्विय सरीरं ॥ ९ ॥

अंतमुहुत्तं निरए, मुहुत्त चत्तारि तिरिय-मणुएसु ।
देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा कालो ॥१०॥

थावर-सुर-नेरइया, असंघयणा य विगल छेवट्ठा ।
संघयण छगं गब्भय, नर-तिरिएसुवि मुणेयव्वं ॥११॥

सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना सव्वे सुरा य चउरंसा ।
नर तिरिअ छ संठाणा, हुंडा विगलिंदि-नेरइया ॥१२॥

नाणाविह धय सूइ, बुव्बुय वण वाउ तेउ अपकाया ।
पुढवी मसूर चंदा, कारा संठाणओ भणिआ ॥१३॥

सव्वेवि चउ कसाया, लेस छग्गं गब्भ तिरिय मणुएसु ।
नारय तेउ वाऊ, विगला वेमाणिय ति लेसा ॥१४॥

जोइसिया तेउ लेसा, सेसा सव्वेवि हुंति चउ लेसा ।
इंदिय दारं सुगमं, मणुआणं सत्त समुग्घाया ॥१५॥

वेयण कसायमरणे, वेउव्विय तेयए य आहारे ।
केवलि य समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥१६॥

एगिंदियाण केवलि, तेउ आहारग विणा उ चत्तारि ।
ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव ॥१७॥

पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय थाउसु चउर तिय सेसे ।
विगल दु दिट्ठी थावर, मिच्छत्ती सेस तिय दिट्ठी ॥१८॥

थावर वि तिसु अचक्खु, चउरिंदिसु तद् दुगं सुए भणिअं ।
मणुआ चउ दंसणिणो, सेसेसु तिगं तिगं भणिअं ॥१९॥

अन्नाण-नाण तिय तिय, सुर तिरि निरए थिरे अनाणदुगं ।
नाणऽन्नाण दु विगले, मणुए पण नाण ति अनाणा ॥२०॥

इक्कारस सुर-निरए, तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु ।
विगले चउ पण वाए, जोग तियं थावरे होइ ॥२१॥

उवओगा मणुएसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु ।
विगल दुगे पण छक्कं, चउरिंदिसु थावरे तियगं ॥२२॥

संखमसंखा समये, गब्भय तिरि विगल नारय सुरा य ।
मणुआ नियमा संखा, वणऽणंता थावर असंखा ॥२३॥

असन्नी नर असंखा, जह उववाए तहेव चवणे वि ।
बावीस सग ति दस वास, सहस्स उक्किट्ठ पुढवाई ॥२४॥

ति दिणग्गि ति पल्लाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर तित्तीसा ।
वंतर पल्लं जोइस, वरिस लक्खाहियं पलियं ॥२५॥

असुराण अहिय अयरं, देसूणं दु पल्लयं नव निकाये ।
बारस वासुण पणदिण, छम्मासुक्किट्ठ विगलाऊ ॥२६॥

पुढवाइ–दस–पयाणं, अंतमुहुत्तं जहन्न आउ ठिइ ।
दस सहस वरिस ठिइआ, भवणाहिव निरय वंतरिआ ॥२७॥

वेमाणिय जोइसिया, पल्ल तयट्ठंस आउआ हुंति ।
सुर नर तिरि निरएसु, छ पज्जत्ती थावरे चउगं ॥२८॥

विगले पंच पज्जत्ती, छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं ।
पणगाइ-पये भयणा, अह सन्नि तियं भणिस्सामि ॥२९॥

चउविह सुर तिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना ।
विगले हेउ वएसा, सन्ना रहिया थिरा सव्वे ॥३०॥

मणुआण दीहकालिय, दिट्ठिवाओवएसिया के वि ।
पज्ज पण तिरिमणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गच्छंति ॥३१॥

संखाउ पज्ज पणिंदि, तिरिय-नरेसु तहेव पज्जत्ते ।
भू-दग-पत्तेयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥३२॥

पज्जत्त संख गब्भय, तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति ।
निरय उवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु ॥३३॥

पुढवी-आउ-वणस्सइ, मज्झे नारय विवज्जिया जीवा ।
सव्वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेणं ॥३४॥

पुढवाई दस पएसु, पुढवी आऊ वणस्सइ जंति ।
पुढवाई दस पएहि य, तेऊ-वाऊ सु उववाओ ॥३५॥

तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहंमि होइ पय नवगे।
पुढवाइ ठाण दसगा, विगलाइ तियं तहिं जंति ॥३६॥

गमणा-गमणं गब्भय, तिरियाणं सयल जीवठाणेसु।
सव्वत्थ जंति मणुआ, तेऊ वाऊहिं नो जंति ॥३७॥

वेय तिय तिरि-नरेसु, इत्थी पुरिसो य चउविह सुरेसु।
थिर विगल नारएसु, नपुंसवेओ हवइ एगो ॥३८॥

पज्ज मणु वायरग्गि, वेमाणिय भवण निरय वंतरिया।
जोइस चउ पण तिरिया, वेइंदिय तेइंदिय भू आऊ ॥३९॥

वाऊ वणस्सइ च्चिय, अहिया अहिया कमेणिमे हुंति।
सव्वेवि इमे भावा, जिममएऽणंतसो पत्ता ॥४०॥

संपइ तुम्ह भत्तस्स, दंडग पय-भमण भग्ग-हिययस्स।
दंडतिय-विरय-सुलह, लहु मम दिंतु मुक्खपयं ॥४१॥

सिरि जिण हंस मुणीसर, रज्जे सिरि धवलचंद सीसेण।
गजसारेण लिहिया, एसा विन्नति अप्पहिया ॥४२॥



श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी रचित :—

॥ श्री लघुसंग्रहणी-प्रकरणम् ॥

नमिय जिणं सव्वन्नुं, जगपुज्जं जगगुरुं महावीरं।
जंबूदीव पयत्थे, वुच्छं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥

खंडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ ।
विजय-दह-सलिलाओ, पिंडेसिं होइ संघयणी ॥२॥

नउअ सयं खंडाणं, भरह-पमाणेण भाइए लक्खे ।
अहवा नउअ-सयगुणं, भरह-पमाणं हवइ लक्खं ॥३॥

अहविग खंड भरहे, दो हिमवंते अ हेमवइ चउरो ।
अट्ठ महा हिमवंते, सोलस खंडाइं हरिवासे ॥४॥

बत्तीसं पुण निसढे, मिलिआ तेसट्ठी बीयपासे वि ।
चउसट्ठीऊ विदेहे, तिरासि पिंडेई नउय-सयं ॥५॥

जोयण परिमाणाइं, समचउरंसाइं इत्थ खंडाइं ।
लक्खस्स य परिहीए, तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥

विक्खंभ वग्ग दह गुण, करणी वट्टस्स परिरओ होई ।
विक्खंभ पाय गुणिओ, परिरओ तस्स गणियपयं ॥७॥

परिही तिलक्ख सोलस, सहस्स दो य सय सत्तवीसहिया ।
कोस तिग-ट्ठावीसं, धणुसय तेरंगुलद्धहिअं ॥ ८ ॥

सत्तेव य कोडि सया, नउआ छप्पन्न सय-सहस्साइं ।
चउनउयं च सहस्सा, सय दिवड्ढं च साहियं ॥ ९ ॥

गाउअमेगं पन्नरस, धणूसया तह धणूणि पन्नरस ।
सट्ठिं च अंगुलाइं, जंबूदीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥

भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउरतिस वट्टियरे ।
सोलस वक्खार गिरी, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥११॥

दोसय कणय-गिरीणं, चउ गयदंता य तह सुमेरु य ।
छ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया दुन्नी ॥१२॥

सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडा य हुन्ति पत्तेयं ।
सोमणस गंधमायण, सत्तट्ठ य रुप्पि-महहिमवे ॥१३॥

चउतीस वियड्ढेसु, विज्जुप्पह–निसढ–नीलवंतेसु ।
तह मालवंत सुरगिरी, नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥१४॥

हिम-सिहरिसु इक्कारस, इय इगसिट्ठी गिरीसु कूडाणं ।
एगत्ते सव्वधणं, सय–चउरो सत्तसट्ठीय ॥ १५ ॥

चउ-सत्त-अट्ठ-नवगे, गारस कूडेहिं गुणह जहसंखं ।
सोलस दु दु गुणयालं, दुवे य सगसट्ठी सय-चउरो ॥१६॥

चउतीसं विजएसु, उसह कूडा अट्ठ मेरु जंबुम्मि ।
अट्ठ य देवकुराए, हरिकूड हरिस्सहे सट्ठी ॥१७॥

मागह वरदाम पभास, तित्थ विजयेसु एरवय-भरहे ।
चउतीसा तिहिं गुणिया, दुरुत्तर-सयं तु तित्थाणं ॥१८॥

विज्जाहर अभिओगिय, सेढीओ दुन्नि वेअड्ढे ।
इय चउगुण चउतीसा, छत्तीससयं तु सेढीणं ॥ १९ ॥

चक्की-जेअव्वाइं, विजयाइं, इत्थ हुन्ति चउतीसा।
महदह छप्पउमाइ, कुरुसु दसगं ति सोलसगं ॥२०॥

गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवइ चउ नइओ पत्तेयं।
चउदसहिं सहस्सेहिं, समगं वच्चंति जलहिंमि ॥२१॥

एवं अब्भितरिया, चउरो पुण अट्ठवीस सहस्सेहिं।
पुणरवि छप्पन्नेहिं, सहस्सेहिं जंति चउ सलिला ॥२२॥

कुरुमज्झे चउरासी, सहस्साइं तह य विजय सोलसेसु।
वतीसाण नईणं, चउदस सहस्साइं पत्तेयं ॥ २३ ॥

चउदस सहस्स गुणिया, अडतीस नइयो विजयमज्झिल्ला ।
सिओयाए निवडंति, तह य सीयाए एमेव ॥ २४ ॥

सीया सीओया वि य, बत्तीस-सहस्स पंच-लक्खेहिं।
सव्वे चउदस-लक्खा, छप्पन्न-सहस्स मेलविया ॥२५॥

छ ज्जोयणे सकोसे, गंगा-सिधूण-वित्थरो मूले।
दस गुणिओ पज्जंते, इय दु दु गुणणेण सेसाणं ॥२६॥

जोयण सयमुच्चिट्ठा, कणयमया सिहरि चुल्ल हिमवंता।
रुप्पि-महाहिमवंता, दुसउच्चा रुप्प-कणमया ॥ २७ ॥

चत्तारि जोयण सए, उच्चिट्ठो निसढ नीलवंतो य।
निसढो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवंतगिरी ॥२८॥

सव्वेवि पव्वयवरा, समयखित्तम्मि मंदर विहूणा ।
धरणितले उवगाढा, उस्सेह–चउत्थ–भायंमि ॥२६॥

खंडाइ गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबु दीवस्स ।
संघयणी सम्मत्ता, रइया हरिभद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥



❀ भाष्य ❀

श्रीमद् देवेन्द्रसूरिजी महाराज कृत—

॥ श्री चैत्य वंदन भाष्य ॥

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइ-वंदणाऽऽइ-सुवियारं ।
बहुवित्ति-भास-चुण्णी, -सुयाऽणु सारेण वुच्छामि ॥१॥

दहतिग अहिगम पणगं, दुदिसि तिहुग्गह तिहा उ वंदणया ।
पणिवाय नमुक्कारा, वन्ना सोल सय सीयाला ॥ २ ॥

इगसीइ सयं तु पया, सगनउई संपया उ पण दंडा ।
बार अहिगार चउवंदणिज्ज, सरणिज्ज चउह जिणा ॥३॥

चउरो थुई निमित्तट्ठ, बारह हेऊ अ सोल आगारा ।
गुणवीस दोस उस्सग्ग, माण थुत्तं च सग वेला ॥४॥

दस आसायण चाओ, सव्वे चिइवंदणाइ ठाणाइं ।
चउवीस दुवारेहिं दुसहस्सा हुंति चउसयरा ॥ ५ ॥

तिन्नि निसिहि तिन्नि उ, पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा ।
तिविहा पूया य तहा, अवत्थतियभावणं चेव ॥ ६ ॥

तिदिसि निरिक्खण विरई, पय भूमि पमज्जणं च तिक्खुत्तो ।
वन्नाऽऽइतियं मुद्दा-तियं च तिविहं च पणिहाणं ॥७॥

घर-जिणहर-जिणपूआ, -वावारच्चायओ निसीहि तिगं ।
अग्गद्दारे मज्झे तइया, चिइवंदणा समए ॥ ८ ॥

अंजलिबद्धो अद्धो-णओ अ, पंचंगओ अ तिपणामा ।
सव्वत्थ वा तिवारं, सिराइनमणे पणामतियं ॥ ९ ॥

अंग-ऽग्ग-भाव भेया, पुप्फाहार थुईहिं पूयतिगं ।
पंचुवयारा अट्ठो-वयार, सव्वोवयारा वा ॥ १० ॥

भाविज्ज अवत्थतियं, पिंडत्थ पयत्थ रुवरहिअत्तं ।
छउमत्थ केवलित्तं, सिद्धत्तं चेव तस्सत्थो ॥११॥

न्हवणच्चगेहिं छउमत्थ-वत्थपडिहार गेहिं केवलियं ।
पलियंकुस्सग्गेहि अ, जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ॥१२॥

उड्ढाऽहोतिरिआणं, तिदिसाण निरिक्खणं चइज्जहवा ।
पच्छिम-दाहिण-वामाण, जिणमुहन्नत्थदिट्ठिजुओ ॥१३॥

वन्नतियं वन्नत्था-ऽऽलंवण, मालंवणं तु पडिमाइं ।
जोग-जिण-मुत्तसुत्ती, -मुद्दाभेएण मुद्दतियं ॥ १४ ॥

अन्नुन्नंतरि अंगुलि, -कोसाऽऽगारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्टोवरि कुप्पर, -संठिएहिं तह जोग मुद्दत्ति ॥१५॥

चत्तारि अंगुलाइं पुरओ, ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ ।
पायाणं उस्सग्गो एसा, पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥

मुत्तासुत्ती मुद्दा, जत्थ समा दोवि गब्भिआ हत्था ।
ते पुण निलाऽदेसे, लग्गा अन्ने अलग्गत्ति ॥१७॥

पंचंगो पणिवाओ थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ।
वंदण जिणमुद्दाए, पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥ १८ ॥

पणिहाणतिगं चेइअ, -मुणिवंदण-पत्थणासरुवं वा ।
मण-वय-काएगत्तं, सेसतिगत्थो य पयडुत्ति ॥१९॥

सचितदव्वमुज्झण, -मच्चित्तमणुज्झणं-मणेगत्तं ।
इगसाडि उत्तरासंगु अंजली सिरसि जिणदिट्ठे ॥२०॥

इय पंचविहाऽभिगमो, अहवा मुच्चंति रायचिण्हाइं ।
खग्गं छत्तोवाणह, मउडं चमरे अ पंचमए ॥ २१ ॥

वंदंति जिणे दाहिण-दिसिट्ठिया पुरिस वामदिसि नारी ।
नवकर जहन्न सट्ठिकर, जिट्ठ मज्झुग्गहो सेसो ॥२२॥

नमुक्कारेण जहन्ना, चिइवंदण मज्झ दंडथुइजुअला ।
पणदंड-थुइचउक्कग-थयपणिहाणेहिं उक्कोसा ॥२३॥

अन्ने बिंति इगेणं, सक्कत्थएणं जहन्नवंदणया ।
तद्दुगतिगेण मज्झा, उक्कोसा चउहिं पंचहिं वा ॥२४॥

पणिवाओ पंचंगो, दो जाणू करदुगुत्तमंगं च ।
सुमहत्थ नमुक्कारा, इग दुग तिग जाव अट्ठसयं ॥२५॥

अडसट्ठि अट्ठवीसा, नवनउयसयं च दुसयसग नउआ ।
दो गुणतीस दुसट्ठा, दु सोल अडनउअ सयदु वन्नसयं ॥२६॥

इय नवकार-समासमण, इरिय-सक्कत्थयाऽऽइ दंडेसु ।
पणिहाणेसु अ अदुरुत, वन्न सोलसयसीयाला ॥२७॥

नव बत्तीस-तित्तीसा, तिचत्त अडवीस सोलवीस पया ।
मंगल-इरिया-सक्कत्थयाइसु इगसीइसयं ॥ २८ ॥

अट्ठट्ठनवट्ठ य अट्ठवीस, सोलस य वीस वीसामा ।
कमसो मंगल इरिया, सक्कत्थयाऽऽईसु सग नउई ॥२९॥

वण्णट्ठसट्ठि नवपय, नवकारे अट्ठ संपया तत्थ ।
सगसंपय पयतुल्ला, सतरक्खर अट्ठमी दुपया ॥३०॥

'नवक्खरट्ठमी दुपय छट्ठी' ॥ इत्यन्ये ॥

परिणवाय अक्खराइं, अट्ठावीसं तहा य इरियाए ।
नवनउयमक्खरसयं, दुतीसपय संपयां अट्ठ ॥३१॥

दुग दुग इग चउ, इग पण इगार छग इरिय संपयाऽऽइपिया ।
इच्छा इरि गम पाणा, जे मे एगिंदि अभि तस्स ॥३२॥

अब्भुवगमो निमित्तं ओहे-यर हेउ संगहे पंच ।
जीव-विराहण-पडिक्कमण, भेयओ तिन्नि चूलाए ॥३३॥

दुत्तिचउ पण पण पण, दु चउ ति पयसक्कत्थय संपयाऽऽइपया ।
नमु आइग पुरिसो, लोगु अभय धम्मऽप्प जिण सव्वं ॥३४॥

थोअव्व संपया ओह, इयरहेऊवओग तद्धेऊ ।
सविसेसुवओग सरुव, हेउ नियसमफलय मुक्खे ॥३५॥

दोसगनउया वन्ना, नव संपय पय तितीस सक्कत्थए ।
चेइयथयट्ठ संपय तिचत्तपय वन्न दुसय गुण तीसा ॥३६॥

दुछसगनव तिय, छचउ छप्पय चिइसंपया पया पढमा ।
अरिहं वंदण सद्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥३७॥

अब्भुवगमो निमित्तं, हेऊ इग बहुवयंत आगारा ।
आगंतुग आगारा, उस्सग्गवहि सरुवट्ठ ॥ ३८ ॥

नामथयाइसु संपय, पयसम अडवीस सोल वीस कमा ।
अदुरुत्तवन्न दोसट्ठ-दुसय सोलट्ठनउअ सयं ॥३९॥

पणिहाणि दुवन्नसयं, कमेण सग ति-चउवीस-तित्तीसा ।
गुणतीस अट्ठवीसा चउतीसि-ग तीस बार गुरुवन्ना ॥४०॥

पण दंडा सक्कत्थय, चेइय नाम सुत्र सिद्धत्थय इत्थ ।
दो इग दो दो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥४१॥

नमु जेत्र अ अरिहं, लोग सव्व पुक्ख तम सिद्ध जो देवा ।
उज्जि चत्ता वेत्रा वच्चग अहिगार पढम पया ॥४२॥

पढमहिगारे वंदे, भावजिणे बीयत्रंमि दव्वजिणे ।
इगचेइय ठवणजिणे, तइय चउत्थंमि नाम जिणे ॥४३॥

तिहुअण ठवणजिणे, पुणपंचमए विहरमाण जिण छट्ठे ।
सत्तमए सुत्रनाणं, अट्ठमए सव्वसिद्धथुई ॥ ४४ ॥

तित्थाऽहिव वीरथुई, नवमे दसमे य उज्जयंत थुई ।
अट्ठावयाइ इगदसि, सुदिट्ठिसुरसमरणा चरिमे ॥४५॥

नव अहिगारा इह ललिय, वित्थरा वित्तिमाइ अणुसारा ।
तिन्नि सुत्रपरंपरया, बीत्रो दसमो इगारसमो ॥४६॥

आवस्सय चुन्नीए, जं भणियं सेसया जहिच्छाए ।
तेणं उज्जिताऽऽइ वि, अहिगारा सुउमया चेव ॥४७॥

बीत्रो सुत्रत्थयाइ, अत्थत्रो वन्नित्रो तहिं चेव ।
सक्कत्थयंते पढित्रो, दव्वारिह वसरि पयडत्थो ॥४८॥

असढाइन्नणवज्जं, गीअत्थ आवरयंति मज्झत्था ।
आयरणा वि हु आण,-त्ति वयणओ सुवहु मन्नंति ॥४९॥

चउवंदणिज्ज जिणमुणि, सुय सिद्धा इह सुरा य सरणिज्जा ।
चउह जिणा नाम-ठवण, दव्व भाव जिण भेएणं ॥५०॥

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिंदपडिमाओ ।
दव्वजिणा जिणजीवा, भाव जिणा समवसरणत्था ॥५१॥

अहिगय जिण पढमथुई, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स ।
वेयावच्चगराणं, उवओगत्थं चउत्थ-थुई ॥ ५२ ॥

पाव खवणत्थ इरियाइ, वंदण-वत्तियाइ छ निमित्ता ।
पवयण सुर सरणत्थं, उस्सग्गो इअ निमित्तट्ठं ॥५३॥

चउ तस्स उत्तरीकरण, पमुह सद्धाइया य पण हेऊ ।
वेयावच्चगरत्ताइ, तिन्नि इअ हेउ वारसगं ॥ ५४ ॥

अन्नत्थयाइ वारस, आगारा एवमाइया चउरो ।
अगणी पणिंदिछिंदण, बोहीखो-भाई डक्को य ॥५५॥

घोऽगलय-खंभाई, मालुद्धी निअल सबरि खलिण वहू ।
लंबुत्तर थण संजइ, भमुहंगुलि वायस कविट्ठो ॥५६॥

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे ।
लंबुत्तर थण संजइ, न दोस समणीण सवहु सड्ढीणं ॥५७॥

इरिउस्सग्गपमाणं, पणवीसुस्सास अट्ठ सेसेसु ।
गंभीर महुरसद्दं, महत्थजुत्तं हवइ थुत्तं ॥५८॥

पडिकमणे चेइय, जिमण चरम पडिकमण सुअण पडिबोहे ।
चिइवंदण इय जइणो, सत्त उ वेला अहोरत्ते ॥५९॥

पडिकमओ गिहिणोवि, हु सगवेला पंचवेल इयरस्स ।
पूआसु तिसंझासु अ होइ तिवेला जहन्नेणं ॥६०॥

तंबोल पाण भोयणु-वाणह, मेहुन्न सुअण निट्ठवणं ।
मुत्तु-चारं जूअं वज्जे, जिणनाहजगईए ॥ ६१ ॥

इरि नमुक्कार नमुत्थुण, अरिहंत थुइ लोग सव्व थुइ पुक्ख ।
थुइ सिद्धा वेया थुइ, नमुत्थु जावंति थय जयवी ॥६२॥

सव्वोवाहिविसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे ।
देविंद विंद महिअं, परमपयं पावइ लहुं सो ॥६३॥



॥ श्री गुरुवंदन-भाष्यम् ॥

गुरुवंदणमह तिविहं, तं फिट्टा छोभ बारसाऽऽवत्तं ।
सिरनमणाइसु पढमं, पुन्नखमासमणदुगि बीअं ॥१॥

जइ दुओ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा ।
वीसज्जिओ वि वंदिय, गच्छइ एमेव इत्थ दुगं ॥२॥

आयारस्स उ मूलं, विणओ सो गुणवओ य पडिवत्ती ।
सा य विहिवंदणाओ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ३ ॥

तइयं तु छंदणदुगे, तत्थ मिहो आइमं सयलसंघे ।
बीयं तु दंसणीण य, पयट्ठियाणं च तइयं तु ॥४॥

वंदण चिइ किइकम्मं, पूयाकम्मं च विणयकम्मं च ।
कायव्वं कस्स व ? केण, वावि ? काहे व कइ खुत्तो ॥५॥

कइओणयं कइसिरं, कइहि व आवस्सएहि परिसुद्धं ।
कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस कीरइ वा ॥ ६ ॥

पणनामपणाऽहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउ अदाया ।
चउदाय पण निसेहा, चउ अणिसेह–ट्ठकारणया ॥७॥

आवस्सय मुहणंतय, तणुपेहपणीस दोस बत्तीसा ।
छ-गुण गुरुठवण दुग्गह, दुअवीसक्खर गुरुपणीसा ॥८॥

पय अडवन्न छठाणा, छगुरुवयणा आसायणतित्तीसं ।
दुविही दु-वीसदारेहिं, चउसया बाणउइ ठाणा ॥६॥

वंदणयं चियकम्मं, किइकम्मं पूअकम्मं विणयकम्मं ।
गुरुवंदणपणनामा, दव्वे भावे दुहोहेणा (दुहाहरणा) ॥१०॥

सीयलय खुड्डए वीर, कन्ह सेवगन्दु पालए संबे ।
पंचे ए दिट्ठंता, किइकम्मे दव्वभावेहि ॥ ११ ॥

पासत्थो ओसन्नो, कुसील संसत्तओ अहाच्छंदो ।
दुग-दुग-ति-दु-रोगविहा, अवंदणिज्जा जिणमयंमि ॥१२॥

आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ।
किइकम्म निज्जरट्ठा, कायव्वमिमेसि पंचण्हं ॥१३॥

साय-पिय-जिट्ठभाया, -ओमावि तहेवसव्वरायणिए ।
किइकम्म न कारिज्जा, चउ समणाई कुणंति पुणो ॥१४॥

विक्खित्त पराहुत्ते, अपमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा ।
आहारं नीहारं, कुणमाणे काउ-कामे य ॥१५॥

पसंते आसणत्थे अ, उवसंते उवट्ठिए ।
अणुन्नवित्तु मेहावी, किइकम्मं पउंजइ ॥ १६ ॥

पडिकमणे सज्झाए, काउसग्गाऽवराह–पाहुणए ।
आलोयण–संवरणे, उत्तमऽट्ठे य वंदणयं ॥१७॥

दोऽवण यमहाजायं, आवत्ता वार चउसिर तिगुत्तं ।
दुपवेसिगनिक्खमणं, पणवीसाऽऽवसय किइकम्मे ॥१८॥

किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्मनिज्जराभागी ।
पणवीसामन्नयरं, साहू ठाणं विराहंतो ॥ १९ ॥

दिट्ठिपडिलेह एगा, छ उड्ढ पप्फोड तिग-तिगंतरिया ।
अक्खोड पमज्जणाया, नव नव मुहपत्ति पणवीसा ॥२०॥

पायाहिणेण तिय तिय, वामेयरबाहु-सीस-मुह हियए ।
अंसुड्ढाहो पिट्ठे, चउ छप्पय देहपणवीसा ॥२१॥

आवस्सएसु जह जह, कुणइ पयत्तं अहीणमइरित्तं ।
तिविहकरणोवउत्तो, तह तह से निज्जरा होई ॥२२॥

दोस अणाढिय थड्ढिय, पविद्ध परिपिंडियं च टोलगइं ।
अंकुस कच्छभ रिंगिय, मच्छुव्वत्तं मणपउट्ठं ॥२३॥

वेइयबद्ध भयंतं, भय गारव मित्त कारणा तिन्नं ।
पडिणीय रुट्ठ तज्जिय, सढ हीलिय विपलिउंचिययं ॥२४॥

दिट्ठ मदिट्ठं सिगं, कर तम्मोअण अलिद्धणालिद्धं ।
ऊणं उत्तरचूलिअ, मूअं ढड्ढर चुडलियं च ॥२५॥

बत्तीस दोसपरिसुद्धं, किइकम्मं जो पउंजइ गुरुणं ।
सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमाणवासं वा ॥२६॥

इह छच्च गुणा विणओ,-वयार माणाइभंग गुरुपूआ ।
तित्थयराण य आणा, सुयधम्माऽऽराहणाकिरिया ॥२७॥

गुरु गुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्ज अहव तत्थ अक्खाई ।
अहवा नाणाइ तियं, ठविज्ज सक्खं गुरु अभावे ॥२८॥

अक्खे वराडए वा, कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ।
सब्भावमसब्भावं, गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥ २९ ॥

गुरुविरहंमि ठवणा, गुरुवएसोवदंसणत्थं च ।
जिणविरहंमि जिणबिंब, सेवणामंतणं स हलं ॥३०॥

चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुट्ठ तेरस करे सपरपक्खे ।
अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउं ॥३१॥

पण तिग बारस दुग तिग, चउरो छट्ठाण पय इगुणतीसं ।
गुणतीस सेस, आवस्सयाइ सव्वपय अडवन्ना ॥३२॥

इच्छा य अणुन्नवणा, अव्वाबाहं च जत्त जवणा य ।
अवराह खमणावि अ, वंदणदायस्स छट्ठाणा ॥३३॥

छंदेणणुजाणामि, तहत्ति तुब्भंपि वट्टए एवं ।
अहमवि खामेमि तुमं, वयणाइं वंदणऽरिहस्स ॥३४॥

पुरओ पक्खाऽऽसन्ने, गंता चिट्ठण निसीअणाऽऽयमणे ।
आलोअणऽपडिसुणणे, पुव्वाऽऽलवणे य आलोए ॥३५॥

तह उवदंस निमंतण, खद्धा-ययणे तहा सुपडिसुणणे ।
खद्धत्ति य तत्थगए, किं तुम तज्जाय नो सुमणे ॥३६॥

नो सरसि कहं छित्ता, परिसंभित्ता अणुट्ठियाइ कहे ।
संथारपायघट्टण, चिट्ठुच्च समासणे आवि ॥३७॥

इरिया कुसुमिणुसग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणाऽऽलोयं ।
वंदण खामण वंदण, संवर चउछोभ दुसज्झाओ ॥३८॥

इरिया-चिइवंदण-पुत्ति, वंदण-चरिम-वंदणाऽऽलोयं ।
वंदण खामण चउछोभ, दिवसुस्सग्गो दुसज्झाओ ॥३९॥
एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवंति कम्मं, अणेगभवसंचिअमणंतं ॥४०॥
अप्पमइ भव्वबोहऽत्थ, भासियं विवरियं च जमिह मए ।
तं सोहंतु गीयत्था, अणभिनिवेसी अमच्छरिणो ॥४१॥



॥ श्री पच्चक्खाण भाष्यम् ॥

दस पच्चक्खाण चउविहि, -आहार दुवीसगार अदुरुत्ता ।
दस विगइ तीस विगई, गय दुहभंगा छसुद्धि फलं ॥१॥
अणागय-मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटि अणगारं ।
सागार निरव सेसं, परिमाणकडं सके अद्धा ॥२॥
नवकार सहिय पोरिसि, पुरिमड्ढे-गासणे-गठाणे य ।
आयंबिल अभतट्ठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगई ॥३॥
उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चक्ख उग्गए सूरे ।
सूरे उग्गए पुरिमं, अभतट्ठं पच्चक्खाइ त्ति ॥४॥
भणइ गुरु सीसो पुण, पच्चक्खामि त्ति एव वोसिरइ ।
उव ओगित्थ पमाणं, न पमाणं वंजणच्छलणा ॥५॥

पढमे ठाणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइयंमि ।
पाणस्स चउत्थंमि, देसवगासाइ पंचमए ॥ ६ ॥

नमु पोरिसि सड्ढा पुरि, -मवड्ढ अंगुट्ठमाइ अड तेर ।
निवि विगइंबिल तिय तिय, दु इगासण एगठाणाई ॥७॥

पढमंमि चउत्थाई, तेरस बीयंमि तइय पाणस्स ।
देसवगासं तुरिए, चरिमे जह संभवं नेयं ॥ ८ ॥

तह मज्झपच्चक्खाणेसु, न पिहु सूरुग्गयाइ वोसिरइ ।
करणविहि उ न भन्नइ, जहाऽऽवसीआइ बियछंदे ॥६॥

तह तिविह पच्चक्खाणे, भन्नंति य पाणगस्स आगारा ।
दुविहाऽऽहारे अचित्त, -भोइणो तह य फासुजले ॥१०॥

इत्तुच्चिय खवणंबिल, -निवियाइसु फासुयं चिय जलं तु ।
सड्ढा वि पियंति तहा, पच्चक्खंति य तिहाऽऽहारं ॥११॥

चउहाऽऽहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिह चउहा ।
निसि पोरिसि पुरिमेगाऽऽसणाइ सड्ढाण दुतिचउहा ॥१२॥

खुहपसम खमेगागी, आहारि व एइ देइ वा सायं ।
खुहिओ वा खिवइ कुट्ठे, जं पंकुवमं तमाहारो ॥१३॥

असणे मुग्गो-अण-सत्तु, मंड-पय-खज्ज-रब्ब-कंदाई ।
पाणे कंजिय-जव-कयर, -कक्कडोदग-सुराइ जलं ॥१४॥

साइमे मत्तोस फलाऽऽई, साइमे सुंठि जीर अजमाई ।
महु गुड तंबोलाई, अणाहारे मोय निबाई ॥१५॥

दो नवकारि छ पोरिसि, सग पुरमड्ढे इगासणे अट्ठ ।
सत्तेगठाणि अंबिलि, अट्ठ पण चउत्थि छप्पाणे ॥१६॥

चउ चरिमे चउभिग्गहि, पण पावरणे नवट्ठ निव्वीए ।
आगारुक्खित्तविवेग, मुत्तु दवविगइ नियमिट्ठ ॥ १७ ॥

अन्नसह दु नमुकारे, अन्नसह प्पच्छदिस य साहुसव्व ।
पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढे सत्त समहत्तरा ॥१८॥

अन्न सहस्सागरि अ, आउंटण गुरु अ पारिमहसव्व ।
एग-बियासणि अट्ठ, उ सग इगठाणे अउंट विणा ॥१९॥

अन्न सह लेवा गिह, उक्खित्त पडुच पारि महसव्व ।
विगई निव्विगइए, नव पडुचविणु अंबिले अट्ठ ॥२०॥

अन्न सह पारि मह, सव्व पंच खमणे छ पाणि लेवाई ।
चउ चरिमंगुट्ठाई ऽभिग्गहि, अन्न सह मह सव्व ॥२१॥

दुद्ध-महु-मज्ज तिल्लं, चउरो दवविगइ चउर पिंडदवा ।
घय-गुल-दहियं पिसियं, मक्खण-पक्कन्न दो पिंडा ॥२२॥

पोरिसि-सड्ढ-अवड्ढं, दुभत्त-निव्विगइ पोरिसाइ समा ।
अंगुट्ठ-मुट्ठि-गंठी, -सचित्तदव्वाइ ऽभिग्गहियं ॥ २३ ॥

विस्सरण मणाभोगो, सहसागारो सयं मुहपवेसो ।
पच्छन्नकाल मेहाई, दिसिविवज्जासु दिसिमोहो ॥२४॥

साहुवयण उग्घाडा, पोरिसि तणुसुत्थाया समाहित्ति ।
संघाइकज्ज महतर, गिहत्थवंदाइ सागारी ॥ २५ ॥

आउंटणमंगाणं, गुरु पाउणसाहु गुरु अब्भुट्ठाणं ।
परिठावण विहिगहिए, जईण पावरणि कटिपट्टो ॥२६॥

खरडिय लूहिय डोवाई, लेव संसट्ठ डुच्च मंडाई ।
उक्खित्त पिंडविगईण, मक्खियं अंगुलीहिं मणा ॥२७॥

लेवाडं आयामाइ, इयर सोवीरमच्छमुसिणजलं ।
धोअण वहुल ससित्थं उस्से इम इयर सित्थविणा ॥२८॥

पण चउ चउ चउ दु दुविह, छ भक्ख दुद्धाइ विगइ इगवीसं ।
ति दु ति चउविह, अभक्खा चउ महुमाई विगइ वार ॥२९॥

खीर घय दहिय तिल्लं, गुड(ल) पकन्नं छ भक्खविगईओ ।
गो-महिसि-उट्टि-अय, एलगाण पण दुद्ध अह चउरो ॥३०॥

घय दहिया उट्टिविणा, तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चऊ ।
दवगुड पिंडगुडादो, पक्कन्नं तिल्ल घयतलियं ॥३१॥

पयसाडि-खीर-पेया, ऽवलेहि-दुद्धट्टि दुद्धविगइगया ।
दक्ख बहु अप्पतंदुल, तच्चुन्नंबिल सहियदुद्धे ॥३२॥

निव्भंजण-वीसंदण, -पक्कोसहितरिय किट्टि-पक्कघयं ।
दहिए करव-सिहरिणि,-सलवणदहि-घोल-घोलवडा ॥३३॥

तिलकुट्टी निव्भंजण, पक्कतिल पक्कुसहितरिय तिल्लमली ।
सक्कर गुलवाणय पाय, खंड अद्धकढि इक्खुरसो ॥३४॥

पूरिय तवपूआ, बीअपूअ तन्नेह तुरियघाणाई ।
गुलहाणि जललप्पसि, अ पंचमो पुत्तिकयपूओ ॥३५॥

दुद्ध दही चउरंगुल, दवगुल गयतिल्ल एग भत्तुवरिं ।
पिंडगुडमक्खणाणं, अद्दाऽऽमलयं च संसट्ठं ॥३६॥

दव्वहया विगई विगइ, गय पुणो तेण तं हयं दव्वं ।
उद्धरिए तत्तंमि य, उक्किट्ठदवं इमं चन्ने ॥३७॥

तिलसक्कुलि वरसोलाइ, रायणंबाइ दक्खवाणाई ।
डोली तिल्लाई इय, सरसुत्तमदव्व लेवकडा ॥३८॥

विगइगया संसट्ठा, उत्तमदव्वा य निव्विगइयंमि ।
कारणजायं मुत्तुं कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥ ३९ ॥

विगइं विगईभीओ, विगइगयं जो उ भुंजए साहू ।
विगई विगइसहावा, विगई विगइं बला नेइ ॥ ४० ॥

कुत्तिय-मच्छिय-भामर, महुं तिहा कट्ठ पिट्ठ मज्ज दुहा ।
जल-थल-खगमंस, तिहा घयव्व मक्खण चउअभक्खा ॥४१॥

मण वयणकायमण वय, मणतणुवयतणु तिजोगि सग सत्त ।
कर कारणुमइ दुतिजुइ, तिकालि सीयालभंगसयं ॥४२॥

इयं च उत्तकाले, सयं च मण वयण तणूहिं पालणियं ।
जाणग जाणग पासित्ति, भंगचउगे तिसु अणुन्ना ॥४३॥

फासिय पालिय सोहिय, तिरियकिट्टिय आराहिय छ सुद्धं ।
पच्चक्खाणं फासिय, विहिणोचिय कालि जं पत्तं ॥४४॥

पालिय पुण पुण सरियं, सोहिय गुरुदत्त सेसभोयणओ ।
तीरिय समहियकाला, किट्टिय भोयण समयसरणा ॥४५॥

इयं पडिअरिअं, आराहियं तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा ।
जाणण विणउऽणु भासण, अणुपालण भावसुद्धित्ति ॥४६॥

पच्चक्खाणस्स फलं इह, परलोए य होइ दुविहं तु ।
इहलोए धम्मिलाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७ ॥

पच्चक्खाणमिणं सेविऊण, भावेण जिणवरुद्दिट्ठं ।
पत्ता अणंत जीवा सासयसुक्खं अणाबाहं ॥ ४८ ॥



॥ कर्मविपाकनामा प्रथम कर्मग्रंथ ॥

सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासओ वुच्छं ।
कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भन्नए कम्मं ॥१॥

पयइठिइरसपएसा, तं चउहा मोअगस्स दिट्ठंता ।
मूलपगइट्ठ उत्तर, पगई अडवन्नसय भेयं ॥ २ ॥

इह नाण दंसणावरण, -वेअमोहाउ नामगोआणि ।
विग्धं च पण नव दु, अट्ठवीस चउतिसयदुपणविहं ॥३॥

मइसुअओहीमण केवलाणि, नाणाणि तत्थ मइनाणं ।
वंजणवग्गह चउहा, मणनयणविणिंदियचउक्का ॥४॥

अत्थुग्गहईहावाय–धारणा, करणमणसेहिं छहा ।
इय अट्ठवीसभेअं, चउदसहा वीसहा व सुयं ॥५॥

अक्खरसन्नीसम्मं, साइअं खलु सपज्जवसिअं च ।
गमियं अंगपविट्ठं सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥६॥

पज्जयअक्खर पयसंघाया, पडिवत्ति तह य अणुओगो ।
पाहुड पाहुड पाहुड, वत्थू पुव्वा य स समासा ॥७॥

अणुगामिवड्ढमाणय,-पडिवाइइयर विहा छहा ओही ।
रिउमइविउलमई, मण–नाणं केवलमिग विहाणं ॥८॥

एसिं जं आवरणं पडुव्व, चक्खुस्स तं तया वरणं ।
दंसण चउ पणनिद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥६॥

चक्खुदिट्ठि अचक्खु, -सेसिंदिअओहि केवलेहिं च ।
दंसणमिहसमन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥१०॥

वन्नचउ अगुरुलहुचउ, तसाऽऽइदु-ति-चउर चक्कमिच्चाई ।
इअ अन्नावि विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२९॥

गइ आईण उकमसो, चउ पण पणातिपणपंच छ छक्कं ।
पणदुगपणट्ठ चउ दुग, इअ उत्तर भेय पण सट्ठी ॥३०॥

अडवीस जुआतिनवइ, संते वा पन्नर वंधणे तिसयं ।
वंधण संधायगहो, तणूसु सामण्णवण्ण चऊ ॥३१॥

इअ सत्तट्ठी वंधोदए य न य सम्मसीसया वंधे ।
वंधुदए सत्ताए, वीस दुवीसट्ठ वण्ण सयं ॥३२॥

निरय तिरि नर सुर गई, इग विअतिअ चउ पणिदि जाईओ ।
ओरालविउव्वाहारग, तेअ कम्मण पण सरीरा ॥३३॥

वाहूरु पिट्ठिसिर उर, उयरंग उवंग अंगुलीपमुहा ।
सेसा अंगोवंगा, पढम तणु तिगस्सु वंगाणि ॥३४॥

उरलाइ पुग्गलाणं, निवद्धवज्झंतयाण संवंधं ।
जं कुणइ जउसमं तं वंधणमुरलाइ तणु नामा ।
(उरलाइवंधणंनेयं) ॥३५॥

जं संघायइ उरलाइ, पुग्गले ति(त)ण गणं व दंताली ।
तं संघायं वंधण-मिव तणु नामेण पंचविहं ॥३६॥

ओरालवि उव्वाहारयाण, सगतेअकम्म जुत्ताणं ।
णववंधणाणि इअर दु, सहियाणं तिन्नि तेसिं च ॥३७॥

संघयणमट्ठिनिचओ, तं छद्धा वज्जरिसह नारयं ।
तह रिसहनारायं, नारायं अद्ध नारायं ॥ ३८ ॥

कीलिअ छेवट्ठं इह, रिसहो पट्टो अ कीलिआ वज्जं ।
उभओ मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९ ॥

सम चउरंसं निग्गोह, साइ खुज्जाइ वामणं हुंडं ।
संठाणा वण्णा किण्ह, नील लोहिअ हलिद्दसिआ ॥४०॥

सुरहि दुरही रसा पण, तित्तकडुकसायअंबिला महुरा ।
फासा गुरुलहुमिउखर, सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा ॥४१॥

नीलकसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं ।
सीअं च असुह नवगं, इक्कारसगं सुभं सेसं ॥४२॥

चउह गइव्वणु पुव्वी, गइपुव्विदुगं तिगंनियाऽऽउजुअं ।
पुव्वी उदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहग गई ॥४३॥

परघाउदया पाणी, परेसि बलिणंपि होइ दुद्धरिसो ।
ऊससिण लद्धि जुत्तो, हवेइ ऊसास नाम वसा ॥४४॥

रविबिंबे उ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ न उ जलणे ।
जमुसिणफासस्स,तहिं लोहिअवण्णस्स उदउत्ति ॥४५॥

अणुसिण पया सरुवं, जिअंग मुज्जोअए इहुज्जोआ ।
जइ देवुत्तर विक्किअ, जोइसखज्जोअमाइव्व ॥४६॥

अंगं न गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरुलहुअदया ।
तित्थेण तिहुअणस्सवि, पुज्जो से उदओ केवलिणो ॥४७॥

अंगोवंगनिअमणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं ।
उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयवलंबिगाईहिं ॥४८॥

बितिचउपणिंदिअतसा, वायरओ बायरा जिआ थूला ।
निअ निअपज्जत्तिजुआ, पज्जता छद्धि करणेहिं ॥४९॥

पत्तेअतणू पत्ते,–उदयणं दंतअट्ठिमाइ थिरं ।
नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्वजण इट्ठो ॥५०॥

सुसरा महुर सुहझुणी, आइज्जा सव्वलोअगिज्झवओ ।
जसओ जस कित्तीओ, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥५१॥

गोअं दुहुचनीअं, कुलाल इव सुघड़भु भलाइअं ।
विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु वीरिए अ ॥५२॥

सिरि हरिअसमं एअं, जह पडि कूलेण तेण रायाई ।
न कुणइ दाणाईअं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥ ५३ ॥

पडिणीअत्तणनिन्हव, उवघायपओसअंतराएणं ।
अच्चासायणयाए, आवरण दुगं जिओ जयई ॥५४॥

गुरुभक्ति खंति करुणा, वय जोग कसाय विजय दाणजुओ ।
दढधम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयओ ॥५५॥

उम्मग्ग देसणामग्ग, –नासणा देव दव्व हरणेहिं ।
दंसणमोहं जिणमुणि, चेइअ संघाऽऽइपडिणीओ ॥५६॥
दुविहंपिचरण मोहं, कसाय हासाइ विसयविवसमणो ।
बंधइ निरयाउ, महा रंभपरिग्गहरओ रुद्दो ॥५७॥
तिरियाउ गूढहिअओ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साऊ ।
पयईइ तणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥५८॥
अविरयमाई सुराउं, बालतओऽकाम निज्जरो जयइ ।
सरलो अगारविल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥५९॥
गुणपेही मयरहिओ, अज्झयणज्झावणा रुई निच्चं ।
पकुणइ जिणाइ भत्तो, उच्चं नीअं इअरहा उ ॥६०॥
जिणपूआ विग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं ।
इअ कम्मविवागोऽयं, लिहिओ देविंद सूरीहिं ॥६१॥



॥ कर्मस्तवनामा द्वितीय कर्मग्रन्थ ॥

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं ।
बंधुदओदीरणया, सत्तापत्ताणि खविआणि ॥ १ ॥
मिच्छे सासण मीसे, अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ।
निअट्टिअनिअट्टि सुहु, मुवसमखीणसजोगिअजोगिगुणा ॥२॥

अभिनव कम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीससयं ।
तित्थयरा हारग दुग, वज्जं मिच्छंमि सतरसयं ॥३॥

नरयतिग जाइथावर, चउ हुंडायवछिवट्ठ नपुमिच्छं ।
सोलंतो इगहिअसय, सासणि तिरि थीणदुहगतिगं ॥४॥

अणमज्झागिइसंघयण, चउ निउज्जो अकुख गइत्थित्ति ।
पणवीसंतो मीसे, चउसयरि दुआउअ अबंधा ॥५॥

सम्मे सगसयरि जिणा, उबंधि वइर नरति अविअ कसाया ।
उरलदुगंतो देसे, सत्तट्ठी तिअकसायंतो ॥ ६ ॥

तेवट्ठि पमत्ते सोग; अरइ अथिर दुग अजस-अस्सायं ।
वुच्छिज्ज छच्च सत्त व, नेइ सुरउं जया निट्ठं ॥७॥

गुणसट्ठि अप्पमत्ते, सुराउ बंधंतु जइ इहा गच्छे ।
अन्नह अट्ठावण्णा, जं आहार गदुगं बंधे ॥८॥

अडवन्न अपुव्वाइंमि, निद्दुगंतो छपन्न पणभागे ।
सुरदुग पणिंदि सुखगइ, तस नवउरलविणुतणुवंगा ॥९॥

सम चउर निमिण जिण वन्न, अगुरु लहु चउ छलंसि तीसंतो ।
चरमे छवीसबंधो, हासरइ कुच्छ भय भेओ ॥१०॥

अनिअट्ठिभागपणगे, इगेग हीणो दुवीसविहबंधो ।
पुम संजलण चउण्हं, कमेण छेओ सतर सुहुमे ॥११॥

चउदंसणुच्चजसनाण, विग्घदसगंति सोलसुच्छेओ ।
तिसु सायबंधछेओ, सजोगि बंधंतुऽणंतो अ ॥१२॥

उदओ विवागवेअण, मुदिरणमपत्ति इह दुवीससयं ।
सतरसयं मिच्छे मीस, सम्म आहार जिणणुदया ॥१३॥

सुहमतिगायवमिच्छ, मिच्छंतं सासणे इगार सयं ।
निरयाणु पुव्विणुदया, अणथावर इग विगल अंतो ॥१४॥

मीसे सयमणु पुव्वीऽणुदया, मीसो दएण मीसंतो ।
चउ सयमजए सम्मा, ऽणु पुव्विखेवाविअ कसाया ॥१५॥

मणुतिरिणु पुव्विविउवट्ठ, दुहगअणाइज्ज दुगसतर छेओ ।
सगसीइ देसितिरिगइ, आउ निउज्जोअ तिकसाया ॥१६॥

अट्ठच्छेओ इगसी, पमत्ति आहार जुअल पक्खेवा ।
थीणतिगाहारग दुग, छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥१७॥

सम्मत्तं तिमसंघयण, तियगच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे ।
हासाइछक्कअंतो, छसट्ठि अनिअट्ठि वेअतिगं ॥१८॥

संजलणतिगं छछेओ, सट्ठि सुहुमंमि तुरिअलोभंतो ।
उवसंतगुणे गुणसट्ठि, रिसह नारायदुगअंतो ॥१९॥

सगवन्न खीणदुचरिमि, निद्दुगंतो अ चरिमि पणवन्ना ।
नाणंतरायदंसण, चउ छेओ सजोगि बायाला ॥२०॥

तिरथुदयाउरलाथिर, खगइदुगपरित्ततिग छ संठाणा ।
अगुरुलहुवन्न चउनिमिण, तेअकम्माइ संघयणं ॥२१॥

दूसर सूसर साया, साएगयरं च तीस वुच्छेओ ।
बारस अजोगि सुभगा, ऽऽइज्ज जसऽन्नयर वेअणिअं ॥२२॥

तसतिग पणिंदि मणुआउ, गइजिणुच्चं ति चरिम समयंतो ।
उदउव्वु दीरणापर, मपमत्ताई सगगुणेसु ॥ २३ ॥

एसा पयडि तिगूणा, वेयणियाहार जुअल थीण तिगं ।
मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणु दीरगो भयवं ॥२४॥

सत्ता कम्माण ठिई, बंधाइ लद्ध अत्तलाभाणं ।
संते अडयालसयं, जा उवसमु विजिणु विअतइए ॥२५॥

अपुव्वाइ चउक्के, अणतिरि निरयाउविणु बियाल सयं ।
सम्माइचउसु सत्तग, खयंमि इगचत्त सयमहवा ॥२६॥

खवगं तु पप्प चउसुवि, पणयालं निरयतिरिसुराउविणा ।
सत्तगविणु अडतीसं जा, अनिअट्टीपढमभागो ॥ २७ ॥

थावर तिरिनिरयायव, दुग थीणतिगेग विगल साहारं ।
सोलखओ दुवीससयं, विअंसि विअतिअकसायंतो ॥२८॥

तइआइसु चउदसतेर, बार छपण चउ तिहिय सय कमसो ।
नपु इत्थिहासछगपुंस, तुरिअ कोह मयमायखओ ॥२९॥

सुहुमि दुसय लोहंतो, खीण दुचरिमेगसय दुनिद्दखओ ।
नवनवइ चरिम समए, चउदंसणनाण विग्घंतो ॥३०॥
पणसीइ सजोगि, अजोगि दुचरिमे देवखगइ गंधदुगं ।
फासट्ठ वन्नरसतणु, बंधणसंघायपण निमिणं ॥३१॥
संघयण अथिर संठाण, छक्क अगुरुलहुचउ अपज्जतं ।
सायं व असायं वा, परित्तुवंगतिग सुसर निअं ॥३२॥
बिसयरिखओ अ चरिमे, तेरसमणुअ तस तिग जसाइज्जं ।
सुभग जिणुच्च पणिंदिअ, सायासाए गयर छेओ ॥३३॥
नर अणुपुव्वि विणा वा, वारस चरिम समयंमि जो खविउं ।
पत्तो सिद्धिं देविंद, वंदिअं नमह तं वीरं ॥३४॥



॥ बंधस्वामित्वनामा तृतीय कर्मग्रन्थ ॥

बंधविहाण विमुक्कं, वंदिय सिरिवद्धमाणजिणचंदं ।
गइआईसु वुच्छं, समासओ बंधसामित्तं ॥ १ ॥
गइ इंदिए य काए, जोए वेए कसाय नाणे य ।
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ २ ॥
जिण सुर विउवाहारदु, देवाउ य निरय सुहुम विगल तिगं ।
एगिंदि थावरायव, नपु मिच्छं हुंड छेवट्ठं ॥ ३ ॥

अणमज्झा गिइसंघयण, कुखगइनियइत्थि दुहगथीणतिगं ।
उज्जोअ तिरिदुगंतिरि, नराउ नरउरल दुगरिसहं ॥४॥

सुरइगुण वीस वज्जं, इगसउ ओहेण वंधहिं निरया ।
तित्थविणा मिच्छि सयं, सासणि नपुचउविणा छनुई ॥५॥

विणु अणछवीस मीसे, विसयरि सम्मंमि जिणनराउ जुआ ।
इअ रयणाइसु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ६ ॥

अजिणमणुआउ ओहे, सत्तमिए नरदुगुच्चविणु मिच्छे ।
इगनवई सासाणे, तिरिआउ नपुंसचउ वज्जं ॥ ७ ॥

अणचउवीस विरहिआ, सनरदुगुच्चा य सयरि मीसदुगे ।
सतरसओ ओहिमिच्छे, पज्जतिरिया विणु जिणाहारं ॥८॥

विणुनिरयसोलसासणि, सुराउअणएगतीस विणु मीसे ।
ससुराउ सयरि सम्मे, बीअकसाए विणा देसे ॥९॥

इय चउगुणेसुवि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाई ।
जिणइक्कार सहीणं, नवसय अपज्जत्त तिरिअनरा ॥१०॥

निरयव्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदितिग सहिआ ।
कप्पदुगे वि य एवं, जिण हीणो जोइभवण वणे ॥११॥

रयणुव्व सणंकुमाराइ, आणयाइ उज्जोयचउरहिआ ।
अपज्जतिरिअव्व नवसय, मिगिंदिपुढविजलतरुविगले ॥१२॥

छनवइ सासणि-विणु सुहुमतेर, केइ पुणविंति चउनवइं ।
तिरिअनराऊहिं विणा, तणुपज्जत्ति न जंति जओ ॥१३॥

ओहु पणिंदितसे गई, तसे जिणिक्कार नरतिगुच्चविणा ।
मयवयजोगे ओहो, उरले नर भंगु तम्मिस्से ॥१४॥

आहारछग विणोहे, चउदससउ मिच्छि जिणपण गहीणं ।
सासणि चउनवइ विणा, तिरिअनराऊ सुहुमतेर ॥१५॥

अण चउवीसाइ विणा, जिणपणजुअ सम्मि जोगिणो सायं ।
विणु तिरिनराउ कम्मे वि, एवंमाहार दुगि ओहो ॥१६॥

सुरओहो वेउव्वे तिरिअनराउरहिओ अ तम्मिस्से ।
वेअतिगाइम विअतिअ, कसाय नव दु चउ पंच गुणा ॥१७॥

संजलणतिगे नव दस लोभे, चउ अजइ दुति अनाणतिगे ।
वारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहक्खाय चरिमचऊ ॥१८॥

मणनाणि सग जयाई, समइअच्छेअ चउ दुन्नि परिहारे ।
केवलदुगि दो चरमा, ऽजयाइ नव मइसुओहि दुगे ॥१९॥

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे ।
सुहुमि सठाणं तेरस, आहारगि निअ-निअ गुणो हो ॥२०॥

परमुवसमि वट्टंता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे ।
देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा ॥२१॥

ओहे अट्ठारसयं आहार, दुगूण-माइलेसतिगे ।
तं तित्थोणं मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो ॥२२॥

तेऊ निरयनवूणा, उज्जोअचउ निरयबार विणु सुक्का ।
विणु निरयबार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे ॥२३॥

सव्वगुण भव्वसन्निसु, ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छिसमा ।
सासणि असन्नि सन्नि व्व, कम्मणभंगो अणाहारे ॥२४॥

तिसु दुसु सुक्काइगुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ।
देविंद सूरिरइअं, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥ २५ ॥



॥ षडशीती चतुर्थ कर्म ग्रन्थ ॥

नमिअ जिणं जिअमग्गण, गुणठाणुवओग जोग लेसाओ ।
बंधप्पबहू भावे, संखिज्जाई किमवि वुच्छं ॥१॥

नमिय जिणं वत्तव्वा, चउदसजिणठाणएसु गुणठाणा ।
जोगुवओगो लेसा, बंधुदओदीरणा सत्ता ॥ २ ॥

तह मूलचउदमग्गण-ठाणेसु बासट्ठिउत्तरेसु च ।
जिअ गुण जोगुवओगा, लेसप्पबहुं च छट्ठाणा ॥३॥

चउदसगुणेसु जिअजो, गुवओगलेसा य बंधहेऊ य ।
बंधाईचउ अप्पा-बहुं च तो भावसंखाई ॥ ४ ॥

इह सुहुमबायरेगिंदि, बितिचउ अ संनिसन्निपंचिदी ।
अपज्जत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जिअटाणा ॥५॥

बायर असन्नि विगले, अपज्जि पढमबिअ सन्निअपज्जते ।
अजयजुअ सन्निपज्जे, सव्वगुणा मिच्छ सेसेसु ॥६॥

अपजत्तछक्कि कम्मुरल, मीस जोगा अपज्जसन्निसु ।
ते सविउव्वमीस एसु, तणुपज्जेसु उरल-मन्ने ॥७॥

सव्वे सन्निपज्जत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु ।
बायरि सवि उव्विदुगं, पज्जसन्निसु बार उवओगा ॥८॥

पज्जचउरिंदिअसन्निसु, दुदंसदुअनाण दससुचक्खुविणा ।
सन्निअपज्जे मणनाण, चक्खु केवलदुगविहूणा ॥ ९ ॥

सन्निदुगि छलेस, अपज्जबायरे पढमचउ ति सेसेसु ।
सत्तट्ठ बन्धुदीरण, संतुदया अट्ठ तेरससु ॥ १० ॥

सत्तट्ठ छेग बंधा संतुदया, सत्त अट्ठ चत्तारि ।
सत्तट्ठ छ पंच दुगं, उदीरणा सन्निपज्जत्ते ॥११॥

गइ इंदिए य काए जोए, वेए कसाय नाणेसु ।
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥१२॥

सुर नर तिरि निरयगई, इगबिअतिअचउ पणिंदि छक्काया ।
भूजल जलणा निलवण, तसा य मणवयण तणु जोगा ॥१३॥

वेअ नरित्थि नपुंसा, कसाय कोहमयमाय लोभत्ति ।
मइसुअवहिमण केवल, विभंगमइ सुअनाण सागारा ।१४॥

सामाइअछेअपरिहार, सुहुम अहखाय देसजय अजया ।
चक्खु अचक्खु ओही, केवल दंसण अणागारा ॥१५॥

किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भव्विअरा ।
वेअग खइगुवसम, मिच्छ मीस सासाण सन्निअरे ॥१६॥

आहारेअर भेआ, सुरनिरय विभंगमइसुओहि दुगे ।
सम्मत्ततिगे पम्हा, सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥१७॥

तमसन्नि अपज्जजुयं, नरे सबायर अपज्ज तेऊए ।
थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि दु दु विगले ॥१८॥

दस चरिम तसे अजया, हारगतिरि तणु कसाय दुअ नाणे ।
पढमतिलेसा भविअर, अचक्खुनपुमिच्छि सव्वेवि ॥१९॥

पजसन्नीकेवलदुगे, संजममणनाणदेसमणमीसे ।
पण चरिमपज्ज वयणे, तिय छ व पज्जिअर चक्खुंमि ।२०॥

थीनरपणिंदि चरमा, चउ अणहारे दुसन्नि छ अपज्जा ।
ते सुहुमअपज्ज विणा, सासणि इत्तो गुणे वुच्छं ॥२१॥

पणतिरि चउसुरनिरए, नरसन्निपणिंदिभव्वतसि सव्वे ।
इगविगलभूदगवणे, दु दु एगं गइतस अभव्वे ॥२२॥

वेअतिकसाय नव दस लोभे, चउ अजइ दुति अनाणतिगे।
बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चऊ ॥२३॥

मणनाणि सग जयाई, समइअ छेअ चउ दुन्नि परिहारे।
केवलदुगि दो चरिमा, जयाइ नव मइसुओहि दुगे।२४॥

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छतिगि देसे।
सुहुमे अ सठाणं तेर, जोग आहार सुक्काए ॥२५॥

असन्निसु पढमदुगं, पढमतिलेसासु छच दुसु सत्त।
पढमंतिमदुग अजया, अणहारे मग्गणासु गुणा ॥२६॥

सच्चेअर मीसअसच, मोस मणवय विउव्विआहारा।
उरलं मीसा कम्मण; इअ जोगा कम्म अणहारे ॥२७॥

नरगइ पणिंदि तसतणु, अचक्खुनरनपुकसाय सम्मदुगे।
सन्नि छलेसाहारग, भवमइसुअ ओहि दुगि सव्वे ॥२८॥

तिरि इत्थि अजयसासण, अनाण उवसम अभव्व मिच्छेसु।
तेराहारदुगूणा ते, उरल दुगूण सुरनिरए ॥२९॥

कम्मरलदुगं थावरि, ते सविउव्विदुग पंच इगि पवणे।
छ असन्निचरिमवइजुअ, ते विउव दुगूण चउ विगले।३०॥

कम्मुरलमीसविणु मण- वइ समइअछेअचक्खुमण नाणे।
उरलदुग कम्मपढमंतिम, मणवइ केवलदुगंमि ॥३१॥

मणवइ उरला परिहारि, सुहुमि नव ते उ मीसि सविउव्वा ।
देसे सवि उव्विदुगा, सकम्मुरल मीस अहखाए ॥ ३२ ॥

तिअनाणनाणपणचउ, दंसणबार जिअलक्खणुवओगा ।
विणु मण नाणदु केवल, नव सुरतिरिनिरय अजएसु ।३३॥

तसजोअ वेअ सुक्का, हारनर पणिंदि सन्नि भवि सव्वे ।
नयणेअर पणलेसा, कसाय दस केवलदुगूणा ॥३४॥

चउरिंदिअसन्नि दुअन्नाण, दुदंस इगबितिथावरि अचक्खु ।
तिअनाणदंसणदुगं, अनाण तिगि अभवि मिच्छदुगे ॥३५॥

केवलदुगेनिअदुगं, नव तिअनाणविणु खइअ अहक्खा ए ।
दंसणनाणतिगं, देसि मीसि अन्नाणमीसं तं ॥३६॥

मणनाण चक्खुवज्जा, अणहारे तिन्निदंसचउ नाणा ।
चउनाण संजमोवसम, वेअगे ओहिदंसे अ ॥३७॥

दो तेर तेर बारस मणे, कमा अट्ठ दु चउ चउ वयणे ।
चउ दु पण तिन्नि काए, जिअगुण जोगोवओगन्ने ॥३८॥

छसुलेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि भूदगवणेसु ।
पढमा चउरो तिन्नि उ, नारय विगलग्गिपवणेसु ।३९॥

अहक्खाय सुहुम केवल, दुगि सुक्काछावि सेसठाणेसु ।
रनिरयदेवतिरिआ, थोवा दु असंखणंतगुणा ॥४०॥

पणचउति दुएगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंतगुणा ।
तस थोव असंखग्गी, भूजलनिलअहिअ वणणंता ॥४१॥

मण वयण काय जोगी, थोवा असंखगुण अणंतगुणा ।
पुरिसा थोवा इत्थी, संखगुणाणंत गुण कीवा ॥४२॥

माणी कोही माई लोभी, अहिअ मणनाणिणो थोवा ।
ओहि असंखा मइसुअ, अहिअ सम असंख विब्भंगा ॥४३॥

केवलिणोणंतगुणा, मइसुअअन्नाणिणंतगुण तुल्ला ।
सुहुमा थोवा परिहार, संख अहखाय संखगुणा ॥४४॥

छेय समईय संखा, देस असंखगुण णंतगुण अजया ।
थोव असंख दुणंता, ओहि-नयण केवल अचक्खु ॥४५॥

पच्छाणुपुव्वि लेसा, थोवा दोऽसंख णंत दो अहिआ ।
अभविअर थोव णंता, सासण थोवोवसमसंखा ॥४६॥

मीसा संखा वेअग, असंखगुण खइअमिच्छ दु अणंता ।
सन्निअर थोवणंता-णहार थोवेअर असंखा ॥४७॥

सव्व जिअ ठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्जसन्निदुगं ।
सम्मे सन्नी दुविहो, सेसेसुं सन्निपज्जत्तो ॥४८॥

मिच्छदुगि अजइ जोगा, हारदुगूणा अपुव्वपणगे उ ।
मणवइउरलं सविउव्वि, मिसि सविउव्वि दुग देसे ॥४९॥

साहारदुग पमत्ते ते, विउवाहारमीस विणु इअरे ।
कम्मुरलदुगंताइम, मण वयण सजोगि न अजोगी ॥५०॥

तिअनाण दुदंसाइम, दुगे अजइ देसि नाणदंसतिगं ।
ते मीसि मीसा समणा, जयाइ केवल दु अंतदुगे ॥५१॥

सासणभावे नाणं, विउव्वगाहारगे उरलमिस्सं ।
नेगिदिसु सासाणो, नेहाहिगयं सुयमयं पि ॥५२॥

छसु सव्वा तेउतिगं, इगि छसु सुक्का अजोगि अल्लेसा ।
बंधस्स मिच्छ अविरइ, कसाइ जोगत्ति चउ हेऊ ॥५३॥

अभिगहिअमणभिगहिआ-भिनिवेसियसंसइयमणा भोगं ।
पण मिच्छ वार अविरइ, मणकरणानिअमु छजिअवहो ।५४॥

नव सोल कसाय पनर, जोग इअ उत्तरा उ सगवन्ना ।
इग चउ पण ति गुणेसु, चउतिदुइगपच्चओ बंधो ॥५५॥

चउमिच्छ मिच्छ अविरइ, पच्चइआ साय सोल पणतीसा ।
जोगविणु तिपच्चइआ- हारगजिणवज्जसेसाओ ॥ ५६ ॥

पणपन्न पन्ना तिअछहिअ, चत्त गुणचत्त छचउदुगवीसा ।
सोलस दस नव नव संत्त, हेउणो न उ अजोगिमि ॥५७॥

पणपन्न मिच्छि हारग, दुगूण सासाणि पन्नमिच्छविणा ।
मीसदुगकम्मअण विणु, तिचत्तमीसे अह छचत्ता ॥५८॥

सदुमीसकम्म अजए, अविरइ कम्मुरलमीस विकसाए।
मुक्तुगुणचत्त देसे, छवीस साहारदु पमत्ते ॥ ५६ ॥

अविरइइगारतिकसाय, वज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिआ।
चउवीस अपुव्वे, पुण दुवीस अविउव्वि आहारे ॥६० ॥

अछहाससोलवायरि, सुहुमे दस वेअ संजलण तिविणा।
खीणुवसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥६१॥

अपमत्तंता सत्तट्ठ, मीसअपुव्व बायरा सत्त।
बंधइ छस्सुहुमो, एग मुवरिमाऽबंधगाऽजोगी ॥६२॥

आसुहुमं संतुदए, अट्ठवि मोहविणु सत्त खीणंमि।
चउ चरिम दुगे अट्ठ उ, संते उवसंति सत्तुदए ॥६३॥

उइरंति पमत्तंता, सगट्ठ मीसट्ठ वेअ आउ विणा।
छग अपमत्ताइ तओ,छ पंच सुहुमो पणुवसंतो ॥६४॥

पण दो खीण दु जोगी, णुदीरगु अजोगि थोवउवसंता।
संखगुण खीण सुहुमा, निअट्टिअपुव्व सम अहिआ ॥६५॥

जोगि अपमत्त इअरे, संखगुणा देससासणा मीसा।
अविरइ अजोगिमिच्छा, असंखचउरो दुवेणंता ॥६६॥

उवसमखयमीसोदय, परिणामा दु नव टार इगवीसा।
तिअभेअ सन्निवाइअ, सम्मं चरणं पढमभावे ॥६७॥

वीए केवलजुअलं, सम्मं दाणाइलद्धिपण चरणं ।
तइए सेसुवओगा, पण लद्धी सम्मविरइदुगं ॥६८॥

अन्नाणमसिद्धत्ता, संजमलेसाकसायगइवेया ।
मिच्छं तुरिए भव्वा, भव्वत्तजिअत्त परिणामे ॥६९॥

चउ चउगईसु मीसग, परिणामुदएहिं चउ सखइएहिं ।
उवसमजुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदयखइए ॥७०॥

खयपरिणामि सिद्धा, नराण पणजोगुवसम सेढीए ।
इअ पनर सन्निवाइअ, भेया वीसं असंभविणो ॥७१॥

मोहेवसमो मीसो, चउवाइसु अट्ठकम्मसु अ सेसा ।
धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइए वि ॥७२॥

सम्माइचउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसंते ।
चउ खीणापुव्वे तिन्नि, सेसगुणठाण गेगजिए ॥७३॥

संखिज्जेगमसंखं, परित्तजुत्तनियपयजुयं तिविहं ।
एवमणंतं पि तिहा, जहन्नमज्झुक्कसा सव्वे ॥७४॥

लहु संखिज्जं दुच्चिअ, अओ परं मज्झिमं तु जा गुरुअं ।
जंबुद्दीवपमाणय, चउपल्लपरुवणाइ इमं ॥ ७५ ॥

पल्लाणवट्ठिअसलाग, पडिसलागमहासलागक्खा ।
जोअणसह सोगाढा, सवेइअंता ससिहभरिआ ॥७६॥

तो दीवुदहिसु इक्किक्क, सरिसवं खिविअ निट्ठिए पढमे ।
पढमंव तदंतं चिय, पुण भरिए तंमि तह खीणे ॥७७॥

खिप्पइ सलागपल्ले-गु सरिसवो इअ सलागखवणेणं ।
पुण्णो बीओ अ तओ, पुव्वंपि व तंमि उद्धरिए ॥७८॥

खीणे सलाग तइए, एवं पढमेहिं बीअयं भरसु ।
तेहिं तइअं तेहि य, तुरिअं जा किर फुडा चउरो ॥७९॥

पढमतिपल्लुद्धरिआ, दीवुदही पल्लचउसरिसवा य ।
सव्वो वि एगरासी, रूवूणो परमसंखिज्जं ॥८०॥

रूवजुअं तु परित्ता, संखं लहु अस्सरासिअब्भासे ।
जुत्तासंखिज्जं लहु, आवलिआसमयपरिमाणं ॥८१॥

बितिचउपंचमगुणणे कमा, सगासंख पढमचउसत्ता ।
णंता ते रूवजुआ, मज्झा रूवूण गुरु पच्छा ॥८२॥

इअ सुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअमिक्कसि चउत्थयमसंखं ।
होइ असंखासंखं, लहु रूवजुअं तु तं मज्झं ॥८३॥

रूवूणमाइमं गुरु; तिवग्गिउं तत्थिमे दसक्खेवे ।
लोगागासपएसा, धम्माऽधम्मेगजिअ देसा ॥८४॥

ठिइबंधज्झवसाया, अणुभागा जोगछेअपलिभागा ।
दुण्ह य समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥८५॥

संजलण नोकसाया, विग्घं इअ देसघाइ य अघाई ।
पत्तेयतणुऽट्ठाऊ, तसवीसा गोअदुगवन्ना ॥ १४ ॥

सुरनरतिगुच्चसायं, तसदस तणुवंग वइरचउरंसं ।
परघासग तिरिआऊ,वन्नचउ पणिंदि सुभखगई ।१५॥

बायाल पुण्णपगई, अपढमसंठाणखगइसंघयणा ।
तिरिदुगअसायनीओ-वघायइगविगलनिरयतिगं ।१६॥

थावरदसवन्नचउक्क, घाइ पणयाल सहिअ बासीई ।
पावपयडित्ति दोसु वि, वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥१७॥

नामधुवबंधिनवगं, दंसण पणनाण विग्घ परघायं ।
भयकुच्छमिच्छसासं, जिणगुणतीसा अपरिअत्ता ॥१८॥

तणुअट्ठ वेअ दुजुअल, कसाय उज्जोअगोअदुग निद्दा ।
तसवीसाउ परित्ता, खित्तविवागाऽणु पुव्वीओ ॥१९॥

घणघाइ दुगोअजिणा, तसिअरतिग सुभग दुभग चउसासं ।
जाइतिग जिअविवागा, आऊ चउरो भवविवागा ॥२०॥

नामधुवोदय चउतणु-वघायसाहारणिअरुजोअतिगं ।
पुग्गलविवागि बंधो, पयइठिइ रसपएस त्ति ॥२१॥

मूलपयडीण अडसत्त, -छेगबंधेसु तिन्नि भूगारा ।
अप्पतरा तिअ चउरो, अवट्ठिओ न हु अवत्तव्वो ॥२२॥

एगादहिगे भूओ एगाई, ऊणगंमि अप्पतरो ।
तम्मत्तोऽवट्ठियओ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥२३॥

नव छ चउ दंसे, दु दु ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस ।
तेरस नव पण चउ ति, दु इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि ॥२४॥

तिपणछ अट्ठनवहिआ वीसा, तीसेग तीस इग नामे ।
छस्सग अट्ठतिबंधा, सेसेसु य ठाण मिक्किक्कं ॥२५॥

वीसयर कोडिकोडी नामे, गोए अ सत्तरी मोहे ।
तीसियरचउसु, उदही निरयसुराउंमि तित्तीसा ॥२६॥

मुत्तुं अकसायठिइं, बार मुहुत्ता जहन्न वेअणिए ।
अट्ठट्ठ नामगोएसु, सेसएसुं मुहुत्तंतो ॥ २७ ॥

विग्घावरण असाए, तीसं अट्ठार सुहुमविगलतिगे ।
पढमागिइ संघयणे दस, दुसुवरिमेसु दुगवुड्ढी ॥२८॥

चालीस कसाएसु, मिउलहुनिद्धुण्ह सुरहिसिअमहुरे ।
दस दोसड्ढ समहिआ, ते हालिद्द बिलाईणं ॥२९॥

दस सुहविह गइउच्चे, सुरदुगथिरछक्कपुरिसरइहासे ।
मिच्छे सत्तरि मणुदुग, इत्थीसाएसु पन्नरस ॥३०॥

भयकुच्छ अरइ सोए, विउव्वितिरिउरलनिरयदुगनीए ।
तेअपण अथिरछक्के, तसचउ थावर इग पणिंदी ॥३१॥

नपुकुखगइसासचऊ, गुरुकक्खडरुक्खसीय दुग्गंधे ।
वीसं कोडाकोडी, एवइश्राबाह वाससया ॥३२॥

गुरु कोडिकोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्न मुहु बाहा ।
लहु ठिइ संखगुणूणा, नर तिरि आणाउ पल्लतिगं ॥३३॥

इग विगल पुव्व कोडी, पलिआऽसंखंस आउचउ अमणा ।
निरुवकमाण छमासा, अबाह सेसाण भवतंसो ॥३४॥

लहुठिइबंधो संजलण-लोहपणविग्घ नाण दंसेसु ।
भिन्नमुहुत्तं ते अट्ठ, जसुच्चे वारस य साए ॥३५॥

दोइगमासो पक्खो, संजलणतिगे पुमट्ठ वरिसाणि ।
सेसाणुक्को साओ, मिच्छत्तठिईइ जं लद्धं ॥३६॥

अयमुक्कोसो गिंदिसु, पलियाऽसंखंसहीण लहुबंधो ।
कमसोपणवीसाए, पन्ना सय सहस संगुणिओ ॥३७॥

विगलअसन्निसु जिट्ठो, कणिट्ठओ पल्लसंखभागूणो ।
सुरनिरयाउ समा दस, सहस्स सेसाउ खुहु भवं ॥३८॥

सव्वाण वि लहुबंधे, भिन्नमुहु अवाह आउजिट्ठे वि ।
केइ सुराउसमं, जिण मंत मुहू बिंति आहारं ॥३९॥

सत्तरस समहिआ, किर इगाणुपाणुंमि हुंति खुड्डभवा ।
सगतीससयतिहुत्तर, पाणू पुण इगमुहुत्तंमि ॥४०॥

पणसट्ठिसहस पणसय- छत्तीसा इगमुहुत्तखुड्डभवा ।
आवलिआणं दोसय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे ॥४१॥

अविरयसम्मो तित्थं, आहार दुगामराउ य पमत्तो ।
मिच्छदिट्ठी बंधइ, जिट्ठट्ठिइं सेस पयडीणं ॥४२॥

विगल सुहुमाउगतिगं, तिरिमणुआ सुरविउव्वि निरय दुगं ।
एगिंदिथावरायव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥

तिरि उरलदुगुज्जोअं, छिवट्ठ सुर निरय सेस चउगइआ ।
आहारजिणमपुव्वो, ऽनिअट्टिसंजलणपुरिसलहुं ॥४४॥

साय जसुच्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउव्विछ असन्नी ।
सन्नी वि आउ बायर, पज्जेगिंदी उ सेसाणं ॥४५॥

उक्कोसजहन्नेअर भंगा, साई अणाइ धुव अधुवा ।
चउहा सग अजहन्नो, सेसतिगे आउचउसु दुहा ॥४६॥

चउभेओ अजहन्नो, संजलणावरणनवगविग्घाणं ।
सेसतिगि साइ अधुवो, तह चउहा सेसपयडीणं ॥४७॥

साणाइअपुव्वंते, अयरंतो कोडिकोडिओ न हिगो ।
बंधो नहु हीणो, न य मिच्छे भविअर सन्निमि ॥४८॥

जइलहुबंधो बायर, पज्ज असंखगुण सुहुमपज्जऽहिगो ।
एसि अपज्जाण लहू, सुहुमेअर अपज्जपज्जगुरु ॥४९॥

लहु बिअपज्ज अपज्जे, अपजेअर बिअगुरुऽहिगो एवं ।
तिचउअसन्निसु, नवरं संखगुणो बिअ अमणपज्जे ॥५०॥

तो जइजिट्ठो बंधो, संखगुणो देस विरय हस्सि अरो ।
सम्मचउ सन्निचउरो, ठिइबंधाणुकम संखगुणा ॥५१॥

सव्वाणवि जिट्ठठिई, असुभा जं साइसंकिलेसेणं ।
इअरा विसोहिओ, पुण मुत्तुं नरअमरतिरि आउं ॥५२॥

सुहुमनिगोआइखण–प्पजोग बायर य विगलअमणमणा ।
अपज्जलहु पढमदुगुरु, पजहस्सिअरो असंखगुणो ॥५३॥

अपजत्ततसुक्कोसो, पज्जजहन्निअरु एव ठिइठाणा ।
अपजेअर संखगुणा, परमपजबिए असंखगुणा ॥५४॥

पइखणमसंखगुणविरिअ, अपजपइठिइमसंखलोगसमा ।
अज्झवसाया अहिआ, सत्तसु आउसु असंखगुणा ॥५५॥

तिरिनिरियतिजोआणं नरभवजुअ सचउपल्ल तेसट्ठं ।
थावरचउइगविगला, -यवेसु पणसीइ सयमयरा ॥५६॥

अपढमसंघयणागिइ- खगइअणमिच्छ दुहग थीणतिगं ।
निअनपुइत्थि दुतीसं, पणिदिसु अबंधठिइ परमा ॥५७॥

विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठं ।
पणसीइ सययबंधो, पल्लतिगं सुरविउव्वि दुगे ॥५८॥

समयादसंखकालं, तिरिदुगनीएसु आउ अंतमुहू ।
उरलि असंखपरट्टा, सायठिई पुव्वकोडूणा ॥५९॥

जलहिसयं पणसीअं, परघुस्सासे पणिंदि तसचउगे ।
बत्तीसं सुहविहगइ, पुम सुभगतिगुच्च चउरंसे ॥६०॥

असुखगइजाइआगिइ, संघयणाहारनिरयजोअदुगं ।
थिरसुभजस थावरदस, नपुइत्थी दुजुअलमसायं ॥६१॥

समयादंतमुहुत्तं, मणुदुगजिणवइरउरलुवंगेसु ।
तित्तीसयरा परमो, अंतमुहु लहूवि आउजिणे ॥६२॥

तिव्वो असुहसुहाणं, संकेसविसोहिओ विवज्जयओ ।
मंदरसो गिरिमहिरय, जलरेहासरिस कसाएहिं ॥६३॥

चउठाणाई असुहो, सुहऽन्नहा विग्घदेसआवरणा ।
पुमसंजलणिग दुतिचउ,-ठाणरसा सेस दुगमाइ ।६४॥

निंवुच्छुरसो सहजो, दुतिचउ भागकढि इक्कभागंतो ।
इगठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥६५॥

तिव्वमिग थावरायव, सुरमिच्छा विगल सुहुमनिरयतिगं ।
तिरिमणुआउ तिरिनरा, तिरिदुगछेवट्ठ सुरनिरया ॥६६॥

विउविसुराहारदुगं, सुखगइवन्न चउतेअजिणसायं ।
समचउपरघातसदस, पणिंदि सासुच्च खवगा उ ॥६७॥

तमतमगा उज्जोअं, सम्मसुरा मणुअउरल दुग वइरं ।
अपमत्तो अमराउं, चउगइ मिच्छा उ सेसाणं ॥६८॥

थीणतिगं अणमिच्छं, मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो ।
बिअ तिअकसाय, अविरय-देसपमत्तो अरइसोए ।६६॥

अपमाइ हारगदुगं, दुन्दिअसुवन्नहासरइकुच्छा ।
भयमुवघायमपुव्वो, अनिअट्टी पुरिससंजलणे ॥७०॥

विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुमविगलतिगआउं ।
वेउव्विछक्कममरा, निरया उज्जोअ उरलदुगं ॥७१॥

तिरिदुगनिअंतमतमा, जिणमविरय निरयविणिगथावरयं ।
आसुहमायव सम्मो व, सायथिरसुभजसा सिअरा ॥७२॥

तसवन्नतेअचउमणु, खगइदुगपणिंदि सासपरघुच्चं ।
संघयणागिइनपुथी, सुभगिअरतिमिच्छ चउ गइआ ।७३॥

चउतेअवन्नवेअणिअ, -नामणुक्कोस सेसधुवबंधी ।
घाईणं अजहन्नो गोए, दुविहो इमो चउहा ॥७४॥

सेसंमि दुहा-इग-दुग, -णुगाइ जा अभवणंतगुणिआणू ।
खंधा उरलोचिअवग्गणा, उ गह अगहणंतरिआ ।७५॥

एमेवविउव्वाहार, -तेअभासाणुपाणमणकम्मे ।
सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुलअसंखंसो ॥७६॥

इक्किक्कहिआ सिद्धा, णंतंसा अंतरेसु अग्गहणा ।
सव्वत्थ जहन्नुचिआ, निअणंतं साहिआ जिट्ठा ॥७७॥

अंतिमचउफास दुगंध, पंचवन्नरसकम्म खंध दलं ।
सव्वजिअणंत गुणरस, अणुजुत्तमणंतयपएसं ॥७८॥

एगपएसोगाढं, निअसव्वपएसओ गहेइ जिओ ।
थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिओ ॥७९॥

विग्घावरणे मोहे, सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे ।
तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिईविसेसेण सेसाणं ॥८०॥

निअजाइलद्धदलिआ, णंतंसो होइ सव्वघाईणं ।
बज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइसमयं ॥८१॥

सम्मदर सव्वविरई, अणवीसंजोअ दंसखवगे अ ।
मोहसमसंत खवगे, खीण सजोगि अर गुण सेढी ।८२॥

गुणसेढी दलरयणा, -णु समयमुदयाद संखगुणणाए ।
एयगुणा पुण, कमसो असंखगुण निज्जरा जीवा ॥८३॥

पलिआऽसंखंसमुहू, सासणइअर गुण अंतरं हस्सं ।
गुरु मिच्छि बे छसट्ठी, इयर गुणे पुग्गलद्धंतो ॥८४॥

उद्धारअद्धखित्तं, पलिअ तिहा समयवाससयसमए ।
केसवहारो दीवो, -दहिआउत साइपरिमाणं ॥८५॥

दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो ।
होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥८६॥

उरलाइ सत्तगेणं, एगजिओ मुअइ फुसिअ सव्वअणू ।
जत्तिअकालि स थूलो, दव्वे सुहुमो सगन्नयरा ॥८७॥

लोगपएसोसप्पिणि, -समया अणुभाग बंधठाणा य ।
जहतह कममरणेणं, -पुट्ठा खित्ताइथूलिअरा ॥ ८८ ॥

अप्पयर पयडिबंधी, उक्कडजोगी अ सन्निपज्जतो ।
कुणइ पएसुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥८६॥

मिच्छअजयचउआऊ, बितिगुणविणु मोहि सत्तमिच्छाई ।
छण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा बितिकसाए ॥६०॥

पण अनिअट्टी सुखगइ, नराउसुर सुभगतिग विउव्विदुगं ।
समचउरंसमसायं, वइरं मिच्छो व सम्मो वा ॥६१॥

निद्दापयलादुजुअल, -भयकुच्छातित्थ सम्मगो सुजई ।
आहार दुगं सेसा, उक्कोस पएसगा मिच्छो ॥६२॥

सुमुणी दुन्नि असन्नी, निरयतिग सुराउसुरविउव्विदुगं ।
सम्मो जिणं जहन्नं, सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥६३॥

दंसणछग भय कुच्छा, बितितुरिअ कसाय विग्घनाणाणं ।
मूलछगेऽणुक्कोसो, चउह दुहा सेसि सव्वत्थ ॥६४॥

सेढिअसंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणि पयडिठिइभेआ ।
ठिइबंधज्झवसाया, णुभागठाणा असंखगुणा ॥ ९५ ॥
तत्तो कम्मपएसा, अणंतगुणिआ तओ रसच्छेआ ।
जोगा पयडिपएसं, ठिइअणुभागं कसायाओ ॥९६॥
चउदसरज्जू लोगो, बुद्धिकओ सत्तरज्जुमाणघणो ।
तद्दीहेग पएसा सेढी, पयरो अ तव्वग्गो ॥९७॥
अणदंसनपुंसित्थी, वेअच्छक्कं च पुरिसवेअं च ।
दो दो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥९८॥
अणमिच्छ मीस सम्मं, तिआउइग विगल थीण तिगुजोअं ।
तिरिनिरय थावर दुगं, साहारायव अऽनपुत्थी ॥९९॥
छगपुम संजलणा दो, निद्दाविग्घावरणखए नाणी ।
देविंदसूरि लिहिअं, सयगमिणं आयसरणट्ठा ॥१००॥



॥ सप्ततिकानामा षष्ठ कर्मग्रन्थ ॥

सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोदय संतपयडिठाणाणं ।
वुच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥
कइ बंधंतो वेयइ ! कइ कइ वा संतपयडि ठाणाणि ।
मूलुत्तरपगईसु, भंगविगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥

अट्ठविहसत्त छव्बंधएसु, अट्ठेव उदयसंतंसा ।
एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबंधंमि ॥३॥

सत्तट्ठबंध अट्ठुदय, संत तेरससु जीवठाणेसु ।
एगंमि पंचभंगा, दो भंगा हुंति केवलिणो ॥४॥

अट्ठसु एगविगप्पो, छस्सुवि गुणसन्निएसु दुविगप्पो ।
पत्तेअं पत्तेअं, बंधोदयसंतकम्माणं ॥ ५ ॥

पंचनवदुन्निअट्ठा,—वीसा चउरो तहेव बायाला ।
दुन्नि अ पंच य भणिया, पयडीओ आणुपुव्वीए ॥६॥

बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराइए पंच ।
बंधोवरमेवि उदय, संतंसा हुंति पंचेव ॥७॥

बंधस्स य संतस्स य, पगइट्ठाणाइ तिण्णि तुल्लाइं ।
उदयट्ठाणाइं दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥८॥

बीआवरणे नवबंधए, (गे) सु चउपंच उदय नवसंता ।
छच्चउबंधे चेवं, चउबंधुदए छलंसा य ॥ ९ ॥

उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्चउसंता ।
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥१०॥

गोअंमि सत्तभंगा, अट्ठ य भंगा हवंति वेअणिए ।
पण नव नव पण भंगा, आउचउक्केवि कमसो उ ॥११॥

बावीस इक्कवीसा, सत्तरसं तेरसेव नव पंच।
चउ तिग दुगं च इक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१२॥

एगं व दो व चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा।
ओहेण मोहणिज्जे, उदयट्ठाणाणि नव हुंति ॥१३॥

अट्ठ य सत्त य छ चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा।
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥

संतस्सपयडिठाणाणि, ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस।
बंधोदयसंते पुण, भंगविगप्पा बहू जाण ॥१५॥

छब्बावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो।
नवबंधगे वि दुण्णि उ, इक्किक्कमओ परं भंगा ॥१६॥

दस बावीसे नव इगवीसे, सत्ताइ उदयकम्मंसा।
छाई नव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अट्ठेव ॥१७॥

चत्तारि आइ नवबंधएसु, उक्कोस सत्तमुदयंसा।
पंचविहबंधगे पुण, उदओ दुण्हं मुणेअव्वो ॥१८॥

इत्तो चउबंधाइ, इक्किक्कुदया हवंति सव्वेवि।
बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा हुज्जा ॥१९॥

इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव।
ए ए चउवीसगया बार, दुगिक्कंमि इक्कारा ॥२०॥

(पाठान्तरं-चउवीसद्दुगिक्किमिक्कारा, एतन्मतांतरं)

नवतेसीइसएहिं, उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा ।
अउणुत्तरिसीआला, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥२१॥

नव पंचाणउ असए, उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा ।
अउणुत्तरि एगुत्तरि, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥२२॥

तिन्नेव य बावीसे, इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे ।
छच्चेव तेरनवबंध, एसु पंचेव ठाणाणि ॥२३॥

पंचविह चउविहेसु, छछक्क सेसेसु जाण पंचेव ।
पत्तेअं पत्तेअं चत्तारि, अ बंधवुच्छेए ॥२४॥

दसनवपन्नरसाइं, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि ।
भणिआणि मोहणिज्जे, इत्तो नामं परं वुच्छं ॥२५॥

तेवीस पणवीसा, छव्वीसा अट्ठवीस गुणतीसा ।
तीसेगतीसमेगं, बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥

चउपणवीसा सोलस, नव बाणउईसया य अडयाला ।
एयालुत्तर छायाल, सया इक्किक्क बंधविही ॥२७॥

वीसिगवीसा चउवी,- सगा उ एगाहिआ य इगतीसा ।
उदयट्ठाणाणि भवे नव, अट्ठ य हुंति नामस्स ॥२८॥

इक्क विआलिक्कारस, तिचीसा छस्सयाणि तितीसा।
बारससत्तरससयाण, -हिगाणिविपंच सट्ठीहिं ॥२९॥

अउणत्तीसिक्कारस, सयाणिहिअ सत्तरपंचसट्ठीहिं।
इक्किक्कगं च वीसा, दट्ठुदयंतेसु उदयविही ॥३०॥

ति दुनउई गुणनउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई।
अट्ठयछप्पन्नत्तरि, नव अट्ठ य नाम संताणि ॥३१॥

अट्ठ य बारस बारस, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि।
ओहेणाएसेण य जत्थ, जहासंभवं विभजे ॥३२॥

नवपणगोदयसंता, तेवीसे पन्नवीस छव्वीसे।
अट्ठ चउरट्ठवीसे, नव सगि गुणतीस तीसंमि ॥३३॥

एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ संतंमि।
उवरयबंधे दस दस, वेअगसंतंमि ठाणाणि ॥३४॥

तिविगप्पपगइठाणेहिं, जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु।
भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहा संभवो भवइ ॥३५॥

तेरससु जीवसंखेवएसु, नाणंतराय तिविगप्पो।
इक्कंमि ति दुविगप्पो,करणं पइ इत्थ अविगप्पो॥३६॥

तेरे नव चउपणगं, नव संतेगंमि भंगमिक्कारा।
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥३७॥

पज्जत्तगसन्निअरे, अट्ठ चउक्कं च वेअणियभंगा ।
सत्त य तिगं च गोए, पत्तेअं जीवठाणेसु ॥ ३८ ॥

पज्जत्ता ऽपज्जत्तग समणे, पज्जतअमण सेसेसु ।
अट्ठावीस दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥३९॥

अट्ठसु पंचसु एगे, एग दुगं दस य मोहबंधगए ।
तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥

पण दुग पणगं, पण चउपणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।
पण छप्पणगं छच्छ,-प्पणगं अट्ठट्ठ दसगं ति ॥४१॥

सत्तेव अपज्जत्ता सामी, सुहुमा य बायरा चेव ।
विगलिंदिआउ तिन्निउ, तह य असन्नी अ सन्नी अ ॥४२॥

नाणंतराय तिविहमवि, दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ।
मिच्छासणे बीए, नव चउ पण नव य संतंसा ॥४३॥

मिस्साइ नियट्टीओ छ, चउ पण नव य संतकम्मंसा ।
चउबंध तिगे चउपण, नवंस दुसु जुअल छस्संता ॥४४॥

उवसंते चउ पण नव, खीणे चउरुदय छच्च चउ संता ।
वेअणिआउअ गोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥४५॥

चउछस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणिअभंगा ।
गोए पण चउ दो, तिसु एगट्ठसु दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥

अट्ठच्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च वारस छ दोसु ।
दो चउसु तीसु, इक्कं मिच्छाइसु आउए भंगा ॥४७॥

गुणठाणएसु अट्ठसु, इक्किक्कं मोहबंधठाणं तु ।
पंच अनिअट्टिठाणे, बंधोवरमो परं तत्तो ॥४८॥

सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायणमीसए नवुक्कोसा ।
छाइ नव उ अविरए, देसे पंचाइ अट्ठेव ॥४९॥

विरए खओवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि ।
अणिअट्टिवायरे पुण, इक्को व दुवे व उदयंसा ।५०॥

एगं सुहुमसरागो, वेएइ अवेअगा भवे सेसा ।
भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्वं ॥५१॥

इक्क छडिक्कारिक्का, रसेव इक्कारसेव नव तिन्नि ।
ए ए चउवीसगया, वार दुगे पंच इक्कंमि ॥५२॥

वारसपणसट्ठिसया, उदयविगप्पेहि मोहिआ जीवा ।
चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंदसएहि विन्नेआ ॥५३॥

अट्ठग चउ चउ चउरट्ठगा, य चउरो अ हुंति चउवीसा ।
मिच्छाइअपुव्वंता, वारस पणगं च अनिअट्टी ॥५४॥

जोगोवओगलेसा, -इएहि गुणिआ हवंति कायव्वा ।
जे जत्थ गुणट्ठाणे, हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥५५॥

अट्ठट्ठी बत्तीसं बत्तीसं, सट्ठिमेव बावन्ना ।
चोआलं दोसु वीसा, विअ मिच्छमाइसु सामन्नं ॥५६॥

तिन्नेगे एगेगं तिग, मीसे पंच चउसु तिग पुव्वे ।
इक्कार बायरंमि उ, सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥५७॥

छन्नव छक्कं तिग सत्त, दुगं दुग तिग दुगं ति अट्ठ चऊ ।
दुग छच्चउ दुग पण चउ,चउ दुग चउ पणग एग चऊ ।५८॥

एगेगमट्ठ एगे-गमट्ठ, छउमत्थकेवलिजिणाणं ।
एग चऊ एग चऊ अट्ठ, चऊदु छक्कमुदयंसा ॥५९॥

चउ पणवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य बाणउई ।
बत्तीसुत्तर छायाल-सया, मिच्छस्स बंधविही ॥६०॥

अट्ठ सया चउसट्ठी, बत्तीससयाइं सासणे भेआ ।
अट्ठावीसाईसुं, सव्वाण ऽट्ठहिगछन्नउई ॥ ६१ ॥

इगचत्तिगार बत्तीस, छसय इगतीसिगार नवनउई ।
सतरिगसि गुतीसचउद, इगारचउसट्ठि मिच्छुदया ॥६२॥

बत्तीस दुन्नि अट्ठ य, बासीइसयाय पंच नव उदया ।
बारहिआ तेवीसा, बावन्निक्कारस सया य ॥६३॥

दो छक्कट्ठ चउक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ।
नेरइआइसु सत्ता ति, पंच इक्कारस चउक्कं ॥६४॥

इग विगलिंदिश्र सगले, पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि ।
पण छक्किक्कोदया, पणपण बारस य संताणि ॥६५॥

इश्र कम्मपगइठाणाणि, सुट्ठु बंधुदय संतकम्माणं ।
गइश्राइएहिं अट्ठसु, चउप्पयारेण नेयाणि ॥६६॥

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
मुत्तूण य इगयालं, सेसाणं सव्वपयडीणं ॥ ६७ ॥

नाणंतराय दसगं, दंसणनव वेश्रणिज्जमिच्छत्तं ।
सम्मत्त लोभ वेश्रा, उश्राणि नवनाम उच्चं च ॥६८॥

तित्थयराहारगविरहिश्राओ, श्रज्जेइ सव्वपयडीओ ।
मिच्छत्तवेश्रगोसा, सणोवि गुणवीस सेसाओ ॥६९॥

छायालसेस मीसो, श्रविरयसम्मो तिश्रालपरिसेसा ।
तेवन्नं देसविरओ, विरओ सगवन्न सेसाओ ॥७०॥

इगुणट्ठिमप्पमत्तो, बंधइ देवाउ अस्स इअरोवि ।
श्रट्ठावन्नमपुव्वो, छप्पन्नं वावि छव्वीसं ॥७१॥

बावीसा एगूणं, बंधइ अट्ठारसंतमनिअट्टी ।
सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगुत्ति ॥७२॥

एसो उ बंधसामित्त, ओहो गइश्राइएसु तहेव ।
ओहाओ साहिज्जइ, जत्थ जहा पगइ सब्भावो ॥७३॥

तित्थयरदेवनिरया, -उअं च तिसु तिसु गईसु बोधव्वं ।
अवसेसा पयडीओ, हवंति सव्वासु वि गईसु ॥७४॥

पढमकसायचउक्कं, दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता ।
अविरयसम्मत्ताओ, जाव निअट्टित्ति नायव्वा ॥७५॥

सत्तट्ठ नव य पनरस, सोलस अट्ठारसेव गुणवीसा ।
एगाहि दु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥७६॥

सत्तावीसं सुहुमे, अट्ठावीसं च मोहपयडीओ ।
उवसंतवीअराए, उवसंता हुंति नायव्वा ॥७७॥

पढमकसायचउक्कं, इत्तो मिच्छत्तमीस सम्मत्तं ।
अविरयसम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥७८॥

अनिअट्टिबायरे थीण, गिद्धितिग निरयतिरिअनामाओ ।
संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ खीअंति ॥ ७९ ॥

इत्तो हणइ कसाय, -ट्ठगंपि पच्छा नपुंसगं इत्थीं ।
तो नोकसाय छक्कं, छुहइ संजलणकोहंमि ॥८०॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए ।
मायं च छुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥८१॥

खीणकसायदुचरिमे, निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो ।
आवरणमंतराए, छउमत्थो चरमसमयंमि ॥ ८२ ॥

देवगइसहगयाओ, दुचरमसमय भविअंमि खीअंति ।
सविवागे अरनामा, नीआगोअंपि तत्थेव ॥ ८३ ॥

अन्नयर वेयणीअं, मणुआउअमुच्चगोअनवनामे ।
वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोसजहन्नमिक्कारा ॥८४॥

मणुअगइजाइतसवायरं, - च पज्जत्त सुभगमाइज्जं ।
जसकित्ती तित्थयरं, नामस्स हवंति नव एआ ॥८५॥

तच्चाणुपुव्वि सहिआ, तेरसभवसिद्धि अस्स चरमंमि ।
संतं सगमुक्कोसं, जहन्नयं चारस हवंति ॥ ८६ ॥

मणुअगइसहगयाओ, भवखितत्रिवागजिअविवागाओ ।
वेअणिअन्नयरुच्चं, चरमसमयंमि खीअंति ॥८७॥

अहसुइअसयलजगसिहर, -मरुअनिरुवमसहावसिद्धिसुहं ।
अनिहणमव्वाबाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥ ८८ ॥

दुरहिगम-निउण-परमत्थ, रुइरवहुभंग दिट्ठिवायाओ ।
अत्था अणु सरिअव्वा, बंधोदय संत कम्माणं ॥८९॥

जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण बद्धोत्ति ।
तं खमिऊण वहुसुआ, पूरेऊणं परिकहंतु ॥९०॥

गाहग्गं सयरीए, चंदमहत्तरमयाणु सारीए ।
टीगाइ निअमिआणं, एगूणा होइ नउईओ ॥ ९१ ॥

—●—

॥ श्री वृहत् संग्रहणी ॥

नमिउं अरिहंताइ, ठिई भवणो-गाहणा य पत्तेयं ।
सुर-नारयाण वुच्छं, नर तिरियाणं विणा भवणं ॥१॥

उववाय-चवण-विरहं, सुखं इग-समइयं गमा-गमणे ।
दसवास सहस्साई, भवणवईणं जहन्न ठिइ ॥२॥

चमर वलिसार-महिअं, तदेवीणं तु तिन्नि चत्तारि ।
पलियाइं सट्ठाइं, सेसाणं नवनिकायणं ॥३॥

दाहिण दिवट्ठ पलियं, उत्तरओ हुन्ति दुन्नि देसूणा ।
तदेवी-मद्ध पलियं, देसूणं आउ-मुक्कोसं ॥ ४ ॥

वंतरियाण जहन्नं, दस वास सहस्स पलिय-मुक्कोसं ।
देवीणं पलियद्धं, पलियं अहियं ससि-खीणं ॥५॥

लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिय-मेअसि ।
ठिइ अद्धं देवीणं, कमेण नक्खत्त ताराणं ॥६॥

पलियद्धं चउभागो, चउ अड भागाहिगाउ देवीणं ।
चउजुअले चउभागो, जहन्न-मऽभाग पंचमए ॥७॥

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सत्तर अयर जा सुक्को ।
इक्किक्क-महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥८॥

तित्तीस-णुत्तरेसु, सोहम्माईसु इमा ठिइ जिट्ठा ।
सोहम्मे इसाणे, जहन्न ठिइ पलिय महियं च ॥९॥

दो साहि सत्तदस चउदस, सत्तर अयराइ जा सहस्सारो ।
तप्परओ इक्किक्कं, अहियं जाणुत्तर चउक्के ॥१०॥

इगतीस सागराई, सव्वट्ठे पुण जहन्न ठिइ नत्थि ।
परिग्गहियाणि-यराणि य, सोहम्मी-साण देवीणं ॥११॥

पलियं अहियं च कमा, ठिइ जहन्नाइओ य उक्कोसा ।
पलियाइं सत्त पन्नास, तह य नव पंचवन्ना य ॥१२॥

पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेय-मग्गमहिसीओ ।
असुर नागाइ वंतर, जोइस कप्प दुगिंदाणं ॥१३॥

दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे दुगे य चउ ।
गेविज्ज-णुत्तरे दस, बिसट्ठी पयरा उवरि लोए ॥१४॥

सोहमुक्कोसं ठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ संगुणिओ ।
पयरुक्कोस ठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥१५॥

सुरकप्पठिइ विसेसो, सग पंयर विहत्त इच्छ संगुणिओ ।
हिठिल्ल ठिइ सहिओ, इच्छिय पयरंमि उक्कोसा ॥१६॥

कप्पस्स अंतपयरे, निय कप्प-वडिंसया विमाणाओ ।
इंद निवासा तेसिं, चउदिसि लोगपालाणं ॥१७॥

सोम जमाणं सतिभाग, पलिय वरुणस्स दुन्नि देसूणा ।
वेसमणे दो पलिया, अेस ठिइ लोगपालाणं ॥१८॥

असुरा नाग सुवन्ना, विज्जु अग्गी य दीव उदही अ ।
दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवइतेसु दुदु इंदा ॥१९॥

चमरे बली अ धरणे, भूयाणंदे य वेणुदेवे य ।
तत्तो य वेणुदाली, हरिकंते हरिस्सहे चेव ॥२०॥

अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुन्न विसिट्ठे तहेव जलकंते ।
जलपह तह अमिअगइ, मियवाहणदाहिणुत्तरओ ॥२१॥

वेलंबे य पभंजण, घोस महाघोस एसि-मन्नयरो ।
जंबुदीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं ॥ २२ ॥

चउतीसा चउचत्ता, अट्ठतीसा य चत्त पंचण्हं ।
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२३॥

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ।
सव्वेवि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२४॥

रयणाए हिट्ठुवरिं, जोयण सहस्सं विमुत्तु ते भवणा ।
जंबुदीव समा तह, संख-मसंखिज्ज वित्थारा ॥२५॥

चुडामणि फणिगरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से य ।
गय मयर वद्धमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ॥२६॥

असुरा काला नागु दहि, पंडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया ।
कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियंगु निभा ॥२७॥

असुराण वत्थ रत्ता, नागो-दहि विज्जु दीव सिहि नीला ।
दिसि थणिय सुवन्नाणं, धवला वाउण संभ-रुइ ॥२८॥

चउ सट्ठि सट्ठि असुरे, छच्च सहस्साइ धरण माइणं ।
सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आयरक्खा य ॥२९॥

रयणाए पढम जोयण, सहस्से हिट्ठुवरिं सय सय विहूणे ।
वंतरियाणं रम्मा, भोमा नयरा असंखिज्जा ॥ ३० ॥

बाहिं वट्टा अंतो, चउरंसा अहो य कण्णिआयारा ।
भवणवइणं तह वंतराण, इंद भवणाओ नायव्वा ॥३१॥

तहिं देवा वंतरिआ, वर तरुणी गीय वाइय खेणं ।
निच्चं सुहिया पमुइया, गयं पिकालं न याणंति ॥३२॥

ते जंबुदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ।
वंतर पुण अट्ठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ॥३३॥

रक्खस किंनर किंपुरिसा, महोरगा अट्ठमा य गंधव्वा ।
दाहिणुत्तर भेया, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥३४॥

काले य महाकाले, सुरुव पडिरुव पुन्नभद्दे य ।
तह चेव माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ।३५॥

किनर किंपुरिसे सप्पुरिसा, महापुरिस तहय अइकाये ।
महाकाय गीयरइ, गीयजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥३६॥

चिंचं कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चपयए।
नागे तुंबरु अ भए, खट्टंग विवजिज्या रुक्खा ॥३७॥

जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्व साम किन्नरा नीला।
रक्खस किंपुरिसा विय, धवला भूया पुणो काला।३८॥

अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाइ भूयवाइए चेव।
कंदीय महाकंदी, कोहंडे चेव पयंगे य ॥३९॥

इय पढम जोयण सए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे।
तेसु इह सोलसिंदा, रुयग अहो दाहिणुत्तरओ।४०॥

संनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसीय इसीवाले।
इसर महेसरे विय, हवइ सुवच्छे विसाले य ॥४१॥

हासे हासरइ विय, सेए य भवे तहा महासेए।
पयंगे पयंगवइ विय, सोलस इंदाण नामाइं ॥४२॥

सामाणियाण चउरो, सहस सोलस य आयरक्खाणं।
पत्तेयं सव्वेसिं, वंतरवइ ससि रवीणं च ॥ ४३ ॥

इंद सम ताय तीसा, परिसतिया रक्ख लोगपाला य।
अणिय पइन्ना अभिओगा, किव्बिसं दस भवण वेमाणी।४४॥

गंधव्व नट्ट हय गय, रह भड अणियाणि सव्व इंदाणं।
वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासीणं ॥४५॥

तित्तीस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि ।
अणिआणि सत्त सत्तय, अणियाहिव सव्वइंदाणं ।४६॥

नवरं वंतर जोइस, इंदाण न हुन्ति लोगपालाओ ।
तायत्तीस-मिहाणा, तियसावि य तेसिं न हु हुंति ॥४७॥

समभूत लाओ अट्ठहिं, दसूण जोयण सएहिं आरम्भ ।
उवरिदसुत्तर जोयण, सयंमि चिट्ठन्ति जोइसिया ॥४८॥

तत्थ रवीदस जोयण, असीइ तदुवरिं ससी य रिक्खेसु ।
अह भरणिसाइ उवरिं, वहिं मूलो भितरे अभिइ ॥४९॥

तार रवीचंद रिक्खा, बहु सुक्का जीव मंगल सणिया ।
सग सय नउय दस असिइ,चउ चउ कमसो तिया चउसु ।५०॥

इक्कारस जोयण सय, इगवीसिक्कार साहिया कमसो ।
मेरु अलोगा-बाहं, जोइस चक्कं चरइ ठाइ ॥५१॥

अद्ध कविट्ठागारा, फलिहमया रम्म जोइस-विमाणा ।
चंतर नयरे हिंतो, संखिज्ज गुणा इमे हुन्ति ॥५२॥

ताइं विमाणाइं पुण, सव्वाइं हुन्ति फालिय-मयाइं ।
दग-फालिह मया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा ।५३॥

जोयणि-गसट्ठि भागा, छप्पन्न अडयाल गाउ दु इग-द्धं ।
चंदाइ विमाण-याम, वित्थडा अद्ध मुच्चत्तं ॥ ५४ ॥

पणयाल लक्ख जोयण, नर-खित्तं तत्थिमे सया भमिरा ।
नरखित्ताउ बहि पुण, अद्ध-पमाणाठिआ निच्चं ॥५५॥

ससि रवि गह नक्खत्ता, ताराओ हुंति जहुत्तरं सिग्घा ॥
विवरीया उ महड्डिढअ, विमाण-वहगा कमेणे-सि ॥५६॥

सोलस सोलस अड चउ, दो सुर सहस्सा पुरओ दाहिणओ ।
पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥५७॥

गह अट्ठासी नक्खत्त, अडवीसं तार कोडि-कोडीणं ।
छासट्ठि सहस्स नवसय, पणहुत्तरि ऐग ससि सिन्नं ।५८॥

कोडा कोडी सन्नं तरं, तु मन्नन्ति खित्त थोवतया ।
केइ अन्ने उस्से, -हंगुल-माणेण ताराणं ॥५९॥

किण्हं राहु विमाणं, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।
चउरंगुल-मप्पत्तं, हिट्ठा चंदस्स तं चरई ॥ ६० ॥

तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवंमि अंतरं गुरुयं ।
बारस जोयण सहस्सा, दुन्नि सया चेव बायाला ॥६१॥

निसढो य निलवंतो, चत्तारि सय उच्च पंच सय कूडा ।
अद्धं उवरिं रिक्खा, चरंति उभय-ट्ठ बाहाए ॥६२॥

छावट्ठा दुन्नि सया, जहन्न-मेयं तु होइ वाघाए ।
निव्वाघाए गुरु लहु, दो गाउ य धणु सया पंच ॥६३॥

माणुसनगाओ बाहिं, चंदा सूरस्स सूर चंद्रस्स ।
जोयण सहस्स पन्नास, णूणगा अंतरं दिट्ठं ॥६४॥

ससि ससि रवि रवि साहिय, जोयण लक्खेण अंतरं होई ।
रविं अंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवि दित्ता ॥६५॥

बहिया उ माणुसुत्तरओ, चंदासूरा अवट्ठि-उज्जोआ ।
चंदा अभिइ-जुत्ता, सूरा पुण हुन्ति पुस्सेहिं ॥६६॥

उद्धार सागर दुगे, सड्ढे समएहिं तुल्ल दीवुदहि ।
दुगुणा दुगण पवित्थर, वलयागारा पढम वज्जं ॥६७॥

पढमो जोयण लक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिआ सेसा ।
पढमो जंबुदीवो, सयंभूरमणोदही चरमो ॥६८॥

जंबू धायइ पुक्खर, वारुणीवर खीर घय खोय नंदीसरा ।
अरुणरुणवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुस कुंचा ॥६९॥

पढमे लवणो जलही, बीए कालोय-पुक्खराइसु ।
दीवेसु हुन्ति जलही, दीव-समाणेहिं नामेहिं ॥७०॥

कुरु मंदर आवासा, कूडा नक्खत्त चंद सूरा य ।
अन्न वि एवमाइ, पसत्थ-वत्थूण जे नामा ॥७१॥

आभरण वत्थ गंधे, उप्पलतिलए य पउम निहि रयणे ।
वासहर दह नइओ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥७२॥

तन्नामा दीवुदही, तिपडोयायार हुन्ति असंखाइ ।
जंबू-लवणाइया, पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥७३॥

ताणं-तिम सूरवरा-वभास जलही परंतु इक्किक्का ।
देवे नागे जक्खे, भूए य सयंभूरमणे य ॥७४॥

वारुणीवर खीरवरो, घयवर लवणो य हुन्ति भिन्नरसा ।
कालोय पुक्खरो-दहि, सयंभूरमणो य उदगरसा ॥७५॥

इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालोए चरिमिवहुमच्छा ।
पण सग दस जोयण सय, तणु कमा थोव सेसेसु ॥७६॥

दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणंमि धायइ संडे ।
वारस ससि वारस रवि, तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो॥७७॥

तिगुणा पुव्विल्ल जुया, अणंतरा-णंतरंमि खित्तंमि ।
कालोए वायाला, विसत्तरी पुक्खरद्धंमि ॥७८॥

दो ससि दो रविपंती, ऐगंतरिया छसट्ठि संखाया ।
मेरुं पयाहिणंता, माणुस-खित्ते परिअडन्ति ॥७९॥

एवं महाइणो वि हु, नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ।
तं चिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिभमन्ति ॥८०॥

पन्नरस चुलसीइ सयं, इह ससि-रवि मंडलाइं तक्खित्तं ।
जोयण पण-सय दसहिय, भागा अडयाल इगसट्ठा ॥८१॥

तीसि-गसट्ठा चउरो, इगं इगसट्ठस्स संच भइयस्स ।
पणतीसं च दु जोयण, ससि-रविणो मंडलं-तरयं ॥८२॥

मंडल दसगं लवणे, पणगं निसढंमि होइ चंदस्स ।
मंडल-अंतर-माणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ॥८३॥

पणसट्ठी निसढंमिय, दुन्नि य बाहा दुजोयणं-तरिया ।
इगुणवीसं तु सयं, सूरस्स य मंडला लवणे ॥८४॥

ससि रविणो लवणंमिय, जोयण सय तिन्नि तीस अहियाइं ।
असीयं तु जोयण सयं, जंबुदीवंमि पविसन्ति ॥८५॥

गहरिक्ख तार संखं, जत्थे-च्छसि नाउ मुदहि-दीवे वा ।
तस्ससिहि एग-ससिणो, गुण संखं होइ सव्वग्गं ॥८६॥

बत्तीस-ट्ठावीसा, वारस अड चउ विमाण लक्खाइं ।
पन्नास चत्त छ सहस्स, कमेण सोहम्माइसु ॥८७॥

दुसु सय चउ दुसु सय-तिग, मिगार-सहियं सयं तिगेहिट्ठा ।
मज्झे सत्तुत्तर सय, मुवरि तिगे सय-मुवरि पंच ॥८८॥

चुलसीइ लक्ख सत्ताणवइ, सहस्सा विमाण तेवीसं ।
सव्वग्ग मुड्ढ लोगंमि, इंदया विसट्ठि पयरेसु ॥८९॥

चउ दिसि चउ पंतिओ, वासट्ठि विमाणिया पढमा पयरे ।
उवरि इक्किक्क हीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्कं ॥९०॥

इदय वट्टा पंतीसु, तो कमसो तंस चउरंसा वट्टा ।
विविहा पुप्फवकिन्ना, तयंतरे मुत्तु पुव्व दिसिं ॥६१॥

एगं देवे-दीवे, दुवे य नागोदहीसु बोधव्वे ।
चत्तारि जक्ख-दीवे, भूय-समुद्द सु अट्ठेव ॥६२॥

सोलस सयंभूरमणे, दीवेसु पइट्ठिया य सुरभवणा ।
इगतीसं च विमाणा, सयंभूरमणे समुद्दे य ॥६३॥

वट्टं वट्टस्सुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिमं होई ।
चउरंसे चउरंसं, उड्ढं तु विमाण सेढीओ ॥६४॥

सव्वे वट्ट-विमाणा, एग-दुवारा हवन्ति नायव्वा ।
तिन्नि य तंस विमाणे, चत्तारि य हुन्ति चउरंसे ॥६५॥

पागार-परिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवन्ति सव्वेवि ।
चउरंस विमाणाणं, चउदिसिं वेइया होइ ॥६६॥

जत्तो वट्ट विमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ ।
पागारो बोधव्वो, अवसेसेसु तु पासेसु ॥६७॥

आवलिय-विमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ।
संखिज्ज-मसंखिज्जं, भणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥६८॥

अच्चंत-सुरहि गंधा, फासे नवणीय-मउय सुहफासा ।
निच्चुज्जेया रम्मा, सयं पहा ते विरायंति ॥६९॥

जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणश्रो आवली मुणेयव्वा।
जे पुण उत्तर इंदा, उत्तरश्रो आवली मुणे तेसिं ।१००।

पुव्वेण पच्छिमेण य, सामन्ना आवली मुणेयव्वा।
जें पुण वट्ट विमाणा, मज्झिल्ला दाहिणल्लाणं ।१०१।

पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा ते वि दाहिणिल्लस्स।
तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुन्ति दुण्हं पि ।१०२।

पढमं-तिम पयरावलि, विमाण मुह भूमि तस्समासद्धं।
पयर गुण-मिट्ठ कप्पे, सव्वग्गं पुप्फकिन्नियरे ।१०३।

इगदिसि-पंति विमाणा, तिविभत्ता तंच चउरंसा वट्टा।
तंसेसु सेस-मेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किक्कं ।१०४।

तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासि तिगंपि चउगुणं काउं।
वट्टेसु इंदयं खिव, पयर धणं मीलियं कप्पे ।१०५।

सत्त-सय सत्तवीसा, चत्तारि-सया य हुन्ति चउनउया।
चत्तारि य छासीया, सोहम्मे हुन्ति वट्टाइ ।१०६।

एमेव य ईसाणे, नवरं वट्टाण होइ नाणत्तं।
दो सय अट्ठतीसा, सेसा जह चेव सोहम्मे ।१०७।

पुव्वा-वरा छ लंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा वज्झ।
अब्भिन्तर चउरंसा, सव्वा-विय कण्हराइश्रो ।१०८।

चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठीय पन्न चत्ताला।
तुल्ल सुर तीस वीसा, दस सहस्स आयरक्ख चउगुणिया।१०९।

कप्पेसु य मिय महिसो, वराह सीहा य छगल सालूरा।
हय गय भुयंग खग्गी, वसहा विडिमाइं चिंधाइं।११०।

दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा।
सुर-भवण-पइट्ठाणं, आगास पइट्ठिया उवरिं।१११।

सत्तावीस सयाइं, पुढवि-पिंडो विमाण-उच्चत्तं।
पंच सया कप्प दुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्कं।११२।

हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दु दु दु कप्पेसु।
चउगे नवगे पणगे, तहेव जा-णुत्तरेसु भवे।११३।

इगवीस सया पुढवी, विमाण-मिक्कारसेव य सयाइं।
बत्तीस जोयण सया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा।११४।

पण चउ ति दु वन्न विमाणा, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो।
उवरि सिय भवणवंतर, जोइसियाणं विविह वन्ना।११५।

रविणो उदय-त्थंतर, चउ नवइ सहस्सपण सय छवीसा।
बायाल सट्ठि भागा, कक्कड-संकंति दियहंमि।११६।

एयंमि पुणो गुणिए, ति पंच सग नव य होइ कम माणं।
ति गुणंमि य दो लक्खा, तेसीइ सहस्स पंच सया।११७।

असीइ छ सट्ठि भागा, जोयण चउ लक्ख विसत्तरि सहस्सा ।
छच्च सया तेत्तीसा, तीस कला पंच गुणियंमि ।११८।

सत्त गुणे छ लक्खा, इगसट्ठि सहस्स छ सय छासीया ।
चउपन्न कला तह नव, गुणंमि अडलक्ख सड्ढाओ ।११९।

सत्तसया चत्ताला, अट्ठारस कला य इय कमाचउरो ।
चंडा चवला जयणा, वेगा य तहा गइ चउरो ।१२०।

इत्थ य गई चउत्थिं, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ।
एहि कमेहि-मिमाहि, गइ हि चउरो सुरा कमसो ।१२१।

विक्खंभ आयामं, परिहिं अब्भिंतरं च बाहिरियं ।
जुगवं मिणंति छम्मास, जाव न तहावि ते पारं ।१२२।

पावंति विमाणाणं, केसिं पिहु अहव तिगुणयाइए ।
कम चउगे पत्तेयं, चंडाइ गइ उ जोइज्जा ।१२३।

तिगुणेण कप्प चउगे, पंच गुणेणं तु अट्ठसु मुणिज्जा ।
गेविज्जे सत्त गुणेणं, नव गुणे-णुत्तर चउक्के ।१२४।

पढम पयरंमि पढमे, कप्पे उडु नाम इंदय विमाणं ।
पणयाल लक्ख जोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं ।१२५।

उडु चंद रयय वग्गु, वीरिय वरुणे तहेव आणंदे ।
बंभे कंचण रुइ रे, चंद अरुणे य वरुणे य ।१२६।

वेरुलिय रुयग रुइ रे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ।
मेहे अग्धं हलिए, नलिए तह लोहियक्खे य ।१२७।

वइरे अंजण वरमाल, रिट्ठदेवे य सोम मंगलए ।
वलभद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदियावत्ते ।१२८।

आभंकरे य गिद्धी, केउ गरुले य होइ बोधव्वे ।
बभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंतए चेव ।१२९।

महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणए य बोधव्वे ।
पुप्फे-लंकार आरण, तहा विय अच्चुए चेव ।१३०।

सुदंसण सुपडिबद्धे, मणोरमे चेव होइ पढम तिगे ।
तत्तोय सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ।१३१।

सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे ।
सव्वट्ठसिद्धि नामे, इंदिया एव बासट्ठी ।१३२।

पणयालीसं लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिवं च ।
अपयट्ठाणो सव्वट्ठ, जंबूदिवो इमं लक्खं ।१३३।

अहभागा सगपुढवीसु, रज्जु इक्किक्कतहेव सोहम्मे ।
माहिंद लंत सहस्सार, अच्चुअ गेविज्ज लोगंते ।१३४।

सम्मत्त चरण सहिया, सव्वं लोगं फुसे निरवसेसं ।
सत्त य चउदस भाए, पंच य सुय देस विरइए ।१३५।

भवण वाण जोइ सोहम्मी, साणे सत्त हत्थ तणु-माणं ।
दु दु दु चउक्के गेविज्ज,-णुत्तरे हाणि इक्किक्कं ।१३६।

कप्प दुग दु दु दु चउगे, नवगे पणगे य जिट्ठ-ठिइ अयरा ।
दो सत्त चउद-ट्ठारस, बावीसिगतीस तित्तीसा ।१३७।

विवरेताणि क्कुणे, इक्कारसगा उ पाडिए सेसा ।
हत्थिक्कारस भागा, अयरे अयरे समहियंमि ।१३८।

चय पुव्व सरीराओ, कमेण इगुत्तराइ वुड्ढीए ।
एवं ठिइ विसेसा, सणंकुमाराइ तणु-माणं ।१३९।

भवधारणिज्ज एसा, उत्तर वेउव्वि जोयणा लक्खं ।
गेविज्ज-णुत्तरेसु, उत्तर वेउव्विया नत्थि ।१४०।

साहाविय वेउव्विय, तणु जहन्ना कमेण पारंभे ।
अंगुल असंख भागो, अंगुल संखिज्ज भागोय ।१४१।

सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा ।
उववाय विरहकालो, अह भवणाइसु पत्तेयं ।१४२।

भवणवण जोइ सोहम्मी, साणेसु मुहुत्त चउवीसं ।
तो नवदिण वीस मुहु, बारसदिण दस मुहुत्ता य ।१४३

बावीसा सड्ढ दियहा, पणयाल असीइ दिण सयं तत्तो ।
संखिज्जा दुसु मासा, दुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ।१४४।

वासाण सया सहस्सा, लक्ख तह चउसु विजयमाइसु ।
पलिया असंख भागो, सव्वट्ठे संखभागो य ।१४५।

सव्वेसिंपि जहन्नो, समओ एमेव चवण विरहो वि ।
इग दु ति संख मसंख, इग समए हुन्ति य चवंति ।१४६।

नर पंचिंदिय तिरिया,-णुप्पत्ती सुरभवे पज्जत्ताणं ।
अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मं तु ।१४७।

नर तिरि असंख जीवी, सव्वे नियमेण जंति देवेसु ।
निय आउय सम हीणा-उएसु इसाण अंतेसु ।१४८।

जंति समुच्छिम तिरिया, भवण-वणेसु न जोइमाइसु ।
जं तेसिं उववाओ, पलिया-संखंस आउसु ।१४९।

बालतवे पडिबद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविया ।
वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जयंति ।१५०।

रज्जुगह-विस भक्खण,-जल-जलण-पवेस-तण्ह छुह-दुहओ ।
गिरिसिर पडणाउ मुआ, सुहभावा हुंति वंतरिया ।१५१।

तावस जा जोइसिया, चरग परिव्वाय बंभलोगो जा ।
जा सहस्सारो पंचिंदि, तिरिय जा अच्चुओ सड्ढा ।१५२।

जइ लिंग मिच्छ दिट्ठी, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ।
पयमवि असद्दहंतो, सुत्तत्थं मिच्छदिट्ठीओ ।१५३।

सुत्तं गणहर-रइयं, तहेव पत्तेय बुद्ध-रइयं च।
सुय-केवलिणा रइयं, अभिन्न-दस-पुव्विणा रइयं।१५४।

छउमत्थ संजयाणं, उववा उक्कोसओ अ सव्वट्ठे।
तेसिं सड्ढाणं पि य, जहन्नओ होइ सोहम्मे।१५५।

लंतंमि चउद पुव्विस्स, तावसाइण वंतरेसु तहा।
एसि उववाय विहि, निय किरिय ठियाण सव्वोवि।१५६।

वज्जरिसह नारायं, पढमं बीयं च रिसह नारायं।
नाराय-मद्धनारायं, कीलिया तह य छेवट्ठं।१५७।

ए ए छ संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं।
उभओ मक्कड बंधो, नाराओ होइ विन्नेओ।१५८।

छ गब्भ तिरि नराणं, समुच्छिम पणिंदि विगल छेवट्ठं।
सुर नेरइया एगिंदिया, य सव्वे असंघयणा।१५९।

छेवट्ठेणं उ गम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाइसु।
चउसु दु दु कप्प वुड्ढी, पढमेणं जाव सिद्धी वि।१६०।

समचउरंसे नग्गोह, साइ वामण य खुज्ज हुंडेय।
जीवाण छ संठाणा, सव्वत्थ सुलक्खणं पढमं।१६१।

नाहीए उवरि बीयं, तइय-महो पिट्ठि उयर उर वज्जं।
सिर गीव पाणि पाए, सुलक्खणं तं चउत्थं तु।१६२।

विवरीयं पंचमगं, सव्वत्थ सुलक्खणं भवे छट्ठं ।
गब्भय नर तिरिय छहा, सुरा समा हुंडया सेसा ।१६३।

जंति सुरा संखाउ य, गब्भय पज्जत्त मणुय तिरिएसु ।
पज्जत्तेसु य बायर, भू-दग-पत्तेयग-वणेसु ।१६४।

तत्थवि सणंकुमारं, पभिइ एगिंदिएसु नो जंति ।
आणय पमुहा चविउं, मणुएसु चेव गच्छन्ति ।१६५।

दो कप्प कायसेवी, दो दो दो फरिस रुव सेहिं ।
चउरो मणेणु-वरिमा, अप्प वियारा अणंत सुहा ।१६६।

जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्वं महासुहं ।
वीयराय-सुहस्य य, णंतभागं पि नग्घई ।१६७।

उववाओ देवीणं, कप्पदुगंजापरओ सहस्सारा ।
गमणागमणं नत्थी, अच्चुय परओ सुराणंपि ।१६८।

ति पलिय ति सारतेरस, सारा कप्प दुग तइय लंत अहो ।
किब्बिसिय न हुन्ति उवरिं, अच्चुय परओ-भिओगाई ।१६९।

अपरिग्गह देवीणं, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे ।
पलियाइ समयाहिय, ठिइ जासिं जाव दस पलिया ।१७०।

ताओ सणंकुमारा, णेवं वड्ढन्ति पलिय दसगेहिं ।
जा बंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ।१७१।

इसाणे चउ लक्खा, साहिय पलियाइ समय अहिय ठिइ ।
जा पन्नर पलिय जासि ताओ महिदं देवाणं ।१७२।

एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुड्ढीए ।
लंत सहस्सार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ।१७३।

किण्हा नीला काउ, तेउ पम्हा य सुक्क लेस्साओ ।
भवण वण पढम चउतेउ, जोइससुकप्प दुगे तेउ ।१७४।

कप्प तिय पम्ह लेसा, लंताइसु सुक्केलए हुन्ति सुरा ।
कणगाभपउमकेसर, वन्ना दुसु तिसु उवरिं धवलां ।१७५।

दसवास सहस्साइं, जहन्न-माउं धरंति जे देवा ।
तेसिं चउत्थाहारो, सत्तहिं थोवेहिं उसासो ।१७६।

आहि वाहि विमुक्कस्स, नीसासूस्सास एगगो ।
पाणु सत्त इमो थोवो, सोवि सत्त गुणो लवो ।१७७।

लव सत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमंमि उसासा ।
सगतीस सय तिहुत्तर, तीस गुणा ते अहोरत्ते ।१७८।

लक्खं तेरस सहसा, नउयसयं अयर संखया देवे ।
पक्खेहिं उसासो, वास सहस्सेहिं आहारो ।१७९।

दसवास सहस्सुवरिं, समयाइ जाव सागरं उणां ।
दिवस मुहुत्त पुहुत्ता, आहारुसास सेसाणं ।१८०।

सरीरेण ओयाहारो, तयाइ फासेण लोम आहारो।
पक्खेवाहारो पुण, कावलिओ होइ नायव्वो ।१८१।

ओयाहारा सव्वे, अपज्जत्त पज्जत्त लोम आहारो।
सुर निरय इगिंदि विणा, सेसा भवत्था सपक्खेवा ।१८२।

सचित्ता-चित्तो-भय, रुवो आहार सव्व तिरियाणं।
सव्व-नराणं च तहा, सुर-नेरइयाण अच्चित्तो ।१८३।

आभोगा-णाभोगा, सव्वेसिं होइ लोम आहारो।
निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणुन्नो ।१८४।

तहविगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता स होइ उक्कोसो।
पंचिंदि तिरि नराणं, साहाविओ छट्ठ अट्ठमओ ।१८५।

विग्गह गइ-मावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य।
सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ।१८६।

केसट्ठि मंस नह रोम, रुहिर वस चम्म मुत्त पुरिसेहिं।
रहिया निम्मल देहा, सुगंध नीसास गय लेवा ।१८७।

अंत मुहुत्तेणं चिय, पज्जत्ता तरुण पुरिस संकासा।
सव्वंग भूसणधरा, अजरा निरुया समा देवा ।१८८।

अणिमिस नयणा मण, कज्ज साहणा पुप्फ दामअमिलाणा।
चउरंगुलेण भूमिं, न छिवन्ति सुरा जिणा बिंति ।१८९।

पंचसु जिण कल्लाणेसु, चेव महरिसि तवाणुभावाओ ।
जम्मंतर नेहेण य, आगच्छन्ति सुरा इहयं ।१६०।

संकंति दिव्व-पेमा, विसय-पसत्ता-समत्त-कत्तव्वा ।
अणहीण मणुय कज्जा, नरभव-मसुहं न इंति सुरा ।१६१।

चत्तारि पंच जोयण, सयाइं गंधो य मणुय लोगस्स ।
उड्ढं वच्चइ जेणं, न हु देवा तेण आवन्ति ।१६२।

दोकप्प पढम पुढवि, दो दो दो बीय तइयगं चउत्थिं ।
चउ उवरिम ओहीए, पासन्ति पंचमं पुढवि ।१६३।

छट्ठि छ गेविज्जा, सत्तमीयरे अणुत्तर सुरा उ ।
किचूण लोगनालि, असंख दीवुदहि तिरियं तु ।१६४।

बहुअरगं उवरिमगा, उड्ढं सविमाण चूलिय धयाइ ।
उणद्ध सागरे संख, जोयणा तप्पर-मसंखा ।१६५।

पणवीस-जोयण लहु, नारय भवण वण जोइ कप्पाणं ।
गेविज्ज-णुत्तराणय, जहसंखं ओहि आगारा ।१६६।

तप्पागारे पल्लग, पडहग झल्लरि मुइंग पुप्फ जवे ।
तिरिय मणुएसु ओहि, नाणाविह संठिओ भणिओ १६७।

उड्ढं भवण वणाणं, बहुगो वेमाणियाण हो ओही ।
नारय जोइस तिरियं, नर तिरियाणं अणेगविहो ।१६८।

इय देवाणं भणियं, ठिइ पमुहं नारयाण वुच्छामि ।
इग तिन्नि सत्त दस सत्तर, अयर बावीस तित्तीसा ।१६६।

सत्त य पुढवीस ठिइ, जिट्ठो-वरिमाइ हिट्ठ पुढवीए ।
होइ कमेण कणिट्ठा, दसवास सहस्स पढमाए ।२००।

नवइ सम सहस लक्खा, पुव्वाणं कोडी अयर दस भाग ।
इक्किक्क भाग वुड्ढी, जा अयरं तेरसे पयरे ।२०१।

इअ जट्ठ जहन्ना पुण, दस वास सहस्स लक्ख पयर दुगे ।
सेसेसु उवरि जिट्ठा, अहो कणिट्ठाउ पइ पुढवि ।२०२।

उवरि खिइ ठिइ विसेसो, सग पयर विहत्तु इच्छ संगुणिओ ।
उवरिम खिइ ठिइ सहिओ, इच्छिय पयरंमि उक्कोसा ।२०३।

बंधणगइ संठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा ।
अगुरु लहु सद्द दसहा, असुहा विय पुग्गला निरए ।२०४।

नरया दस विह वेयण, सी उसिह खुह पिवास कंडूहिं ।
परवस्सं जर दाहं, भय सोगं चेव वेयंति ।२०५।

सत्तसु खित्तज वियणा; अन्नन्न कयावि पहरणेहि विणा ।
पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ।२०६।

रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह य धूमपहा ।
तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ।२०७।

घम्मा वंसा सेला, अंजणा रिट्ठा मघा य माघवइ ।
नामेहिं पुढवीओ, छत्ताइ छत्त संठाणा ॥२०८॥

असीय बत्तीस अडवीस, वीसा अट्ठार सोल अडसहसा ।
लक्खुवरि पुढवि पिंडो, घणुदहि घणवाय तणुवाया ।२०९।

भयणं च पइट्ठाणं, वीस सहस्साइं घणुदही पिंडो ।
घणतणु वायागासा, असंख जोयण जुया पिंडो ।२१०।

न फुसंति अलोगं, चउदिसंपि पुढवी य वलय संगहिया ।
रयणाए वलयाणं, छद्ध पंचम जोयणं सड्ढं ॥२११॥

विक्खंभो घणउदही, घण तणुवायाण होइ जहसंखं ।
सतिभाग गाउयं, गाउयं च तह गाउय तिभागो ।२१२॥

पढम महीवलएसु, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ।
दुति चउ पंच छ गुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ।२१३।

मज्झे चिय पुढवी अहे, घणुदहि पमुहाणपिंड परिमाणं ।
भणियं तओ कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥२१४॥

तीस पणवीस पन्नरस, दस तिन्नि पणूण एग लक्खाइं ।
पंच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइं सत्तसुवि ।२१५॥

तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग पयर सव्विगुणवन्ना ।
सीमंताइ अप्पइ— ठाणंता इंदिया मज्झे ॥२१६॥

तेहिंतो दिसी विदिसं, विणिगया अट्ठ निरय आवलीया ।
पढमे पयरे दिसि गुण-वन्न विदिसासु अडयाला ।२१७।

बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणा उ हुन्ति पंतीओ ।
जा सत्तमी मही पयरे, दिसि इक्किक्को विदिसि नत्थि ।२१८।

इट्ठ पयरेग दिसि, संख अडगुणा चउविणा सइगसंखा ।
जहसीमंतय पयरे, एगुण नउया सया तिन्नि ॥२१९॥

अपयट्ठाणे पंच उ, पढमो मुह-मंतिमो हवइ भूमी ।
मुह भूमी समासद्धं, पयरगुणं होइ सव्व घणं ॥२२०॥

छन्नवइ सय तिवन्ना, सत्तसु पुढवीसु आवली निरया ।
सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहसा ।२२१।

ति सहस्सुच्चा सव्वे, संख-मसंखिज्ज वित्थडायामा ।
पणयाल लक्ख सीमंतओ, य लक्खं अपइट्ठाणो ।२२२॥

छसु हिट्ठोवरि जोयण, सहस्स बावन्न सड्ढ चरिमाए ।
पुढवीए नरय रहियं, नरया सेसंमि सव्वासु ॥२२३॥

विसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ।
ऊणा रुवूण निय पयर, भाइया पत्थडंतरयं ॥२२४॥

पउणट्ठ धणु छ अंगुल, रयणाए देहमाण-मुक्कोसं ।
सेसासु दुगुण दुगुणं, पण धणु सय जाव चरमाए ।२२५।

रयणाए पढम पयरे, हत्थतिय देहमाण-मणुपयरं ।
छप्पन्नं गुल सड्ढा, वुड्ढी जा तेरसे पुन्नं ॥२२६॥

जं देह पमाण उवरिमाए, पुढवीइ अंतिमे पयरे ।
तं चिय हिट्ठिय पुढवी, पढम पयरंमि बोधव्वं ।२२७।

तं चेगुणग सग पयर, भइयं बीयाइ पयर वुड्ढि भवे ।
तिकर ति अंगुल करसत्त, अंगुला सड्ढ गुणवीसं ।२२८।

पण धणु अंगुल बीसं, पनरस धणु दुन्नि हत्थ सड्ढा य ।
बासट्ठि धणुह सड्ढा, पण पुढवी पयर वुड्ढि इमा ।२२९।

इअ साहाविय देहो, उत्तर वेउव्विओ य तद्गुणो ।
दुविहोवि जहन्न कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२३०॥

सत्तसु चउवीस मुहू, सग पनर दिणेग दु चउ छम्मासा ।
उववाय चवण विरहो, ओहे बारस मुहुत्त गुरु ॥२३१॥

लहुओ दुहावि समओ, संखा पुण सुर समा मुणेयव्वा ।
संखाउ पज्जत्त पणिंदि, तिरि नरा जंति नरएसु ॥२३२॥

मिच्छद्दिट्ठि महारंभ, परिग्गहो तिव्व कोह निस्सीलो ।
नरयाउअं निबंधइ, पावमइ रुद्द परिणामो ॥२३३॥

असन्नि सरिसिव पक्खी, सीह उरगित्थि जंति जा छट्ठिं ।
कमसो उक्कोसेणं, सत्तम पुढविं मणुय मच्छा ॥२३४॥

वाला दाढी पक्खी, जलयर नरया-गया उ अइक्रूरा ।
जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमो ॥२३५॥

दो पढम पुढवि गमणं, छेवट्ठे कीलियाइ संघयणे ।
इकिकक्क पुढवि वुड्ढी, आइ तिलेस्साउ नरएसु ॥२३६॥

दुसु काउ तइयाए, काउ नीलाय नील पंकाए ।
धूमाए नील किण्हा, दुसु किण्हा हुंति लेस्साओ ।२३७॥

सुर-नारयाण ताओ, दव्व लेसा अवट्ठिआ भणिया ।
भाव परावत्तीए, पुण एसिं हुन्ति छल्लेसा ॥२३८॥

निरउव्वट्टा गब्भय, पज्जत्त संखाउ लद्धि एएसिं ।
चक्कि हरि जुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्म पुहवि कमा ।२३९।

रयणाए ओहि गाउअ, चत्तारि अद्धुट्ठ गुरु लहु कमेण ।
पइ पुढवि गाउयद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं ॥२४०॥

गब्भ नर ति पलियाउ, ति गाउ उक्कोस ते जहन्नेणं ।
मुच्छिम दुहावि अंतमुहू, अंगुल असंख भाग तणु ।२४१॥

बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ।
जम्म-मरणेसु समओ, जहन्न संखा सुर समाणा ॥२४२॥

सत्तमि महि नेरइए, तेउ वाउ असंख नर तिरिए ।
मुत्तूण सेस जीवा, उप्पज्जंति नरभवंमि ॥२४३॥

सुर नेरइएहिं चिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बलदेवा ।
चउविह सुर चक्कि बला, वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ।२४४।।

हरिणो मणुस्स रयणाइं, हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ।
जह संभव-मुववाओ, हय गय एगिंदि रयणाणं ।२४५।

वाम पमाणं चक्कं, छत्तं दंडं दुहत्थयं चम्मं ।
बत्तीसंगुल खग्गो, सुवन्नकागिणि चउरंगुलिया ।।२४६।।

चउरंगुलो दु अंगुल, -पिहुलो य मणिपुरोहि गय तुरया ।
सेणावइ गाहावइ, वड्ढ इत्थी चक्कि रयणाइं ।।२४७।।

चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तह य होइ वणमाला ।
संखो सत्त इमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ।।२४८।।

संख नरा चउसु गइसु, जंति पंचसुवि पढम संघयणे ।
इग दुति जा अट्ठसयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ।।२४९।।

वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिस-ट्ठसयं तु एग समएणं ।
सिज्झइ गिहि अन्न सलिंग, चउ दस अट्ठाहिय सयंच ।२५०।

गुरु लहु मज्झिम, दो चउ अट्ठसयं उड्ढहो तिरियलोए ।
चउ बावीस-ट्ठसयं, दु समुद्दे तिन्नि सेस जले ।।२५१।।

नरय तिरिया-गया दस, नरदेव गइउ वीस अट्ठसयं ।
दस रयणा सक्कर वालुयाउ, चउ पंकभू दगओ ।।२५२।।

छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरित्थी दस मणुय वीस नारीओ ।
असुराइ वंतरा दस, पण तद् विउ पत्तेयं ॥२५३॥

जोइ दस देवी वीसं, वेमाणिय-ट्ठसय वीस देवीओ ।
तह पुं वेएहिंतो, पुरिसो होउण अट्ठ-सयं ॥२५४॥

सेसट्ठ भंगएसु, दस दस सिज्झन्ति एग समएणं ।
विरहो छमास गुरुओ, लहु समओ चवणमिह नत्थि ।२५५।

अड सग छ पंच चउ तिन्नि, दुन्नि इक्को य सिज्झमाणेसु ।
वत्तीसाइसु समया, निरंतरं अंतरं उवरिं ॥२५६॥

वत्तीसा अडयाला, सट्ठी वावत्तरी य बोधव्वा ।
चुलसीइ छन्नवइ, दुरहिय-मट्ठुत्तर सयं च ॥२५७॥

पणयाल लक्ख जोयण, विक्खंभा सिद्धसिलफलिहविमला ।
तदुवरिग जोयणंते, लोगंतो तत्थ सिद्ध ठिइ ॥२५८॥

वावीस सग ति दस वास, सहस गणि तिदिण बेइंदियासु ।
वारस वासुण पण दिण, छम्मास तिपलिय ठिइ जिट्ठा ।२५९।

सण्हा य सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्करा य खर पुढवी ।
इग वार चउद सोलस, ट्ठारस वावीस सम सहसा ।२६०॥

गब्भ भुय जलयरो-भय, गब्भोरग पुव्व कोडि उक्कोसा ।
गब्भ चउप्पय पक्खिसु, तिपलिय पलिया असंखंसो ।२६१॥

पुव्वस्स उ परिमाणं सयरिं खलु वास कोडि लक्खाओ ।
छप्पन्न च सहस्सा, बोधव्वा वास कोडीणं ॥२६२॥

समुच्छि पणिंदिथल खयर, उरग भुयग जिट्ठ ठिइ कमसो ।
वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपन्न बायाला ।२६३॥

एसा पुढवाइणं, भवठिइ संपयं तु कायठिइ ।
चउ एगिंदिसु णेया, उस्सप्पिणिओ असंखिज्जो ।२६४॥

ताओ वणंमि अणंता, संखिज्जा वास सहस विगलेसु ।
पंचिंदि तिरि नरेसु, सत्तट्ठ भवा उ उक्कोसा ॥२६५॥

सव्वेसिपि जहन्ना, अंतमुहुत्तं भवे य काये य ।
जोयण सहस्स-महियं, एगिंदिय देह मुक्कोसं ॥२६६॥

विति चउरिंदि सरीरं, बारस जोयण तिकोस चउकोसं ।
जोयण सहस-पणिंदिय, ओहे वुच्छं विसेसं तु ॥२६७॥

अंगुल असंख भागो, सुहुमनिगोओ असंख गुणवाउ ।
तो अगणि तओ आउ, तत्तो सुहुमा भवे पुढवी ॥२६८॥

तो बायर वाउ गणी, आउ पुढवी निगोय अणुक्कमसो ।
पत्तेअवण सरीरं, अहियं जोयण सहस्सं तु ॥२६९॥

उस्सेहंगुल जोयण, सहस्समाणे जलासए नेयं ।
तं वल्लि पउम पमुहं, अओ परं पुढवी रुवं तु॥२७०॥

वारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं भमरो ।
मुच्छिम चउपय भुय, गुरगगाउ धणु-जोयण-पुहुत्तं ॥२७१॥

गब्भ चउप्पय, छग्गाउयाइ भुयगाउ गाउय पुहुत्तं ।
जोयण सहस्स-मुरगा, मच्छा उभये वि य सहस्सं ॥२७२॥

पक्खि दुग धणु प्पुहुत्तं, सव्वाणं-गुल असंख भाग लहू ।
विरहो विगल सन्नीण, जम्म मरणे सु अंतमुहू ॥२७३॥

गब्भे मुहुत्त वारस, गुरुओ लहु समय संखसुर तुल्ला ।
अणु समय-मसंखिज्जा, एगिंदिय हुंति य चवंति ॥२७४॥

वणकाइओ अणंता, इक्किक्का वि जं निगोयाओ ।
निच्च-मसंखो भोगो, अणंत जीवो चयइ एइ ॥२७५॥

गोला य असंखिज्जा, असंख निगोयओ हवइ गोलो ।
इक्किक्कंमि निगोए, अणंत जीवा मुणेयव्वा ॥२७६॥

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ।
उप्पज्जंति चयंति य, पुणो वि तत्थेव तत्थेव ।२७७॥

सव्वोवि किसलओ खलु, उग्गममाणो अणंतओ भणिओ ।
सो चेव विवड्ढन्तो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥२७८॥

जया मोहोदओ तिव्वो, अन्नाणं खु महब्भयं ।
पेलवं वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्तणं ॥२७९॥

तिरिएसु जंति संखाउ, तिरि नरा जा दुकप्प देवाओ ।
पज्जत्त संख गब्भय, बायर भू दग परित्तेसु ॥२८०॥

तो सहसारंत सुरा, निरया पज्जत्त संख गब्भेसु ।
संख पणिंदिय तिरिया, मरिउं चउसुवि गइसु जन्ति ।२८१।

थावर विगला नियमा, संखाउ य तिरि नरेसु गच्छन्ति ।
विगला लब्भिज्ज विरइं, सम्मंपि न तेउवाउ चुया ॥२८२॥

पुढवी दग परित्तवणा, बायर पज्जत्त हुन्ति चउलेसा ।
गब्भय तिरिय नराणं, छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥२८३॥

अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तमि सेसए चेव ।
लेसाहि परिणयाहि, जीवा वच्चंति परलोयं ॥२८४॥

तिरि नर आगामि भव, लेस्साए अइगये सुरानिरया ।
पुव्व भव लेस्स सेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिति ॥२८५॥

अंतमुहूत्तठिइओ, तिरिय नराणं हवन्ति लेस्साओ ।
चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोडी वि ॥२८६॥

तिरियाण वि ठिइपमुहं,भणिय-मसेसं पि संपइ वुच्छं ।
अभिहिय दार-ब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥२८७॥

देवा असंख नरतिरि, इत्थी पुंवेय गब्भ नर तिरिया ।
संखाउया ति वेया, नपुंसगा नारयाइआ ॥२८८॥

आयंगुलेण वत्थु, सरीर-मुस्सेह-अंगुलेण तहा ।
नग-पुढवि-विमाणाइं, मिणसु पमाणं-गुलेणं तु ॥२८६॥

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का ।
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥२६०॥

परमाणू तसरेणू, रहरेणू वालअग्ग लिक्खा य ।
जूय जयो अट्ठ गुणो, कमेण उस्सेह-अंगुलयं ॥२६१॥

अंगुल छक्कं पाओ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो ।
चउहत्थं धणु दुसहस, कोसो ते जोयणं चउरो ॥२६२॥

चउसयगुणं पमाणं, गुल मुस्सेहं-गुलाउ बोधव्वं ।
उस्सेहं-गुल दुगुणं, वीरस्सायं-गुलं भणियं ॥२६३॥

पुढवाइसु पत्तेयं, सगवण पत्तेय णंत दस चउद ।
विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु ।२६४।

एगिंदिएसु पंचसु, वार सगति सत्त अट्ठवीसा य ।
विगलेसु सत्त अड नव, जल खह चउपह उरग भुयगे।२६५।

अद्ध तेरसवारस, दस दस नवगं नराम रे निरए ।
वारस छव्वीस पणवीस, हुन्ति फुल कोडि लक्खाइं ।२६६।

इग कोडि सत्त नवइ, लक्खा सड्ढा फुलाण कोडीणं ।
संवुड जोणि सुरेगिंदि, नारया वियड विगल गब्भुभया ।२६७।

अचित्त जोणि सुरनिरयं, मीस गब्भेतिमेय सेसाणं ।
सीउसिण निरय सुर गब्भ, मीस तेउ सिण सेस तिहा ॥२६८॥

हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जयंति ।
अरिह हरि चक्कि रामा, वंसी पत्ताइ सेस नरा ॥२६९॥

आउस्स बंध कालो, अबाहकालो य अंत समओ य ।
अपवत्तण-णपवत्तण, उवक्कम-णुवक्कमा भणिया ॥३००॥

बंधन्ति देव नारय, असंख नर तिरि छमास सेसाउ ।
परभवियाउ सेसा, निरुवक्कम तिभाग सेसाउ ॥३०१॥

सोवक्कमाउया पुण, सेस तिभागे अहव नवम भागे ।
सत्तावीसइ मे वा, अंतमुहुत्त-तिमे वा वि ॥३०२॥

जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अबाह कालो सो ।
अंते उज्जु गइ इग, समय वक्क चउ पंच समयंता ॥३०३॥

उज्जुगइ पढम समए, परभवियं आउयं तहा-हारो ।
वक्कोइ बीय समए, परभवियाउं उदय-मेइ ॥३०४॥

इग दु ति चउ वक्कासु, दुगाइसमएसु परभवाहारो ।
दुग वक्काइसु समया, इग दो तिन्निय अणाहारा ॥३०५॥

बहुकाल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेणं ।
वेइज्जइ जुगवं चिय, उइन्न सव्व-पएसग्गं ॥३०६॥

अपवत्तणिज्ज-मेयं, आउं अहवा असेस-कम्मंपि ।
बंध समए वि बद्धं, सिढिलं चिय तंजहा जोगं ॥३०७॥

जं पुण गाढ निकायण, बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं ।
तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्ज फलं ॥३०८॥

उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असंख नर तिरिया ।
हुन्ति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥३०९॥

जेणाउ-मुवक्कमिज्जइ, अप्प समुत्थेण इयरगेणावि ।
सो अज्झवसाइ, उवक्कम-णुवक्कमो इयरो ॥३१०॥

अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ।
फासे आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउं ॥३११॥

आहार सरीर इंदिय, पज्जत्ती आणपाणभासमणे ।
चउ पंच पंच छप्पिय, इग विगला-सन्नि सन्नीणं ॥३१२॥

आहार सरीर इंदिय, उसास वउ मणो भिनिव्वत्ती ।
होइ जओ दलियाउ, करणं पइ साउ पज्जत्ती ॥३१३॥

पणिंदिय तिबलूसा-साउ दसपाण चउ छ सग अट्ठ ।
इग दुति चउरिंदीणं, असन्निसन्नीण नव दस य ॥३१४॥

संखित्ता संघयणी, गुरुतर संघयणि मज्झओ एसा ।
सिरि सिरि चंद मुणिंदेण, निम्मिया अप्प पढणट्ठा ।३१५।

संखित्तयरी उ इमा, सरीर-मोगाहणा य संघयणा।
सन्ना संठाण कसाय, लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥३१६॥

दिट्ठी दंसण नाणे, जोगु-वओगो-ववाय चवण ठिइ।
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गइ आगइ वेए ॥३१७॥

मलहारि हेम सूरीण, सीस लेसेण विरइयं सम्मं।
संघयणि रयण-मेयं, नंदउ जा वीर जिन तित्थं ॥३१८॥



॥ वृहत्संग्रहणी के उपयोगी प्रक्षेप गाथाए ॥

पंच सयावावीसा, तिन्नेव सया उ हुंति छप्पन्ना।
तिन्नि सया अडयाला, सणंकुमारस्स वट्टाइ ॥१॥

सत्तरिसयमणणं, तिन्नेव सया हवन्ति छप्पन्ना।
तिन्नि सया अडयाला, वट्टाइ माहिंद सग्गस्स ॥२॥

चोवत्तरि चुलसीया, छसुत्तरया दुवे दुवे सयाओ।
कप्पंमि बंभलोए, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥३॥

ति नउय चेव सयं, दो चेव सया सयं च वाणउयं।
कप्पंमि लंतगंमि, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥४॥

अट्ठावीसं च सयं, छत्तीस-सयं सयं च बत्तीसं।
कप्पंमि महासुक्के, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥५॥

अट्ठुत्तरसय सोलस-सय पुण अट्ठुत्तरं सयं पुरणं ।
कप्पंमि सहस्सारे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥६॥

अडसीइ बाणउइ, अट्ठासीइ य होइ बोधव्वा ।
आणय-पाणय कप्पे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥७॥

चउसट्ठी बावत्तरि, अडसट्ठी चेव होइ नायव्वा ।
आरण अच्चुय कप्पे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥८॥

पणतीसा चत्ताला, छत्तीसा हेट्ठिमंमि गेविज्जे ।
तेवीसा अट्ठवीसा, चोवीसा चेव मज्झिमए ॥९॥

इक्कारस सोलस, बारसेव गेविज्जे उवरिमे हुंति ।
एक्कं वट्टा तंसा, चउरो य अणुत्तर विमाणे ॥१०॥

अच्चि तहाच्चिमाली, वइरोयण पभंकर य चंदाभं ।
सुराभं सुक्काभं, सुपइट्ठाभं च रिट्ठाभं ॥११॥

सारस्सय-माइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तसिया अव्वाबाहा, अग्गि तहं चेव रिट्ठा य ॥१२॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स सव्वसाहूणं ।
माइ अवण्णवाइ, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥१३॥

कोउय भुइकम्मे, पसिणापसिणे निमित्तमाजीवे ।
इड्ढि रस साय गुरुओ, अभिओगं भावणं कुणइ ॥१४॥

तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जोयण सहस्सा ।
रयणाए पत्थडंतर, मेगो चिय जोयण तिभागो ॥१५॥

सत्ताणनइ सयाइं, बीयाए पत्थडंतरं होइ ।
पणहत्तरि तिन्नि सया, बारस सहस्स तइयाए ॥१६॥

छावट्ठि सयं सोलस, सहस्स एगो य दो विभागाइ ।
अड्ढाइज्ज सयाइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥१७॥

बावन्न सहस्साइं, पंचेव हवंति जोयण सयाइं ।
पत्थडमंतर-मेयं, छट्ठी पुढवीए नेयव्वं ॥१८॥

सीमंतओ त्थ पढमो, बीओ पुण रोरुयत्ति नामेण ।
रंभो (भंतो) य तत्थ तइओ, होइ चउत्थो य उब्भंतो ॥१९॥

संभंत-मसंभंतो, विब्भंतो चेव सत्तमो निरओ ।
अट्ठमओ भंतो(तत्तो)पुण, नवमो सीओत्ति नायव्वो ।२०।

वक्कंत-मवक्कंतो, विकलो (विक्कंतो) तह चेवरोरुओनिरओ ।
पढमाए पुढवीए, इंदिया एए बोधव्वा ॥२१॥

थणिए थणए य तहा, मणए चवणए य होइ नायव्वो ।
घट्टे तह संघट्टे, जिब्भे अवजिब्भए चेव ॥२२॥

लोले लोलावत्ते, तहेव घणलोलुए य बोधव्वे ।
बीयाए पुढवीए, इक्कारस इंदया एए ॥२३॥

ततो तविश्रो तवणो, तावणो पंचमो य निदड्ढो (निदाहो)।
छट्ठो पुण पज्जलिश्रो, उप्पज्जलिश्रो य सत्तमश्रो ॥२४॥

संजलिश्रो अट्ठमश्रो, संपज्जलिश्रो य नवमश्रो भणिश्रो।
तइयाए पुढवीए, नव इंदय नारया एए ॥२५॥

आरे तारे मारे, वच्चे तमए य होइ नायव्वे।
खाडखडे खडखडे, इंदय नरया य चउत्थीए ॥२६॥

खाए तमए यतहा, उसे उ अंध ए य तहा तिमिसे।
इय पंचमी पुढवीए, पंच निरय इंदया हुंति ॥२७॥

हिम वद्दल लल्लके, तिन्नि निरय इंदया य छट्ठीए।
एगो य सत्तमाए, अपइट्ठाणो उ नामेणं ॥२८॥



॥ श्री लघु क्षेत्र समास ॥

वीरं जय सेहरपय-पइट्ठिश्रं पणमिउण सुगुरुं च।
मंदु त्ति ससरणट्ठा, खित्तविआरा ऽणु-मुंछामि ॥१॥

तिरिएगरज्जुखित्ते, असंख-दीवोदहीउ ते सव्वे।
उद्धार पलिअ-पणवीस, कोडाकोडी-समयतुल्ला ॥२॥

कुरु-सगदिणावि-अंगुल, रोमे सगवार-विहिअ-अडखंडे।
बावन्नसयं सहस्सा, सगनउइ वीसलक्खाणू ॥३॥

ते थुला पल्ले वि हु, संखिज्जा चेव हुंति सव्वे ऽवि ।
ते इक्किक्क असंखे, सुहुमे खंडे पकप्पेह ॥४॥

सुहुमाणु निचिअ उस्सेहं, गुल-चउकोस पलिय-घणवट्टे ।
पइसमय-मणुग्गहइ, निट्ठिअम्मि उद्धारपलिउ त्ति ॥५॥

पढमो जंबूदीवो, धायइ संडो अ पुक्खरो तइओ ।
वारुणिवरो चउत्थो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥

घयवरदीवो छट्ठो, इक्खुरसो सत्तमो अ अट्ठमओ ।
नंदीसरो अ अरुणो, नवमो इच्चाइ असंखिज्जा ॥७॥

सुपसत्थ-वत्थुनामा,-तिपडोआरा तहा ऽरुणाइया ।
इगनामेऽवि असंखा, जाव य सूरावभास त्ति ॥८॥

तत्तो देवे नागे, जक्खे भूए सयंभुरमणे अ ।
एए पंच वि दीवा, इगेगनामा मुणेअव्वा ॥९॥

पढमे लवणो वीए, कालोदहि सेसएसु सव्वेसु ।
दीवसम-नामया जा, सयंभुरमणोदही चरमो ॥१०॥

बीओ तइओ चरमो, उदगरसा पढम चउत्थ-पंचमगा ।
छट्ठोऽवि सनामरसा, इक्खुरसा सेस-जलहिणो ॥११॥

जंबुदीव पमाणं-गुल-जोअण-लक्ख-वट्ट-विक्खंभो ।
लवणाइआ सेसा, वलयाभा दुगुणदुगुणा य ॥१२॥

वयरामईहिं निअनिअ, दीवोदहि मज्झ-गणिअ-मूलाहिं ।
अट्ठुच्चाहिं वारस, चउ-मूले-उवरि-रुंदाहिं ॥१३॥

वित्थार-दुग-विसेसो, उस्सेह- विभत्तखओ चओ होइ ।
इंअ चूलागिरिकूडाइ, तुल्ल-विक्खंभ-करणाहिं ॥१४॥

गाउदुगुच्चाइ तयट्ठ, भाग-रुंदाइ पउमवेइए ।
देसूण-दुजोअण-वर, वणाइ परिमंडिअ-सिराहिं ।१५।

वेइसमेण महया, गवक्ख-कडएण संपरित्ताहिं ।
अट्ठारसूण-चउभत्त,-परिहि-दारं तराहिं च ॥१६॥

अट्ठुच्च-चउसुवित्थर-दुपास-सक्कोस-कुड्डदाराहिं ।
पुव्वाइ-महड्ढिअ-देव,-दार-विजयाइ-नामाहिं ।१७॥

नाणामणिमय-देहलि,-कवाड-परिघाइ-दार-सोहाहिं ।
जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥१८॥

वरतिण-तोरण-ज्झय, छत्त-वावि-पासाय-सेल-सिलवट्टे ।
वेइवणे वरमंडव,-गिहासणेसु रमंति सुरा ॥१९॥

इह अहिगारो जेसिं, सुराण देवीण ताणमुप्पत्ती ।
निअदीवोदहिनामे, असंखइमे सनयरीसु ॥२०॥

जंबूदीवो छहिं कुल-गिरिहिं सत्तहि तहेव वासेहिं ।
पुव्वावर-दिहेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥२१॥

हिमवंसिहरी महहिमव-रुप्पि निसढो अ नीलवंतो अ ।
बाहिरओ दु दु गिरिणो, उभओ वि सवेइआ सव्वे ॥२२॥

भरहेरवय त्ति दुगं, दुगं च हेमवय-रण्णवयरुवं ।
हरिवास-रम्मय-दुगं, मज्झि विदेहु त्ति सग वासा ।२३।

दो दीहा चउ वट्टा, वेअड्ढा खित्त-छक्क-मज्झम्मि ।
मेरु विदेह मज्झे, पमाणमित्तो कुलगिरीणं ॥२४॥

इग दो चउ सय उच्चा, कणगमया कणगरायया कमसो ।
तवणिज्ज-सुवेरुलिआ, बहि-मज्झ-ब्भिंतरा दो दो ॥२५॥

दुग अड दुतीस अंका, लक्खगुणाकमेण नउअ सय मइआ ।
मूलोवरि समरुवं, वित्थारं विंति जुअलतिगे ॥२६॥

बावन्न-हिओ सहसो, बार कला बाहिराण वित्थारो ।
मज्झिमगाण दसुत्तर,-बायालसया दस कला य ॥२७॥

अब्भिंतराण-दु कला, सोलससहस्स-डसया सबायाला ।
चउचत्तसहस्स दो सय, दसुत्तरा दस कला सव्वे ॥२८॥

इग चउ सोलस अंका, पुव्वुत्तविहीइ खित्तजुअलतिगे ।
वित्थारं विंति तहा, चउसट्ठिंको विदेहस्स ॥२९॥

पंच सयाछव्वीसा, छच्च कला खित्तपढमजुअलम्मि ।
बीए इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥३०॥

चुलसीसय इगवीसा, इक्ककला तइअगेविदेहि पुणो ।
तित्तीससहस्स छसय, चुलसीआ तहा कला चउरो ॥३१॥

पणपन्नसहस सग सय, गुणनउआ नव कला सयलवासा ।
गिरि-खित्तंक-समासे, जोअणलक्खं हवइ पुण्णं ॥३२॥

पन्नाससुद्ध बाहिर-खित्ते दलिअम्मि दुसय अडतीसा ।
तिन्नि य कला य एसो, खंडचउक्कस्स विक्खंभो ॥३३॥

गिरिउवरि सवेइदहा, गिरि-उच्चत्ताउ दस गुणा दीहा ।
दीहत्त-अद्धरुंदा, सव्वे दस जोअणुव्वेहा ॥३४॥

बहि पउम-पुंडरीया, मज्झे ते चेव हुंति महपुव्वा ।
तेगच्छि-केसरीआ, अब्भिंतरिआ कमेणेसु ॥३५॥

सिरिलच्छी हिरिवुद्धी, धीकित्ती नामियाउ देवीओ ।
भवणवइओ पलिओ,-वमाउ वरकमलनिलयाउ ॥३६॥

जलुवरि कोसदुगुच्चं, दहवित्थर-पणसयंस-वित्थारं ।
बाहल्ल वित्थरद्धं, कमलं देवीण मूलिल्लं ॥३७॥

मूले कंदे नाले, तं वयरा-रिट्ठ-वेरुलिअरुवं ।
जंबूणयमज्झ-तवणिज्ज-बहिअदलं रत्तकेसरिअं ।३८।

कमलद्धपाय-पिहुलुच्च, कणगमय-कण्णिगोवरिं भवणं ।
अद्धेगकोस-पिहुदीह, चउदसय-चाल-धणुहुच्चं ॥३९॥

पच्छिमदिसि विणु धणु पण-सय उच्च दाहज्जसय पिहुपवेसं ।
दारतिगं इह भवणे, मज्झे दह देवि-सयणिज्जं ॥४०॥

तं मूल कमलद्धप्पमाण,-कमलाण अडहिअ-सएणं ।
परिखित्तं तब्भवणेसु, भूसाणाइणि देवीणं ॥४१॥

मूलपउमाउ पुव्विं, महयरियाणं चउण्ह चउ पउमा ।
अवराइ सत्त पउमा, अणिआहिवइण सत्तण्हं ॥४२॥

वायव्वाइसु तिसु सुरि-सामन्न सुराण चउसहस पउमा ।
अट्ठ दस वार सहसा, अग्गेआइसु तिपरिसाणं ॥४३॥

इअ बीअ परिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु देवीणं । -
चउ चउ पउम सहस्सा, सोलससहस्साऽऽयरक्खाणं ॥४४॥

अभिओगाइ तिवलए, दुतीस-चत्ता-डयाल-लक्खाइं ।
इगकोडि वीसलक्खा, सड्ढा वीसं सयं सव्वे
(पन्नाससहस्सवीससयं) ॥४५॥

पुव्वावर-मेरुमुहं, दुसु दारतिगं पि सदिसि दहमाणा ।
असिइ भागपमाणं, सत्तोरणं निग्गय-नइअं ॥४६॥

जामुत्तर-दारदुगं, सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा ।
सदिसि दहासिअभागा, तयद्धमाणा य बाहिरिया ॥४७॥

गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवइ बाहिरं नइचउक्कं ।
बहिदह-पुव्वावरदार-वित्थरं वहइ गिरिसिहरे ।४८।

पंच सय गंतु निअगा-वत्तणकूडाउ बहिमुहं वलइ ।
पणसय-तेवीसेहिं, साहिअ-तिकलाहिं सिहराओ ।४६।

निवडइ मगरमुहोवम-वयरामय-जिब्भिआइ-वयरतले ।
निअगे निवायकुंडे, मुत्तावलि-सम-प्पवाहेण ॥५०॥

दहदार-वित्थराओ, वित्थर-पन्नासभाग-जड्डाओ ।
जड्डत्ताओ चउगुण-दीहाओ सव्वजिब्भीओ ॥५१॥

कुंडंतो अडजोअण-पिहुलो जलउवरि कोस दुगमुच्चो ।
वेइजुओ नइदेवी-दीवो दहदेवि-समभवणो ॥५२॥

जोअणसट्ठि-पिहुत्ता, सवायछप्पिहुल-वेइतिदुवारा ।
एए दसुंड कुंडा, एवं अन्ने वि नवरं ते ॥५३॥

एसिं वित्थारतिगं, पडुच्च सम-दुगुण-चउगुण-ट्ठगुणा ।
चउसट्ठि-सोल-चउ-दो, कुंडा सव्वेवि इह नवइ ॥५४॥

एसिं वित्थारतिगं, पडुच्च सम-दुगुण-चउगुण-ट्ठगुणा ।
सगसहस-नइसमेअं, वेअड्ढगिरिं पि भिंदेइ ॥५५॥

तत्तो बाहिरखित्तद्ध-मज्झओ वलइ पुव्वअवरमुहं ।
नइ-सत्तसहस-सहिअं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥५६॥

धुरि कुंड-दुवार-समा, पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते ।
सव्वत्थ महनइओ, वित्थर-पन्नास-भागुंडा ॥५७॥

पणखित महनइओ, सदारदिसि दहविसुद्ध-गिरिअद्धं ।
गंतूण सजिब्भीहिं, निअनिअकुंडेसु निवडंति ॥५८॥

निअ-जिब्भिअ पिहुलत्ता, पणवीसंसेण मुत्तु मज्झगिरिं ।
जाममुहा पुव्वुदहिं, इअरा अवरोअहि-मुविंति ॥५६॥

हेमवइ रोहिअंसा, रोहिआ गंगदुगुण-परिवारा ।
एरएणवए सुवएण-रुप्पकूलाओ ताण समा ॥६०॥

हरिवासे हरिकंता, हरिसलिला गंग-चउगुण-नइआ ।
एसि समा रम्मयए, नरकंता नारिकंता य ॥६१॥

सीओआ सीआओ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ।
निवडइ पणलक्ख, दुतीस सहस अडतीस नइसलिलं ॥६२॥

कुरुनइ चुलसीसहसा, छच्चेवंतरनइउ पइविजयं ।
दो दो महानइओ, चउद-सहस्सा उ पत्तेयं ॥६३॥

अडसयरि महनइओ, बारस अंतर नइउ सेसाओ ।
परिअरनइ चउदस, लक्खा छप्पन्न सहसा य ॥६४॥

एगारड—नवकूडा, कुलगिरिजुअलत्तिगे वि पत्तेअं ।
इह छप्पन्ना चउ चउ, वक्खारेसु ति चउसट्ठी ॥६५॥

सोमणसि गंधमायणि, सग सग विज्जुप्पभि मालवंति पुणो ।
अट्ठट्ठ सयल तीसं, अड नंदणि अट्ठ करिकूडा ॥६६॥

इअ पणसय उच्च छासट्ठि, सय कूडा तेसु दीहरगिरीणं ।
पुव्व–नइ–मेरु–दिसि, अंत सिद्धकूडेसु जिणभवणा ॥६७॥

ते सिरिगिहाओ दोसय–गुणप्पमाणा तहेव तिदुवारा ।
नवरं अडवीसाहिअ–सयगुण–दारप्पमाणमिहं ॥६८॥

पणवीसं कोससयं, समचउरस–वित्थडा दुगुणमुच्चा ।
पासाया कूडेसु, पणसय उच्चेसु सेसेसु ॥६९॥

बल–हरिस्सह–हरिकूडा, नंदणवणि मालवंति विज्जुपभे ।
ईसाणुत्तरदाहिण,–दिसासु सहसुच्च कणगमया ॥७०॥

वेअड्ढेसु वि नव नव, कूडा पणवीस–कोस–उच्चा ते ।
सव्वे तिसय छडुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूडा ॥७१॥

ताणुवरिं चेइहरा, दह–देवी–भवण–तुल्ल–परिमाणा ।
सेसेसु अ पासाया, अद्धेगकोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥

गिरिकरिकूडा उच्चत्तणाउ, सम–अद्ध–मूलुवरि रुंदा ।
रयणमया नवरि विअड्ढ,–मज्झिमा ति ति कणगरुवा ॥७३॥

जंबूणय–रययमया, जगइसमा जंबु–सामली–कूडा ।
अट्ठट्ठ तेसु दहदेवि,–गिहसमा चारु–चेइहरा ॥७४॥

तेसिं समोसढकूडा, चउतीसं चुल्लकुंड-जुअलंतो ।
जंबूणएसु तेसु अ, वेअड्ढेसु व पासाया ॥७५॥

पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवम्मि ।
ते पत्तेअं वरवण, जुआहि वेइहि परिक्खित्ता ॥७६॥

छ सयरि कूडेसु तहा, चूला-चउवण-तरुसु जिणभवणा ।
भणिया जंबुदीवे, सदेवया सेसठाणेसु ॥७७॥

करिकूड-कुंड-नइ दह, कुरु-कंचण-यमल-समविअड्ढेसु ।
जिणभवण-विसंवाओ, जो तं जाणंति गीअत्था ॥७८॥

पुव्वावर-जलहिता, दसुच्च दसपिहुल मेहलचउक्का ।
पणवीसुच्चा पन्नास, तीस-दस-जोअण पिहुत्ता ॥७९॥

वेइहि परिक्खित्ता, सखयरपुर-पन्न-सट्ठि-सेणिदुगा ।
सदिसिद-लोगपालो-वभोगि उवरिल्ल-मेहलया ॥८०॥

दु दु-खंडविहिअ-भरहे-खया दु दु-गुरु गुहा य रुप्पमया ।
दो दीहा वेअड्ढा, तहा दुतीसं च विजएसु ॥८१॥

नवरं ते विजयंता, सखयर- पणपन्नपुर-दुसेणीआ ।
एवं खयरपुराइं, सगतीस सयाइं चालाइं ॥८२॥

गिरिवित्थर-दीहाओ, अट्ठुच्च चउपिहु-पवेसदाराओ ।
बारसपिहुलाउ अट्ठ,-च्चयाउ वेअड्ढ दुगुहाओ ॥८३॥

तम्मज्झ-दुजोअण अंतराउ, तितिवित्थराउ दुनइओ ।
उम्मग्ग-निमग्गाओ, कडगाउ महानइ-गयाओ ॥८४॥

इह पइभित्ति गुणवन्न, मंडले लिहइ चक्कि दु दु समुहे ।
पणसय-धणुह-पमाणे, बारेगड-जोअणुज्जो ए ॥८५॥

सा तमि सगुहा जीए, चक्की पविसेइ मज्झखंडंतो ।
उसहं अंकिअ सो जीए, वलइ सा खंडगपवाया ॥८६॥

कयमाल-नट्टमालय,-सुराउ वट्टइ-निवद्ध-सलिलाओ ।
जा चक्की ता चिट्ठंति, ताओ उग्घडिय-दाराओ ॥८७॥

बहिखंडतो बारस-दीहा, नववित्थडा अउज्झपुरी ।
सा लवणा वेअड्ढा, चउद-हिअसयं चिगारकला ॥८८॥

चक्किवस-नइपवेसे, तित्थदुगं मागहो पभासो अ ।
ताणंतो वरदामो, इह सव्वे विडुत्तरसयं ति ॥८९॥

भरहेखए छअर,-मयावसप्पिणि-उसप्पिणीरुवं ।
परिलभइ कालचक्कं, दुवाल सारं सया वि कमा ॥९०॥

सुसमसुसमा य सुसमा, सुसम दुसमा य दुसमसुसुमा य ।
दुसमा य दुसमदुसमा, कमुक्कमा दुसु वि अरछक्कं ॥९१॥

पुव्वुत्तपल्लि-समसय, अणुग्गहणा निट्ठिए हवइ पलिओ ।
दस कोडिकोडि-पलिएहिं, सागरो होइ कालस्स ॥९२॥

सागरचउति दुकोडा-कोडिमिए अरतिगे नराण कमा ।
आउ ति दु इग पलिआ, तिदुइगकोसा तणुच्चत्तं ॥९३॥

तिदुइगदिणेहि तुवरि-वयरामलमित्तु तेसिमाहारो ।
पिट्ठकरंडा दोसय, छप्पन्ना तद्दलं च दलं ॥९४॥

गुणवन्नदिणे तह पनर,-पन्नर अहिए अवच्चपालणया ।
अवि सयलजिआ जुअला, सुमण सुरुवा य सुरगइआ ।९५।

तेसि मत्तंग भिंगा, तुडिअंगा जोइ दीव चित्तंगा ।
चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अणिअयक्खा ॥९६॥

पाणं भायण पिच्छण, रविपह दीवपह कुसुम माहारो ।
भूसण गिह वत्थासण, कप्पदुमा दसविहा दिंति ॥९७॥

मणुआउसय-गयाइ, हयाइ-चउरंसऽजाइ-ट्ठंसा ।
गो-महिसुट्ट-खराइ, पणंस साणाइ-दसमंसा ॥९८॥

इच्चाइ तिरच्छाण वि, पायं सव्वारएसु सारिच्छं ।
तइआरसेसि कुलगर,-नयजिणधम्माइ उप्पत्ती ॥९९॥

कालदुगे तिचउत्था,-रगेसु एगूण-नवइ-पक्खेसु ।
सेसि गएसुं सिज्झंति, हुंति पढमं तिमजिणिंदा ।१००।

बायालसहसवरिसू-णिगकोडाकोडि-अयरमाणाए ।
तुरिए नराउ पुव्वाण, कोडि तणु-कोसचउरंसं ।१०१।

वरिसेगवीससहस, प्पमाण-पंचमरए सग करुच्चा ।
तीसहिअ-सयाउ नरा, तयंति धम्माइ आणंतो ।१०२।

खारग्गिविसाईहिं, हाहाभूआकयाइ पुहवीए ।
खगवीयं विअड्ढाइसु, नराइवीयं विलाइसु ।१०३।

वहुसच्छ-चक्कवहनइ-चउक्कपासेसु नव नव विलाइं ।
वेअड्ढोभयपासे, चउआलसयं विलाणेवं ।१०४।

पंचम-सम-छट्ठारे, दुकरुच्चा वीसवरिसआउ नरा ।
मच्छासिणो कुरुवा, कूरा विलवासि कुगइगमा ।१०५।

निल्लज्जा निव्वसणा, खरवयणा पिअसुआइठिइरहिआ ।
थीओ छवरिस-गब्भा, अइदुहपसवा वहुसुआ य ।१०६।

इअ अरछक्केणवसप्पिणि त्ति उस्सप्पिणी वि विवरीआ ।
वीस सागरकोडा-कोडीओ कालचक्कम्मि ।१०७।

कुरुदुगि हरिरम्मय दुगि, हेमवए रएणवइ दुगि विदेहे ।
कमसो सयावसप्पिणि, अरय चउक्काइसमकालो ।१०८।

हेमवएरएणवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ।
सद्दावइ विअडावइ, गंधावइ मालवंतक्खा ।१०९।

चउ वट्टविअड्ढा साइ, अरुण-पउम-प्पभास सुरवासा ।
मूलुवरि पिहुत्ते तह, उच्चत्ते जोयणसहस्सं ।११०।

मेरु वट्टो सहस्स-कंदो, लक्खूसिओ सहस्सुवरिं ।
दसगुण भुवि तं सनवइ, दसिगारंसं पिहुलमूले ।१११।

पुढवुवल-वयर-सक्कर,-मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ।
फलिहंक-रयय-कंसण, मओ अ जंबूणओ सेसो ।११२।

तदुवरि चालीसुच्चा, वट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला ।
वेरुलिया वरचूला, सिरिभवण-पमाण-चेइहरा ।११३।

चूलातलाउ चउसय, चउनवइ वलयरुवविक्खंभं ।
बहुजलकुंडं पंडग-वणं च सिहरे सवेइअं ।११४।

पन्नासजोअणेहिं, चूलाओ चउदिसासु जिणभवणा ।
सविदिसि सक्कीसाणं, चउवाविजुआ य पासाया ।११५।

कुलगिरिचेइहराणं, पासायाणं चिमे समट्ठगुणा ।
पणवीस रुंद दुगुणा,-यामाउ इमाउ वावीओ ।११६।

जिणहरबहिदिसि जोअण,-पणसय दीहद्धपिहुल चउउच्चा ।
अद्धससिसमा चउरो, सिअकणयसिला सवेइआ ।११७।

सिलमाणट्ठ सहस्संस,-माणसीहासणेहि दोहि जुआ ।
सिल पंडुकंबला, रत्त-कंबला पुव्वपच्छिमओ ।११८।

जामुत्तराउ ताओ, इगेग सीहासणाउ अइपुव्वा ।
चउसु वि तासु नियासण,-दिसि भवजिणमज्जणं होइ ।११९।

सिहरा छत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ पंच सए ।
पिहुलं सोमणसवणं, सिलविणु पंडगवण सरिच्छं ।१२०।

तव्वाहिरि विक्खंभो, बायालसयाइं दुसयरि जुआइं ।
अट्ठेगारसभागा, मज्झे तं चेव सहस्सूणं ।१२१।

तत्तो सड्ढदुसट्ठी,-सहसेहिं नंदणं पि तह चेव ।
नवरि भवणपासायं,-तरट्ठ दिसि कुमरिकुडा वि ।१२२।

नवसहस नवसयाइं, चउपन्ना छच्चिगारभागाय ।
नंदणवहि-विक्खंभो, सहस्सूणो होइ मज्झम्मि ।१२३।

तदहो पंचसएहिं, महिअलि तह चेव भद्सालवणं ।
नवरमिह दिग्गय च्चिअ, कूडा वणवित्थरं तु इमं ।१२४।

बावीस सहस्साइं, मेरुओ पुव्वओ अ पच्छिमओ ।
तं चाउसीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरओ ।१२५।

छव्वीस सहस चउसय, पणहत्तरि गंतु कुरुनइपवाया ।
उभओ विणिग्गया गय,-दंता मेरुम्मुहा चउरो ।१२६।

अग्गेआइसु पयाहिणेण, सिअ-रत्त-पीअ-नीलाभा ।
सोमणस-विज्जुप्पह,-गंधमायण-मालवंतक्खा ।१२७।

अहलोयवासिणीयो, दिसाकुमारीउ अट्ठ एएसिं ।
गयदंतगिरिवराणं, हिट्ठा चिट्ठंति भवणेसु ।१२८।

धुरि अंते चउपणसय, उच्चत्ति पिहुत्ति पणसयाऽसिसमा ।
दीहत्ति इमे छकला, दुसय नवुत्तर सहसतीसं ।१२६।

ताणंतो देवुत्तर-कुराउ चंदद्ध संठियाउ दुवे ।
दससहस-विसुद्धमहा,विदेह-दलमाण-पिहुलाओ ।१३०।

नइ-पुव्वावर-कूले, कणगमया बलसमा गिरी दो दो ।
उत्तरकुराइ जमगा, विचित्तचित्ता य इअरीए ।१३१।

नइवह-दीहा पण पण, हरया दुदुदारया इमे कमसो ।
निसहो तह देवकुरु, सूरो सुलसो य विज्जुपभो ।१३२।

तह नीलवंत उत्तर-कुरु, चंदेरवय मालवंतु त्ति ।
पउमदह-समा नवरं, एएसु सुरा दह-सनामा ।१३३।

अडसय चउतीस जोअणाइं, तह सेग-सत्त-भागाओ ।
इक्कारस य कलाओ, गिरी-जमल-दहाण-मंतरयं ।१३४।

दह-पुव्वावर-दस-जोयणेहिं, दस दस विअडुटकूडाणं ।
सोलसगुणप्पमाणा, कंचणगिरिणो दुसय सव्वे ।१३५।

उत्तरकुरु-पुव्वद्धे, जंबूणय जंबूपीढमंतेसु ।
कोस-दुगुच्चं कमि, वड्ढमाणु चउवीसगुणं मज्झे ।१३६।

पणसय-वट्ट-पिहुत्तं, तं परिखित्तं च पउमवेइए ।
गाउदुगुच्च-द्धपिहुत्त, चाह-चउदार-कलिआए ।१३७।

तं मज्झे अडवित्थर, चउच्च मणिपीढिआइ जंबूतरु ।
मूले कंदे खंधे, वरवयरा-रिट्ठ-वेरुलिए ।१३८।

तस्स य साह-पसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो ।
सोवन्न-जायरूवा, वेरुलि-तवणिज्ज-जंबुणाया ।१३६।

सो रययमय-पवालो, रायय विडिमो य रयण-पुप्फफलो ।
कोसदुगं उव्वेहे, थुड-साहा-विडिम विक्खंभो ।१४०।

थुडसाह विडिमदीह त्ति, गाउए अड्ढ पनर चउवीसं ।
साहा सिरिसमभवणा, तम्माण-सचेइअं विडिमं ।१४१।

पुव्विल्ल सिज्ज तिसु आसणाणि, भवणेसु णाढिअसुरस्स ।
सा जंबू बारस-वेइआहि कमसो परिक्खित्ता ।१४२।

दहपउमाणं जं वित्थरं, तु तमिहावि जंबुरुक्खाणं ।
नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहिसीओ ।१४३।

कोसदुसएहि जंबू, चउदिसि पुव्वसाल-समभवणा ।
विदिसासु सेस-तिसमा, चउवाविजुया य पासाया ।१४४।

ताणंतरेसु अड जिण, -कूडा तह सुरकुराइ अवरद्धे ।
रायपीढे सामलि, रुक्खो एमेव गरुलस्स ।१४५।

बत्तीस सोल बारस, विजया वक्खार अंतरनइओ ।
मेरुवणाओ पुव्वा-वरासु कुलगिरि-महनयंता ।१४६।

विजयाण पिहुत्ति सगट्ठ, भाग बाउत्तरा दुवीससया ।
सेलाणं पंचसए, सवेइ-नइ पन्नवीस-सयं ।१४७।

सोलस सहस पणसय, बाणउआ तह य दो कलाओ य ।
एएसिं सव्वेसिं, आयामो-वणमुहाणं च ।१४८।

गयदंत गिरिव्वुच्चा, वक्खारा ताण-मंतरनइणं ।
विजयाणं च भिहाणाइ, मालवंता पयाहिणओ ।१४९।

चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ।
तिउडे वेसमणे वि य, अंजण मायंजणे चेव ।१५०।

अंकावइ पम्हावइ, आसीविह तह सुहावहे चंदे ।
सूरे नागे देवे, सोलस वक्खार-गिरिनामा ।१५१।

गाहावइ दहवइ, वेगवइ तत्त मत्त उम्मता ।
खीरोय सीयसोया, तह अंतोवाहिणी चेव ।१५२।

उम्मीमालिणि गंभीर, मालिणि फेणमालिणी चेव ।
सव्वत्थ वि दसजोयण उंडा कुंडुब्भवा एया ।१५३।

कच्छु सुकच्छो य महा, कच्छो कच्छावइ तहा ।
आवत्तो मंगलावत्तो, पुक्खलो पुक्खलावई ।१५४।

वच्छु सुवच्छो य महा,-वच्छो वच्छावइ वि य ।
रम्मो य रम्मओ चेव, रमणी मंगलावइ ।१५५।

पम्हु सुपम्हो य महा,-पम्हो पम्हावइ तओ ।
संखो नलिणनामा य, कुमुओ नलिणावइ ।१५६।

वप्पु सुवप्पो अ, महा-वप्पो वप्पावइ त्ति य ।
वग्गु तहा सुवग्गु य, गंधिलो गंधिलावइ ।१५७।

एए पुव्वावरगय,-विअड्ढदलिय त्ति नइदिसि-दलेसु ।
भरहद्ध-पुरि-समाओ, इमेहि नामेहि नयरीओ ।१५८।

खेमा खेमपुरा वि अ, अरिट्ठ रिट्ठावइ य नायव्वा ।
खग्गी मंजूसा वि य, ओसहिपुरी पुंडरिगिणी य ।१५९।

सुसीमा कुंडला चेव, अवराइअ पहंकरा ।
अंकावइ पम्हावइ, सुभा रयणसंचया ।१६०।

आसपुरा सीहपुरा, महापुरा चेव हवइ विजयपुरा ।
अवराइया य अवरा, असोगा तह वीअसोगा य ।१६१।

विजया य वेजयंति, जयंति अपराजिया य बोधव्वा ।
चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवज्झा य ।१६२।

कुंडुब्भवा उ गंगा-सिधूओ कच्छ-पम्ह-पमुहेसु ।
अट्ठट्ठसु विजएसुं, सेसेसु य रत्त रत्तवइ ।१६३।

अविवक्खिउण जगइ, सवेइ-वणमुहचउक्क-पिहुलत्तं ।
गुणतीससय दुवीसा, नइंति गिरिअंति एगकला ।१६४।

पणतीस सहस चउसय, छडुत्तरा सयलविजय-विक्खंभो ।
वणमुह-दुग विक्खंभो, अडवन्न सया य चोयाला ।१६५।

सग सय पन्नासा नइ, पिहुत्ति चउवन्न सहस मेरुवणे ।
गिरिवित्थरि चउ सहसा, सव्वसमासो हवइ लक्खं ।१६६।

जोअण-सयदसगंते, समधरणीओ अहो अहोगामा ।
वायालीस-सहसेहिं, गंतुं मेरुस्स पच्छिमओ ।१६७।

चउ चउतीसं च जिणा, जहन्न-मुक्कोसओ अ हुंतिकमा ।
हरि-चक्कि-बला चउरो, तीसं पत्तेअमिह दीवे ।१६८।

ससिदुग-रविदुग-चारो, इह दीवे तेसि चारखित्तं तु ।
पण सय दसुत्तराइं, इगसट्ठि भागा य अडयाला ।१६९।

पनरस चुलसीइसयं, छप्पन्न-डयाल-भागमाणाइं ।
ससि-सूर-मंडलाइं, तयं तराणिगिगहीणाइं ।१७०।

पणतीस जोअणे भाग, तीस चउरो अ भाग सगभाया ।
अंतरमाणं ससिणो, रविणो पुण जोअणे दुन्नि ।१७१।

दीवंतो असिअसणे, पण पणसट्ठी अ मंडला तेसिं ।
तीसहिअ-तिसय लवणे, दसिगुणवीसं सयं कमसो ।१७२।

ससिससि-रविरवि अंतरि, मज्झे इगलक्खु तिसय साट्ठणो ।
साहिअदुसयरि पणचय, बहि लक्खो छसय साठहिओ ।१७३।

साहिश्र पण सहस तिहुत्तराइ, ससिणो मुहुत्तगइ मज्झे ।
बावन्नहिश्रा सा बहि, पइमंडल पउण चउवुड्ढी ।१७४।

जा ससिणो सा रविणो, अडसयरिसएण-तीसएण हिश्रा ।
किंचूणाणं अट्ठार-सट्ठि-भागाण-मिह वुड्ढी ।१७५।

मज्झे उदयत्थंतरि, चउनवइ सहस्स पणसय छवीसा ।
बायाल सट्ठिभागा, दिणं च अट्ठारस-मुहुत्तं ।१७६।

पइमंडल दिणहाणी, दुण्ह मुहुत्तेग सट्ठि भागाणं ।
अंते बारमुहुत्त, दिणं निसा तस्स विवरीश्रा ।१७७।

उदयत्थंतरि बाहिं, सहसा तेसट्ठि छसय तेसट्ठा ।
तह इगससि-परिवारे, रिक्खडवीसा-डसीइ गहा ।१७८।

छासट्ठि सहस नवसय, पणहत्तरि तार-कोडिकोडीणं ।
सन्नतरेण-मुस्सेहं, गुलमाणेणं वा हुंति ।१७९।

गह-रिक्ख-तारगाणं, संखं ससिसंख संगुणं काउं ।
इच्छिश्र-दीवुदहिंमि य, गहाइमाणं विश्राणेह ।१८०।

चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धयइम्मि ससिसूरा ।
परश्रो दहिदीवेसु श्र, तिगुणा पुव्विल्ल-संजुत्ता ।१८१।

नरखित्तं जा समसेणि, चारिणो सिग्घ-सिग्घतर-गइणो ।
दिट्ठि पहमिति खित्ता-णुमाणश्रो ते नराणेवं ।१८२।

पणसय सचतीसा, चउतीससहस्स लक्खइगवीसा ।
पुक्खरदीवड्ढ-नरा, पुव्वेण अवरेण पिच्छंति ।१८३।

नरखित्त-बहि, ससिरवि-संखा करणं तरेहिं वा होइ ।
तह तत्थ य जोइसिया, अचलद्धपमाण-सुविमाणा ।१८४।

जंबू परिहि तिलक्खा, सोलसहस दुसय पउण अडवीसा ।
धणु अडवीससयं-गुल, तेरस सड्ढा समहिआ य ।१८५।

सगसय नउआकोडी, लक्खा छप्पन्न चउनवइ सहसा ।
सड्ढसयं पउणदुकोस, सड्ढवासट्ठिकर गणिअं ।१८६।

वट्टपरिहिं च गणिअं, अंतिम खंडाइ उसु जिअं च धणु ।
वाहुं पयरं च घणं, गणेह एएहिं करणेहिं ।१८७।

विक्खंभ-वग्ग-दहगुण-मूलं वट्टस्स परिरओ होइ ।
विक्खंभपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणिअपयं ।१८८।

ओगाहु उसू सुच्चिअ, गुणवीसगुणो कलाउसू होइ ।
विउसुपिहुत्ते चउण-उसुगुणिए मूलमिह जीवा ।१८९।

इसुवग्गि छगुणि जीवा,-वग्गजुए मूल होइ धणुपिट्ठं ।
धणुदुग-विसेस-सेसं, दलिअं बाहादुगं होइ ।१९०।

अंतिमखंडस्सु सुणा, जीवं संगुणिअ चउहि भइउणं ।
लद्धंमि वग्गिए दस,-गुणम्मि मूलं हवइ पयरो ।१९१।

उवलद्धो जिणधम्मो, नय अणुचिरणो पमायदोसेणं ।
हा जीव अप्पवेरि अ, सुबहुं परओ विसूरिहिसि ॥५३॥

सो अंति ते वराया, पत्था समुवट्ठियंमि मरणंमि ।
पावपमायवसेणं, न संचियो जेहिं जिणधम्मो ॥५४॥

धी धी धी संसारं, देवो मरिउण जं तिरी होई ।
मरिऊण रायराया, परिपच्चइ निरयजालाए ॥५५॥

जाइ अणाहो जीवो, दुमस्स पुप्फंव कम्मवायहओ ।
धणधन्नाहरणाइं, घरसयणकुडुंव मिल्लेवि ॥५६॥

वसियं गिरिसु वसियं, दरीसु वसियं समुद्दमज्झंमि ।
रुक्खग्गेसु य वसियं, संसारं संसरंतेणं ॥५७॥

देवो नेरइओत्तिय, कीड पयंगु त्ति माणुसो एसो ।
रुवस्सी य विरुवो, सुहभागी दुहभागी य ॥५८॥

राउत्ति य दमगुत्ति य, एस सवागुत्ति एस वेयविओ ।
सामी दासो पुज्झो, खलोत्ति अधणो धणवइत्ति ॥५९॥

नवि इच्छ काइ निअमो, सकम्मविणिविठ्ठसरिसकयचिठ्ठो ।
अन्नुन्नरुववेसो, नडुव्व परिअत्तए जीवो ॥६०॥

नरएसु वेअणाओ, अणोवमाओ असायबहुलाओ ।
रे जीव तए पत्ता, अणंतखुत्तो बहुविहाओ ॥६१॥

देवत्ते मणुअत्ते, पराभिओगत्तणं उवगएणं ।
भीसणदुहं बहुविहं, अणंतखुत्तो समणुभूअं ॥६२॥

तिरियगइं अणुपत्तो, भीममहावेअणा अणेगविहा ।
जम्मणमरणरहट्टे, अणंतखुत्तो परिब्भमिओ ॥६३॥

जावंति केवि दुक्खा, सारीरा माणसा व संसारे ।
पत्तो अणंत खुत्तो, जीवो संसारकंतारे ॥६४॥

तण्हा अणंतखुत्तो, संसारे तारिसी तुमं आसी ।
जं पसमेउं सव्वो, दहीणमुदयं न तिरीज्झा ॥६५॥

आसी अणंतखुत्तो, संसारे ते छुहावि तारिसिया ।
जं पसमेउं सव्वो, पुग्गलकाओवि न तारिज्जा ॥६६॥

काउणम ऽणेगाइं, जम्मणमरण परियट्टणसयाइं ।
दुक्खेण माणुसत्तं, जइ लहइ जहिच्छियं जीवो ॥६७॥

तं तहदुल्लहलंभं, विज्जुल्लयाचंचलं च मणुयत्तं ।
धम्मंमि जो विसीयइ, सो काउरिसो न सप्पुरिसो ॥६८॥

माणुस्सजम्मे तडि लद्धयंमि, जिणिंदधम्मो न कओ य-जेणं ।
तुट्टे गुणे जह धाणुक्कएणं, हत्था मलेवा य अवस्सतेणं ॥६९॥

रे जीवनिसुणि चंचलसहाव, मिल्हेविणु सयलविवब्भभाव ।
नयभेवपरिग्गह विविहजाल, संसारिअत्थी सहु इंदयाल ॥७०॥

पियपुत्तमित्त घरघरणिजाय, इहलोइअ सव्वनियसुहसहाय ।
नवि अत्थि कोइ तुह सरणिमुक्ख, इक्कल्लु सहसि तिरिनिरयदुक्ख ७१

कुसग्गे जह ओसबिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए ।
एवं मणुआण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए ॥७२॥

संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोहि खलु पिच्च दुल्लहा ।
नो हू ओवणमंति राइउ, नो सुलहं पुणरवि जीवियं ॥७३॥

डहरा वुड्ढा य पासह, गब्भच्छावि चयंति माणवा ।
सेणे जह वट्टयं हरे, एवमाऽऽउक्खयंमि तुट्टइ ॥७४॥

तिहुयणजणंमरणं, दट्टूण नयंति जे न अप्पाणं ।
विरमंति न पावाओ, धी धी धी हूत्तणं ताणं ॥७५॥

मामा जपह बहुयं, जे बद्धा चिक्कणेहि कम्मेहिं ।
सव्वेसि तेसिं, जायइ, हियोवएसो महादोसो ॥७६॥

उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ।
पयः पानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्द्धनम् ॥७७॥

कुणसि ममत्तं धणसय, णविहवपमुहेसु अणंतदुक्खेसु ।
सिढिलेसि आयरं पुण, अणंतसुक्खंमि मुक्खंम्मि ॥७८॥

संसारो दुहहेऊ, दुक्खफलो दुसहदुक्खदुवो य ।
न चयंति तंपि जीवा, अइबद्धा नेहनिअलेहिं ॥७९॥

नियकम्मपवण चलिओ, जीवो संसारकाणणे घोरे ।
का का विडंवणाओ, न पावए दूसहडुक्खाओ ॥८०॥

सिसिरंमि सीयलानिल, लहरिसहस्सेंहिभिन्नवणादेहो ।
निरियत्तणंमिऽरणे, अणंतसो निहणम ऽणुपत्तो ॥८१॥

गिम्हाय वसंतत्तो, ऽरणे छुहिओ पिवासिओ वहुसो ।
संपत्तो तिरियभवे, मरणदुहं वहु विसूरंतो ॥८२॥

वासासुऽरणमज्झे, गिरिनिज्झरणोदगेहि वज्झंतो ।
सीया निलडज्झवियो, मओसि तिरियत्तणे वहुसो॥८३॥

एवं तिरिय भवेसु, कीसंतो दुक्खसयसहस्सेहिं ।
वसियो अणंतखुत्तो, जीवो भीसणभवारणे ॥८४॥

दुट्टट्ठकम्मपलया, निलपेरिओ भीसणंमिभवरणे ।
हिडंतो नरएसु वि, अणंतसो जीव पत्तोसि ॥८५॥

सत्तसु नरयमहीसु, वज्झानलदाह सीयवियणासु ।
वसियो अणंतखुत्तो, विलवंते करुणसद्देहि ॥८६॥

पियमायसयणरहिओ, दुरंतवाहिहिं पीडिओ वहुसो ।
मणुअभवे निस्सारे, विलाविओ किं न तं सरसि ॥८७॥

पवणु व्व गयणमग्गे, अलक्खियो भमइभववणे जीवो ।
ठाणट्ठाणंमि सम्रु, ज्झिऊण धणसयण संघाए ॥८८॥

विट्टिज्ज'ता असयं, जम्मजरामरणतिक्खकुंतेहिं ।
दुहमऽणुहवंति घोरं, संसारे संसरंत जिआ ॥८९॥

तहवि खणंपि कयावि हु, अन्नाणभुयंगडंकिया जीवा ।
संसारचारगाओ, नय ओविज्ज'ति मूढमणा ॥९०॥

कीलसि कियंतवेलं, सरीरवावीइ जत्थ पइसमयं ।
काल्लरहट्टघडीहिं, सोसिज्जइ जीवियं भो हं ॥९१॥

रे जीव वुज्झमामु, ज्झमा पमायं करेसिरेपाव ।
किं परलोए गुरुदुक्खभायणं, होहिसि अयाण ॥९२॥

वुज्झसु रे जीव तुमं, मामुज्झसि जिणमयंमिनाऊणं ।
जम्हा पुणरवि एसा, सामग्गी दुल्लहा जीव ॥९३॥

दुलहो पुण जिणधम्मो, तुमं पमायायरो सुहेसी य ।
दुसहं च नरयदुक्खं, कह होहिसि तं न याणामो ॥९४॥

अथिरेण थिरो समले, ण निम्मलो पावसेण साहीणो ।
देहेन जइ विढप्पइ, धम्मो ता किं न पज्जतं ॥९५॥

जह चिंतामणिरयणं, सुलहं न हु होइ तुच्छविहवाणं ।
गुणविहववज्जियाणं, जियाणं तह धम्मरयणंपि ॥९६॥

जह दिट्ठिसंजोगो, न होइ जच्चंधयाण जीवाण ।
तह जिणमयसंजोगो, न होइ मिच्छंधजीवाणं ॥९७॥

पच्चक्खम ऽणंतगुणे, जिणंदधम्मे न दोस लेसोवि ।
तहवि हु अन्नाणंधा, न रमंति कयावि तंमि जिया ॥९८॥

मिच्छे अणंतदोसा, पयडा दीसंति न विय गुणलेसो ।
तहवियं तं चेव जिया, हि मोहंधा निसेवंति ॥९९॥

धिद्धि ताण नराणं, विन्नाणे तह गुणेसु कुशलत्तं ।
सुहसच्चधम्मरयणे, सुपरिक्खं जे न जाणंति ॥१००॥

जिणधम्मो ऽयं जीवाणं, अप्पुवो कप्प पायवो ।
सग्गापवग्गसुक्खाणं, फलाणं दायगो इमो ॥१०१॥

धम्मो बंधु सुमित्तो य, धम्मो य परमो गुरु ।
मुक्खमग्गपयट्टाणं, धम्मो परमसंदणो ॥१०२॥

चउगइणंत दुहानल, पलित्त भवकाणणे महाभीमे ।
सेवसु रे जीव तुमं, जिणवयणं अमिय कुंड समं ॥१०३॥

विसमे भव मरुदेसे, अणंतदुह गिम्हताव संतत्ते ।
जण धम्म कप्प रुक्खं, सरसु तुमं जीव सिव सुहदं ॥१०४॥

किं बहुणां जिण धम्मे, जइयव्वं जह भवोदहिं घोरं ।
लहु तरियम ऽणंत सुहं, लहइ जिओ सासयं ठाणं ॥१०५॥

-●-

॥ श्री इंद्रिय पराजय शतक ॥

सुच्चिअ सूरो सो चेव, पंडिओ तं पसंसिमो निच्चं ।
इंदिय-चोरेहिं सया, न लुंटिअं जस्स चरणधणं ॥१॥

इंदिय-चवल तुरंगो, दुग्गइ-मग्गाणु धाविरे निच्चं ।
भाविअ-भवस्सरुवो, रुंभइ जिणवयण-रस्सीहिं ॥२॥

इंदिय-धुत्ताण महो, तिलतुस-मित्तंपि देसु मा पसरं ।
जइ दिन्नो तो नीओ, जत्थ खणो वरिस-कोडिसमो ॥३॥

अजिइंदिएहि चरणं, कट्ठं व घुणेहिं किरइ असारं ।
तो धम्मत्थीहि दढं, जइअव्वं इंदिय-जयंमि ॥४॥

जह कागिणीइ हेउं, कोडि रयणाण हारए कोइ ।
तह तुच्छ-विसय-गिद्धा, जीवा हारंति सिद्धिसुहं ॥५॥

तिलमित्तं विसयसुहं, दुहं च गिरिराय-सिंग-तुंगयरं ।
भव-कोडीहिं न निट्ठइ, जं जाणसु तं करिज्जासु ॥६॥

भुजंता महुरा विवाग, -विरसा किंपागतुल्ला इमे ।
कच्छकंडु अणं व दुक्ख, -जणया दाविंति बुद्धिसुहं ॥७॥

मज्झण्हे मयतिण्हिअव्व, सययं मिच्छा भिसंधि-प्पया ।
भुत्ता दिंति कुजम्म-जोणिगहणं भोगा महावेरिणो ॥८॥

सक्का अग्गी निवारेउं, वारिणा जलिओ वि हु ।
सव्वोदहि-जलेणावि, कामग्गी दुन्निवारओ ॥९॥

विसमिव मुहंमि महुरा, परिणाम निकाम दारुणा विसया ।
कालमणंतं भुत्ता, अज्जवि मुत्तु न कि जुत्ता ॥१०॥

विषयरसासवमत्तो, जुत्ताजुत्तं न जाणइ जीवो ।
भूरइ कलुणं पच्छा, पत्तो नरयं महाघोरं ॥११॥

जह निंबदुमुप्पन्नो, कीडो कडुअंपि मन्नए महुरं ।
तह सिद्धिसुह-परुक्खा, संसारदुहं सुहं बिंति ॥१२॥

अथिराण चंचलाण य, खणमित्त-सुहंकराण पावाणं ।
दुग्गइ-निबंधणाणं, विरमसु एआण भोगाणं ॥१३॥

पत्ता य कामभोगा, सुरेसु असुरेसु तहय मणुएसु ।
न य जीव ! तुज्झ तित्ती, जलणस्स व कट्ठनियरेण ॥१४॥

जहा य किंपागफला मणोरमा, रसेण वन्नेण य भुंजमाणा ।
ते खुड्डएजीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥१५॥

सव्वं विलविअं गीअं, सव्वं नट्टं विडंबणा ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥

देविंद-चक्कवट्टित्तणाइ, रज्जाइं उत्तमा भोगा ।
पत्ता अणंतखुत्तो, न य हं तत्ति गओ तेहिं ॥१७॥

संसार-चक्कवाले, सव्वेवि य पुग्गला मए बहूसो ।
आहारिआ य परिणामिआ य, न य तेसु तित्तो हं ॥१८॥

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पइ ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥१९॥

अल्लो सुक्को अ दो छूढा, गोलया मट्टिआमया ।
दोवि आवडिआ कूडे, जो अल्लो तत्थ लग्गइ ॥२०॥

एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा काम-लालसा ।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा सुक्के अ गोलए ॥२१॥

तणकट्ठेहि व अग्गी, लवणसमुद्दो नइसहस्सेहिं ।
न इमो जीवो सक्को, तिप्पेउं कामभोगेहिं ॥२२॥

भुत्तूणवि भोगसुहं, सुर-नर-खयरेसु पुण पमाएणं ।
पिज्जइ नरएसु भेरव, कलकलए तउतंब पाणाइं ॥२३॥

को लोभेण न निहओ, कस्स न रमणीहिं भोलिअं हिअयं ।
को मच्चुणा न गहिओ, को गिद्धो नेव विसएहिं ॥२४॥

खणमित्त-सुक्खा बहुकाल-दुक्खा,
पगाम-दुक्खा अनिकाम-सुक्खा ।
संसार-सुक्खस्स विपक्ख-भूआ,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥२५॥

सव्व-गहाणं पभवो, महागहो सव्व दोसपायट्टी ।
कामग्गहो दुरप्पा, जेण-मिभूअं जगं सव्वं ।२६।

जह कच्छुल्लो कच्छु, कंडुअमाणो दुहं मुणइ सुक्खं ।
मोहाउरा मणुस्सा, तह कामदुहं सुहं विंति ।२७।

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेयमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ।२८।

विसए अवइक्खंता, पडंति संसार-सायरे घोरे ।
विसएसु निराविक्खा, तरंति संसार-कांतारे ।२६।

छलिया अवइक्खंता, निरावइक्खा गया अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारे, निवराइक्खेण होअव्वं ।३०।

विसयाविक्खो निवडइ, निरविक्खो तरइ-दुत्तर-भवोहं ।
देवी-दीव-समागय, -माउअ-जुअलेण दिट्ठंतो ।३१।

जं अइतिक्खं दुक्खं, जं च सुहं उत्तमं तिलोअंमि ।
तं जाणसु विसयाणं, वुड्ढिक्खय-हेउअं सव्वं ।३२।

इंदिय-विसय-पसत्ता, पडंति संसार-सायरे जीवा ।
पक्खिव्व छिन्नपक्खा, सुसीलगुण-पेहुण-विहूणा ।३२।

न लहइ जहा लिहंतो, मुहिल्लियं अट्ठिअं जहासुणओ ।
सोसइ तालुअ-रसिअं, विलिहंतो मन्नए सुक्खं ।३४।

महिलाण कायसेवी, न लहइ किंचिवि सुहं तहा पुरिसो ।
सो मन्नए वराओ, सयकाय-परिस्समं सुक्खं ।३५।

सुट्ठुवि मग्गिज्जंतो, कत्थवि कयलीइ नत्थिजह सारो ।
इंदिय-विसएसु तहा, नत्थि सुहं-सुट्ठुवि गविट्ठं ।३६।

सिंगार-तरंगाए, विलास-वेलाइ जुव्वण-जलाए ।
के के जयंमि पुरिसा, नारी-नइए न बुड्डन्ति ।३७।

सोअ-सरी दुरिअ-दरी, कवडकुडी महिलिया किलेसकरी ।
वइर-विरोयण-अरणी, दुक्खखाणी सुक्खपडिवक्खा ।३८।

अमुणिअ-मण-परिकम्मो, सम्मं को नाम नासिउं तरइ ।
वम्मह-सरपसरोहे, दिट्ठि-च्छोहे मयच्छीणं ।३९।

परिहरसु तओ तासिं, दिट्ठिं दिट्ठिविसस्सव्व अहिस्स ।
जं रमणि-नयण-बाणा, चरित्तपाणे विणासंति ।४०।

सिद्धंत-जलहि-पारंगओवि, विजिइंदिओवि सूरोवि ।
दढचित्तोवि छलिज्जइ, जुवइ-पिसाईहि खुड्डाहि ।४१।

मयण-नवणीय-विलओ, -जह जायइ जलण-संनिहाणंमि ।
तह रमणि-संनिहाणे, विद्दवइ मणो मुणीणंपि ।४२।

नीअंगमाहि सुपओहराहि, उप्पिच्छ-मंथरगईहि ।
महिलाहि निमग्गा इव, गिरवरगुरुआ वि भिज्जंति ।४३।

त्रिसयजलं मोहकलं, विलासविब्बोअ जलयराइन्नं ।
मय-मयरं उत्तिन्ना, तारुण्ण-महन्नवं धीरा ।४४।

जइवि परिचत्तसंगो, तव-तणुअंगो तहावि परिवडइ ।
महिला-संसग्गीए, कोसाभवणूसिय मुणीव्व ।४५।

सव्वगंथ-विमुक्को, सीइभूओ-पसंत-चित्तो अ ।
जं पावइ मुत्तिसुहं, न चक्कवट्टीवि तं लहइ ।४६।

खेलंमि पडिअमप्पं, जह न तरइ मच्छिआवि मोएउं ।
तह विसयखेल- पडिअं, न तरइ अप्पंपि कामंधो ।४७।

जं लहइ वीअराओ, सुक्खं तं मुणइ सुच्चिअन अन्नो ।
न विगत्ता-सूअरओ, जाणइ सुरलोकअं सुक्खं ।४८।

जं अज्जवि जीवाणं, विसएसु दुहासवेसु पडिबंधो ।
तं नज्जइ गुरुआणवि, अलंघणिज्जे महामोहो ।४९।

जे कामंधा जीवा, रमंति विसएसु ते विगयसंका ।
जे पुण जिणवयण-रया, ते भीरु तेसु विरमंति ।५०।

असुइ-मुत्त-मल-पवाहरुवयं, वंत-पित्त-वस-मज्ज-फोप्फ-संमेअं ।
मंस बहु-हड्ड-करंडअं, चम्ममित्त-पच्छाइअं जुवइ-अंगयं ।५१।

मंसं इमं मुत्तपुरीस-मीसं, सिंघाणखेलाइअ-निज्झरंतं ।
एअं अणिच्चं किमिआण वासं, पासं नराणं मइ-बाहिराणं ।५२।

पासेण पंजरेण य, बज्झंति चउप्पया य पक्खीइ ।
इय जुवइ-पंजरेणं, बद्धा पुरिसा किलिस्संति ॥५३॥

अहो मोहो महामल्लो, जेण अम्हारिसावि हु ।
जाणंतावि अणिच्चत्तं, विरमंति न खणंपि हु ॥५४॥

जुवईहिं सह कुणंतो, संसग्गिं कुणइ सयलदुक्खेहिं ।
न हि मुसगाणं संगो, होइ सुहो सह बिडालेहिं ॥५५॥

हरि-हर-चउराणण,-चंद-सूर-खंदाइणो विजेदेवा ।
नारीण किंकरत्तं, कुणंति धिद्धी विसय-तिन्हा ॥५६॥

सीअं च उण्हं च सहंति मूढा, इत्थीसु सत्ता अविवेअवंता ।
इलाइपुत्त व्व चयंति जाइं, जीअं च नासंति अ रावणुव्व ॥५७॥

वुत्तण वि जीवाणं, सुदुक्कराय़ंति पावचरिआइं ।
भयवं जा सा सा सा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥५८॥

जललव-तरलं जीअं, अथिरा लच्छीवि भंगुरो देहो ।
तुच्छा य कामभोगा, निबंधणं दुक्ख-लक्खाणं ॥५९॥

नागो जहा पंकजलावसन्नो, दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं जिआ कामगुणेसु गिद्धा, सुधम्ममग्गे न रया हवंति ॥६०॥

जह चिट्ठपुंज-खुत्तो, किमी सुहं मन्नए सयाकालं ।
तह विसयासुइ-रत्तो, जीवो वि मुणइ सुहं मूढो ॥६१॥

मयरहरो व जलेहिं, तहवि हु दुप्पूरओ इमो आया ।
विसया-मिसंमि गिद्धो, भवे भवे वच्चइ न तत्तिं ।६२।

विसयविसट्टा जीवा, उब्भडरुवाइएसु विविहेसु ।
भव-सय सहस्स-दुलहं, न मुणंति गयं पि निअजम्मं ।६३ ।

चिट्ठंति विसयविवसा, मुत्तुं लज्जंपि केवि गय संका ।
न गणंति केवि मरणं, विसयंकुस-सल्लिया जीवा ।६४।

विसय-विसेणं जीवा, जिणधम्मं हरिउण हा नरयं ।
वच्चंति जहा चित्तय,-निवारिओ बंभदत्तनिवो ।६५।

धी धी ताण नराणं, जे जिणवयणा मयंपि मुत्तूणं ।
चउगइ-विडंबणकरं, पियंति विसयासवं घोरं ।६६।

मरणेवि दीणवयणं, माणधरा जे नरा न जंपंति ।
ते वि हु कुणंति लल्लिं, बालाणं नेह-गह-गहिला ।६७।

सक्कोवि नेव सक्कइ, माहप्प-मडुप्फुरं जए जेसिं ।
तेवि नरा नारीहिं, कराविआ निअय-दासत्तं ।६८।

जउनंदणो महप्पा, जिणभाया वयधरो चरमदेहो ।
रहनेमी राइमई-रायमई, कासी ही विसया ।६९।

मयण-पवणेण जइ, तारिसावि सुरसेलनिच्चला चलिआ ।
ता पक्क-पत्त-सत्ताण, इअर-सत्ताण का वत्ता ।७०।

जिप्पंति सुहेणंचिअ, हरि-करि-सप्पाइणो महाकूरा ।
इक्कु च्चिय दुज्जेओ, कामो कय-सिवसुह-विरामो ।७१।

विसमा विसय-पिवासा, अणाइ भवभावणाइ जीवाणं ।
अइदुज्जेआणि य तह, इंदिआणि चंचलं चित्तं ।७२।

कलमलअरइ असुक्खा, वाही दाहाइ विविह-दुक्खाइं ।
मरणं पिअ-विरहाइसु, संपज्जइ काम-तविआणं ।७३।

पंचिंदिय–विसय-पसंगरेसि,
मणवयण काय नवि ।
संवरेसि तं वाहिसि कत्तिअ गल-पएसि,
जेहइ कम्म नवि निज्झरेसि ।७४।

किं तुमंधो सिकिं वा सि घत्तुरिओ ।
अहव किं संनिवाएण आउरिओ ।
अमय समु-धम्म जं विसवअव-मन्नसे,
विसय विसविसमअमियं व बहु मन्नसे ।७५।

तुज्झ तुहनाणविन्नाण गुणडंबरो,
जलण-जालासु निवडंतु जिअ ! निब्भरो ।
पयइ-वामेसु कामेसुजं रज्जसे,
जेहि पुण पुण वि निरयानले पच्चसे ।७६।

दहइ गोसीस-सिरिखंड छारकए,
छगल-गहणट्ठ मेरावणं विक्कए।
कप्पतरु-तोडि एरंड सो वावए,
जुज्जि विसएहिं मणुअत्तणं हारए ।७७।

अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ।
विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउं परिमिअमप्पणो ।७८।

सिवमग्ग-संठिआणवि, जह दुज्जेआजिआंण पणविसया।
तह अन्नं किंपि जए, दुज्जेअं नत्थि सयलेवि ।७९।

सविडंकुब्भडरुवा, दिट्ठा मोहेइ जा मणं इत्थी।
आयहिअं चिंतंता, दूरयरेणं परिहरंति ।८०।

सच्चं सुअंपि सीलं, विन्नाणं तह तवंपि वेरग्गं।
वच्चइ खणेण सव्वं, विसय-विसेणं जइणंपि ।८१।

रे जीव ! मइ विगप्पिय, निमेस सुह-लालसो कहं मूढ।
सासयसुह-मसमवमं, हारिसि ससि-सोअरं च जसं ।८२।

पज्जलिअ-विसयअग्गी, चरित्तसारं डहिज्ज कसिणंपि।
सम्मत्तं पि विराहिअ, अणंत-संसारिअं कुज्जा ।८३।

भीसण-भव-कंतारे, विसमा जीवाण विसयतिण्हाओ।
जाए नडिआ चउदस, पुव्वीवि रुलंति हु निगोए ।८४।

हा विसमा हा विसमा, विसया जीवाण जेहि पडिबद्धा ।
हिंडंति भवसमुद्दे, अणंत दुक्खाइ पावंता ।८५।

मा इंदजाल-चवला, विसया जीवाण विज्ज-तेअ-समा ।
खणदिट्ठा खणनट्ठा, ता तेसि को हु पडिबंधो ।८६।

सत्तू विसं पिसाओ, वेआलो हुअवहोवि पज्जलिओ ।
तं न कुणइ जं कुविआ, कुणंति रागाइणो देहे ।८७।

जो रागाइण वसे, वसंमि सो सयलदुक्ख लक्खाणं ।
जस्स वसे रागाइ, तस्स वसे सयल-सुक्खाइं ।८८।

केवल-दुह-निम्मविए, पडिओ संसार-सायरे जीवो ।
जं अणुहवइ किलेसं, तं आसव-हेउअं सव्वं ।८९।

ही संसारे विहिणा, महिलारुवेण मंडिअं जालं ।
वज्झंति जत्थ मूढा, मणुआ तिरिआ सुरा असुरा ।९०।

विसमा विसय-भुअंगा, जेहिं डंसिआ जिआ भव-वणंमि ।
कीसंति दुहग्गीहिं, चुलसीइ-जोणि-लक्खेसु ॥९१॥

संसारचार-गिम्हे, विसय-कुवाएण लुक्किआ जीवा ।
हिअमहिअं अमुणंता, अणुहवंति अणंतदुक्खाइं ।९२।

हा हा दुरंत दुट्ठा, विसय-तुरंगा कुसिक्खिआ लोए ।
भीसण-भवाडवीए, पाडंति जिआण मुद्धाणं ।९३।

विसय-पिवासा-तत्ता, रत्ता नारीसु पंकिल-सरंमि ।
दुहिआ दीणा खीणा, रुलंति जीवा भववणंमि ॥९४॥

गुणकारिआइं धणिअं, धिइरज्जु-निअंतिआइं तुह जीवा ।
निअयाइं इंदिआइं, वल्लिनिअत्ता तुरंगुव्व ॥९५॥

मण-वयण-काय जोगा, सुनिअत्ता तेवि गुणकरा हुंति ।
अनिअत्ता पुण भंजंति, मत्त-करिणुव्व सीलवणं ॥९६॥

जह जह दोसा विरमइ, जह जह विसएहिं होइ वेरग्गं ।
तह तह विन्नायव्वं, आसन्नं से अ परम पयं ॥९७॥

दुक्कर-मेएहिं कयं, जेहिं समणेहिं जुव्वणत्थेहिं ।
भग्गं इंदिय-सिन्नं, धिइपायारं विलग्गेहिं ॥९८॥

ते धन्ना ताण नमो, दासो हं ताण संजमधराणं ।
अद्धच्छि-पिच्छरीओ, जाण न हिअए खडक्कंति ॥९९॥

किं बहुणा जइ वंछसि, जीव ! तुमं सासयं सुहं अरुहं ।
ता पिअसु विसय-विमुहो, संवेग-रसायणं निच्चं ॥१००॥

-●-

॥ संबोध सित्तरी ॥

नमिऊण तिलोअगुरुं, लोआलोअप्पयासयं वीरं ।
संबोहसत्तरि-महं, रएमि उद्धार गाहाहिं ॥१॥

सेयंबरो य आसं, -बरो य बुद्धो अ अहव अन्नो वा ।
समभावभाविअप्पा, लहेइ मुक्खं न संदेहो ॥२॥

अट्ठ दस दोस रहिओ, धम्मोवि निउणदयसहिओ ।
सुगुरु बिंभयारी, देवो आरंभ परिग्गहा विरओ ॥३॥

अन्नाण कोह मय माण, लोह माया रइ य अरइ य ।
निद्दा सोअ अलियवयण, चोरिया मच्छर भयाय ॥४॥

पाणिवह पेम कीला, पसंग हासाय जस्स ए दोसा ।
अट्ठारस वि पणट्ठा, नमामि देवाहिदेवं तं ॥५॥

सव्वाओ वि नइओ, कमेण जह सायरंमि निवडंति ।
तह भगवइ अहिंसं, सव्वे धम्मा समल्लिंति ॥६॥

ससरीरे वी निरीहा, बज्जाप्भितरपरिग्गह विमुक्का ।
धम्मोवगरणमित्तं, धरंति चारित्तरक्खट्ठा ॥७॥

पंचिंदियदमणपरा, जिणुत्तसिद्धं तगहिय परमत्था ।
पंचसमिया तिगुत्ता, सरणं मह एरिसा गुरुणो ॥८॥

पासत्थो ओसन्नो, होइ कुसीलो तहेव संसत्तो ।
अहछंदोवि य एए, अवंदणिज्जा जिणमंयंमि ॥९॥

पासत्थाइ वंदमाणस्स, नेव कित्ती न निज्जरा होइ ।
जायइ कायकिलेसो, बंधो कम्मस्स आणाइ ॥१०॥

जे बंभचेरभट्ठा, पाए पाडंति बंभयारीणं ।
ते हुंति टुंठमुंटा, बोहि वि सुदुल्लहा तेसिं ॥११॥

दंसणभट्ठो भट्ठो, दंसणभट्ठस्स नत्थि निव्वाणं ।
संज्झंति चरणरहिआ दंसणरहिआ न सिज्झंति ॥१२॥

तित्थयर समो सूरी, सम्मं जो जिणमयं पयासेइ ।
आणाइ अइक्कंतो, सो कापुरिसो न सप्पुरिसो ॥१३॥

जह लोहसिला अप्पंमि, बोलए तह विलग्ग पुरिसंपि ।
इय सारंभो य गुरु, परमप्पाणं च बोलेइ ॥१४॥

किइकम्मं च पसंसा, सुहसीलजणंमि कम्मबंधाय ।
जे जे पमायठाणा, ते ते उववुहिया हुंति ॥१५॥

एवं णाउण संसग्गि, दंसणालावसंथवं ।
संवासं च हियाकंखी, सव्वो वाएहि वज्जए ॥१६॥

अहिगिलइ गलइ उअरं, अहवा पच्चुगलंति नयणाइं ।
हा विसमा कज्जगइ, अहिणा छच्छुंदरि गहिज्जा ॥१७॥

को चक्कवट्टिरिद्धिं, चइउं दासत्तणं समभिलसइ ।
को व रयणाइं मुत्तुं, परिगिन्हइ उवलखंडाइं ॥१८॥

नेरइयाण वि दुक्खं, जिज्झइ कालेण किं पुण नराणं ।
ता न चिरं तुह होइ, दुक्खमिणं मा समुव्विवसु ॥१९॥

वरं अग्गिमि पवेसो वरं विसुद्धेण कम्मणा मरणं ।
मा गहियव्वयभंगो, मा जीअं खलिअसीलस्स ॥२०॥

अरिहं देवो गुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं मह पमाणं ।
इच्चाइ सुहो भावो, सम्मत्तं विंति जगगुरुणो ॥२१॥

लब्भइ सुरसामित्तं, लब्भइ पहुअत्तणं न संदेहो ।
एगं नवरि न लब्भइ, दुल्लहरयणं व सम्मत्तं ॥२२॥

सम्मत्तंमि उ लद्धे, विमाणवज्जं न बंधए आउं ।
जइवि न सम्मत्तजढो, अहव न बद्धाउओ पुव्विं ॥२३॥

दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंडियं एगो ।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥२४॥

निंदपसंसासु समो, समो अ माणावमाणकारीसु ।
समसयण परियणमणो, सामाइयसंगओ जीवो ॥२५॥

सामाइयं तु काउं, गिहिकज्जं जो य चिंतए सड्ढो ।
अट्टवसट्टोवगओ, निरत्थयं तस्स सामाइयं ॥२६॥

पडिरूवाइ चउदस, खंतिमाइ य दसविहो धम्मो ।
बारस य भावणाओ, सूरिगुणा हुंति छत्तीसं ॥२७॥

छव्वय छकायरक्खा, पंचिंदियलोह निग्गहो खंती ।
भावविसुद्धि पडि, लेहणाइकरणे विसुद्धी य ॥२८॥

संजमजोए जुत्तो, अकुसलमण वयणकाय संरोहो ।
सीयाइपीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥२९॥

सत्तावीस गुणेहिं, एएहिं जो विभूसिओ साहू ।
तं पणमिज्जइ भत्ति-ब्भरेण हियएण रे जीव ॥३०॥

धम्मरयणस्स जुग्गो, अक्खुद्दो रुव्वं पगइसोमो ।
लोगप्पिओ अक्रूरो, भीरु असढो सुदक्खिन्नो ॥३१॥

लज्जालुअ दयालु, मज्झत्थोसोमदिट्ठी गुण रागी ।
सक्कह सुपक्खजुत्तो, सुदीहदंसी विसेसन्नू ॥३२॥

वुड्ढाणुगो विणिओ, कयन्नुओ परहिअत्थकारी अ ।
तह चेव लद्धलक्खो, इगवीस गुणा हवइ सड्ढो ॥३३॥

कत्थ अम्हारिसा पाणी, दूसमा दोसदूसिआ ।
हा अणाहा कहं हुंता, न हंतो जइ जिणागमो ॥३४॥

आगमं आयरंतेणं, अत्तणो हियकंखिणो ।
तित्थनाहो गुरु धम्मो, सव्वे ते बहुमन्निया ॥३५॥

सुहसिलाओ सच्छंदचारीओ, वेरिणो सिवपहस्स ।
आणाभट्ठाओ बहुजणाओ, मा भणह संघुत्ति ॥३६॥

एगो साहु एगा, य साहुणी सावओवि सड्ढी वा ।
आणाजुत्तो संघो, सेसो पुण अट्ठीसंघाओ ॥३७॥

निम्मलनाणपहाणो, दंसणजुत्तो चरित्त गुणवंतो ।
तित्थयराण य पुज्जो, वुच्चइ एयारिसो संघो ॥३८॥

जह तुसखंडण मयमंडणाइ, रुएणाइ सुन्नरन्नंमि ।
विहलाइ तह जाणसु, आणारहियं अणट्ठाणं ॥३९॥

आणाइ तवो आणाइ, संजमो तह य दाणमाणाए ।
आणारहिओ धम्मो, पलाल पुल्लूव पडिहाइ ॥४०॥

आणाखंडणकारी, जइवि तिकालं महाविभूइए ।
पूएइ वीयरायं, सव्वंपि निरत्थयं तस्स ॥४१॥

रन्नो आणाभंगे, इक्कुच्चि य होइ निग्गहो लोए ।
सव्वन्नुआणभंगे, अणंतसो निग्गहो होइ ॥४२॥

जह भोयणमविहिकयं, विणासए विहिकयं जियावेइ ।
तह अविहिकओ धम्मो, देइ भवं विहिकयं जियावेइ ।४३।

मेरुस्स सरिसवस्स य, जत्तियमित्तं तु अंतरं होई ।
दव्वत्थयं भावत्थयाण, अंतरं तत्तियं नेयं ॥४४॥

उक्कोसं दव्वत्थयं, आराहिय जाइ अच्चुयं जाव ।
भावत्थएण पावइ, अंत मुहुत्तेण निव्वाणं ॥४५॥

जत्थ य मुणिणो कयविक्कयाइ कुव्वंति निच्चपब्भट्ठा ।
तं गच्छं गुणसायर, विसं व दूरं परिहरिज्जा ॥४६॥

जत्थ य अज्जालद्धं, पडिग्गहमाइय विविहमुवगरणं ।
पडिभुंजइ साहूहिं, तं गोयम केरिसं गच्छं ॥४७॥

जहिं नत्थि सारणा, वारणा य पडिचोयणा य गच्छंमि ।
सो अ अगच्छो गच्छो, संजमकामीहि मुत्तव्वो ॥४८॥

गच्छं तु उवेहंतो, कुव्वइ दीहंभवे विहीएओ ।
पालंतो पुण सिज्झइ, तइअ भवे भगवइ सिद्धं ॥४९॥

जत्थ हिरन्नसुवन्नं, हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पइ ।
कारणसमिप्पयं पि हु, गोयम गच्छं तयं भणियं ॥५०॥

पुढविदगअगणि मारुअ, वणस्सइ तह तसाण विविहाणं ।
मरणं तेवि न पीडा, कीरइ मणसा तयं गच्छं ॥५१॥

मूलगुणेहि विमुक्कं, वहुगुण कलियंपि लद्धिसंपन्नं ।
उत्तमकुले विजायं, निद्धाडिज्जइ तयं गच्छं ॥५२॥

जत्थ य उसहाईणं, तित्थयराणं सुरिंदमहियाणं ।
कम्मट्ट विमुक्काणं, आणं न खलिज्जइ स गच्छो ॥५३॥

जत्थ य अज्जाहिं समं, थेरावि न उल्लवंति गयदसणा ।
न य झायंतित्थीणं, अंगोवंगाइं तं गच्छं ॥५४॥

वज्जेइअप्पमत्ता, अज्जासंसग्गि अग्गिविससरिसी ।
अज्जाणुचरो साहू, लहइ अकित्ति खु अचिरेण ॥५५॥

जो देइ कणयकोडिं, अहवा कारेइ कणयजिणभवणं ।
तस्स न तत्तिय पुन्नं, जतिय बंभव्वए धरिए ॥५६॥

सीलं कुलआहरणं, सीलं रुवं च उत्तमं होइ ।
सीलं चिय पंडित्तं, सीलं चिय निरुवमं धम्मं ॥५७॥

वरं वाही वरं मच्चू, वरं दारीद्दसंगमो ।
वरं अरणवासो अ, मा कुमित्ताण संगमो ॥५८॥

अगीयत्थकुसीलेहिं, संगं तिविहेण वोसीरे ।
मुक्खमग्गंमीमे विग्घं, पहंमि तेणगो जहा ॥५९॥

उम्मग्गदेसणाए, चरणं नासंति जिणवरिंदाणं ।
वावन्नदंसणा खलु, नहु लब्भा तारिसं दट्ठुं ॥६०॥

परिवार पूअहेउ, ओसन्नाणं च आणुवित्तीए ।
चरणकरणनिगूहइ, तं दुलह वोहिअं जाण ॥६१॥

अंबस्स य निंबस्स य, दुण्हंपि समागयाइं मूलाइं ।
संसग्गेण विणट्ठो, अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥६२॥

पक्कणकुले वसंतो, सउणीपारे वी गरहीओ होइ।
इय दंसणसुविहिआ, मज्झिवसंता कुसीलाणं ॥६३॥

उत्तम जण संसग्गी, सीलदरिद्दं पि कुणइ सीलड्ढं।
जह मेरु गिरि विलग्गं, तणंपि कणगत्तणमुवेइ ॥६४॥

नवि तं करेइ अग्गी, नेव विसं नेव किन्ह सप्पो अ।
जं कुणइ महादोसं, तिव्वं जीवस्स मिच्छत्तं ॥६५॥

कट्ठं करेसि अप्पं, दमेसि अत्थं चयंसि धम्मत्थं।
इक्कं न चयंसि मिच्छत्तविसलवं जेण बुडिहिसि ॥६६॥

जयणा य धम्म जणणी, जयणा धम्मस्स पालणी चेव।
तववुड्ढिकरी जयणा, एगंत सुहावहा जयणा ॥६७॥

जं अज्जिअं चरित्तं, देसूणाए वि पुव्वकोडीए।
तं पुण कसायमित्तो, हारेइ नरो मुहुत्तेणं ॥६८॥

कोहे पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥६९॥

खंती सुहाण मूलं, मूलं धम्मस्स उत्तमा खंती।
हरइ महाविज्जा इव, खंती दुरियाइं सव्वाइं ॥७०॥

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंमि वावडे।
निमित्तेण य ववहरइं, पावसमणु त्ति वुच्चइ ॥७१॥

दुद्ध दही विगइओ, आहारेइ अभिक्खणं ।
न करेइ तवोकम्मं, पावसमणु त्ति वुच्चइ ॥७२॥

मज्जं विसय कसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया ।
ए ए पंच पमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥७३॥

जइ चउदसपुव्वधरो, वसइ निगोएसुऽणंतयं कालं ।
निद्दापमायवसग्गो, ता होहिसि कह तुमं जीव ॥७४॥

हयं नाणं किया हीणं, हया अन्नाणओ किया ।
पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो अ अंधओ ॥७५॥

संजोग सिद्धिअफलं वयंति, न हु एग चक्केण रहो पयाइ ।
अंधो य पंगू य वणए समिच्चा, ते संपणट्ठा नगरं पविट्ठा ।७६।

सुबहुंपि सुअमहीअं, किं काही चरणविप्पहीणस्स ।
अंधस्स जह पलित्ता, दीवसय सहस्स कोडीओ ॥७७॥

अप्पंपि सुअमहीअं, पयासगं होइ चरण जुत्तस्स ।
इक्कोवि जह पइवो, स चक्खुअस्स पयासेइ ॥७८॥

दंसण वय सामाइअ, पोसह पडिमा अवंभ सच्चित्ते ।
आरंभ पेस उद्दिट्ठवज्जए समणभूएअ ॥७९॥

जहा खरो चंदणभारवाही, भारस्स भागी न हु चंदणस्स
एवं खु नाणी चरणेण हीणो, भारस्स भागी न हु सुग्गइए ।८०।

आजम्मं जं पावं, बंधइ मिच्छत्त संजुओ कोइ ।
वयभंगं काउमणो, बंधइ तं चेव अट्ठगुणं ॥९०॥

सह सहस्साण नारीणं, पिट्ट फाडेइ निग्घिणो ।
सत्तट्ठमासिए गब्भे, तप्फडंते निकत्तइ ॥९१॥

तं तस्स जत्तियं पावं, तं नवगुणिय मेलियं हुज्जा ।
एगत्थि य जोगेणं, साहु बधिज्ज मेहुणओ ॥९२॥

अखंडीयचारित्तो, वयधारी जो व होइ गीहत्थो ।
तस्स सगासे दंसण–वयगहणं सोहिकरणं च ॥९३॥

अद्दामलयपमाणे, पुढवीकाए हवंति जे जीवा ।
तं पारेवय मित्ता, जंबूदीवे न मायंति ॥९४॥

एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ।
ते जइ सरिसवमित्ता, जंबूद्दीवे न मायंति ॥९५॥

वरंटतंदुलमित्ता, तेउकाए हवंति जे जीवा ।
ते जइखसखसमित्ता, जंबूद्दीवे न मायंति ॥९६॥

जे लिंबपत्तमित्ता, वाउकाए हवंति जे जीवा ।
तं मत्थयलिक्खमित्ता, जंबूद्दीवे न मायंति ॥९७॥

असुइठाणे पडिआ, चंपकमाला न कीरइ सीसे ।
पासत्थाइ ठाणेसु, वट्टमाणो तह अपुज्जे ॥९८॥

छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं ।
इत्तोउ एगेगगुणा, सोहा जिमियस्स नाणिस्स ॥९९॥

जं अन्नाणी कम्मं, खवेइ बहुआइं वासकोडीहिं ।
तन्नाणी तिहिगुत्तो, खवेइ उस्सासमित्तेणं ॥१००॥

जिणपवयणवुड्ढिकरं, पभावगं नाणदंसणगुणाणं ।
रक्खंतो जिणदव्वं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥१०१॥

जिणपवयणवुड्ढिकरं, पभावगं नाणदंसणगुणाणं ।
भक्खंतो जिणदव्वं, अणंतसंसारिओ होइ ॥१०२॥

भक्खेइ जो उवेक्खेइ, जिणदव्वं तु सावओ ।
पन्नाहीणो भवे जीवो, लिप्पइ पावकम्मुणा ॥१०३॥

चेइअदव्वविणासे, रिसिघाए पवयणस्स उड्डाहे ।
संजइचउत्थभंगे, मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥१०४॥

सुच्चइ दुग्गयनारी, जगगुरुणो सिंदुवार कुसुमेहिं ।
पूआपणिहाणेहिं, उप्पन्ना तियसलोगंमि ॥१०५॥

तित्थयरत्तं सम्मत्तखाइयं, सतमीइ तइयाए ।
वंदणएणं विहिणा, बद्धं च दसारसीहेणं ॥१०६॥

अकसिणपवत्तगाणं, विरयाविरयाण ऐस खलु जुत्तो ।
संसारपयणुकरणे, दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो ॥१०७॥

अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं च कसायथोवं च ।
न हु ते विससिअव्वं, थोवंपि हु तं बहु होइ ॥१०८॥

जं दुक्कडंति मिच्छा, तं भुज्जे कारणं अपूरंतो ।
तिविहेण पडिक्कंतो, तस्स खलु दुक्कडं मिच्छा ॥१०९॥

जं दुक्कडंति मिच्छा, तं चेव निसेवइ पुणो पावं ।
पच्चक्ख मुसावाइ, मायानियडिप्पसंगो अ ॥११०॥

मित्ति मिउ मद्दवत्ते, छत्ती दोसाण छायणे होइ ।
मित्ति अ मेराइट्ठिओ, दुत्ति दुगंछामि अप्पाणं ॥१११॥

कत्ति कडं मे पावं, ऽत्ति य देवेमि तं उवसमेणं ।
एसो मिच्छादुक्कडं,–पयक्खरत्थो समासेणं ॥११२॥

नामं ठवणातित्थं दव्वतित्थं च भावतित्थं च ।
इक्किक्कंमि य इत्तो–ऽणेगविहं होइ नायव्वं ॥११३॥

दाहोवसमं तन्हाइ छेयणं, मलपिवाहणं चेव ।
तिहिं अत्थेहिं निउत्तं, तम्हा तं दव्वओ तित्थं ॥११४॥

कोहं मिउ निग्गहिए, दाहस्स उवसमणं हवइ तित्थं ।
लोहंमिउ निग्गहिए, तन्हाए छेयणं होइ ॥११५॥

अट्ठविहं कम्मरयं, बहुएहिं भवेहिं संचियं जम्हा ।
तवसंजमेण धोवइ, तम्हा तं भावओ तित्थं ॥११६॥

दंसणनाण चरित्तेसु, निउत्तं जिणवरेहिं सव्वेहिं।
एएण होइ तित्थं, एसो अन्नोवि पज्जाओ।११७।
सव्वो पुव्व कयाणं, कम्माणं पावए फलविवागं।
अवराहेसु गुणेसु अ, निमित्तमित्तं परो होइ।११८।
धारिज्जइ इन्तो, जल-निही विकल्लोलभिन्न कुलसेलो।
न हु अन्नजम्मनिम्मिय, सुहासुहो कम्म परिणामो।११९।
अकयंको परिभुंजइ, सकयं नासिज्ज कस्स किर कम्मं।
सकयमणुभुंजमाणो, कीस जणो दुम्मणो होइ।१२०।
पोसेइ सुहभावे, असुहाइ खवेइ नत्थि संदेहो।
छिंदइ नरयतिरिअगइ, पोसहविहिअपमत्तो य।१२१।
वरगंधपुप्फ अक्खय, पइवफलधुव नीर पत्तेहिं।
नेविज्जविहाणेण य, जिणपूआ अट्ठहाभणिया।१२२।
उवसमइ दुरियवग्गं, हरइ दुहं-कुणइ सयल सुक्खाइं।
चिंताइयं पि फलं, साहइ पूआ जिणंदाणं।१२३।
धन्नाणं विहिजोगो, विहिपक्खाराहगा सया धन्ना।
विहिबहुमाणा धन्ना, विहिपक्ख अदूसणा धन्ना।१२४।
संवेगमणो संवोह सत्तरिं, जो पढइ भव्वजिओ।
सिरिजयसेहरठाणं, सो लहइ नत्थि संदेहो।१२५।

-●-

॥ श्री शत्रुंजय लघुकल्प ॥

अइमुत्तय-केवलिणा, कहिअं सेत्तू जतितय-माहप्पं ।
नारयरिसिस्स पुरओ, तं निसुणह भवओ भविआ ।१।

सेतूंजे पुंडरीओ, सिद्धो मुणिकोडिनंच संजुत्तो ।
चित्तस्स पुण्णिमाए, सो भण्णइ तेण पुंडरिओ ।२।

नमि विनमि रायाणो, सिद्धा कोडिहिं दोहिं साहूणं ।
तह दविड वालिखिल्ला, निव्वुआ दस य कोडीओ ।३।

पज्जुन्न संब-पमुहा, अद्धट्ठाओ कुमार-कोडिओ ।
तह पंडवा वि पंच य, सिद्धिं गया नारयरिसी य ।४।

थावच्चा सुयसेलगा य, मुणिणो वि तह राममुणी ।
भरहो दसरहपुत्तो, सिद्धा वंदामि सेतुंजे ।५।

अन्ने वि खवियमोहा, उसभाइ-विसाल-वंस संभूआ ।
जे सिद्धा सेतुंजे, तं नमह मुणी असंखिज्जा ।६।

पन्नास जोयणाइ, आसी सेतुंज-वित्थरो मूले ।
दस जोयण सिहरतले, उच्चत्तं-जोयणा अट्ठ ।७।

जं लहइ अन्नतित्थे, उग्गेण तवेण बंभचेरेण ।
तं लहइ पयत्तणं, सेतुंजगिरिम्मि निवसंतो ।८।

जं कोडिए पुण्णं, कामिय-आहार-भोइया जेउ।
तं लहइ तत्थ पुण्णं, एगोवासेण सेतुंजे ॥९॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
तं सव्वमेव दिट्ठं, पुंडरिए वंदिए संते ॥१०॥

पडिलाभंते संघं, दिट्ठमदिट्ठे य साहू सेत्तुंजे।
कोडिगुणं च अदिट्ठे, दिट्ठे अ अणंतयं होइ ॥११॥

केवलनाणुप्पत्ती, निव्वाणं आसि जत्थ साहूणं।
पुंडरिए वंदित्ता, सव्वे ते वंदिया तत्थ ॥१२॥

अट्ठावय सम्मेए, पावा चंपाइ उज्जंतगनेय।
वंदित्ता पुण्णफलं सयगुणं तं पि पुंडरीए ॥१३॥

पूआकरणे पुण्णं, एगगुणं सयगुणं च पडिमाए।
जिणभवणेण सहस्सं, णंतगुणं पालणे होइ ॥१४॥

पडिमं चेइहरं वा, सित्तुंजगिरिस्स मत्थए कुणइ।
भूत्तुण भरहवासं, वसइ सग्गेण निरुवसग्गे ॥१५॥

नवकार पोरिसीए, पुरिमड्ढे-गासणं च आयामं।
पुंडरीयं च सरंतो, फलकंखी कुणइ अभत्तट्ठं ॥१६॥

छट्ठ-ट्ठम दसम-दुवालसाणं, मासऽद्धमासखवणाणं।
तिगरणसुद्धो लहइ, सित्तुंजं संभरंतो अ ॥१७॥

छट्ठेणं भत्तेणं, अपाणेणं तु सत्त जत्ताइं ।
जो कुणइ सेत्तुंजे, तइयभवे लहइ सो मुक्खं ॥१८॥

अज्ज वि दीसइ लोए, भत्तं चइऊण पुंडरीयनगे ।
सग्गे सुहेण वच्चइ, सीलविहूणो वि होऊणं ॥१६॥

छत्तं भयं पडागं, चामर–भिंगार–थाल–दाणेणं ।
विज्जाहरो अ हवइ, तह चक्की होइ रहदाणा ॥२०॥

दस वीस तीस चत्ता, लक्ख पन्नासा पुप्फदाम-दाणेण ।
लहइ चउत्थ–छट्ठ–ट्ठम–दसम–दुवालस–फलाइं ।२१।

धूवे पक्खुववासो, मासक्खमणं कपूरधूवम्मि ।
कित्तिय मासक्खमाणं, साहू पडिलाभिए लहइ ॥२२॥

न वि तं सुवन्नभूमि, –भूसणदाणेण अन्नतित्थेसु ।
जं पावइ पुण्णफलं, पूआ–न्हवणेण सित्तुंजे ॥२३॥

कंतार-चोर-सावय, -समुद्द-दारिद्द–रोग–रिउ–रुद्दा ।
मुच्चंति अविग्घेणं, जे सेत्तुंजं धरन्ति मणे ॥२४॥

सारावलीपयन्नग, –गाहाओ सुअहरेण भणिआओ ।
जो पढइ गुणइ निसुणइ, सो लहइ सित्तुंज–जत्तफलं ।२५।

॥ श्री चउसरण पयन्ना ॥

सावज्जजोगविरइ, उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ती ।
खलियस्स निंदणा वण-तिगिच्छ गुणधारणा चेव ।१।

चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इहयं ।
सावज्जेयरजोगाण, वज्जणासेवणत्तणओ ।२।

दंसणयारविसोही, चउवीसायत्थएण किच्चइ य ।
अच्चब्भुअगुणकित्तण-रुवेणं जिणवरिंदाणं ।३।

नाणाइया उ गुणा, तस्सपन्नपडिवत्तिकरणाओ ।
वंदणएणं विहिणा, कीरइ सोही उतेसिं तु ।४।

खलिअस्स य तेसिं पुणो, विहिणा जं निंदणाइ पडिकमणं ।
तेण पडिक्कमणेणं, तेसिं पि य कीरए सोही ।५।

चरणाइयाइयाणं, जहक्कमं वणतिगिच्छरुवेणं ।
पडिक्कमणासुद्धाणं, सोही तह काउस्सग्गेणं ।६।

गुणधारणरुवेणं, पच्चक्खाणेण तवइआरस्स ।
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहिवि कीरए सोही ।७।

गयवसहसीह अभिसेय, दामससिदिणयरं झयं कुंभं ।
पउमसर सागर विमाण, भवणरयणुच्चय सिहिं च ।८।

अमरिंद नरिंद मुणिंद-वंदियं वंदिउं महावीरं ।
कुसलाणुबंधिबंधुर-मज्झयणं कित्तइस्सामि ।९।

चउसरणगमण दुक्कड, -गरिहा सुकडाणु मोयणा चेव ।
एस गणो अणवरयं, कायव्वो कुसलहेउत्ति ।१०।

अरिहंतसिद्धसाहू, केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो ।
ए ए चउरो चउगइ-हरणा सरणं लहइ धन्नो ।११।

अह सो जिणभत्तिभरु-च्छरंत रोमंचकंचुअकरालो ।
पहरिसपणउम्मीसं, सीसंमि कयंजली भणइ ।१२।

रागद्दोसारीणं हंता, कम्मट्ठगाइ अरिहंता ।
विसयकसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।१३।

रायसिरिमवकसित्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ।
केवलसिरिमरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१४।।

थुइवंदणमरहंता, अमरिंदनरिंदपूअमरहंता ।
सासयसुहमरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१५।।

पर-मणगयं मुणंता, जो इंदमहिंदझाण मरहंता ।
धम्मकहं अरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१६।।

सव्वजिआणमहिंसं, अरहंता सच्चवयण मरहंता ।
बंभव्वयमरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।।१७।।

एगाइ गिराणेगे, संदेहे देहियं समं छिन्ना ।
तिहुअणमणुसासंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।१९।

वयणामएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ।
जिअलोअमुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ।२०।

अच्चब्भुअगुणवंते, नियजससससहर पहासिअ-दिअंते ।
निययमणाइअणंते, पडिवन्नो सरणमरिहंते ।२१।

उज्झियजरमरणाणं, समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं ।
तिहुअणजणसुहयाणं, अरिहंताणं नमो ताणं ।२२।

अरिहंत सरणमलसुद्धि, -लद्धसुविसुद्ध सिद्ध बहुमाणो ।
पणयसिर रइयकरकमल, -सेहरो सहरिसं भणइ ।२३।

कम्मट्ठक्खय सिद्धा, साहाविअ नाणदंसणसमिद्धा ।
सव्वट्ठलद्धि सिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ।२४।

तिअलोअमत्थयत्था, परमपयत्था अचिंतसामत्था ।
मंगलसिद्धपयत्था, सिद्धा सरणं सुहपसत्था ।२५।

मूलक्खयपडिवक्खा, अमूढ लक्खा सजोगिपच्चक्खा ।
साहाविअत्तसुक्खा, सिद्धा सरणं परमसुक्खा ।२६।

पडिपिल्लि अपडिणीआ, समग्गझाणग्गि दड्ढ भवबीआ ।
जोइसर सरणीआ, सिद्धा सरणं समरणीया ।२७।

पाविअपरमाणंदा, गुणनीसंदा विदिन्न भवकंदा ।
लहुइकय-रविचंदा सिद्धा सरणं खविअदंदा ।२८।

उवलद्धपरमबंभा, दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा ।
भुवणघरधरण खंभा, सिद्धा सरणं निरारंभा ।२९।

सिद्धसरणेण नयबंभ, -हेउसाहुगुणजणिअअणुराओ ।
मेइणिमिलतसुपसत्थ, -मत्थओ तत्थिमं भणइ ।३०।

जिअलोअबंधुणो, कुगइसंधुणो पारगा महाभागा ।
नाणाइएहिं सिवसुक्ख, साहगा साहुणो सरणं ।३१।

केवलिणो परमोही, विउलमइ सुअहरा जिणमयंमि ।
आयरिय उवज्झाया, ते सव्वे साहुणो सरणं ।३२।

चउदस-दस-नवपुव्वी, दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ ।
जिणकप्पाहालंदिअ, परिहारविसुद्धिसाहु अ ।३३।

खीरासव-महुआसव, संभिन्नसोअ-कट्ठबुद्धी अ ।
चारणवेउव्विपयाणु,-सारिणो साहुणो सरणं ।३४।

उज्झियवइरविरोहा, निच्चमदोहा पसंतमुह सोहा ।
अभिमयगुणसंदोहा, हयमोहा साहुणो सरणं ।३५।

खंडिअसिणेहदामा, अकामधामा निकामसुहकामा ।
सुपुरिसमणाभिरामा, आयारामा मुणी सरणं ।३६।

मिल्हिअविसयकसाया, उज्झिअघरघरणिसंग सुहसाया ।
अकलिअहरिसविसाया, साहू सरणं गयपमाया ।३७।

हिंसाइदोससुन्ना कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना ।
अजरामरमहखुन्ना, साहू सरणं सुकयपुन्ना ।३८।

काम-विडंबण चुक्का, कलिमल-मुक्का-विमुक्क-चोरिक्का ।
पावरय-सुरय-रिक्का, साहुगुण रयणचिच्चिक्का ।३९।

साहुत्तसुट्ठिआ जं, आयरियाइ तओ अ ते साहू ।
साहुभणिएण गहिआ, तम्हा ते साहुणो सरणं ।४०।

पडिवन्नसाहुसरणो, सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं ।
पहरिसरोमंचपवंच, कंचुअंचिअतणू भणइ ।४१।

पवरसुकएहि पत्तं, पत्तेहि वि नवरि केहिवि न पत्तं ।
तं केवलि-पन्नत्तं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ।४२।

पत्तेण अपत्तेण य, पत्ताणि य जेण नर सुर-सुहाइं ।
मुक्खसुहं पुण पत्तेण, नवरि धम्मो स मे सरणं ।४३।

निद्दलिअकलुसकम्मो, कयसुहजम्मो खलीकय अहम्मो ।
पमुह परिणामरम्मो, सरणं मे होउ जिणधम्मो ।४४।

कालत्तएवि न मयं, जम्मणजरमरण वाहिसय समयं ।
अमयं व बहुमयं, जिण-मयं च सरणं पवन्नोहं ।४५।

पासमिअ-कामपमोहं, दिट्ठादिट्ठेसु न कलिय-विरोहं।
सिवसुहफलयममोहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ।४६।

नरयगइ-गमणरोहं, गुणसंदोहं पवाइ-निक्खोहं।
निहणिय-वम्मह जेहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ।४७।

भासुरसुवन्न सुंदर-रयणालंकार-गारव-महग्घं।
निहिमिव दोगच्चहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ।४८।

चउसरणगमणसंचिअ, सुचरिअरोमंचअंचियसरीरो।
कयदुक्कडगरिहा असुह, कम्मक्खयकंखिरो भणइ ।४९।

इहभविअमन्नभविअं, मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं।
जिणपवयणपडिकुट्ठं, दुट्ठं गरिहामि तं पावं ।५०।

मिच्छत्त-तमंधेणं, अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं।
अन्नाणेण विरइअं, इण्हिं गरिहामि तं पावं ।५१।

सुअ-धम्म-संघ-साहुसु, पावं पडिणीअयाइ जं रइअं।
अन्नेसु अ पावेसुं, इण्हिं गरिहामि तं पावं ।५२।

अन्नेसु अ जीवेसुं, मित्तीकरुणाइ-गोअरेसु कयं।
परिआवणाइ दुक्खं, इण्हिं गरिहामि तं पावं ।५२।

जं मण-वय-काएहिं, कयकारिअअणुमईहिं आयरिअं।
धम्मविरुद्धमसुद्धं, सव्वं गरिहामि तं पावं ॥५४॥

अह सो दुक्कडगरिहा,-दलि-उक्कड-दुक्कडो फुडं भणइ।
सुकडाणुराय-समुइन्न; -पुन्नपुलयं-कुर-करालो ॥५५॥
अरिहंतं अरिहंतेसु, जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु।
आयारं आयरिए, उवज्झायत्तं उवज्झाए ॥५६॥
साहूण साहुचरिअं, देसविरइं च सावयजणाणं।
अणुमन्ने सव्वेसिं, सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥५७॥
अहवा सव्वं चिय, वीअराय-वयणाणुसारि जं सुकडं।
कालत्तएवि तिविहं, अणुमोएमो तयं सव्वं ॥५८॥
सुह परिणामो निच्चं, चउसरण गमाइ आयरं जीवो।
कुसलपयडीउ बंधइ, बद्धाउ सुहाणुबंधाउ ॥५९॥
मंदणुभावा बद्धा, तिव्वणु भावाउ कुणइ ता चेव।
असुहाउ निरणुबंधाउ, कुणइ तिव्वाउ मंदाओ ॥६०॥
ता एयं कायव्वं, बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि।
होइ तिकालं सम्मं, असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥६१॥
चउरंग जिणधम्मो, न कओ चउरंगसरणमवि न कयं।
चउरंगभवच्छेओ, न कओ हा हारिओ जम्मो ॥६२॥
इय जीव पमाय–महारि, वीरभद्दंतमेयमज्झयणं।
झाएसु तिसंझ-मवंझ,–कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥६३॥

॥ आउर पच्चक्खाण पयन्ना ॥

देसिक्कदेसविरओ, सम्मदिट्ठी मरिज्ज जो ,जीवो ।
तं होइ बालपंडिय-मरणं जिणसासणे भणियं ॥१॥

पंच य अणुव्वयाइं, सत्त उ सिक्खाउ देस-जइ धम्मो ।
सव्वेण व देसेण व, तेण जुओ होइ देसजइ ॥२॥

पाणवह मुसावाए, अदत्तपरदार नियमणेहि च ।
अपरिमिइच्छाओवि य, अणुव्वयाइं विरमणाइं ॥३॥

जं च दिसावेरमणं, अणत्थदंडाओ जं च वेरमणं ।
देसावगासियंपि य, गुणव्वयाइं भवे ताइं ॥४॥

भोगाणं परिसंखा, सामाइय अतिहि-संविभागो य ।
पोसहविही उ सव्वो, चउरो सिक्खाउ वुत्ताओ ॥५॥

आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए ।
नाएहि वा अमुक्को, पच्छिमसंलेहणमकिच्चा ॥६॥

आलोइय निस्सल्लो, सघरे चेवारुहित्त संथारं ।
जइ मरइ देसविरइओ, तं वुत्तं बालपंडिअयं ॥७॥

जो भत्तपरिन्नाए, उवक्कमो वित्थरेण निद्दिट्ठो ।
सो चेव बाल पंडिय,-मरणे नेओ जहाजुग्गं ॥८॥

वेमाणिएसु कप्पो,-वगेसु नियमेण तस्स उववाओ ।
नियमा सिज्झइ उक्को,-सएण सो सत्तमंमि भवे ।९।

इय बालपंडियं होइ, मरण-मरिहंत-सासणे दिट्ठं ।
इत्तो पंडिय । पंडिय-मरणं वुच्छं समासेण ॥१०॥

इच्छामि भंते उत्तमट्ठं पडिक्कमामि ॥ अइयं पडिक्कमामि । अणागयं पडिक्कमामि ॥ पच्चुप्पन्नं पडिक्कमामि ॥ कयं पडिक्कमामि ॥ कारियं पडिक्कमामि ॥ अणुमोइयं पडिक्कमामि ॥ मिच्छत्तं पडिक्कमामि ॥ असंजमं पडिक्कमामि ॥ कसायंपडिक्कमामि ॥ पावपओगंपडिक्कमामि ॥ मिच्छादंसणपरिणामेसु वा ॥ इहलोगेसु वा ॥ परलोगेसु वा ॥ सच्चित्तेसु वा ॥ अचित्तेसु वा, पंचसु इंदियत्थेसु वा ॥ अन्नाणं झाणे ।१। अणायारंझाणे ।२। कुदंसणंझाणे ।३। कोहंझाणे ।४। माणंझाणे ।५। मायंझाणे ।६। लोहंझाणे ।७। रागंझाणे ।८। दोसंझाणे ।९। मोहंझाणे ।१०। इच्छंझाणे ।११। मिच्छंझाणे ।१२। मुच्छंझाणे ।१३। संकंझाणे ।१४। कंखंझाणे ।१५। गेहिझाणे ।१६। आसंझाणे ।१७। तण्हंझाणे ।१८। छुहंझाणे ।१९। पंथंझाणे ।२०। पंथाणंझाणे ।२१। निद्दझाणे ।२२। नियाणंझाणे ।२३। नेहंझाणे ।२४। कामंझाणे ।२५। कलुसंझाणे ।२६। कलहं-

झाणे ।२७। जुज्झंझाणे ।२८। निजुज्झंझाणे ।२६। संगंझाणे ।३०। संगहंझाणे ।३१। ववहारंझाणे ।३२। कयविक्कयंझाणे ।३३। अणत्थदंडंझाणे ।३४। आभोगंझाणे ।३५। अणाभोगंझाणे ।३६। आणाइल्लंझाणे ।३७। वेरंझाणे ।३८। वियक्कंझाणे ।३६। हिंसंझाणे ।४०। हासंझाणे ।४१। पहासंझाणे ।४२। पओसंझाणे ।४३। फरुसंझाणे ।४४। भयंझाणे ।४५। रुवंझाणे ।४६। अप्प-पसंसंझाणे ।४७। परनिंदंझाणे ।४८। परगरिहंझाणे ।४६। परिग्गहंझाणे ।५०। परपरिवायंझाणे ।५१। परदूसणंझाणे ।५२। आरंभंझाणे ।५३। संरंभंझाणे ।५४। पावाणुमोयणंझाणे ।५५। अहिगरणंझाणे ।५६। असमाहिमरणंझाणे ।५७। कम्मोदयपच्चयंझाणे ।५८। इड्ढिगारवंझाणे ।५६। रसगारवं ।६०। सायागारवंझाणे ।६१। अवेरमाणंझाणे ।६२। अमुत्तिमरणंझाणे ।६३। पसुत्तस्स वा, पडिबुद्धस्स वा, जो मे कोइ देवसिओ राइओ उत्तमट्ठे अइक्कमो वइक्कमो अइयारो अणायारो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

एस करेमिपणामं, जिणवर—वसहस्स वद्धमाणस्स ।
सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ।११।
सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च ।
सव्वमदिन्नादाणं, मेहुन्न-परिग्गहं चेव ।१२।

सम्मं मे सव्वभूएसु, वेर मज्झ न केणइ।
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए।१३।

सव्वं चाहारविहिं, सन्नाओ गारवे कसाए च।
सव्वं चेव ममत्तं, चएमि सव्वं खमावेमि।१४।

हुज्जा इमंमि समए, उवक्कमो जीविअस्स जइमज्झं।
एयं पच्चक्खाणं, विउला आराहणा होउ।१५।

सव्वदुक्खपहीणाणं सिद्धाणं अरहओ नमो।
सद्दहे जिणपन्नत्तं, पच्चक्खामि य पावगं।१६।

नमुत्थु धुअपावाणं, सिद्धाणं च महेसिणं।
संथारं परिवज्जामि, जहा केवलि-देसियं।१७।

जं किंचिवि दुच्चरियं, तं सव्वं वोसिरामि तिविहेणं।
सामाइयं च तिविहं, करेमि सव्वं निरागारं।१८।

वज्झं अब्भिंतरं उवहिं, सरीराइ सभोयणं।
मणसा वय-काएहिं, सव्वं भावेण वोसिरे।१९।

सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च।
सव्वमदिन्नादाणं, मेहुन्न-परिग्गहं चेव।२०।

सम्मं मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ।
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए।२१।

रागं बंधं पओसं, च हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं, रइं अरइं च वोसिरे ।२२।

ममत्तं परिवज्जामि, निम्ममत्तं उवट्ठिओ ।
आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ।२३।

आया हु महं नाणे, आया मे दंसणे चरित्ते य ।
आया हु महं नाणे, आया मे संजमे जोगे ।२४।

एगो वच्चइ जीवो, एगो चेवुववज्जए ।
एगस्स चेव मरणं, एगो सिज्झइ नीरओ ।२५।

एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दंसण-संजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ।२६।

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्ख-परंपरा ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ।२७।

मूलगुणे उत्तरगुणे, जे मे नाराहिया पयत्तेणं ।
तमहं सव्वं निंदे, पडिक्कमे आगमिस्साणं ।२८।

सत्त भए अट्ठ मए, सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि ।
आसायणा-तित्तीसं, रागं दोसं च गरिहामि ।२९।

असंजम-मन्नाणं, मिच्छत्तं सव्वमेव य ममत्तं ।
जीवेसु अजीवेसु अ, तं निंदे तंच गरिहामि ।३०।

निंदामि निंदणिज्जं, गरिहामि अ जं च मे गरहणिज्जं ।
आलोएमि अ सव्वं, अब्भिंतर-बाहिरं उवहिं ।३१।

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ ।
तं तह आलोइज्जा, माया-मय-विप्पमुक्को य ।३२।

नाणंमि दंसणंमिय तवे चरित्तेय चउसुवि अकंपो ।
धीरो आगम-कुसलो, अपरिस्सावी रहस्साणं ।३३।

रागेण व दोसेण व, जं मे अकयन्नुआ-पमाएणं ।
जो मे किंचिवि भणिओ, तमहं तिविहेण खामेमि ।३४।

तिविहं भणंति मरणं, बालाणं बालपंडियाणं च ।
तइयं पंडियमरणं, जं केवलिणो अणुमरंति ।३५।

जे पुण अट्ठमईया, पयलिय-सन्ना य वंककभावा य ।
असमाहिणा मरंति, न हु ते आराहगा भणिया ।३६।

मरणे विराहिए देव–दुग्गइ दुल्लहा य किर बोही ।
संसारो य अणंतो, हवइ पुणो आगमिस्साए ।३७।

का देव दुग्गइ ! का अबोहि ! केणेव वुज्झइ मरणं !
केण अणंतं पारं, संसारं हिंडइ ! जीवो ।३८।

कंदप्पदेव-किब्बिस–अभिओगा आसुरी य संमोहा ।
ता देव दुग्गइओ, मरणंमि विराहिए हुंति ।३९।

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा किण्हलेस-मोगाढ़ा ।
इह जे मरंति जीवा, तेसिं दुल्लहा भवे बोही ॥४०॥

सम्मदंसण-रत्ता, अनियाणा सुक्कलेस-मोगाढ़ा ।
इह जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥४१॥

जे पुण गुरु पडिणीया, बहुमोहा ससवला कुसीला य ।
असमाहिणा मरंति, ते हुंति अणंत संसारी ॥४२॥

जिणवयणे अणुरत्ता, गुरुवयणं जे करंति भावेणं ।
असवल-असंकिलिट्ठा, ते हुंति परित्तसंसारी ॥४३॥

बालमरणाणि बहुसो, बहुआणि अकामगाणि मरणाणि ।
मरिहंति ते वराया, जे जिणवयणं न याणंति ॥४४॥

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलप्पवेसो अ ।
अणायार-भंडसेवी, जम्मण-मरणाणुबंधीणि ॥४५॥

उड्ढमहे तिरियंमिवि, मयाणि जीवेण बालमरणाणि ।
दंसण-नाण-सहगओ, पंडियमरणं अणुमरिस्सं ॥४६॥

उव्वेयणयं जाइ-मरणं, नरएसु वेअणाओ य ।
एआणि संभरंतो पंडियमरणं मरसु इण्हिं ॥४७॥

जइ उप्पज्जइ दुक्खं, तो दट्ठव्वो सहावओ नवरं ।
किं किं मए न पत्तं, संसारं संसरंतेणं ॥४८॥

संसारचक्कवाले, सव्वेवि यं पुग्गला मए बहुसो ।
आहारिया य परिणामिआ य, न य हं गओ तत्ति ।४६।

तण-कट्ठेहि व अग्गी, लवणजलो वा नइसहस्सेहिं ।
न इमो जीवो सक्को, तिप्पेउं काम-भोगेहिं ॥५०॥

आहारनिमित्तेणं, मच्छा गच्छंति सत्तमि पुढविं,
सच्चित्तो आहारो, न खमो मणसावि पत्थेउं ॥५१॥

पुव्विं कयपरिकम्मो, अनियाणो ऊहिऊण मइबुद्धि ।
पच्छा मलिअ-कसाओ, सज्जो मरणं पडिच्छामि ॥५२॥

अक्कंडे चिरभाविय, ते पुरिसा मरणदेसकालंमि ।
पुव्वकयकम्म-परिभावणाइ, पच्छा परिवडंति ॥५३॥

तम्हा चंदगविज्झं, सकारणं उज्जुएण पुरीसेण ।
जीवो अविरहियगुणो, कायव्वो मुक्खमग्गंमि ॥५४॥

बाहिरजोगविरहिओ, अब्भिंतरझाण-जोगमल्लीणो ।
जह तम्मि देसकाले, अमूढसन्नो चयइ देहं ॥५५॥

हंतूण-रागदोसं, छित्तूण य अट्ठकम्मसंघायं ।
जम्मण-मरणरहट्टं, छित्तूण भवा विमुच्चिहिसि ॥५६॥

एवं सव्वुवएसं, जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेणं ।
तस-थावर-खेमकरं-पारं निव्वाण-मग्गस्स ॥५७॥

नहि तंमि देसकाले, सक्को बारसविहो सुअक्खंधो ।
सव्वो अणुचिंतेउं, धणियंपि समत्थचित्तेणं ।५८।

एगंमिवि जंमि पए, संवेगं वीअराय–मग्गंमि ।
गच्छइ नरो अभिक्खं, तं मरणं तेण मरियव्वं ।५९।

ता एगंपि सिलोगं, जो पुरिसो मरण–देसकालंमि ।
आराहणोवउत्तो, चिंतंतो–राहगो होइ ।६०।

आराहणोवउत्तो, कालं काउण सुविहिओ सम्मं ।
उक्कोसं तिन्नि भवे, गंतूणं लहइ निव्वाणं ।६१।

समपुत्ति अहं पढमं, बीयं सव्वत्थ संजओमित्ति ।
सव्वं च वोसिरामि, एयं भणियं समासेणं ।६२।

लद्धं अलद्धपुव्वं, जिणवयण–सुभासियं अमयभूअं ।
गहिओ सुग्गइमग्गो, नाहं मरणस्स बीहेमि ।६३।

धीरेणवि मरियव्वं, काउरिसेणवि अवस्स मरियव्वं ।
दुण्हंपि हु मरिअव्वे, वरं खु धीरत्तणे मरिउं ।६४।

सीलेणवि मरियव्वं, निस्सीलेणवि अवस्स मरियव्वं ।
दुण्हंपि हु मरिअव्वे, वरं खु सीलत्तणे मरिउं ।६५।

नाणस्स दंसणस्स य, सम्मत्तस्स य चरित्तजुत्तस्स ।
जो काही उवओगं, संसारा सो विमुच्चिहिसि ।६६।

चिर-उसिय-बंभयारी, पप्फोडेउण सेसयं कम्मं ।
अणुपुव्वीइ विसुद्धो, गच्छइ सिद्धिं धुयकिलेसो ।६७।

निक्कसायस्स दंतस्स, सूरस्स ववसाइणो ।
संसारपरिभीअस्स, पच्चक्खाणं सुहं भवे ।६८।

एयं पच्चक्खाणं, जो काही मरणदेसकालंमि ।
धीरो अमूढसन्नो, सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ।६९।

धीरो जर-मरण-विउ, —धीरो विन्नाण—नाण-संपन्नो ।
लोगस्सुज्जोअगरो, दिसउ खयं सव्वदुक्खाणं ।७०।



॥ श्रुतकेवलि श्रीशय्यम्भव सूरिसंदृब्धम् ॥

॥ श्री दशवैकालिकसूत्रम् ॥

॥१॥ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम् ॥

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।१।

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ, सो अ पीणेइ अप्पयं ।२।

एमेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण-भत्ते सणे रया ।३।

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ।४।

महुकार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ।५।

ते बेमि—दुम्मपुप्फिअज्झयणं ।

॥ २ ॥ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम् ॥

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस वसं गओ ।१।

वत्थ—गंध—मलंकारं, इत्थिओ सयणाणि य ।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइ त्ति वुच्चइ ।२।

जे अ कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ ति वुच्चइ ।३।

समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिआमणो निस्सरइ बहिद्धा ।
न सा महं नोवि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणइज्ज रागं ।४।

आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणइज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ।५।

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
निच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।६।

धिरत्थु ते जसोपकामी, जो तं जीविय कारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेअं ते मरणं भवे ।७।
अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवन्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ।८।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ।
वायाविद्धुव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।९।
तीसे सो वहल सुच्चा, संजयाइ सुभासियं।
अकुंसेण जहा नागो, धम्मो संपडिवाइओ ।१०।
एवं करंति संबुद्ध, पंडिआ पवियक्खणा।
विणिअट्ठंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ।११।

त्तिबेमि सामन्नपुव्वियज्झयणं ॥

॥ क्षुल्लकाचाराध्ययनम् ॥

संजमे सुठ्ठि अप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं।
तेसिमेअमणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं ।१।
उद्देसिअं कीअगडं, नियाममभिहडाणि अ।
राइभत्ते सिणाणे अ, गंधमल्ले अ वीअणे ।२।
संनिही निहिमत्त अ, रायपिंडे किमिच्छए।
संवाहण दंतपहोअणा अ, संपुच्छण, देह पलोअणा अ ।३।

अट्ठावए अ नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाहणापाए, समारंभं च जोइणो ।४।

सिज्जाअरपिंडं च, आसंदी पलिअंकए ।
गिहंतर निसिज्जा अ, गायस्सुव्वट्टणाणि अ ।५।

गिहिणो वेआवडिअं, जा अ आजीववत्तिआ ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि अ ।६।

मूलए सिंगबेरे अ, उच्छुखंडे अ निव्वुडे ।
कंदे मूले अ सच्चित्ते, फले बीए अ आमए ।७।

सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमालोणे अ आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे अ, काला लोणे अ आमए ।८।

धुवणेत्ति वमणे अ, वत्थीकम्म विरेअणे ।
अंजणे दंतवणे अ, गायाभंग विभूसणे ।९।

सव्वमेअमणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं ।
संजमंमि अ जुत्ताणं, लहुभूअ विहारिणं ।१०।

पंचासव परिन्नाया, तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणाधीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ।११।

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिआ ।१२।

परिसहरिउदंता, धूअमोहा जिइंदिआ ।
सव्व दुक्ख पहीणट्ठा, पक्खमंति महेसिणो ॥१३॥

दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहेतु अ ।
केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति नीरया ॥१४॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तव्वेण अ ।
सिद्धिमग्ग मणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे ॥१५॥

त्तिबेमि खुड्डआयार कहज्झयणं संमत्तं ॥

॥४॥ छज्जीवणियज्झयणम् ॥

सुअं मे आउसंतेणं, भगवया एवमक्खायं ।

इह खलु सा छज्जीवणिआ, नाम अज्झयणं, समणेणं भगवयामहावीरेणं । कासवेणं पवेइआ सु अक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥१॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिआ, नामअज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइआ सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥२॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नाम अज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥३॥

तं जहा–पुढविकाइआ, आउकाइआ, तेउकाइआ, वाउकाइआ, वणस्सइकाइआ, तसकाइआ, पुढविचित्त मंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिणएणं ।आउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिणएणं ॥ तेउ चित्तमंत-मक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिणएणं ॥ वाउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिणएणं। वणस्सइ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिणएणं ॥ तं जहा-अग्गबीआ मूलबीआ, पोरबीआ, खंधबी-आ बीअरुहा, संमुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइआ, सबिआ-चित्त मंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थ परिण-एणं ॥ से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा, तं जहा-अंडया, पोयया, जराउआ, रसया, संसेइमा, संमुच्छिमा, उब्भिआ, उववाइआ, जेसिं केसिच पाणाणं अभिक्कंतं, पडिक्कंतं, संकुचिअं, पसारिअं, रुयं, भंतं, तसिअं, पलाइयं, आगइगइ-विन्नाया, जे अ कीडपयंगा, जेय कुंथु पिप्पीलिआ, सव्वे बेइं-दिया, सव्वे तेइंदिया, सव्वे चउरिंदिआ, सव्वेपंचिंदिआ- सव्वे तिरिक्खजोणिआ,सव्वेनेरइआ, सव्वे मणुआ, सव्वेदेवा, सव्वे पाणा परमा हम्मिआ,एसो खलु छट्ठो जीवनीकाओतसकाउत्ति पवुचइ । इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेवसयं दंडं सामारं-

भिज्जा, नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंड समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाइज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्सभंत्ते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, पढमे भंत्ते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दुच्चे भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेवसयं मुसं वइज्जा नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्ज मुसं वयंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणंमणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। दुच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥

अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव-सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा निवन्नेहिं अदिन्नगिण्हाविज्जा अदिन्नं-गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहे-णं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥

अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं, सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजो-णिअं वा नेवसयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठि-ओमि सव्वओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं

वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगण्हाविज्जा परिग्गिहं परिगण्हं तेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि। पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥

अहावरे छट्ठे भंते वए राइभोअणाओ वेरमणं सव्वं भंते राइभोअणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेवसयं राइं भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा राइं भुंजंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥६॥

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहिअट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। (६)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परि-

सागओ वा सुत्ते वा जागरमणे वा से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलिआए वा सिलागाए वा सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा न विलिहिज्जा न घट्टिज्जा नभिंदिज्जा अन्नं न आलिहाविज्जा न विलिहाविज्जा न घटाविज्जा नभिंदाविज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (१)। से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा सेउदगं वा ओसं वा हिमं वा महिअं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं न आमुसिज्जा न संफुसंफुसिज्जा न आविलिज्जा न पविलिज्जा न अक्खोडिज्जा न पक्खोडिज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा अन्नं न आमुसाविज्जा न संफुसाविज्जा न आवीलाविज्जा न पवीलाविज्जा न अक्खोडाविज्जा न पक्खोडाविज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा अन्नं

आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पविलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (२)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणि वा इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चि वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणि वा उक्कं वा न उंजेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा न घटावेज्जा न भिंदाव्वेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा न उज्जालवेज्जा न पज्जालवेज्जा न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (३)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा

सुत्ते वा जागरमाणे वा सेएण वा विहुयणेण वा तालिअं-टेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वावि पुग्गलं न फुमेज्जा न वीएज्जा अन्नं न फुमावेज्जा न वीआवेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीअंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । (४)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्च-क्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से बीएसु वा बीअपइट्ठेसु वा रुढेसु वा रुढपइट्टेसु वा जाएसु वा जाए पइट्ठेसु वा हरिएसु वा हरिएपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सचित्तेसु वा सचित्त कोलपडिनिस्सएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुअट्ठेजा अन्नं न गच्छवेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीआवेज्जा न तुअट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीअंतं वा तुअट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि

करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । (५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्च-क्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिप्पीलिअं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा उरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंमि वा कंबलंसि वा पायपुंछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जगंसि वा संथारंगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिअ पमज्जिअपमज्जिअ एगंतमवणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ (६) ॥

अजयं चरमाणो अ, पाणभूआइं हिंसई ।
बंधई पावयंकम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥१॥

अजयंचिट्ठमाणोअ, पाणभूआइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुअं फलं ॥२॥

अजयं आसमाणो अ, पाणभूआइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥३॥

अजयं सयमाणोअ, पाणभूआइं हिंसइ ।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥४॥

अजयं भुंजमाणो अ, पाणभूआइं हिंसइ ।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥५॥

अजयं भासमाणो अ, पाणभूआइं हिंसइ ।
बंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥६॥

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सये ।
कहं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥७॥

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सये ।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥८॥

सव्व भूअप्प भूअस्स, सम्मं भूआइं पासओ ।
पिहिआसवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ ॥९॥

पढमनाणं तओ दया, एवंचिट्ठइ सव्वसंजए ।
अन्नाणी किं काही, किं वा नाही छेअं पावगं ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयंपिजाणइ सोच्चा, जं सेअं तं समायरे ॥११॥

जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणेइ ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कह सोनाहीइ संजमं ॥१२॥

जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणेइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सोहुनाहीइ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवेय, दोविए ए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ ॥१५॥

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मुक्खं च जाणइ।
तया निव्विदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे ॥१६॥

जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे।
तया चयइ संयोगं, सब्भिंतर बाहिरं ॥१७॥

जया चयइ संयोगं, सब्भिंतर बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिअं ॥१८॥

जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारिअं।
तया संवरमुकिट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥

जया संवरमुकिट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणई कम्मरयं, अबोहि कलुसं कडं ॥२०॥

जया धुणइ कम्मरयं, अबोहि कलुसं कडं।
तया सव्वत्तगंनाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥

जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥

जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥२३॥

जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणा पहोअस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमई खंति संजमरयस्सी ।
परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥२७॥

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमर भवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमोअ, खंती अबंभचेरं च ॥२८॥

इच्चेअं छज्जीवणिअं, सम्मदिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामन्नं, कम्मुणा न विराहिज्जासि त्तिबेमि ॥२९॥

चउत्थं छज्जीवणिआणामज्झयणं संम्मत्तं ॥

-●-

॥५॥ पंचमज्झयणं पिण्डेसणाए ॥पढमो उद्देसओ ।

संपत्ते भिक्खकालंमि, असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कम्मजोगेण, भत्तपाणं गवेसए ॥१॥

से गामे वा नगरे वा, गोअरग्ग-गओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा ॥२॥

पुरउ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीअहरिआइं, पाणे अ दगमट्टिअं ॥३॥

ओवायं विसमं खाणुं, विजलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे ॥४॥

पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूआइं, तसे अदु व थावरे ॥५॥

तम्हा तेण न गच्छिज्जा, संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥६॥

इंगालं छारिअंरासिं, तुसरासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे ॥७॥

न चरेज्ज वासे वासंते, महिआए व पडंतिए ।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसुवा ॥८॥

न चरेज्ज वेस सामंते, बंभचेर–वसाणु (ण) ए ।
बंभयारिस्स दंतस्स, हुज्जा तत्थ विसुत्तिया ॥९॥

अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं ।
हुज्जवयाणं पीला, सामन्नंमि असंसओ ॥१०॥

तम्हा एअंवियाणित्ता, दोसं दुग्गइ–वड्ढणं ।
वज्जए वेस–सामंतं, मुणीएगंत–मस्सिए ॥११॥

साणं सूयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं ।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥

अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले ।
इंदिआइं जहाभागं, दमइत्तामुणी चरे ॥१३॥

दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो अ गोअरे ।
हसंतो नाभिगच्छिज्जा, कुलंउच्चावयंसया ॥१४॥

आलोअंथिग्गलंदारं, संधिं दगभवणाणि अ ।
चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥

रन्नोगिहवइणं च, रहस्सा रक्खिआण य ।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

पडिकुट्ठकुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए ।
अचिअत्तंकुलं न पविसे, चिअतं पविसे कुलं ॥१७॥

साणी-पावार-पिहिअं, अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोलेज्जा, ओग्गहंसि अजाइआ ॥१८॥

गोअरग्ग-पविट्ठो अ, वच्च-मुत्तं न धारए।
ओगासं फासुअंनच्चा, अणुन्नविअ वोसिरे ॥१६॥

नीअ-दुवारं तमसं, कोट्ठगंपरिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥

जत्थ पुप्फाइं बीआइं, विप्पइन्नाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वा वि कुट्ठए।
उल्लंघिआ न पविसे, विउहित्ताण व संजए ॥२२॥

असंसत्तं पलोइज्जा, नाइदूरावलोअए।
उप्फुल्लं न विनिज्झाए, निअट्टिज्ज अयंपिरो ॥२३॥

अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्ग-गओ मुणी।
कुलस्सभूमिं जाणित्ता, मिअं भूमिं परक्कमे ॥२४॥

तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं विअक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥२५॥

दग-मट्टिअ-आयाणे, बीयाणि हरिआणि अ।
परिवज्जंतो चिट्ठिज्जा, सव्विं दिअ समाहिए ॥२६॥

तत्थ से चिट्ठ माणस्स, आहारे पाण-भोअणं ।
अकप्पिअं न गेगिहज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ।२७।

आहरंती सिआ तत्थ, परिसाडिज्ज भोअणं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।२८।

संमद्दमाणी पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ ।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसिं परिवज्जए ।२९।

साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टिआणि अ ।
तहेव समणुट्ठाए, उदगं संपणुल्लिआ ।३०।

आगोहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाण-भोअणं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।३१।

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।३२।

(एवं) उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खेमट्टिआ ऊसे ।
हरिआले हिंगुलए, मणोसिलाअंजणे लोणे ।३३।

गेरुअ वन्निअसेढिअ,–सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसकए य ।
उक्किट्ठ-मसंसट्ठे, संसट्ठे चेवबोद्धव्वे ।३४।

असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जामाणं न इच्छिज्जा, पच्छाकम्मं जहिं भवे ।३५।

संसट्ठेण यहत्थेण, दव्वीएमायणेण व।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणिअं भवे।३६।
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं नइच्छिज्जा, छंदं से पडिलेहए।३७।
दुण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा जं तत्थेसणिअं भवे।३८।
गुव्विणीए उवण्णत्थं, विविहं पाणभोअणं।
भुंजमाणंविवज्जिज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए।३६।
सिआ य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिआ वानिसीइज्जा, निसन्ना वापुणुट्ठए।४०।
तंभवे भत्तपीणंतु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।४१।
थणगं पिज्जेमाणी, दारगं वा कुमारिअं।
तं निक्खिवितु रोअंतं, आहरे पाणभोअणं।४२।
तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणअकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।४३।
जं भवे भत्तपाणं तु, कप्पाकप्पंमि संकिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।४४।
दगवारेणपिहिअं, नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण व केणइ।४५।

तं चउब्भिंदिउं दिज्जा, समणट्ठाए वदावए।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।४६।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्ज वा, दाणट्ठापगडं इमं।४७।

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मेकप्पइ तारिसं।४८।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं।४६।

तं भवेभत्त पाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।५०।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जावा, वणिमट्ठा पगडं इमं।५१।

तं भवेभत्त-पाणंतु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।५२।

असणं पाणमं वावि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणिज्ज सुणिज्जावा, समणट्ठा पगडं इमं।५३।

तं भवेभत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं।५४।

उद्देसिअं कीअगडं, पूइकम्मं च आहडं ।
अज्झोयर–पामिच्चं, मीसजायं विवज्जए ।५५।

उग्गमंसे अ पुच्छिज्जा, कस्सट्ठाकेण वा कडं ।
सुच्चा निस्संकिअंसुद्धं, पडिगाहिज्ज संजए ।५६।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
पुप्फेसु हुज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ।५७।

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ।५८।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
उदगंमि हुज्ज निक्खित्तं, उत्तिग–पणगेसुत्रा ।५९।

तं भवे भत्त-पाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।६०।

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा ।
तेउंम्मि हुज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिआ दए ।६१।

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।६२।

एवंउस्सक्किआओसक्किआ,
उज्जालिआ पज्जालिआ निव्वाविआ ।

उस्सिं चियानिस्सिंचिया,
उव्वत्तिया ओयारिया दए ।६३।

तं भवे भत्तपाणंतु, संजयाण अकप्पिअं।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।६४।

हुज्ज कट्ठ सिलं वा वि, इट्टालं वा वि एगया।
ठविअंसंकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं ।६५।

न तेण भिक्खू गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदिअ समाहिए ।६६।

निस्सेणिं फलगंपीढं, उस्सवित्ताण-मारुहे।
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठा एव दावए ।६७।

दुरुहमाणी पवडिज्जा, हत्थं पायं व लूसए।
पुढ विजीवेवि हिंसिज्जा, जेअतन्निस्सिआजगे ।६८।

एयारिसे महादोसे, जाणिउण महेसिणो।
तम्हामलोहडं भिक्खु, न पडिगिण्हंति संजया ।६९।

कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिन्नं व सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरंच, आमगं परिवज्जए ।७०।

तहेवसत्तु-चुण्णाइं, कोल-चुण्णाइं आवणे।
सक्कुलिं फाणिअं पूअं, अन्नं वा वि तहाविहं ।७१।

विक्कायमाणं पसढं, रएणं परिफासिश्रं ।
दितिश्रं पडिश्राइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।७२।

वहु अट्ठिश्रं पुग्गलं. अणिमिसं वा वहुकंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं विल्लं, उच्छु खंडं व सिंबिलिं ।७३।

अप्पे सिश्रा भोश्रणज्जाए, वहुउज्झियधम्मिए ।
दितिश्रं पडिश्राइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ।७४।

तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वार धोश्रणं ।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणाधोश्रं विवज्जए ।७५।

जं जाणेज्ज चिराधोयं, मइए दंसणेण वा ।
पडि पुच्छिऊण सुच्चा वा, जं च निस्संकिश्रं भवे ।७६।

अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहिज्ज संजए ।
अह संकियंभविज्जा, आसाइत्ताण रोयए ।७७।

थोव मासायणट्ठाए, हत्थगंमि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए ।७८।

तं च अच्चं बिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए ।
दितिश्रं पडिश्राइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ।७९।

तं च होज्ज अकामेणं, विमणेण पडिच्छिश्रं ।
तं अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ।८०।

एगंत-मवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिआ ।
जयं परिट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ।८१।

सिआयगोयरग्ग-गओ, इच्छिज्जा परिभुत्तअं (भुंजिउं) ।
कुट्ठगंभित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुअं ।८२।

अणुन्नवित्त मेहावी, पडिच्छन्नंमि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता, तत्थ भुंजिज्ज संजए ।८३।

तत्थ से भुंजमाणस्स, अट्ठिअं कंटओसिआ ।
तणकट्ठसक्करं वा वि, अन्नं वा वि तहाविहं ।८४।

तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डए ।
हत्थेण तं गहेऊणं, एगंत-मवक्कमे ।८५।

एगंत-मवक्कमित्ता, अचित्तं पडिलेहिआ ।
जयं परिट्ठाविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ।८६।

सिआ य भिक्खू इच्छिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअं ।
सपिंडपाय-मागम्म, उंडुयंपडिलेहिआ ।८७।

विणएणं पविसित्ता, सगासेगुरुणो मुणी ।
इरियावहिय-मायाय, आगओ य पडिक्कमे ।८८।

आभोइत्ताण नीसेसं, अइआरं जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व संजए ।८९।

उज्जुपन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेअसा ।
आलोए गुरुसगासे, जं जहा गहिअं भवे ।९०।

न सम्ममालोइयं हुज्जा, पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वो सट्ठो चिंतए इमं ।९१।

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्तीसाहूणदेसिआ ।
मुक्ख-साहण-हेउस्स, साहु-देहस्स धारणा ।९२।

नमुक्कारेणपारित्ता, करित्ता जिण संथवं ।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ।९३।

वीसमंतो इमं चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइमे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ।९४।

साहवो तोचिअत्तेणं, निमंतिज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए ।९५।

अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुंजिज्ज एगओ ।
आलोए भायणे साहू, जयं अपरिसाडियं ।९६।

तित्तगं व कडुअं व कसायं, अंबिलं व महुरं लवणं वा ।
ए ए लद्ध-मनट्ठ-पउत्तं, महु घयं व भुंजिज्ज संजए ।९७।

अरसं विरसं वावि, सूइअं वा असूइअं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं, मंथु-कुम्मास-भोअणं ।९८।

उप्पएणं नाइहीलिज्जा, अप्पं वा बहु फासुअं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जिअं ।९९।

दुल्लहाउमुहादाइ, मुहाजीवीवि दुल्लहा ।
मुहादाइ मुहाजीवी, दोवि गच्छंति सुग्गइं ।१००।

त्तिबेमि........



॥ ६ ॥ पंचमज्झयणं बीओ उद्देसओ ॥

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए ।
दुगधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ।१।

सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोअरे ।
अयावयट्ठा भुच्चाणं, जइ तेणं न संथरे ।२।

तओ कारणमुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए ।
विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ।३।

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जिज्जा (त्ता), काले कालं समायरे ।४।

अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि, संनिवेसं च गरिहसि ।५।

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिस कारिअं।
अला भुत्ति न सोएज्जा, तवोत्ति अहिआसए।६।

तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।
तं उज्जुअं न गच्छिज्जा, जयमेव परक्कमे।७।

गोयरग्ग–पविट्ठो अ, न निसीएज्ज कत्थइ।
कहं च न पबंधिज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए।८।

अग्गलं फलिहंदारं, कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिआ न चिट्ठिज्जा, गोयरग्ग–गओमुणी।९।

समणंमाहणं वावि, किविणं वा वणीमगं।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।१०।

तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरं।
एगंत-मवक्कमित्ता, तत्थचिट्ठिज्ज संजए।११।

वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तिअंसिआहुज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा।१२।

पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए।
उवसंकमिज्जभत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए।१३।

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुअं वा मगदंतिअं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च संलुंचिआ दए।१४।

तं भवे भत्तपाणं तु , संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुअं वा मगदंतिअं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं, तं च संमद्दिआ दए ॥१६॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पिअं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥

सालुयं वा विरालियं, कुमुअं उप्पल-नालिअं ।
मुणालिअं सासव-नालिअं, उच्छु-खंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

तरुणगंवा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरिअस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणिअं वाछिवाडि, आमिअं भज्जिअं सइं ।
दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहाकोल-मणुस्सिन्नं, वेलुअं कासव-नालिअं ।
तिल-पप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तहेव चाउलं पिट्ठं, विअडं वा ततनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ-पूइपिन्नागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥

कविट्ठं माउलिगं च, मूलगं मूलगत्तिअं ।
आमं असत्थ परिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फल-मंथूणि, बीअमंथूणि जाणिअ ।
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुआणं चरेभिक्खु, कुलमुच्चावयं सया ।
नीयंकुल-मइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसिज्जा न विसीइज्ज, पंडिए ।
अमुच्छिओ भोअणंमि, मायण्णे एसणा-रए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमं-साइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासय वत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए ।
अदितस्स न कुपिज्जा, पच्चक्खे वि अ दीसओ ॥२८॥

इत्थिअं पुरिसं वावि, डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणं न जाइज्जा, नो अणं फरुसं वए ॥२९॥

जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे ।
एव-मन्नेसमाणस्स, सामण्ण-मणुचिट्ठइ ॥३०॥

सिआ एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ ।
मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥

अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वइ ।
दु-त्तोसओ अ सो होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३२॥

सिआ एगइओ लद्धुं विविहं पाण-भोअणं ।
भद्दगं-भद्दगं भुच्चा, विवन्नं विरसमाहरे ॥३३॥

जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥

पूअणट्ठाजसोकामी, माण-सम्माण-कामए ।
बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥३५॥

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नंवा मज्जगं रसं ।
संसक्खं न पिबेभिक्खु, जसं सारक्ख-मप्पणो ॥३६॥

पिया एगइओ तेणो, न मे कोइ विआणइ ।
तस्स पस्सह दोसाइं, निअडिं च सुणेह मे ॥३७॥

वड्ढइ सुंडिआ तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो ।
अयसोअ अनिव्वाणं, सययं च असाहुआ ॥३८॥

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मइ ।
तारिसो मरणंतेवि, न आराहेइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ, समणे आवि तारिसे ।
गिहत्थाविणं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥

एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥४१॥

तवं कुव्वइ मेहावी, पणीअं वज्जए रसं ।
मज्ज-प्पमाय विरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेग-साहु-पूइअं ।
विउलं अत्थ संजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं तु सगुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंतेवि , आराहेइ अ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ, समणे आवि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तव–तेणे वय–तेणे, रुव–तेणे अ जे नरे ।
आयार–भावतेणे अ, कुव्वइ देवकिव्विसं ॥४६॥

लध्धुण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिव्विसे ।
तत्था वि से न याणाइ, किं मे किचा इमं फलं ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एल-मूअगं ।
नरयं तिरिक्खजोणिवा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥

एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिअं ।
अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिऊणभिक्खेसण-सोहिं,
संजयाण बुद्धाणं सगासे ।

तत्थ भिक्खू सुप्पणिहि-इंदिए,
निव्वलज्ज-गुणवं विहरिज्जासि ॥५०॥

त्तिवेमि........



॥६॥ महाचारकथाध्ययनम् ॥

नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे अ तवे रयं ।
गणि-मागम-संपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥१॥

रायाणो—रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिआ ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो, कहं भे आयार गोयरो ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूअ-सुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आयक्खाइविअक्खणो ॥३॥

हंदि धम्मत्थ-कामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयार गोअरं भीमं, सयलं दुरहिठ्ठिअं ॥४॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलठ्ठाण भाइस्स, न भूअं न भविस्सइ ॥५॥

सखुड्डग-विअत्ताणं, वाहिआणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिआ कायव्वा, तं सुणेह जहा तहा ॥६॥

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोवरज्झइ ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गंथत्ताउ भस्सइ ॥७॥

(वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहि-भायणं ।
पलियंक निसेज्जाय, सिणाणं सोहवज्जणं ॥८॥

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसिअं ।
अहिंसा निउणा दिठ्ठा, सव्वभूएसु संजमो ।६।

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा ।
ते जाण-मजाणं वा, न हणे नो विघायए ।१०।

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहंघोरं, निग्गंथावज्जयंतिणं ।११।

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूआ, नोवि अन्नं वयावए ।१२।

मुसावाओ उलोगमि, सव्व साहूहिंगरिहिओ ।
अविस्साओ अभूआणं, तम्हा मोसंविवज्जए ।१३।

चित्तमंत-मचितं वा, अप्पंवा जइवा बहुं ।
दंत-सोहण मित्तं वि, उग्गहंसि अजाइया ।१४।

तं अप्पणान गिण्हंति, नो वि गिण्हावए परं ।
अन्नं वा गिण्हमाणंपि, नाणु जाणंति संजया ।१५।

अबंभचरिअं घोरं, पमायं दुरहिट्ठिअं।
नायरंति मुणीलोए, भेआययण-वज्जिणो ।१६।

मूलमेय महम्मस्स, महादोस-समुस्सयं।
तम्हा मेहुण-संसग्गं, निग्गंथा वज्जयंतिणं ।१७।

विड मुब्भे इमं लोणं, तिल्लं सप्पिं च फाणिअं।
न ते संनिहि मिच्छंति, नायपुत्त-वओ-रया ।१८।

लोहस्सेस अणुप्फासे, मन्ने अन्नयरामवि।
जे सिआ सन्निहिं कामे, गिही पव्वइए न से ।१६।

जं पिवत्थं व पायं वा, कंवलं पायपुंछणं।
तं पि संजम-लज्जट्ठा, धारंतिपरिहिंतिअ ।२०।

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइवुत्तं महेसिणा ।२१।

सव्वत्थुवहिणा वुद्धा, संरक्खण-परिग्गहे।
अवि अप्पणो विदेहंमि, नायरंति ममाइयं ।२२।

अहो निच्चं तवो कम्मं, सव्ववुध्धेहिवण्णिअं।
जा य लज्जा-समावित्ती, एगभत्तं च भोअणं ।२३।

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणिअं चरे? ।२४।

उदउल्लं बीअ-संसत्तं, पाणा निवडियामहिं।
दिआ ताइं विवज्जिज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ? ।२५।

एअं च दोसं दट्ठणं, नायपुत्तेण भासिअं।
सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोअणं ।२६।

पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा काय सा ।
तिविहेण करण जोएण, संजया सुसमाहिआ ।२७।

पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ।२८।

तम्हा ए अं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
पुढविकाय-समारंभं, जावजीवाइ वज्जए ।२९।

आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिआ ।३०।

आउकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ।३१।

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
आउकाय-समारंभं, जावजीवाइ वज्जए ।३२।

जायतेअं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सव्वओ विदुरासयं ।३३।

पाइणं पडिणं वावि, उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहेदाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि अ ।३४।

भूआण-मेस-माघाओ, हव्ववाहो न संसओ ।
तं पइव-पयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ।३५।

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
तेउकाय-समारंभं, जावजीवाइ वज्जइ ॥३६॥

अणिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्ज-बहुलं चेअं, नेअं ताईहि सेविअं ॥३७॥

तालिअंटेण पत्तेण, साहा-विहुअणेणवा ।
न ते वीइउमिच्छंति, वे आवेउण वा परं ॥३८॥

जं पिवत्थं व पायं वा, कंबलं पाय पुंछणं ।
न ते वायमुइरंति, जयं परिहरंति अ ॥३९॥

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
वाउकाय-समारंभं, जावजीवाइ वज्जए ॥४०॥

वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा,
तिविहेण करणजोएण, संजयासुसमाहिआ ॥४१॥

वणस्सइं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसेअ अचक्खुसे ॥४२॥

तम्हाएअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ विड्ढणं ।
वणस्सइ–समारंभं, जावजीवाइ वज्जए ।४३।

तसकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करण जोएण, संजया सुसमाहिआ ।४४।

तसकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ।४५।

तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइ-वड्ढणं ।
तसकाय समारंभं, जावजीवाइ वज्जए ।४६।

जाइं चत्तारिभुज्जाइं, इसिणा–हारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जंत्तो, संजमं अणुपालए ।४७।

पिंडं सिज्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पिअं न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअं ।४८।

जेनिआगं ममायंति, कीअ-मुद्देसि–आहडं ।
वहं ते समणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा ।४९।

तम्हा असण-पाणाइं कीअ–मुद्देसि-आहडं ।
वज्जयंति ठिअप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ।५०।

कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वापुणो ।
भुंजंतो असण-पाणाइं, आयारा परिभस्सइ ।५१।

सीओदग-समारंभे, मत्त धोअण-छड्डणे ।
जइं छिन्नंति(छिप्पंति), भूआइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ।५२।

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिआ तत्थ न कप्पइ ।
एअमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहि-भायणे ।५३।

आसंदी-पलिअंकेसु, मंच-मासालएसु वा ।
अणायरिअ-मज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासंदी-पलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए ।
निग्गंथा पडिलेहाए, बुद्ध-वुत्त-महिट्ठगा ।५५।

गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदी पलिअंको अ, एएमट्ठं विवज्जिआ ।५६।

गोअरग्ग-पविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिस-मणायारं, आवज्जइ अवोहिअं ।५७।

विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमग-पडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ।५८।

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वा वि संकणं ।
कुसील-वड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ।५९।

तिण्ह मन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूअस्स, वाहिअस्स तवस्सिणो ।६०।

वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ।६१।

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलुगासु अ ।
जे अभिक्खू सिणायंतो, विअडेणुप्पलावए ।६२।

तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाण-महिट्ठगा ।६३।

सिणाणं अदुवा कक्कं, लुद्धं पउमगाणि अ ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ।६४।

नगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीह-रोम-नहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाइ कारिअं ? ।६५।

विभूसा-वत्तिअं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसार-सायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ।६६।

विभूसा-वत्तिअं चेअं, बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्ज-बहुलं चेअं, नेय ताईहिं सेविअं ।६७।

खवंति अप्पाण-ममोहदंसिणो, तवे रया संजम-अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं, पुरेकडइं, नवाइं पावाइं न ते करंति ।६८।

सओवसंता अममा अकिंचणा,
सविज्ज-विज्जाणुगया जसंसिणो ।

उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा,
सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो त्तिबेमि ।६६।



॥ ७ ॥ सुवाक्यशुद्धयाख्य सप्तमं अध्ययनम् ॥

चउण्हं खलुभासाणं, परिसंखाय पन्नवं ।
दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो ।१।

जा अ सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा ।
जा अ बुद्धेहिणाइ्णा, न तंभासिज्ज पन्नवं ।२।

असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्ज-मकक्कसं।
समुप्पेह-मसदिद्धं, गिरं भासिज्ज पन्नवं ।३।

एअं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं ।
सभासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए ।४।

वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए ? ।५।

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ।६।

एवमाइ उ जा भासा, एसकालं मि संकिया ।
संपया-इअ-मट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ।७।

अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्न-मणागए ।
जमट्ठं तु न जाणिज्जा, एवमेअं ति नो वए ।८।

अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्न-मणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु, एवमेअं ति नो वए ।६।

अइअंमि अ कालंमि, पच्चुप्पन्न-मणागए ।
निस्सं किअं भवे जं तु, एवमेअं तिनिद्दिसे ।१०।

तहेव फरुसा भासा, गुरु-भूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ।११।

तहेव काणं काणेत्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहिअं वा विरोमित्ति, तेणंचोरेत्ति नोवए ।१२।

ए एणन्नेण अट्ठेणं, परोजेणुवहम्मइ ।
आयार-भाव-दोसन्नू, न तंभासिज्ज पन्नवं ।१३।

तहेव होले गोलित्ति, साणे वा वसुलित्ति अ ।
दुमए दूहए वा वि, नेवंमासिज्ज पन्नवं ।१४।

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिउत्तिअ ।
पिउस्सिए मायणिज्जत्ति, धूए नत्तुणिअत्ति अ ।१५।

हलेहलित्ति अन्नित्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुलित्ति, इत्थिअं नेवमालवे ।१६।

नामधिज्जेणणं बूआ, इत्थी गुत्तेण वा पुणो ।
जहारिह-मभिगिज्झ, आलविज्जलविज्ज वा ।१७।

अज्जए पज्जए वा वि, वप्पो चुल्लपिउत्ति अ ।
माउलो भाइणिज्जत्ति, पुत्त नत्तुणिअ त्ति अ ।१८।

हे हो हलित्ति अन्नित्ति, भट्टे सामिअ गोमिअ ।
होल गोल वसुलित्ति, पुरिसं नेव-मालवे ।१९।

नामधिज्जेणजं बूआ, पुरिसगुत्तेण वा पुणो ।
जहारिह-मभिगिज्झ, आलविज्जलविज्ज वा ।२०।

पंचिदिआण पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं ।
जावणं न विजाणिज्जा, तावजाइ त्ति आलवे ।२१।

तहेव माणुसं पसुं, पक्खिं वा वि सरीसवं ।
थूले पमे इले वज्झे, पाइमे त्ति अ नो वए ।२२।

परिवूढ त्तिणं बूआ, बूआ उवचिअ त्ति अ ।
संजाए पीणिए वा वि, महाकायत्ति आलवे ।२३।

तहेव गाओ दुज्झाओ, दम्मा गोरहगत्ति अ ।
वाहिमा रहजोगित्ति, नेवं भासिज्ज पन्नवं ।२४।

जुवं गवित्तिणं बूआ, धेणुं रसदय त्ति अ ।
रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणि त्ति अ ।२५।

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ ।
रुक्खा महल्लपेहाए, नेवं भासिज्ज पन्नवं ।२६।

अलं पासाय-खंभाणं, तोरणाणं गिहाण अ ।
फलिहग्गल–नावाणं, अलं उदग-दोणिणं ।२७।

पीढए चंगबेरे अ, नंगले मइयं सिआ ।
जंतलट्ठी व नाभीवा, गंडिआ व अलं सिआ ।२८।

आसणं सयणं जाणं, हुज्जा वा किं चुवस्सए ।
भूओवघाइणि भासं, नेवं भासिज्ज पन्नवं ।२९।

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि अ ।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवंभासिज्ज पन्नवं ।३०।

जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टामहालया ।
पयाय साला विडिमा, वए दरिसणि त्ति अ ।३१।

तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइ नो वए ।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए ।३२।

असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला ।
वइज्ज बहु संभूआ, भूअरूवत्ति वा पुणो ।३३।

तहोसहिओ पक्काओ, नीलिआओ छवीइ अ ।
लाइमा भज्जिमाउत्ति, पिहुखज्ज त्ति नो वए ।३४।

रूढा बहुसंभूआ, थिरा ओसढा वि अ ।
गब्भिआओ पसूआओ, ससाराउ त्ति आलवे ॥३५॥

तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वए ।
तेणगं वावि वज्भित्ति, सुतित्थि त्ति अ आवगा ॥३६॥

संखडिं संखडिं बूआ, पणिअट्ठं ति तेणगं ।
बहुसमाणि तित्थाणि, आवगाणं विआगरे ॥३७॥

तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए ।
नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ॥३८॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगाआवि, एवं भासिज्ज पन्नवं ॥३९॥

तहेव सावज्जं जोगं, परस्सट्ठाए निट्ठिअं ।
कीरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मुणी ॥४०॥

सुकडित्तिसुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥

पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे, पयत्तछिन्न त्ति व छिन्न मालवे ।
पयत्तलट्ठि (ट्ठ) त्ति व कंमहे उ अं, पहारगाढ ति व गाढमालवे ।४२

सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउलं नत्थि एरिसं ।
अविक्किअमवत्तव्वं, अविअत्तं चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेअं वइस्सामि, सव्वमेअं त्ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एवं भासिज्ज पन्नवं ॥४४॥

सुक्कीअं वा सुविक्कीअं, अकिज्जं किज्जमेव वा ।
इमं गिण्ह इमं मुंच, पणीयं नो विआगरे ॥४५॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा ।
पणिअट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं विआगरे ॥४६॥

तहेवा संजयं धीरो, आस एहि करेहि वा ।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति, नेवं भासिज्ज पन्नवं ॥४७॥

बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहुत्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥

नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे अ तवे रयं ।
एवं गुण-समाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥४६॥

देवाणं मणुआणं च, तिरिआणं च वुग्गहे ।
अमुगाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं च सीउण्हं, खेमं धायं सिवंति वा ।
कयाणु हुज्ज एआणि ? मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं, न देव देवत्ति गिरं वइज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए, वइज्ज वा वुट्ठ बलाहये त्ति ।५२।

अंतलिक्ख त्तिणंबूआ, गुज्झाणु चरिअत्ति अ ।
रिद्धि मंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतंति आलवे ॥५३॥

तहेवसावज्जणुमोअणी गिरा,
ओहारिणी जा यपरोवधाइणी ।
से कोह लोहभय हासमाणवो,
न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ॥५४॥

सुवक्कसुद्धि समुपेहिआ मुणी,
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मिअं अदुट्ठं अणुवीइ भासए,
सयाण मज्झे लहइ पसंसणं ॥५५॥

भासाइ दोसे अगुणे अजाणिआ,
तीसे अ दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिए सयाजए,
वइज्ज बुद्धे हिअमाणु लोमिअं ॥५६॥

परिक्खभासी सुसमाहि-इंदिए,
चउक्कसाया-वगए अणिस्सिए ।

स निद्धुणे धुतमलं पुरेकडं,
आराहए लोगमिणं, तहा परं त्तिबेमि॥५७॥



॥८॥ आचारप्रणिधिनामाध्ययनम् ॥

आयार-प्पणिहिं लद्धुं, जहाकायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि, अणुपुव्वि सुणेह मे ॥१॥

पुढवी-दग-अगणिमारुअ, तण-रुक्ख-सबीयगा ।
तसा अ पाणा जीवत्ति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२॥

तेसिं अच्छण-जोएण, निच्चं हो अव्वयं सिआ ।
मणसा काय-वक्केणं, एवं हवइ संजए ॥३॥

पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे ।
तिविहेण करण-जोएण, संजए सुसमाहिए ॥४॥

सुद्धपुढवीए न निसीए, ससरक्खंमि अ आसणे ।
पमज्जित्तु निसीइज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥५॥

सीओदगं न सेविज्जा, सिलावुट्ठं हिमाणि अ ।
उसिणोदगं तत्त-फासुअं, पडिगाहिज्ज संजए ॥६॥

उदउल्लं अप्पणो कायं, नेव पुंछे न संलिहे ।
समुप्पेह तहाभूअं, नो णं संघट्टए मुणी ॥७॥

इंगालं अगणिं अच्चि, अलायं वा सजोइअं ।
न उंजिज्जा न घट्टिज्जा, नो णं निव्वावए मुणी ॥८॥

तालिअंटेणपत्तेण, साहा-विहुयणेण वा ।
न वीइज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पुग्गलं ॥९॥

तणरुक्खं न छिंदिज्जा, फलं मूल च कस्सइ ।
आमगं विविहं बीअं, मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गहणेसु न चिट्ठीज्जा, बीएसु हरिएसु वा ।
उदगंमि तहानिच्चं, उत्तिग-पणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओसव्वभूएसु, पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥

अट्ठसुहुमाइ पेहाए, जाइं जाणितु संजए ।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खिज्ज विअक्खणे ॥१३॥

दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ।
कयराइं अट्ठसुहुमाइं, जाइं पुच्छिज्ज संजए ॥१४॥

सिणेहं पुप्फसुहुमं च, पाणुत्तिगं तहेव य ।
पणगं बीअ-हरिअं च, खंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

एवमेआणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जएनिच्चं, सव्विंदिअ–समाहिए॥१६॥

धुवं च पडिलेहिज्जा, जोगसा पायकंबलं ।
सिज्ज-मुच्चारभूमिच, संथारं अदुवासणं ॥१७॥

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंवाण-जल्लिअं ।
फासुअं पडिलेहित्ता, परिट्ठाविज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोअणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मिअंभासे, न य रुवेसु मणं करे ॥१६॥

बहुं सुणेहि कन्नेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ ।
न य दिट्ठं सुअं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥

सुअं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइअं ।
न यकेण उवाएणं, गिहिजोग समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोअणंमि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुअं न भुंजिज्जा, कीय-मुद्देसि-आहडं ॥२३॥

संनिहिं च न कुव्विज्जा, अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबध्धे, हविज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिआ ।
आसुरत्तं न गच्छिज्जा, सुच्चाणं जिण-सासणं ।२५।

कन्नसुक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहिआसए ।२६।

खुहं पिवासं दुस्सिज्जं, सी-उण्हं अरइं भयं ।
अहिआसे अवहिओ, देहदुक्खं महाफलं ।२७।

अत्थं गयंमि आइच्चे, पुरत्था अ अणुग्गए ।
आहार-माइयं सव्वं, मणसावि न पत्थए ।२८।

अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मिआसणे ।
हविज्ज उअरेदंते, थोवं लद्धुं न खिसए ।२९।

न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा-तवस्सि-बुद्धिए ।३०।

सेजाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मिअं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीअं तं न समायरे ।३१।

अणायारं परक्कम्म, नेवगूहे न निन्हवे ।
सुइ सयावियड भावे, असंसत्ते जिइंदिए ।३२।

अमोहं वयणं कुज्जा, आयरिअस्स महप्पणो ।
तं परिभिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।३३।

अधुवं जीविअं नच्चा, सिद्धिमग्गं विआणिआ।
विणिअट्टिज्ज भोगेसु, आउंपरिमिअमप्पणो ।३४।

बलं थामं च पेहाए, सद्धा-माहग्ग-मप्पणो।
खित्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं निजुंजए ।३५।

जरा जाव न पीडेइ, वाहीजाव न वड्ढइ।
जाविंदिआ न हायंति, तावधम्मं समायरे ।३६।

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाव-वड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हिअ-मप्पणो ।३७।

कोहो पीइं पणासेइ, माणोविणय-नासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्व-विणासणो ।३८।

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जव-भावेण, लोभं संतोसओ जिणे ।३९।

कोहो अमाणो अ अणिग्गहीआ,
माया अलोभो अपवड्ढ माणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ।४०।

रायणिएसु विणयं पउंजे, धुवसीलयं सययं न हावइज्जा।
कुम्मुव्व अल्लीण-पलीण-गुत्तो, परक्कमिज्जा तव संजमंमि ।४१।

निद्दं च न बहु मन्निज्जा, सप्पहासं विवज्जए ।
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायंमि रओ सया ।४२।

जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ।४३।

इहलोग-पारत्त-हिअं, जेणं गच्छइ सुग्गइं ।
बहुस्सुअं पज्जुवासिज्जा, पुच्छिज्ज-त्थ विणिच्छयं ।४४।

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीण गुत्तोनिसिए, सगासे गुरुणो मुणी ।४५।

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य उरुं समासिज्ज, चिट्ठिज्जा गुरुणंतिए ।४६।

अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमेसं न खाइज्जा, मायामोसं विवज्जए ।४७।

अप्पत्तिअं जेणसिआ, आसुकुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहिअगामिणिं ।४८।

दिट्ठं मिअंअसंदिद्धं, पडिपुन्नं विअं जिअं ।
अयंपिर-मणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ।४९।

आयार-पन्नत्ति-धरं, दिट्ठिवाय-महिज्जगं ।
वायविक्खलिअं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ।५०।

नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंत-भेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूआहिगरणं पयं ।५१।

अन्नट्ठं पगडं लयणं, भइज्ज सयणासणं ।
उच्चारभूमि-संपन्नं, इत्थी-पसु-विवज्जिअं ।५२।

विवित्ता अ भवेसिज्जा, नारीणं न लवे कहं ।
गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ।५३।

जहा कुक्कुड-पोअस्स, निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ।५४।

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सु-अलंकिअं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ।५५।

हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कन्न-नास-विगप्पिअं ।
अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ।५६।

विभूसा इत्थि-संसग्गो, पणीअं रसभोअणं ।
नरस्सत्त-गवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ।५७।

अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लविअ-पेहिअं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामराग-विवड्ढणं ।५८।

विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण य ।५९।

पुग्गलाणं परीणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीअ-तण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ।६०।

जाइ सद्धाइ निक्खंतो, परिआय-ट्ठाण-मुत्तमं ।
तमेव अणुपालिज्जा, गुणे आयरिअ-संमए ।६१।
तवं चिमं संजम-जोगयं च, सज्झायजोगं च सया अहिट्ठिए ।
सुरे व सेणाइ समत्त माउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ।६२।

सज्झाय-सज्झाण-रयस्स ताइणो,
अपाव-भावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झइ जंसिमलं पुरेकडं,
समीरिअं रुप्पमलं व जोइणा ।६३।
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए,
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायइ कम्म-घणंमि अवगए,
कसिणब्भ-पुडावगमे व चंदिमेत्तिबेमि ।६४।



॥९॥ विनयसमाधि नामाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥१॥

थंभा व कोहा व मयप्पमाया,
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
फलं व कीअस्स वहाय होई ।१।

जे आवि मंदिति गुरुं वइत्ता, डहरे इमे अप्पसुअत्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करंति आसायण ते गुरुणं ।२।

पगइइ मंदा वि भवंति एगे,
डहरा विअ जे सुअबुद्धोववेआ।
आयारमंता गुण सुट्ठि अप्पा,
जे ही लिआ सिहिरिव भास कुज्जा ।३।

जे आवि नागं डहरं ति नच्चा,
आसायए से अहिआय होइ।
एआयरिअं पि हु हीलयंतो,
निअच्छइ जाइपहं खु मंदो ।४।

आसिविसो या वि परं सुरुट्ठो,
किं जीवना साउ परं नु कुज्जा।
आयरिअपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मुक्खो ।५।

जो पावगं जलिअ-मवक्कमिज्जा,
आसीविसं या वि हु कोवइज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवि अट्ठी,
एसोव-मासायणया गुरुणं ।६।

सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हाल हलं न मारे,
न यावि मोक्खो गुरु-हीलणाए।७।

जो पव्वयं सिरसा भेत्तु-मिच्छे,
सुत्तं व सीहं पडिबोह एज्जा।
जो वा दए सत्ति-अग्गे पहारं,
एसोव-मासायणया गुरुणं।८।

सिया हु सीसेण गिरिं पिभिन्दे,
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिन्दिज्ज व सत्ति अग्गं,
न यावि मोक्खो गुरु-हीलणाए।९।

आयरिय-पाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मुक्खो।
तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी,
गुरुप्पसाया-भिमुहो रमेज्जा।१०।

जहाहिअग्गी जलणं नमंसे, नाणाहुइ-मन्त-पया-भिसित्तं।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा, अणंतनाणोवगओ वि सन्तो।११।

जस्सन्तिए धम्मपयाइ सिक्खे,
तस्सन्तिए वेणइयं पउंजे।
सक्कारए सिरसा पंजलीश्रो,
काय-ग्गिरा 'भो' मणसा य निच्चं ।१२।

लज्जा दया संजम बंभचेरं,
कल्लाण-भागिस्स विसोहि-ठाणं।
जे मे गुरु सयय-मणुसासयन्ति,
तेहं गुरु सययं पूययामि ।१३।

जहा निसन्ते तवणच्चिमाली,
पभासइ केवल-भारहं तु।
एवायरिश्रो सुय-सील बुद्धिए,
विरायइ सुरमज्झे व इन्दो ।१४।

जहा ससी कोमुइ-जोग-जुत्तो,
नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के,
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ।१५।

महागरा आयरिया महेसी,
समाहि-जोगे सुय-सील-बुद्धिए।

सम्पाविउ-कामे अणुत्तराइं,

आराहए तोसइ धम्म-कामी ।१६।

सुच्चाण मेहावि-सुभासियाइं,

सुस्सूसए आयारिअप्पमत्तो ।

आराहइत्ताण गुणे अणेगे,

से पावइ सिद्धि मणुत्तरं । त्तिबेमि ।१७।

-●-

॥९॥ विनयसमाध्यध्ययने द्वितीयोद्देशः ।२।

मूलाउ खंधप्प भवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुवेंति साहा ।

साहप्पसाहा विरुहंतिपत्ता, तओ से पुप्फं च फलं रसो य ।१।

एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मुक्खो ।

जेण कित्ति सुअंसिग्धं, नीसेसं चाभिगच्छइ ।२।

जे य चण्डे मिए थध्धे, दुव्वाइ नियडी सढे ।

वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा ।३।

विणयं पिजो उवाएणं, चोइओ कुप्पइ नरो ।

दिव्वं सोसिरिमिज्जन्ति, दंडेण पडिसेहए ।४।

तहेव अविणी अप्पा, उववज्झा हया गया ।

दीसन्ति दुहमेहन्ता, आभिओग-मुवट्ठिया ।५।

तहेव सुविणी अप्पा उववज्झा हया गया ।

दीसन्ति सुहमेहन्ता, इड्ढिं पत्ता महायसा ।६।

तहेव अविणीअप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, छाया ते विगलिन्दिया ।७।
दण्ड-सत्थ-परिजुण्णा, असब्भ-वयणेहि य।
कलुणा विवन्न-छन्दा, खुप्पिवासा-परिगया ।८।
तहेव सुविणी अप्पा, लोगंसि नर-नारिओ।
दीसन्ति सुहमेहन्ता, इड्ढिं पत्ता महायसा ।९।
तहेव अविणी अप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसन्ति दुहमेहन्ता, आभिओग-मुवट्ठिया ।१०।
तहेव सुविणी अप्पा, देवा जक्खा अ गुज्झगा।
दीसन्ति सुहमेहन्ता, इड्ढिं पत्ता महायसा ।११।
जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसा-वयणं करा।
तेसिंसिक्खा पवड्ढन्ति, जलसित्ता इव पायवा ।१२।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा नेउणियाणिय।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इह लोगस्स कारणा ।१३।
जेण बन्ध वहं घोरं, परिआवं चदारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छन्ति, जुत्ता ते ललि इन्दिआ ।१४।
ते वि तं गुरुं पूयन्ति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारेन्ति नमंसंति, तुट्ठा निद्दस-वत्तिणो ।१५।

किं पुण जे सुअग्गाही, अणन्त-हियकामए ।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६।

नीअं सेज्जंगइं ठाणं, नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वन्दिज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ।१७।

संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि ।
'खमेहअवराहं मे' वइज्ज 'न पुण' त्ति अ ।१८।

दुग्गओवा पओएणं, चोइओ वहइ रहं ।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तोवुत्तो पकुव्वइ ।१९।

(आलवन्ते लवन्ते वा, न निसिज्जाइ पडिस्सुणे ।
मुत्तुणं आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे)

कालं छन्दो वयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेणं तेणं उवाएणं, तं तं संपडिवायए ।२०।

विवत्ती अविणीयस्स, सम्पत्ती विणियस्स अ ।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ।२१।

जे आवि चण्डे मइ-इड्ढि-गारवे, पिसुणे नरेसाहस-हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मेविणएअकोविए,असंविभागी नहु तस्स मुक्खो।२२।

निद्देसवत्ती पुण जे गुरुणं, सूयत्थ-धम्माविणयम्मि कोविया ।
तरित्तते ओहमिणं दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ।२३।

त्तिबेमि........

॥ ९ ॥ विनयसमाध्यध्ययने तृतीयोद्देशः ।३।

आयरियं अग्गि-मिवाहि अग्गी, सुस्सू समाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइयं इंगिअमेव नच्चा, जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ।१।
आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो, गुरुं तु नासाययइ स पुज्जे ।२।
राइणिएसु विणयं पउंजे, डहरा वि यजे परियाय-जेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाइ, ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ।३।
अन्नायउंछं चरइ विसुद्धं, जवणट्ठाया समुयाणं च निच्चं ।
अलध्धुयं नो परिदेव एज्जा, लध्धुं न विकत्थयइ स पुज्जो ।४।
संथार-सेज्जा-सण-भत्तपाणे, अप्पिच्छया अइलाभेवि सन्ते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा, संतोस-पाहन्न-रए स पुज्जे ।५।
सक्का सहेउं आसाइ कंटया, अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए, वइमए कण्णसरे स पुज्जे ।६।
मुहुत्त-दुक्खा उ हवन्ति कंटया, अओमया तेवि तओ सु-उद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि ।७।
समावयन्ता वयणाभिघाया, कण्णं गया दुम्मणि यं जणन्ति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जिइन्दिए जो सहइ स पुज्जे ।८।

अवरणावायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खओ पडणीयं च भासं।
ओहारिणि अप्पियकारिणि च, भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो।९

अलोलुए अक्कुहए अमाइ, अपिसुणे यावि अदीण वित्ती।
नो भावए नोविय भावियप्पा, अकोउल्ले य सया स पुज्जो।१०।

गुणेहि साहू अगुणेहिसाहू, गेण्हाहि साहु गुण मुंचसाहू।
वियाणिया अप्पग-मप्पएणं जो रागदोसेहि समो स पुज्जो।११।

तहेव डहरं व महल्लागं वा इत्थीं पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नोविय खिसएज्जा,थंभं च कोहं चचए अ पुज्जो।१२।

जे माणिया सययं माणयन्ति, जत्तेण कन्नं व निवेसयन्ति।
ते माणसे माणरिहे तवस्सी, जिइन्दिए सच्चरए स पुज्जो।१३।

तेसिं गुरुणं गुणसायराणं, सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं।
चरेमुणीपंच-रए तिगुत्तो, चउकसाया-वगए स पुज्जो।१४।

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी,जिणमय-निउणे अभिगम कुसले।
धुणिय रयमलं पुरेकडं, भासुर–मउलं गइं गय। त्तिबेमि।१५।

-●-

॥९॥ विनयसमाध्यध्ययने चतुर्थोद्देशः ॥४॥

सुयं मे आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहि चत्तारि विणय-समाहिट्ठाणा पन्नता कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणय-समाहि-ट्ठाणा पन्नत्ता ॥१॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणय समाहि-ट्ठाणा पन्नता, तं जहा-विणय-समाही, सुय समाही, तव समाही, आयारसमाही, विणए सुए तवे, य आयारे निच्च पंडिया, अभिरामयन्ति अप्पाणं, जे भवंति जिइन्दिया ॥१॥

चउव्विहा खलुविणय समाही भवइ, तं जहा-अणुसा-सिज्जन्तोसुस्सूसइ १, सम्मं सम्पडि वज्जइ २, वेयमाराहइ ३, न य भवइ अत्तसम्पग्गहिए ४, चउत्थं पयं भवइ, भवइ य एत्थ सिलोगो। पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए। न य माण-माएण मज्जइ, विणय-समाही आय-यट्ठिए ॥२॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तं जहा सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ १, एगग्ग चित्तो भविस्सा-मित्ति अज्झाइ यव्वं भवइ २, अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झा-

इयव्वं भवइ ३, ठिओ परं ठावइस्सामित्ति अज्झाइयव्वं भवइ ४, चउत्थं पयं भवइ, भवइ य एत्थ सिलोगो ।

नाणमेगग्ग-चित्तोय, ठिओयठावइ परं, सुयाणिय अहिज्जित्ता, रओ सुय-समाहिए ॥३॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ तं जहा नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा १, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा २, नो कित्ति-वण्ण-सद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ३, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ४, चउत्थं पयंभवइ भवइ य एत्थ सिलोगो ।

विविहगुण-तवो-रए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए । तवसा घुणइ पुराण-पावगं, जुत्तो सया तव–समाहिए ॥४॥

चउ व्विहा खलु आयार समाही भवइ । तं जहा नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा १ नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा २, नो कित्ति वण्ण-सद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा ३, नन्नत्थ आरहन्तेहिं हेउहिं आयार-महिट्ठिज्जा ४, चउत्थं पयं भवइ, भवइ य एत्थ सिलोगो ।

जिणवयण रए अतिन्तिणे पडिपुण्णायय-माययट्ठिए । आयार समाहि संवुडे, भवई यदंते भावसंधए ॥५॥

अभिगम चउरो समाहिओ, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउल-हिय-सुहावहं पुणो, कुव्वइ सो पय-खेममप्पणो ।६।
जाइमरणाओ मुच्चइ, इत्थत्थं च चयइ सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए, देवे वा अप्परए महड्ढिए ॥
त्तिबेमि ॥७॥

-★-

॥१०॥ सभिक्षुअध्ययनम् ॥

निक्खम्म माणाइ य बुद्ध वयणे,
निच्चं चित्त समाहिओ हविज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
वन्तं नो पडियायइ जे स भिक्खू ।१।
पुढवीं न खणे न खणावए,
सीओदगं न पिए न पियावए, अगणि ।
सत्थं जहा सुनिसियं,
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ।२।
अनिलेण न वीए न वीयावए,
हरियाणि न छिन्दे न छिन्दावए ।
बीयाणि सयाविवज्जयन्तो,
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ।३।

वहणं तस-थावराण होइ,
पुढवि-तण-कट्ठ-निस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे,
नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ।४।

रोइय नायपुत्त – वयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वयाइं,
पंचासव-संवरए जे स भिक्खू ।५।

चत्तारि वमे सया कसाए,
धुव जोगी हविज्ज बुद्धवयणे ।
अहणे निज्जाय – रुवरयए,
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ।६।

सम्मदिट्ठिसया अमुढे,
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।
तवसा धुणइ पुराण पावगं,
मण-वय-काय-सुसंवुडे जे स भिक्खू ।७।

तहेव असणं पाणगं वा,
विविहं खाइम-साइमं लभित्ता ।

हो ही अट्ठो सुए परे वा,

तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ।८।

तहेव असणं पाणगं वा,

विविहं खाइम–साईमं लभित्ता ।

छन्दिय साहम्मि आण भुंजे,

लोच्चा सज्झाय-रए य जे भिक्खू ।६।

न य वुग्गहियं कहं कहेज्जा,

न य कुप्पे निहुइन्दिए पसन्ते ।

संजमे धुवं जोगेण जुत्ते उवसन्ते

अविहेडए जे स भिक्खू ।१०।

जो सहइ हु गाम–कणटए,

अक्कोसपहार तज्जणाओ य ।

भय – भेरव – सद्द–सप्पहासे,

सम-सुह-दुक्ख-सहे य जे स भिक्खू ।११।

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे,

नो भीयए भय भेखाइं दिअस्स,

विविह गुण-तवो-रए य निच्चं,

न सरीरं चाभिकंखइ जे स भिक्खू ।१२।

असइं वोसट्ठ-चत्त-देहे, अकुट्ठे व हए व्लुसिए वा।
पुढविसमे मुणी हविज्जा, अनियाणे अकोउहल्ले जे स भिक्खू।१३।

अभिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइ-पहाओ अप्पयं।
विइतु जाइ-मरणं महब्भयं, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू।१४।

हत्थ-संजए पाय-संजए, वाय संजए संजइन्दिए।
अज्झप्प-रएसुसमाहियप्पा, सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू।१५।

उवहिम्मि अमुच्छिए अगिध्धे, अन्नाय उंछं पुल-निप्पुलाए।
कय-विक्कय-सन्निहिओ विरए, सव्व-संगावगए य जे स भिक्खू।१६

अलोल-भिक्खू न रसे सुगिध्धे, उंछं चरे जीविय नाभिकंखे।
इड्ढिं च सक्कारण-पूयणं च, चए ढियप्पा अणिहे जे स भिक्खू।१७।

न जाइमत्ते न य रुवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएणमत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाण-रए य जे स भिक्खू।१८

पवेयए अज्जपयं महामुणी, धम्मेठिओ ठावयइ परंपि।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, न याविहासं कुहए जे स भिक्खू१९

तं देहवासं असुइं असासयं, सयाचए निच्चहियट्ठियप्पा।
छिन्दित्तु जाइ-मरणस्स बन्धणं, उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं

त्तिबेमि।२०।

—●—

।१। श्री दशवैकालिके प्रथमा चूलिका ।

इह खलुभो पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेणं संजमे अरइ-समावन्न चित्तेणं ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेवहय रस्सि गयं कुस-पोयपडागाभूआइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहिअव्वाइं भवंति । तं जहा-हंभो दुस्समाए दुप्प-जीवी १, लहुसगा इत्तरिआ गिहीणं कामभोगा २, भुज्जे अ सायबहुला मणुस्सा ३, इमे अमे दुक्खे न चिरकालो वट्ठाइ भविस्सइ ४, ओमजण पुरक्कारे ५, वंतस्स य पडिआयणं ६, अहरगइ वासोवसंपया ७, दुल्लहे खलु भो गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे व संताणं ८, आयंके से वहाय होइ ६, संकप्पे से वहाय होइ १०, सोवक्केसे गिहवासे, निरुवक्केसे परिआए ११, बंधे गिहवासे, मुक्खे परिआए १२, सावज्जे गिहवासे, अणवज्जे परिआए १३, बहु साहारणागिहीणं काम भोगा १४, पत्ते अं पुन्नपावं १५, अणिच्चे खलु भो मणुआण जीविए कुसग्ग जलबिंदु चंचले १६, बहुं च खलु भो पावं कम्मं पगडं १७, पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माणं पुव्वि दुच्चिन्नाणं दुप्पडिक्कंताणं वेइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वाझो सइत्ता १८, अट्ठारसमं पयं भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो ।

जया य चयइ धम्मं, अणज्जे भोग कारणा।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झइ ।१।

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्वधम्म-परिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ।२।

जया अ वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ ।३।

जया अ पूइमोहोइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्ज-पब्भट्ठो, सपच्छा परितप्पइ ।४।

जया अमाणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सिट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ।५।

ज़या अ थेरओ होइ, समइक्कंत-जीव्वणो।
मच्छूव्व गलंगिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ।६।

जया अकु-कुडुंबस्स, कु-तत्तीहि विहम्मइ।
हत्थी व बंधणे बध्धो, स पच्छा परितप्पइ ।७।

पुत्त-दार-परीकिन्नो, मोहसंताण-संतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ।८।

अज्ज आहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ।
जइहं रमंतोपरिआए, सामन्ने जिण देसिए ।९।

देवलोग-समाणो अ, परिआओ महेसिणं ।
रयाणं अरयाणं च, महानरय-सारिसो ।१०।

अमरोवमं जाणिअ सुक्खमुत्तमं, रयाण-परिआइ तहारयाणं । निरओवमं जाणि अ दुखमुत्तमं, रमिज्ज तम्हा परिहाइ पंडिए ।११। धम्माउ भट्ठं सिरिओ एवेयं, जन्नग्गि विज्झाअ-मिव-प्पतेअं । हीलंति णं दुव्विहिअं कुसीला, दाढु-ड्ढिअं घोरविसं व नागं ।१२। इहेव धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामधिज्जं च पिहुज्जणंमि । चुअस्स धम्माउ अहम्मसे-विणो, संभिन्नवित्तस्स य हिट्ठओ गइ ।१३। भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेअसा, तहाविहं कट्टु असंजमं बहु । गइं च गच्छे अणहिज्झिअं दुहं, बोही असे नो सुलहा पुणो पुणो ।१४। इमस्स ता नेरइअस्स जं तुणो, दुहो वणीअस्स किले सव-त्तिणो । पविओवमं झिज्जइ सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ।१५। न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ, असा-सया भोगपिवास जंतुणो । न चे सरीरेण इमेणविस्सइ, अवि-स्सइ जीविअ-पज्जवेण मे ।१६। जस्सेवमप्पा उ हविज्ज-निच्छिओ, चइज्जदेहं न हुधम्मसासणं । तं तारिसं नो पइ-लंति इंदिआ, उवितवाया व सुदंसणं गिरिं ।१७। इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो, आयं उवायं विविहं विआणिआ ।

काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्ति गुत्तो जिणवयण-महिट्ठिज्जासि । त्तिबेमि ।१८।

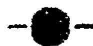


॥२॥ श्री दशवैकालिके द्वितीया चूलिका ॥

चूलिअं तु पवक्खामि, सुअं केवलि—भासिअं । जं सुणित्तु सुपुण्णामं, धम्मे उप्पजए मइ ॥१॥ अणुसोअ-पट्ठिअ-बहुजणंमि, पडिसोअ लद्ध-लक्खेणं । पडिसोअमेव अप्पा, दायव्वो होउ-कामेणं ॥२॥ अणुसोअ सुहो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआणं । अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥३॥ तम्हा आयार—परक्कमेणं, संवर—समाहि—बहुलेणं । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुंति साहूण दट्ठव्वा ।४। अनिएअ-वासो समुआण-चरिआ, अन्नाय उञ्छं पइरिक्कया अ । अप्पोवही कलह विवज्जणा अ, विहार चरिआ इसिणं पसत्था ॥५॥ आइन्न-ओमाण-विवज्जणा अ ओसन्न-दिट्ठाहड-भत्तपाणे । संसट्ठ-कप्पेण चरिज्ज भिक्खू, तज्जाय-संसट्ठ जइ जइज्जा ॥६॥ अमज्जमंसासि अमच्छरीआ, अभिक्खणं निव्विगइं गया अ । अभिक्खणं काउस्सग्ग-

कारी. सज्झायजोगे पयश्रो हविज्जा ॥७॥ न पडिन्नविज्जा सयणासणाइं, सिज्जं निसिज्जं तह भत्तपाणं । गामे कुले वा नगरे व देसे, ममत्तभावं न कहिं पि कुज्जा ॥८॥ गिहिणो वेत्र्यावडिश्रं न कुज्जा, अभिवायण-वंदण-पूत्रणं वा । असंकिलिट्ठेहिं समंवसिज्जा,मुणी चरित्तस्स जत्रो न हाणी ॥६॥ न या लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहिश्रं वा गुणश्रो समं वा । इक्को वि पावाइं विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥ संवच्छरं वा वि परं पमाणं, वीश्रं च वासं न तहिं वसिज्जा । सुत्तस्स मग्गेण चारिज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थोजह आणवेइ ॥११॥ जो पुव्वरत्ता वररत्तकाले, संपिक्खए अप्पग-मप्पगेणं । किं मे कडं च मे किच्चसेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥१२॥ किं मे परो पासइ किं च अप्पा, किं वाहं खलिश्रं न विवज्जयामि । इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो, अणागयं नो पडिबंध कुज्जा॥१३॥ जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया अदु माणसेणं । तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा, आइन्नश्रो खिप्पमिव खलीणं ॥१४॥ जस्सेरिसा जोग जिइंदिश्रस्स, धिइमश्रो सप्पुरिसस्स निच्चं । तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी सो जीअइ संजम जीविएणं ॥१५॥ अप्पा खलु सययं रक्खिअव्वो, सव्विंदिएहिं

सुसमाहिएहिं, अरक्खिओ जाइपहं उवेइ, सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ। त्तिबेमि। ॥१६॥



। साधु पंच प्रतिक्रमण सूत्र ।

॥ करेमिभन्ते ॥

करेमि भन्ते! सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥



॥ इच्छामिठामि ॥

इच्छामि ठामि काउसग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पे, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुविचित्तिओ, अणायारो अणिच्छियव्वो, असमण पाउग्गो, नाणे तह दंसणे चरित्ते, सुस्सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं महव्वयाणं, छण्हं जीवनिकायाणं, सत्तण्हं

पिण्डेसणाणं, अट्ठण्हं पवयणमाउणं, नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं, दसविहे समणधम्मे, समणाणं जोगाणं, जं खंडियं जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥



॥ दैवसिक–अतिचार ॥

ठाणे कमणे चंकमणे, आउत्ते अणाउत्ते, हरियकायसंघट्टे, वीयकायसंघट्टे, थावरकायसंघट्टे, छप्पइयासंघट्टे, देहरे उपासरे वाहिरभूमि जावतं आवतां पृथ्वीकाय अप्पकाय तेऊकाय वाऊकाय वनस्पतिकाय, बेइंद्री तेइन्द्री चौरिन्द्री पंचेन्द्री जीवप्रति संघट्ट परिताप उपद्रव उपजाव्यो, देहरे उपासरे जावतां आवतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, गुरुतणो वचन तहत्तिकरी सरदह्यो नहीं, मात्रो अविधे परिठव्यो, जो कोइ दिवस संबंधि पाप दोष लाग्यो होय ते सव्वे हूं मन वचन कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥



॥ रात्रिक अतिचार ॥

संथारा उवट्टणकी आउट्टणकी परिअट्टणकी पसारण की छप्पइया संघट्टणकी अचक्खू विसयकायकी, रात्रिसंबंधी पाप दोषलाग्यो, आहट्ट दोहट्ट चिन्तव्यो, आर्त्तरौद्र ध्यानध्यायो धर्म-

ध्यान शुक्लध्यानध्यायो नहीं, संथारो पाछो वालतां, मात्रो अविधे परिठवतां जो कोइ रात्रि संबंधी पाप दोष लाग्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायाये करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥



॥ श्रीश्रमण सूत्र ॥

णमो अरिहंताणं०, करेमि भन्ते सामाइयं०, चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं, चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहुलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा, चत्तारिसरणं पवज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणंपवज्जामि० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ० इच्छामि पडिक्कमिउं इरिआवहिआए०, इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए, निगामसिज्जाए, संथारा उव्वट्टणाए, परिअट्टणाए, आउंटण पसारणयाए, छप्पइयासंघट्टणाए, कुइए कक्कराइए, छीए, जंभाइए, आमोसे, ससरक्खामोसे, आउलमाउलाए, सोअणवत्तिआए, इत्थीविप्परिआसिआए, दिट्ठीविप्परिआसिआए, मणविप्परिआसिआए, पाणभोअणविप्परिआसिए, जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स

मिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि गोअरचरिआए, भिक्खायरिआए, उग्घाडकवाडउग्घाडणाए, साणावच्छादारा संघट्टणाए, मंडीपाहुडिआए, बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए, संकिए सहस्सागारे, अणेसणाए पाणेसणाए पाणभोअणाए, बीअभोअणाए, हरिअभोअणाए, पच्छाकम्मिआए, पुरेकम्मिआए, अदिट्ठहडाए दगसंसट्ठहडाए, रयसंसट्ठहडाए, पारिसाडणिआए, पारिट्ठावणिआए, ओहासणभिक्खाए, जंउग्गमेणं, उप्पायसेसणाए, अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं, परिभुत्तं वा, जं न परिठ्ठरिसुद्ध पडिग्गहिअं, परिभुत्तं वा जं न परिट्ठविअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए, उभओकलं मंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए, दुप्पडिलेहणाए, अप्पमज्जणाए, दुप्पमज्जणाए, अइक्कमे, वइक्कमे, अइआरे, अणायारे, जो मेदेवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि एगविहे असंजमे, पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं-रागबंधणेणं.दोसबंधणेणं, पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं-मणदंडेणं, वयदंडेणं, कायदंडेणं । पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं-मणगुत्तीए, वयगुत्तीए, कायगुत्तीए । पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं-मायासल्लेणं, निआणसल्लेणं मिच्छा दंसण सल्लेणं ।

पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं-इड्ढीगारवेणं, रसगारवेणं, साया-गारवेणं, पडि० तिहिं विराहणाहिं-नाणविराहणाए, दंसण-विराहणाए, चरित्तविराहणाए। पडि० चउहिं कसाएहिं-कोह-कसाएणं, माणकसाएणं, मायाकसाएणं, लोभ-कसाएणं। पडि० चउहिं सन्नाहिं-आहारसन्नाए, भयसन्नाए, मेहुणसन्नाए, परिग्गह सन्नाए। पडि० चउहिं विकहाहिं-इत्थिकहाए, भत्तकहाए, देसकहाए, रायकहाए। पडि० चउहिं झाणेहिं-अट्टेणंझाणेणं, रुद्देणं झाणेणं, धम्मेणंझाणेणं, सुक्केणंझाणेणं। पडि० पंचहिं किरिआहिं-काइआए, अहि-गरणिआए, पाउसिआए, परितावणिआए, पाणाइवाए, किरि-आए। पडि० पंचहिं कामगुणेहिं-सद्देणं, रुवेणं, रसेणं, गंधेणं फासेणं। पडि० पंचहिं महव्वएहिं-पाणाइवायाओ वेरमणं। पडि० पंचहिं समिइएहिं-इरिआसमिइए, भासासमिइए, एसणा-समिइए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिइए, उच्चारपासवण खेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणि आसमिइए। पडि०छहिंजीवनिका-एहिंपुढविकाएणं, आउकाएणं, तेउकाएणं, वाउकाएणं, वणस्स-इकाएणं, तसकाएणं। पडि० छहिं लेसाहिं किण्हलेसाए, नीललेसाए काउलेसाए, तेउलेसाए पम्हलेसाए, सुक्कलेसाए। पडि० सत्तहिं भयठाणेहिं, अट्ठहिं मयठाणेहिं, नवहिं बंभचेर

गुत्तिहिं, दसविहे समणधम्मे, इगारसहिं उवासगपडिमाहिं, बारसहिं भिक्खु-पडिमाहिं, तेरसहिं किरिआठाणेहिं, चउद्दसहिं भूअगामेहिं, पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं, सोलसहिं गाहासोलसएहिं, सत्तरसविहे असंजमे, अठारसविहे अबंभेए गुणवीसाए नायज्झयणेहिं, वीसाए असमाहिठाणेहिं, इक्कवीसाए सबलेहिं, बावीसाए परीसहेहिं, तेवीसाए सुअगडज्झयणेहिं, चउवीसाए देवेहिं, पणवीसाए भावणाहिं, छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं, उद्देसणकालेहिं,सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं,अट्ठावीसाए आयारपकप्पेहिं, एगुणतीसाए पावसुअपसंगेहिं, तीसाए मोहणीअठाणेहिं, इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं, बत्तीसाए जोग संगहेहिं, तित्तीसाए आसायणाए,अरिहंताणं आसायणाए, सिद्धाणं आसायणाए, आयरियाणं आसायणाए, उवज्झायाणं आसायणाए, साहूणं आसायणाए, साहूणीणं आसायणाए, सावयाणं आसायणाए, साविायाणं आसायणाएं, देवाणं आसायणाए, देवीणं आसायणाए, इहलोगस्स आसायणाए, परलोगस्स आसायणाए, केवलिणं आसायणाए, केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्स आसायणाए, सदेव-मणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए, सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आसायणाए, कालस्स आसायणाए, सुअस्स आसायणाए, सुअदेवयाए आसायणाए, वायणारिअस्स

आसायणाए, जंवाइद्ध, वच्चामेलिअं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं. घोसहीणं जोगहीणं. सटुठुदिन्नं दुट्ठु पडिच्छियं, अकालेकओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ. असज्झाइए सज्झाइअं, सज्झाइए न सज्झाइअं तस्स मिच्छा-मि दुक्कडं । नमो चउवीसाए तित्थयराणं, उसभाइ महावीर पज्जवसाणाणं इणमेव निग्गथं पावयणं सच्चं, अणुत्तरं, केव-लिअं, पडिपुन्नं, नेआउअं, संसुद्ध, सल्लगत्तणं, सिद्धिमग्गं. मुत्तिमग्गं, निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं, अवितहमविसंधिं सव्व-दुक्खप्पहीणमग्गं । इत्थं ठिआ जीवा सिज्झंति, वुज्झंति मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणमंतं करंति । तं धम्मं सद्दहामि, पत्तिआमि, रोएमि फासेमि, पालेमि अणुपालेमि, तं धम्मं सद्दहंतो, पतिअंतो, रोअंतो, फासंतो, पालंतो, अणु-पालंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नतस्स अब्भुट्ठिओमि आराह-णाए विरओमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि, संजमं उवसंपज्जामि । अवंभंपरिआणामि, वंभंउवसंपज्जामि । अकप्पं परिआणामि, कप्पं उवसंप्पज्जामि । अन्नाणं परिआणामि, नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि, किरिअं उवसं-पज्जामि । मिच्छत्तं परिआणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अवो-हिं परिआणामि, वोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गंपरिआणामि,

मग्गं उवसंपज्जामि । जं संभरामि, जं च न संभरामि, जं पडिक्कमामि, जं च न पडिक्कमामि । तस्ससव्वस्स देवसिश्रस्स अइश्रारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अनिश्राणो दिट्ठिसंपन्नो माया मोसं विवज्जिश्रो । अड्ढाइज्जेसुदीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा, पंचमहव्वयधारा अठारससहस्ससीलंगधारा अक्खश्रायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि । खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे, मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ (१) एव महं आलोइ अ, निंदिअ गरहिय दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामिजिणे चउव्वीसं । (२) ।



॥ पाक्षिक–अतिचार ॥

नाणंमि दंसणंमिश्र, चरणंमि तवंमि तहय विरयंमि । आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिश्रो (१) ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध होय आचार मांहि जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुश्रो होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ (१) ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार :—

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे। वंजण अत्थतदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो (२) ज्ञान-कालवेला मांहे पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं, अकाले पढ्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योगो-पधानहीन, अनेरा कन्हे पढ्यो, अनेरो गुरु कह्यो, देववंदण वांदणे पडिक्कमणेसज्झाय करतां पढतां गुणतां कूडो अक्षर काने मात्रे आगलो ओछो भण्यो गुण्यो, सूत्रार्थ तदुभय कूडा कह्यां, काजो अणऊधर्यो, डांडा अणपडिलेह्या, वस्ति अणशोध्यां अणपवेयां, असज्झाइ अणोज्झा कालवेला मांहि, श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धान्त पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो, अविधे योगोपधान कीधा कराव्या, ज्ञानोपगरण पाटी पोथी ठवणी कवली नोकरवली सांपडा सांपडी दस्तरी वही कामलिया ओलिआ प्रतेपग लाग्यो, थूंक लाग्यो, थूंके करी अक्षर भांज्यो, ज्ञानवंतप्रते प्रद्वेष मच्छर वह्यो, अंतराय अवज्ञा आशातना आशातना कीधी, कुणही प्रति तोतलो बोवडोदेखी हस्यो, वितक्यो, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पांचज्ञान तणी आशातना कीधी। ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष

दिवस मांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ (२) ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार-निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठीअ, उववूहथिरी करणे, वच्छल प्रभावणे अट्ठ (३) देवगुरु धर्म तणेविषे निस्संकपणो न कीधो, तथा एकान्त निच्चय धर्यो नहीं, धर्म संबंधिआफलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु साध्वी तणी निंदा जुगुप्सा कीधी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी संघमाहीं गुणवंत तणी अनुपबृंहणा, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति, निपजावी। तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, भक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधे विणास्यो, विणसंतो उवेख्यो, छतीशक्तिए सारसंभाल न कीधी। ठवणायरिय हाथथकी पाड्यो, पडिलेहवो विसार्यो, जिनभुवनतणी चौरासी आशातना, गुरुप्रति तेत्रीस आशातना कीधी। दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस ॥ (३) ॥

चारित्राचार आठ अतिचार-पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो (४)

इरिया-समिति, भासासमिति, एषणासमिति, आदान भंडमत्तनिक्खेवणा समिति, उच्चारपासवण खेलजल्लसिंघाण पारिट्ठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचनमाता, रूडी परे पाली नहीं, साधुतणे धर्म सदैव, श्रावक तणे धर्म सामायिक पोसह लीधे. जे कांइ खंडन विराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ (४) ॥

विशेषतश्चारित्राचारे तपोधन तणे धर्म-व्रय-छक्कं, कायछक्कं, अकप्पोगिहिभायणं । पलिअंक निसिज्जाए, सिणाणं सोभवज्जणं (५)

व्रतषट् के पहिले महाव्रते, प्राणातिपात-सूक्ष्म बादर त्रस थावर जीवतणी विराधना हुई । बीजेमहाव्रते क्रोध लोभ भय हास्य लगे जूठो बोल्यो । तीजे अदत्तादान विरमण महाव्रते-सामिजीवादत्तं, तित्थयरअदत्तं तहेव य गुरुहिं एवमदत्तं चउहा, पण्णत्तं वीयराएहिं (१)

स्वामि अदत्त, जीवअदत्त, तीर्थंकर अदत्त, गुरु-अदत्त, ए चतुर्विध अदत्तादान मांहि जे कांइ अदत्त परिभो-

गयो चोथे महाव्रते-वसहीक हनिसिज्जादिय, कुंड्डितर पुव्व-कीलिए पणिए, अइमायाहार विभूसणाइं, नव बंभचेर गुत्तिओ (१)

ए नव वाड सुधी पाली नहीं, सुहणे स्वप्नान्तरे दृष्टि विपर्यास हुओ। पंचमे महाव्रते धर्मोपगरण ने विषे, इच्छा-मूर्च्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिको उपगरण वावर्यो, पर्व तिथि पडिलेहवो विसार्यो, छट्ठे रात्री भोजन विरमणव्रते-असुरो भात पाणी कीधो, छारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्राबंधे तक्रादिकनो छांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेप तल ओषधा-दिक तणोसंनिधि रह्यो, अतिमात्रायें आहार लीधो, ए छए व्रतविषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ (६) ॥

कायपट्ट के, गामत्तणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या, माटी मीठुं खडी धावडी अरणेटो पाषाणतणी चातली उपर पग आव्यो, अप्पकाय वावारी फ़ुसणा हुआ,वहोरवा गया ऊलखो हान्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणी तणा छांटा लाग्या, तेउकाय वीज दीवातणी उजेही हुई, वाउकाय उघाडे मुखे बोल्या, महावाय वाजतां कपडा कांबली तणा छेडा साचव्या नहीं, फ़ूंक दीधी, वनस्पतिकाय नीलफूल सेवाल थड मूलफूल फल वृक्ष शाखा प्रशाखा तणा संघट्ट परंपर निरंतर हुआ,

त्रसकाय बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पंचेंद्री काग बग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां, बालक बीहाव्यां। षट्काय विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार० ॥ (७) ॥

अकल्पनीय सज्झा, वस्त्रपात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्ञातरतणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे वहोर्यो, धात्रीदोष, त्रसबीज संसक्त पूर्वकर्म्म पश्चात्कर्म्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं, गृहस्थतणो भाजनभांज्यो, फोड्यो, वली पाछो आप्यो नहीं, सूतां संथारिया उत्तरपट्टा टलतो अधिको उपगरण वावर्यो, देशतः स्नान मुखे भीनो हाथ लगाड्यो, सर्वतः स्नानतणी वांछा कीधी, शरीर तणो मल फेड्यो, केश रोम नख समार्या, अनेरी कांइ राढी विभूषा कीधी। अकल्पनीय पिंडादिविषइओ अनेरो जे कोई अतिचार० ॥ ८ ॥

आवस्सय सज्झाए, पडिलेहण झाणभिक्ख अभत्तट्ठे, आगमणे निगमणे, ठाणेनिसिअणे तुअट्टे (१)

आवश्यक उभयकाल व्याक्षिप्त चित्तपणे पडिक्कमणो कीधो, पडिक्कमणामांहि ऊंघ आवी, बेठां पडिक्कमणु कीधु, दिवसप्रते चार वार सज्झाय, सात वार चैत्यवंदन न कीधा।

पडिलेहणा आधी पाछी भणावी, अस्तो व्यस्त कीधी, आर्त्त रौद्रध्यानध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं, गोचरी गयां बेतालीश दोष उपजता चितव्या नहीं, छती शक्तिए पर्व तिथीए उपवासादिक तप कीधो नहीं, उपासरा देहरामांहि पेसतां निस्सिही, नीसरतां आवस्सही केहवीं विसारी, इच्छा-मिच्छादिक दशविध चक्रवाल समाचारी साचवी नहीं, गुरु-तणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो नहीं, अपराध आव्यां मिच्छामि दुक्कडं दीधा नहीं, स्थानके रहेतां हरियकाय बीय-काय कीडी तणां नगरां सोध्यां नहीं, ओघो मुहपत्ति चोलपट्टो संघट्यो, स्त्री (पुरुष) तीर्यंचतणा संघट्ट अनंतर परंपर हुआ, वडाप्रति पसाओ करी लघुप्रति इच्छकार इत्यादिक विनय सोचव्यो नहीं। साधु समाचारी वि० अ० पाद० सु० वा० जाणतां, अजा० हुओ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥६॥



॥ पाक्षिक सूत्र ॥

तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धे अ तित्थसिद्धे अ।
सिद्धे अ जिणे अ रिसी, महारिसी नाणं च वंदामि (१)

जे इमं गुण रयण सायर, मविराहिऊण तिण्ण-संसारा । ते मंगलं करित्ता, अहमवि आराहणाभिमुहो (२)

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ, खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवयामद्दवं चेव (३)

लोगम्मि संजया जं करिंति, परमरिसि देसियमु-आरं । अहमवि उवट्ठिओ तं, महव्वय उच्चारणं काऊं (४)

से किं तं महव्वय उच्चारणा ? महव्वय उच्चारणा पंचविहा पण्णत्ता, राइ भोअण वेरमण छट्ठा । तं जहा-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं (१)

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं (२)
सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं (३)
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं (४)
सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं (५)
सव्वाओ राई भोअणाओ वेरमणं (६)

तत्थ खलु पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेर-मणं, सव्वं भंते । पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा, बाय-रं वा, तसं वा थावरं वा, नेवसयं पाणेअइवइज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि, अन्ने न समणुजाणामि

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। से पाणाइवाए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ; भावओ. दव्वओणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु, खित्तओणं पाणाइवाए सव्वलोए, कालओणं पाणाइवाए दिआ वा राओ वा, भावओणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा, जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स, अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठिअस, विणयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरण्णसोवण्णिअस्स, उवसमप्पभवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स, भिक्खावित्तिअस्स, कुक्खिसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपक्खालिअस्स, चत्तदोसस्स; गुणग्गाहिअस्स, निव्विआरस्स, निव्वित्तिलक्खणस्स, पंच महव्वयजुत्तस्स, असंनिहिसंचयस्स, अविसंवाइअस्स, संसारपारगामिअस्स, निव्वाणगमण पज्जवसाणफलस्स, पुव्विं अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहिआए, अणभिगमेणं अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोस पडिबद्धआए, बालयाए, मोहयाए, मंदयाए, किड्डयाए, तिगारव गुरुआए, चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिअवसट्टेणं पडिपुण भारिआए, सायासुक्खमणु पालयंतेणं, इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग-

मंदयाए, किड्डयाए, तिगारवगुरुआए चउक्कसाओवगएणं, पंचिंदिअव सट्टेणं, पडिपुण्णभारियाए, सायासुक्खमणुपालयतेणं, इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, मुसावाओ भासिओ वा, भासाविओ वा, भासिज्जंतो वा परेहि समणुन्नाओ तं निंदामि, गरिहामि, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईअं निंदामि, पडुपन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायंजावज्जीवाए, अणिस्सिओ हं, नेवसयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा, मुसंवयं ते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा-अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहूसक्खिअं, देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा; एस खलु मुसावायस्स, वेरमणे हिए, सुहे, खमे, निस्सेसिए, आणुगामिए, पारगामिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूआणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अदुक्खणयाए, असोयणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीडणयाए, अपरिआवणयाए, अणुद्दवणयाए, महत्थे महागुणे महाणुभावे, महापुरिसाणुचिन्ने, परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, तिकट्टु, उवसंपज्जि-

चाणंविहरामि, दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ (२) ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा, नगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणु वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणु जाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। से अदिन्नादाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, खित्तओणं अदिन्नादाणे गामे वा, नगरे वा, अरण्णे वा, कालओणं अदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा, भावओणं अदिन्नादाणे रागेण वा दोसेण वा, जं पिय मए इमस्स, धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठिअस्स, विणयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरण्ण सोवण्णियस्स, उवसमप्पभवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स, अपयमाणस्स, भिक्खावित्तियस्स, कुक्खिसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपक्खालियस्स, चत्तदोसस्स, गुणग्गाहियस्स, निव्वियारस्स, निव्विनिलक्खणस्स, पंच-

महव्वयजुत्तस्स, असंनिहि संचयस्स, अविसंवाइयस्स, संसार-पारगामिअस्स, निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स, पुव्वि अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणभिगमेणं, अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोस पडिबद्धआए, बालआए, मोहयाए, मंदयाए, किड्डयाए, तिगारव गुरुआए, चउक्कसाओ वगएणं, पंचिंदिअवसट्टेणं, पडिपुण्णभारियाए, सायासुक्ख-मणुपालयंतेणं, इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, अदि-न्नादाणंगहिअं वा, गाहाविअं वा, घिप्पंतं वा परेहिं समणु-न्नाओ, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्च-क्खामि। सव्वं अदिन्नादाणं, जावज्जीवाए, अणिस्सिओ हं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं-जहा, अरि-हंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं साहूसक्खिअं, देवसक्खिअं, अप्प-सक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय पच्चक्खाय-पावकम्मे, दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमणे वा, एस खलु अदिन्ना-दाणस्स वेरमणे हिए, सुहे, खमे, निस्सेसिए आणुगामिए पारगा-मिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं

सत्ताणं, अदुक्खणयाए, असोअणयाए अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीडणयाए, अपरिआवणयाए, अणुद्दवणयाए, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महापुरिसाणुचिएणे, परमरिसिदेसिए, पसत्थे तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, तिकट्टु, उवसंपज्जित्ता णं विहरामि, तच्चे भंत्ते, महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ (३) ॥

अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वंभंते! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा, माणुस्सं वा, तिरिक्ख जोणिअं वा, नेवसयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि। से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा, दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ दव्वओणं मेहुणे रुवेसु वा रुवसहगएसुवा, खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरियलोए वा, कालओ णं मेहुणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं मेहुणे रागेण वा दोसेण वा, जं पिय मए इमस्स धमस्स केवलिपरणत्तस्स,

अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठिअस्स विनयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरगणसोवणिअस्स, उवसमप्प भवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स, अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स, कुक्खिसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपक्खालिअस्स, चत्तदोसस्स, गुणग्गाहिअस्स, निव्विआरस्स, निव्वित्तिलक्खणस्स, पंचमहव्वय जुत्तस्स, असंनिहि संचयस्स, अविसंवाइअस्स, संसारपारगामिअस्स, निव्वाणगमण पज्जवसाणफलस्स, पुव्विं अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणभिगमेणं, अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोस पडिवद्धायाए, वालायाए, मोहयाए मंदयाए, किड्डयाए, तिगारवगुरुआए, चउक्कसाओवगएणं, पंचिदिअवसट्टेणं, पडिपुरणं, भारियाए, साया सुक्खमणु पालयंतेणं, इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, मेहुणं सेविअं वा, सेवाविअं वा, सेविज्जंतं वा परेहि समणुन्नाओ तं निंदामि, गरिहामि, तिविहं तिविहेण, मणेणं, वायाए काएणं, अईयं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं जावज्जीवाए, अणिस्सिओहं, नेवसयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा-अरिहंत सक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं देवसक्खिअं, अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खु

वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे।
दिआ वा राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जाग-
रमाणे वा, एस खलु मेहुणस्स वेरमणे, हिए सुहे खमे, निस्से-
सिए, आणुगामिए, पारगामिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं
भूआणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अदुक्खणयाए,
असोअणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीडणयाए,
अपरिआवणयाए, अणुद्दवणयाए, महत्थे महागुणे, महाणुभावे
महापुरिसाणुचिन्ने, परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए
कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए,
तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। चउत्थे भंते! महव्वए
उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं। (४)।

अहावरे पंचमे भंते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं,
सव्वं भंते। परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं
वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेवसयं परिग्गहं परि-
गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परि-
गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए, तिविहं तिवि-
हेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिकमामि, निंदामि गरि-
हामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं

जहा दव्वओखित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु, दव्वेसु, खित्तओणं परिग्गहे, सव्वलोए, कालओणं परिग्गहे दिआ वा राओ वा, भावओणं परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा, रागेण वा दोसेण वा, जं पिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स, अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठिअस्स, विणयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरण्णसोवण्णिअस्स, उवसमप्पभवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स, अपयमाणस्स, भिक्खावित्तिअस्स, कुक्खिसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपक्खालिअस्स, चत्तदोसस्स, गुणग्गाहिअस्स, निव्विआरस्स, निव्वित्तिलक्खणस्स, पंचमहव्वयजुत्तस्स, असंनिहिसंचियस्स, अविसंवाइअस्स, संसारपारगामिअस्स, निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स, पुव्विं अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणभिगमेणं, अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोस पडिबद्धायाए, बालयाए, मोहयाए, मंदयाए किड्डयाए, तिगारवगुरुआए, चउक्कसाओवगएणं, पंचिंदिअवसट्टेणं, पडिपुण्णं भारियाए, सायासुक्खमणुपालयंतेणं, इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, परिग्गहो गहिओ वा, गाहाविओ वा। घिप्पंतो वा, परेहिं समणुन्नाओ। तं निंदामि गरिहामि, तिविहं तिवि-

हेणं मणेणं वायाए काएणं, अईयं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए, अणिस्सि ओहं, नेवसयं परिग्गुहं परिगिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा-अरिहंतसक्खिअं, सिद्धसक्खिअं, साहुसक्खिअं, देवसक्खिअं, अप्पसक्खिअं एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय पच्चक्खामि पावकम्मे। दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे, हिए सुए खुमेनिस्सेसिए, अणुगामिए पारगामिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूआणं, सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं, अदुक्खणयाए, असोअणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपीडणयाए, अपरिआवणयाए, अणुद्दवणयाए, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे। महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, वोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए तिकट्टु। उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ (५) ॥

अहावरे छट्ठे भंते! वए राई भो अणाओ वेरमणं

सव्वं भंते ! राइभोअणं पच्चक्खामि से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा. नेवसयं राईभोअणं भुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राईभोअणं भुंजाविज्जा राईभोअणं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से राईभोअणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा । दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं राईभोअणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा, खित्तओणं राईभोअणे समयखित्ते, कालओणं राईभोअणे दिआ वा राओ वा, भावओणं राईभोअणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा, रागेण वा दोसेण वा, जं पिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स, अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठिअस्स, विणयमूलस्स, खंतिप्पहाणस्स, अहिरण्णसोवण्णि अस्स, उवसमप्पभवस्स, नवबंभचेरगुत्तस्स, अपयमाणस्स, भिक्खा-वित्तिअस्स, कुक्खिसंबलस्स, निरग्गिसरणस्स, संपक्खालि-अस्स, चत्तदोसस्स, गुणग्गाहिअस्स, निव्विआरस्स, निव्वि-त्तिलक्खणस्स, पंचमहव्वयजुत्तस्स, असंनिहिसंचयस्स, अवि-

मंवाइअस्स, संसारपारगामि अस्स, निव्वाण गमणपज्जव-साणफलस्स, पुव्वि अन्नाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणभिगमेणं अभिगमेण वा, पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए, बालयाए, मोहयाए, मंदयाए, किड्डयाए, तिगारवगुरुआए चउक्कसाओवगएणं, पंचिंदिअवसट्टेणं, पडिपुण्णभारिआए, सायासुक्खमणुपालयंतेणं, इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गहणेसु वा राइभोअणं भुत्तं वा, भुंजाविअं वा, भुञ्जंतं वा परेहिं समणुन्नाओ, तं निंदामि, गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईअंनिंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि, सव्वं राईभोअणं जावज्जीवाए, अणिस्सिओहं, नेवसयं राइं भुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा-अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहूसक्खिअं, देवसक्खिअं, अप्पसक्खिअं, एवं हवइभिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु, राइ भोअणस्स वेरमणे, हिए सुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए, पारगामिए, सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिसत्ताणं अदुक्खणयाए, असोअणयाए, अजूरणयाए,

अतिप्पणयाए, अपीडणयाए, अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए, महत्थे, महागुणे, महाणुभावे, महापुरिसाणुचिन्ने. परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, तिकट्टु, उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । छट्टे भंते । वए अब्भुट्ठिओमि सव्वाओ राइभोयणा ओवेरमणं ॥ (६) ॥ इच्चेइआइं पंचमहव्वयाइं राईभोअण वेरमण छट्ठाइं अत्तहिअट्ठाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥(१)॥

अप्पसत्था य जे जोगा, परिणा मा य दारुणा, पाणाइवायस्स वेरमणे, एसवुत्ते अइक्कमे (१)

तिव्वरागा य जा भासा, तिव्वदोसा तहेव य । मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे (२)

उग्गहं च अजाइत्ता, अविदिन्नेअ उग्गहे । अदिन्नादाणस्स वेरमणे एस वुत्ते अइक्कमे (३)

सद्दा रूवा रसा गंधा, फासाणं पविआरणे । मेहुणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे (४)

इच्छा मुच्छा य गेही अ, कंखा लोभे अ दारुणे, परिग्गहस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे (५)

अइमत्ते अ आहारे, सूरेक्खित्तम्मि संकिए। राईभोयणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे (६)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ताठिओ समणधम्मे" पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाओ (७)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। बीयं वयमणुरक्खे, विरयामो मुसावायाओ (८)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ताठिआ समणधम्मे। तइयं वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नादाणाओ (९)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। चउत्थं वयमणुरक्खे, विरयामो मेहुणाओ (१०)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। पंचमंवयमणु रक्खे, विरयामो परिग्गहाओ (११)

दंसण-नाण-चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। छट्ठं वयमणुरक्खे, विरयामो राई भोयणाओ (१२)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाओ (१३)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। बीअं वयमणुरक्खे। विरयामो मुसावायाओ (१४)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे।

तइयं वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नादाणाओ (१५)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे।
चउत्थं वयमणुरक्खे। विरयामो मेहुणाओ (१६)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो-गुत्तो ठिओ समणधम्मे।
पंचमं वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ (१७)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे।
छट्ठं वयमणुरक्खे, विरयामो राईभोयणाओ (१८)

आलय-विहार-समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे।
तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (१९)

सावज्ज-जोगमेगं, मिच्छत्तं एगमेव अन्नाणं। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२०)

अणवज्ज जोगमेगं, सम्मत्तं एगमेव नाणं तु। उवसंपन्नो जुत्तो। रक्खामि महव्वए पंच (२१)

दो चेव राग दोसे, दुण्णि अज्झाणाइं अट्टरुद्दाइं। परि-वज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२२)

दुविहं चरित्त धम्मं, दुन्निअज्झाणाइं धम्म-सुक्काइं। उव-संपन्नजुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२३)

किण्हा नीला काउ, तिन्निअलेसाओ अप्पसत्थाओ। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२४)

तेउ पम्हा सुक्का, तिन्निअलेसाओ सुप्पसत्थाओ । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२५)

मणसा मणसच्चविऊ । वायासच्चेण करण सच्चेण, तिविहेण वि सच्चविउ, रक्खामि महव्वए पंच (२६)

चत्तारि अदुहसिज्झा,चउरो सन्ना तहा कसाया य । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२७)

चत्तारि अ सुहसिज्झा चउव्विहं संवरं समाहिआ । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (२८)

पंचेवय कामगुणे, पंचेवय अरहवे महादोसे । परिवज्जंतो गुत्तो; रक्खामि महव्वए पंच (२९)

पंचिदिअसंवरणं तहेव पंचविहमेव सज्झायं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (३०)

छज्जीवनिकायवहं, छप्पि अ भासाओ अप्पसत्थाओ । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (३१)

छव्विहमब्भिंतरयं, बुज्झं पि अ छव्विहं तवोकम्मं । उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३२)

सत्त यभयट्ठाणाइं, सत्तविहं चेव नाणविभंगं । परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३३)

पिंडेसण-पाणेसण, उग्गह सत्ति कया महज्झयणा । उव-

संपन्नोजुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३४)

अट्ठय मयट्ठाणाइं, अट्ठय कम्माइं तेसि बंधंच। परिव-
ज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३५)

अट्ठय पवयणमाया, दिट्ठा अट्ठविह निट्ठिअट्ठेहिं-
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (३६)

नवपावनिआणाइं, संसारत्थाय नवविहा जीवा। परिव-
ज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३७)

नवबंभचेर गुत्तो दुनवविहं बंभचेर परिसुद्धा उवसंपन्नो
जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (३८)

उवघायं चदसविहं, असंवरं तह य संकिलेसंच। परि-
वज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (३९)

सच्चसमाहिट्ठाणे, दस चेव दसओ समणधम्मं च।
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच (४०)

आसायणं च सव्वं, तिगुणं इक्कारसं विवज्जंतो। परि-
वज्जंतो, गुत्तो रक्खामि महव्वए पंच (४१)

एवं तिदंडविरओ, तिगरण सुद्धो तिसल्ल निसल्लो।
तिविहेण पडिक्कंतो, रक्खामि महव्वए पंच (४२) (२)

इच्चे इअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइ-
बलं ववसाओ, साहणट्ठो पावनिवारणं, निकायणा भाववि-

सोहि पडीग्गहरणं, निजूहणारोहणा गुणाणं, संवरजोगो, पसत्थज्झाणो वउत्तया जुत्तया य, नाणे-परमट्ठो उत्तमट्ठो य, एस खलु तित्थ करेहिं, रइरागदोसमहणेहिं, देसिओ पवयणस्स सारो, छज्जीवनी काय संजमं, उवएसिअं, तेलक्कसक्कअं ठाणं, अब्भुवगया नमोत्थु ते, सिद्ध, बुद्ध, मुत्त, निरय, निसंग, माणमूरण, गुणरयण सायर, मणंतमप्पमेअं, नमोत्थु ते, महइमहावीर वद्धमाणसामिस्स, नमोत्थु ते अरहओ, नमोत्थु ते भगवओ, तिकट्टु, एसा खलु महव्वय उच्चारण कया (२)

इच्छामो सुत्तकित्तणं काउं, नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइयं, छव्विहमावस्सयं, भगवंतं तं जहा-सामाइअं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउसग्गो, पच्चक्खाणं. सव्वें सिपि एअम्मि छव्विहे आवस्सए भगवंते स सुत्ते स अत्थे. सगंथे, सनिज्जुत्तीए, ससंगहणिए, जे गुणा वा, भावा वा, अरिहंतेहि, भगवंतेहि, पण्णत्तावा, परुविआ वा, ते भावे-सद्दहामो, पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहि, पत्तिअंतेहि, रोअंतेहि, फासंतेहि, पालंतेहि, अणुपालंतेहि अंतोपक्खस्स जं वाइअं, पढिअं, परिअट्टिअं, पुच्छिअं, अणुपेहिअं, अणुपालिअं तं दुक्खक्ख-

याए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, तिकट्टु, उवसंज्जित्ताणं विहरामि। अंतोपक्खस्स, जं न वाइअं, न पढिअं, न परिअट्टिअं न पुच्छिअं, नाणुपेहिअं, नाणुपालिअं, संते बले, संते वीरीए, संतेपुरिसक्कारपडिक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो. निंदामो, गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए अब्भुट्ठेमो. अहारिहं तवो कम्मं, पायच्छित्त पडिवज्जामो. तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥(४)॥

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं अंगबाहिरं उक्कालिअं भगवंतं, तं जहा दसवेआलिअं, कप्पिआ कप्पिअं, चुल्लकप्पसुअं, महाकप्पसुअं उवाइअं रायप्पसेणिअं जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापन्नवणा, नंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थुओ, तंदुलविआलिअं चंदाविज्झिअं, पमायप्पमायं, पोरिसिमंडलं, मंडलप्पवेसो, गणिविज्जा, विज्जाचारणविणिच्छओ झाणविभत्ती, आणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोहि, संलेहणासुअं, वीयरायसुअं. विहारकप्पो. चरणविसोहि, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं सव्वेसिं पि एअम्मि, अंगबाहिरे उक्कालिए, भगवंते, ससुत्ते, सअत्थे, सगंथे, सनिज्जुत्तिए, ससंगहणिए, जे गुणा वा भावा वा, अरिहंतेहिं, भगवंतेहिं पण्णत्ता वा परुविआ वा, ते भावे सद्दहामो, पत्तिआमो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो, ते

भावे सद्दहंतेहिं, पत्तिअंतेहिं, रोअंतेहिं, फासंतेहिं; पालंतेहिं, अणुपालंतेहिं, अंतोपक्खस्स, जं वाइअं, पढिअं, परिअट्टिअं, पुच्छिअं, अणुपेहिअं, अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए, तिकट्टु, उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपक्खस्स, जं न वाइअं न पढिअं, न परिअट्टिअं, न पुच्छिअं, नाणुपेहिअं, नाणुपालिअं, संते-बले, संतेवीरिए, संतेपुरिसक्कार परिक्कमे, तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो, गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए अब्भुट्ठेमो, अहारिहं तवोकम्मं, पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥(५)॥

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं अंग बाहिरं कालिअं भगवंतं, तं जहा-उत्तरज्झयणाइं, दसाकप्पो, ववहारो, इसिभासिआइं, निसीहं, महानिसीहं, जंबुदीवपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती, महल्लियाविमाणपविभत्ती, अंगचूलिआए, वग्गचूलिआए विवाहचूलिआए अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेलंधरोववाए, वेसमणोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरिआवलिआणं, निरयावलिआणं, कप्पिआणं, कप्पवडिंसिआणं, पुप्फिआणं, पुप्फचूलिआणं, वण्ही-

याणं, वण्हीदसाणं, आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, चारणसुमिणभावणाणं, महासुमिणभावणाणं, तेअग्गिनिसग्गाणं, सव्वेहिं पि एअंमि अंगबाहिरे कालिए भगवंते, ससुत्ते, सअत्थे, सगंथे, सणिज्जुत्तिए, ससंगहणिए, जे गुणा वा, भावा वा, अरिहंतेहिं, भगवंतेहिं पण्णत्ता वा, परुवीआ वा, ते भावे सद्दहामो, पत्तिआमो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं, पत्तिअंतेहिं, रोयंतेहिं, फासंतेहिं, पालंतेहिं, अणुपालंतेहिं, अंतोपक्खस्स, जं वाइअं, पढिअं, परिअट्टिअं, पुच्छिअं, अणुपेहिअं, अणुपालिअं, तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए तिकट्टु, उवसंपज्जित्ता णं विहरामि अंतोपक्खस्स जं न वाइअं, न पढिअं, न परिअट्टिअं, न पुच्छिअं, नाणुपेहिअं, नाणुपालिअं, संते बले, संते वीरिए, संतेपुरिसक्कार परिक्कमे, तस्स आलोयमो, पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवो कम्मं। पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥(६)॥

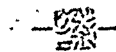
नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो, सुअगडो, ठाणं, समवाओ,

विवाहपन्नत्ती, नायाधम्म कहाओ, उवासगदसाओ, अंतगड-दसाओ, अणुत्तरोववाइदसाओ, पण्हावागरणं विवागसुअं, दिट्ठिवाओ; सव्वेहि पि एअंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते, ससुत्ते, सअत्थे, सगंथे सणिज्जुत्तिए, ससंगहणिए, जे गुणा वा, भावा वा, अरिहंतेहि, भगवंतेहि, पन्नत्ता वा, परुविआ वा, ते भावे सद्दहामो, पत्तिआमो, रोएमो, फासेमो, पालेमो, अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहि, पत्तिअंतेहि, रोयंतेहि, फासंतेहि, पालंतेहि, अणुपालंतेहि, अंतोपक्खस्स, जं वाइअं, पढिअं, परिअट्टिअं, पुच्छिअं, अणुपेहिअं, अणुपालिअं, तं दुक्खक्खयाए, कम्मक्खयाए, मुक्खयाए, बोहिलाभाए, संसारुत्तारणाए तिकट्टु, उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। अंतोपक्खस्स जं न वाइअं, न पढिअं, न परिअट्टिअं, न पुच्छिअं, नाणुपेहिअं, नाणुपालिअं संतेबले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरिक्कमे, तस्स आलोएमो, पडिक्कमामो, निंदामो, गरिहामो, विउट्टेमो, विसोहेमो, अकरणयाए, अब्भुट्ठेमो, अहारिहं तवोकम्मं, पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥(७)॥

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं, गणिपिडगं, भगवंतं तं जहा-सम्मं काएणं, फासंति, पालंति,

पूरंति, तीरंति, किट्टंति, सम्मं आणाए आराहंति, अहं च नाराहेमि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥(८)॥

सुअदेवआ भगवई, नाणावरणी कम्म संघायं ।
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥ (१)



॥ पाक्षिक खामणा ॥

इच्छामि खमासमणोपिअं च मे जं भे, हट्ठाणं, तुट्ठाणं, अप्पायंकाणं, अभग्गजोगाणं, सुसीलाणं, सुव्वयाणं, सायरिय उवज्झायाणं, नाणेणं, दंसणेणं, चरित्तेणं तवसा, अप्पाणं, भावेमाणाणं, बहुसुभेण भे दिवसो पक्खो (चाउमासिओ, संवच्छरिओ), वइक्कंतो, अन्नो य भे कल्लाणेणं, पज्जुवट्ठिओ, सिरसा, मणसा मत्थएण वंदामि (१)

॥ गुरुवचनं—तुब्भेहिं सम्मं ॥

इच्छामि खमासमणो पुव्वि, चेइआइं, वंदित्ता, नमंसित्ता, तुब्भण्हं पायमूले, विहरमाणेणं, जे केइ बहुदेवसिआ, साहुणो दिट्ठासमाणा वा, वसमाणा वा, गामाणुगामं, दुइज्जमाणा वा, राइणिआ संपुच्छंति, उमराइणिआ वंदंति, अज्जया वंदंति अज्जियाओ वंदंति सावया वंदंति सावियाओ वंदंति,

अहं पि निस्सल्लो, निक्कसाओ त्तिकट्टु, सिरसा, मणसा मत्थएण वंदामि (२)

॥ गुरुवयणं–अहमवि वंदामि चेइआइं ॥

इच्छामि खमासमणो, अब्भुट्ठिओहं, तुब्भएहं, संतिअं, अहाकप्पं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं वा, रयहरणं वा, अक्खरं वा, पयं वा, गाहं वा, सिलोगं वा, सिलोगद्धं वा, अट्ठं वा, हेउं वा, पसिणं वा, वागरणं वा, तुब्भेहिं, यत्तेण दिन्नंमए अविणएण, पडिच्छिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (३)

॥ गुरुवचनं–आयरिय संतिअं ॥

इच्छामि खमासमणो, अहमपुव्वाइं, कयाइं च मे किय-कम्माइं, आयारमंतरे, विणयमंतरे सेविओ, सेवाविओ संग-हिओ, उवग्गहिओ, सारिओ, वारिओ, चोइओ पडिचोइओ, चिअत्तामे पडिचोयणा, अब्भुट्ठिओ हं, तुब्भएहं तवतेय-सिरीए, इमाओ चाउरंतसंसारकंताराओ, साहट्टु, नित्थ-रिस्सामि तिकट्टु सिरसा, मणसा मन्थएण वंदामि (४)

गुरु वचनं–नित्थारग पारगाहोह

॥ जयतिहुअण स्तोत्रम् ॥

जयतिहुअण वर कप्प रुक्ख। जय जिण धन्नंतरि।

जयतिहुअण कल्लाणकोस । दुरिअक्करि केसरि ।
तिहुअण जण अविलंधियाण, भुवणत्तय सामिअ ।
णसु सुहाइ जिनेस पास, थंभणयपुरहि अ ॥१॥
तइ समरंत लहंति झत्तिवर पुत्तकलत्तई ।
धण्णसुवण्ण हिरण्ण पुण्ण जणभुजइरज्जइ ।
पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख तुह पास, पसाइण ।
इयतिहुअण वरकप्प रुक्ख, सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण ।
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिअ सूलिण ।
तुह जिण ! सरण रसायणेण लहु हुंति पुणण्णव ।
जय धन्नंतरि पास ! मह वि तुह रोग हरो भव ॥३॥
विज्जाजोइस मंततंत सिद्धिउ अपयत्तिण ।
भुवणब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ ।
तं तिहुअण कल्लाण कोस । तुह पास ! निरुत्तउ ॥४॥
खुद्द पउत्तइ मंततंत जंताइ विसुत्तइ ।
चरथिरगरल गहुग्ग खग्ग रिउवग्गविगंजइ ।
दुत्थिय सत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दयकरि ।
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करि केसरि ॥५॥

तुह आणा थंभेइ भीम दप्पुध्धुर सुरवर ।
रक्खस जक्ख फणिंदविंद चोरा नल जलहर ।
जल थल चारिरउद खुद पसु जोइणि जोइअ ।
इय तिहुअण अविलंघिआण जय पास ! सुसामिय ॥६॥
पत्थिय अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भर निब्भर ।
रोमंचंचिअ चारुकायकिन्नर नरसुरवर ।
जसु सेवहि कमकमल जुअल पक्खालिअ कलिमलु ।
सो भुवणत्तय सामि पास ! मह मद्दउ रिउबलु ॥७॥
जय जोइअ मण कमल भसल भयपंजर कुंजर ।
तिहुअण जण आणंद चंद ! भुवणत्तय दिणयर ।
जयमइमेइणि वारिवाह ! जयजंतुपियामह ।
थंभणयट्ठिअपासनाह ! नाहत्तण कुणमह ॥८॥
बहुविह वण्णु अवण्णु सुन्नुवण्णिउ छप्पन्निहि ।
मुक्खधम्म कामत्थ काम नरनियनिय सत्थिहि ।
जंझायइबहु दरिसणत्थ बहुनाम पसिद्धउ ।
सो जोइअ मण कमल भसल सुह पास । पवद्धउ ॥९॥
भयविब्भल रणझणिर दसण थर हरिअसरीरय ।
तरलिअ नयण विसण्णु सुन्नुगग्गरगिरकरुणय ।
तइ सहसत्ति सरंत हुंति नरनासिअ गुरुदर ।

महविज्झवि सच्छसइ पास ! भय पंजर कुंजर ॥१०॥
पइं पासिवि असंतनित्त पत्तंत पवित्तिय ।
वाहपवाह पवूढरूढ दुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर ।
इयतिहुअण आणंद चंद ! जय पास जिणेसर ॥११
तुहकल्लाण महेसु घंटटंकारव पिल्लिअ ।
वल्लिर मल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिअ ।
हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति भुवणे विमहूसव ।
इयतिहुअण आणंद चंद जय पास ! सुहुब्भव ॥१२॥
निम्मल केवल किरण नियर विहुरिअ तमपहयर ।
दंसिअ सयल पयत्थ सत्थ वित्थरिअ पहाभर ।
कलि कलुसिय जण धूअलोय लोयणह अगोयर ।
तिमिरइ निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥१३॥
तुह समरण जलवरि ससित्त माणवमइमेइणि ।
अवरावर सुहुमत्थ वोह कंदल दलरेहणि ।
जायइ फलभर भरिय हरिय दुहदाह अणोवम ।
इय मइमेइणि वारिवाह दिसपास मइं मम ॥१४॥
कय अविकल कल्लाण वल्लि उल्लूरिय दुहवणु ।
दाविय सग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइ गम वारणु ।

जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु ।
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतु पियामहु ॥१५॥

भुवणारण्ण निवास दरिय परदरिसण देवय ।
जोइणिपूयण खित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ।
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुलु चिट्ठहि ।
इय तिहुअण वणसीह ! पास ! पावाइ पणासहि ॥१६॥

फणिफणफार फुरंत रयण कर रंजियनहयल ।
फलिणी कंदलदल तमाल नीलुप्पल सामल ।
कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ ।
जय पच्चक्खजिणेस ! पास ! थंभणयपुरठ्ठिअ ।१७॥

महमणु तरलु पमाणुनेय वायाविविसंठुलु ।
नय तणुरवि अविणय सहावु आलसविहलंघलु ।
तुह माहप्पु पमाणुदेव ! कारुण्ण पवित्तउ ।
इय मइ मा अव हीरिपास ! पालिहि विलवंतउ ॥१८॥

किंकि कप्पिउणेय कलुणु किं किं व न जंपिउ ।
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव ! दीणय मवलंबिउ ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि ।
तह वि न पत्तउ ताणुकिंपि पइ पहुपरिचत्तिहि ॥१९॥

तुहु सामिउ तुहु माय-बप्पु तुहु मित्त पियंकरु ।
तुहु गइ तुहु मइ तुहु जिताणु तुहु गुरु खेमंकरु ।
हउ दुह भर भारिउ वराउ निब्भग्गह ।
लीणउ तुह कम कमल सरणु जिण ! पालहिचंगह ॥२०॥

पइ किवि कय नीरोय लोय किवि पाविय सुहसय ।
किवि मइमंत महंत केवि किवि साहिय सिवपय ।
किविगंजिय रिउ वग्ग केवि जसधवलिय भूयल ।
मइ अवहीरहि ! केण पास ! सरणागय वच्छल ॥२१॥

पच्चुवयार निरीह नाह ! निप्पन्नपश्रोयण ।
तुहु जिण पास ! परोवयार करणिक्क परायण ।
सत्तुमित्त समचित्त वित्ति ! नयनिंदय सममण ।
मा अवहीरि अजुग्गओ विमइ पास ! निरंजण ॥२२॥

हउ बहुविह दुहतत्त गत्तु तुहु दुह नासण परु ।
हउ सुयणह करुणिक्कठाणु तुहुनिरु करुणापरु ।
हउ जिण पास असामिसालु तुहु तिहुअण सामिअ ।
जं अवहीरहि मइझखंत इय पास ! न सोहिय ॥२३॥

जुग्गा जुग्ग विभाग नाह ! नहुजोयहि तुह सम ।
भुवणु वयार सहाव भाव करुणा रस सत्तम ।

रसमविसमइं किमगु नियइ ! भुविदाह समंतउ ।
इय दुहि बंधव ! पासनाह ! मइपाल थुणंतउ ॥२४॥

नयदीणह दीणयभुयवि अन्नुवि किवि जुग्गय ।
जं जोइवि उवयारु करहि उवयार समुज्जय ।
दीणह दीणु निहीणुजेण तइ नाहिण चत्तउ ।
तो जुग्गउ अहमेव पास ! पालहि मइ चंगउ ॥२५॥

अह अन्नुवि जुग्गयविसेसु किवि मन्नहि दीणह ।
जं पासिविउवयारु करइ तुहु नाह ! समग्गह ।
सुच्चियकिल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह ।
किं अन्निण तं चेव देव ! मा मइ अवहीरह ॥२६॥

तुह पत्थण नहु होइ विहलु जिण ! जाणउ किं पुण ।
हउं दुक्खिउ निरु सत्तचत्तदुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउनिमिसेणएउ एउ विजइ लब्भइ ।
सच्चंजं भुक्खियवसेण किं उंबरुपच्चइ ! ॥२७॥

तिहुअण सामिअ पासनाह ! मइअप्पु पयासिउ ।
किज्जउजंनियरुव सरिसु न मुणउ वहुजंपिउ ।
अन्नु न जिण ! जगि तुह समो विदक्खिणण दयासउ ।
जइ अवगण्णसि तुह जि अहह!!कह होसु ! हयासउ ।२८

जइ तुह रुविण किणवि पेयपाइण वेलवियउ ।
तु वि जाणउ जिणपास ! तुम्हि हउं अंगीकिरिउ ।
इयमह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु ।
रक्खंतहनियकित्तिणेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२६॥

एह महारिय जत्तदेव ! इहु न्हवण महूसउ ।
जं अणलिय गुण गहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ ।
इह पसीह सुपासनाह ! थंभणय पुरट्ठिय ।
इयमुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ॥३०॥



जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय जय समत्थपरमत्थ जाणय । जय जय गुरु, गरिम गुरु जयदुहत्त–सत्ताण ताणय ॥ थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह भीम भवुत्थु । भय अवणिताणंतगुण, तुज्झति संझ नमोऽत्थु ॥१॥



॥ श्री सकलार्हत् स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्य प्रणिदध्महे ॥१॥
नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनम् ।
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥

आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परिग्रहम् ।
आदिमंतीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥

अर्हन्तमजितं विश्व-कमलाकर भास्करम् ।
अम्लानकेवलादर्श – संक्रान्तजगतं स्तुवे ॥४॥

विश्वभव्य जनाराम-कुल्या तुल्या जयन्ति ।
ताः दिशनासमये वाचः, श्री संभव जगत्पतेः ॥५॥

अनेकान्तमताम्भोधि - समुल्लासनचंद्रमाः ।
दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिनन्दनः ॥६॥

द्युसत्किरीटशाणाग्रो – त्तेजितांघ्रिनखावलिः ।
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ॥७॥

पद्मप्रभप्रभोर्देह–भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ।
अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥८॥

श्रीसुपार्श्व जिनेन्द्राय, महेन्द्रमहितांघ्रये ।
नमश्चतुर्वर्णसंघ – गगनाभोगभास्वते ॥९॥

चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र – मरीचिनिचयोज्ज्वला ।
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान – निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥१०॥

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ।
अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥

सत्वानांपरमानन्द – कन्दोद्भेदनवाम्बुदः ।
स्याद्वादामृतनिस्यन्दी शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥

भवरोगार्तजन्तूना – मगदङ्कार दर्शनः ।
निःश्रेयसश्रीरमणः श्रेयांसः श्रेयसे ऽस्तुवः ॥१३॥

विश्वोपकारकीभूत – तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।
सुरासुरनरैः पूज्योः, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥१४॥

विमलस्वामिनो वाचः, कृतकक्षोदसोदराः
जयन्ति त्रिजगच्चेतो–जलनैर्मल्य हेतवः ॥१५॥

स्वयम्भूरमणस्पर्धि, करुणारस वारिणा ।
अनन्तजिदनन्तांवः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥

कल्पद्रुमसधर्माण-मिष्ट प्राप्तौ शरीरिणाम् ।
चतुर्धा धर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥

सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना–निर्मलीकृतदिङ्मुखः ।
मृगलक्ष्मा तमः शान्त्यै,शांतिनाथ जिनोऽस्तुवः ।१८।

श्रीकुन्थुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।
सुरासुरनृनाथाना - मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥१९॥

अरनाथस्तु भगवान, चतुर्थारन भोरविः
चतुर्थ पुरुषार्थ श्री,–विलासंवितनोतु वः ॥२०॥

सुरासुरनराधीश,-मयूर नववारिदम् ।
कर्मद्र्न्मूलने हस्ति-मल्ली मल्लं मल्लीममिष्टुमः॥२१॥

जगन्महामोह निद्रा-प्रत्यूप समयोपमम् ।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥

लुठन्तो नमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥२३॥

यदुवंश समुन्द्रेन्दुः, कर्मकक्ष हुताशनः ।
अरिष्ट नेमिर्भगवान्, भूयाद्रोऽरिष्ट नाशनः ॥२४॥

कमठेधरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ।
प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥२५॥

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुताश्रिया ।
महानन्द सरोराज-मरालायार्हते नमः ॥२६॥

कृतापराधेऽपिजने, कृपामन्थरतारयोः ।
ईषद् वाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीर जिननेत्रयोः ॥२७॥

जयति विजितान्यतेजाः सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रासविरहित-स्त्रि भुवन चूडामणि र्भगवान् ॥२८॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिता ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः॥२९

वीरात्तीर्थ मिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो ।
वीरेश्रीधृति कीर्ति कान्ति निचयः श्रीवीर ! भद्रं दिश ॥२०॥

अवनितलगतानां, कृत्रिमाकृत्रिमाणाम् ।
वरभवनगतानां, दिव्य वैमानिकानाम् ॥२१॥

इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां ।
जिनवरभवनानां, भावतोऽहं नमामि ॥२२॥

सर्वेषां वेधसामाद्य-मादिमं परमेष्ठिनाम् ।
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥२३॥

देवोऽनेक भवार्जितोर्जित महापाप प्रदीपानलो ।
देवः सिद्धि वधूविशाल हृदयालङ्काररहारोपमः ।२४।

देवोष्टादशदोष सिन्धुर घटानिर्भेदपंचाननो ।
भव्यानांविदधातु वांछित फलं श्रीवीतरागो जिनः।२५।

ख्यातोऽष्टापद पर्वतोगजपदः सम्मेत-शैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्ध-महिमा शत्रुंजयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादयः ।
तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ।२६।

॥ स्नातस्या स्तुति ॥

स्नातस्या–प्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकन–विस्मयाहृत रस-भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुपा ।
उन्मृष्टं नयन-प्रभा-धवलितं क्षीरोदका शंकया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ।१।

हंसासाहत-पद्मरेणु-कपिश-क्षीरार्ण वांभोभृतैः ।
कुंभैरप्सरसां पयोधरभर-प्रस्पर्द्धिभिःकांचनैः ।
येषां मंदररत्न-शैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।
सर्वैः सर्व सुरा सुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ।

अर्हद्वक्त्र-प्रसूतं गणधर-रचितं द्वादशांगं विशालं ।
चित्रं बह्वर्थ युक्तं मुनिगण वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ।
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभाव प्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्व लोकैकसारम् ।३।

निष्पंक-व्योमनील-द्युतिमलसदृशं बालचंद्राभ-दंष्ट्रं ।
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ।
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।
यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिम् ।४।

-❀-

॥ पाक्षिक स्तुति ॥

द्रें द्रें कि धपमप धुधुमि धों धों भ्रसकि धर धप धोरवं ।
दोंदों कि दोंदों दाग्डिदि दाग्डिदि की द्रमकि द्रणरण द्रैणवं ।
झझिझेंकि झें झें झणण रण रण निज कि निज जन रंजनं ।
सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्व जिनपति मज्जनं ।१।
कटरेंगिनी थोंगिनी किटति गिग्डदां धुधुकि धुटनट पाटवम् ।
गुण गुणण गुण गुण रण कि णें णें गुणण गुण गण गौरवं ।
झञ्झि झेंकि झेझें झणण रण रण निजकि निजजन सज्जना ।
कलयंति कमला कलित कल मल मुकल मीश महेजिनाः ।२।
ठकि ठ्ंकि ठ्ं ठ्ं ठहिंक ठहिंक ठहिंपट्टा ताड्याते ।
तल लोंकि लों लों त्रेंपि त्रेंपिनि डेंपि डेंपिनि वाद्यते ।
ॐ ॐ कि ॐ ॐ थुंगिनि थुंगिनि धोंगिनि कलरवे ।
जिनमतमनंतमहिम तनुतां नमति सुरनर मुच्छवेः ।३।
षुंदांकि षुंदां षुंषुडदि षुंदां षुषुडदि दों दों अम्बरे ।
चाचपट चचपट रणकि णेंणें डणण डेंडें डंबरे ।
तिहां सरगमपधुनि निधप मगरस ससससस सुर सेवता ।
जिन नाट्यरंगे कुशल मुनिशं दिशतु शासन देवता ।४।

-★-

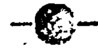
॥ श्री तत्त्वार्थाधिगम सूत्राणि ॥

॥ प्रथमोऽध्याय ॥

सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः ।१। तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।२। तन्निसर्गादधिगमाद् वा ।३। जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।४। नामस्थापना द्रव्य भावतस्तन्न्यासः ।५। प्रमाणनयैरधिगमः ।६। निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरण स्थिति विधानतः ।७। सत्सङ्ख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।८। मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवलानिज्ञानम् ।९। तत्प्रमाणे ।१०। आद्ये परोक्षम् ।११। प्रत्यक्षमयन्त् ।१२। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोधइत्यनर्थान्तरम् ।१३। तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ।१४। अवग्रहेहावायधारणाः ।१५। बहु-बहुविध-क्षिप्राऽनिश्रिता सन्दिग्धध्रुवाणां सेतराणाम् ।१६। अर्थस्य ।१७। व्यन्जनस्याऽवग्रहः ।१८। नचक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।१९। श्रुतंमतिपूर्वं द्वयनेकद्वादशभेदम् ।२०। द्विविधोऽवधिः ।२१। भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् ।२२। यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ।२३। ऋजुविपुलमती मनः पर्यायः ।२४। विशुद्धयप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।२५। विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधि-मनः पर्याययो ।२६। मतिश्रुतयोर्निबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ।२७। रूपिष्ववधेः ।२८। तदनन्तभागे मनः

पर्यायस्य ।२९। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।३०। एकादीनि-भाज्यानियुगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।३१। मतिश्रुताऽवधयोविपर्ययश्च ।३२। सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।३३। नैगमसङ्ग्रहव्यवहारर्जु सूत्रशब्दानयाः ।३४। आद्य-शब्दौ द्वि-त्रिभेदौ ।।३५।।

॥ इतिप्रथमोऽध्यायः ॥



॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्चश्च जीवस्य, स्वतत्त्व-मौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्वि-नवा-ऽष्टाद्शै-कविंशतित्रि-भेदा यथाक्रमम् ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभ भोगोप भोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञान दर्शन दानादिलब्धयश्च-तुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः (यथाक्रमं) सम्यक्त्व चारित्रसंयमा-संयमाश्च ।५। गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शना-ऽज्ञाना-ऽसंयता ऽसिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतु-स्त्र्ये-कै-कै-कै-क-षड्भेदाः ।६। जीव-भव्याभव्यत्वादीनिच ।७। उपयोगोलक्षणम् ।८। सद्विविधो ऽष्टचतुर्भेदः ।९। संसारिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्काऽमन-स्काः ।११। संसारिणस्त्रसस्थावराः ।१२। पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः ।१३। तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः ।१४। पञ्चे-

न्द्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृत्युपकरणेद्रव्येन्द्रियम् ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।१८। उपयोगः स्पर्शादिषु।१९। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः श्रोत्राणि ।२०। स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तेषामर्थाः ।२१। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।२२। वाय्वन्तानामेकम् ।२३। कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२४। सञ्ज्ञिनः समनस्काः ।२५। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।२६। अनुश्रेणिगतिः ।२७। अविग्रहाजीवस्य ।२८। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ।२९। एकसमयोऽविग्रहः ।३०। एकं द्वौ वा ऽ नाहारकः ।३१। सम्मूर्च्छनगर्भोपपाताजन्म ।३२। सचित्तशीतसंवृताः सेतरामिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।३३। जराय्वण्डपोतजानांगर्भः ।३४। नारक देवानामुपपातः ।३५। शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ।३६। औदारिकवैक्रियाऽऽहारक तैजसकार्मणानिशरीराणि ।३७। (तेषां) परंपरंसूक्ष्मम् ।३८। प्रदेशतोऽसङ्ख्येय गुणं प्राक्तैजसात् ।३९। अनन्तगुणेपरे ।४०। अप्रतिघाते ।४१। अनादिसम्बन्धेच ।४२। सर्वस्य ।४३। तदादीनिभाज्यानियुगपदेकस्याऽऽचतुर्भ्यः ।४४। निरुपभोगमन्त्यम् ।४५। गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ।४६। वैक्रियमौपपातिकम् ।४७। लब्धिप्रत्ययं च ।४८। शुभंविशुद्धमव्याघातिचाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ।४९। नारक सम्मूर्छिनो नपुंसकानि ।५०। न देवाः

।५१। औपपातिक चरमदेहोत्तमपुरुषाऽसङ्ख्येयवर्षायुषोऽन-पवर्त्यायुषः ।५२।

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥



॥ तृतीयो ऽध्यायः ॥

रत्नशर्करावालुकापङ्क धूमतमो महातमः प्रभाभूमयो, घनाम्बु वाताकाश प्रतिष्ठाः—

सप्ताधोऽधः पृथुतराः ।१। तासु नरकाः ।२। नित्याऽ-शुभतर लेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।३। परस्परोदीरित-दुःखाः ।४। सङ्क्लिष्टा सुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ।५। तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश—सप्तदश-द्वाविंशतित्रायस्त्रिंशतसागरोपमाः सत्त्वानां परास्थितिः ।६। जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो-द्वीपसमुद्राः ।७) द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवलयाकृतयः ।८। तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तोयोजनशतसहस्रविष्कम्भोजम्बू-द्वीपः ।९। तत्र भरत हैमवतहरिविदेहरम्यक हैरण्यवतैरावत वर्षाः क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिनः पूर्वपरायता हिमवन्महा-हिमवन्निषध नील रुक्मि शिखरिणो वर्षधर पर्वताः ।११। द्विर्धातकी खण्डे ।१२। पुष्करार्धे च ।१३। प्राङ्मानुषोत्तरान्-

मनुष्याः ।१४। आर्याम्लेच्छाश्च ।१५। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्रदेवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।१६। नृस्थितीपरापरेत्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।१७। तिर्यग्योनीनां च ।१८।

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥



॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकायाः (१) तृतीयः पीतलेश्यः (२) दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पोपन्नपर्यन्ताः (३) इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीक प्रकीर्ण काभियोग्य किल्विषिकाश्चैकशः (४) त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्याव्यंतरज्योतिष्काः (५) पूर्वयोर्द्वीन्द्राः (६) पीतान्तलेश्याः (७) कायप्रवीचारा आ ऐशानात् (८) शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचारा द्वयोर्द्वयोः (९) परेऽप्रवीचाराः (१०) भवन वासिनोऽसुरनागविद्युतसुपर्णाग्निवातस्तनितोदधि द्वीपदिक्कुमारा (११) व्यंतराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगान्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः (१२) ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णतारकाश्च (१३) मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके (१४) तत्कृतः काल विभागः (१५) बहिरवस्थिताः (१६) वैमानिकाः (१७) कल्पो-

पन्नाः कल्पातीताश्च (१८) उपर्युपरि (१९) सौधर्मैशानसानत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक लान्तक महाशुक्रसहस्त्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय वैजयंत जयन्ताऽपराजितेषुसर्वार्थसिद्धेच (२०) स्थितिप्रभाव सुख द्युति लेश्या विशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः (२१) गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः (२२) पीत-पद्म-शुक्ललेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ।२३। प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः (२४) ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः (२५) सारस्वतादित्य वह्न्य रुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतो ऽरिष्टाश्च (२६) विजयादिषु द्विचरमाः (२७) औप पातिक मनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः (२८) स्थितिः (२९) भवनेषु-दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम् (३०) शेषाणां पादोने (३१) असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च (३२) सौधर्मादिषु यथाक्रमम् (३३) सागरोपमे (३४) अधिके च (३५) सप्तसानत्कुमारे (३६) विशेषत्रिसप्तदशैका दश त्रयोदशपंचदश भिरधिकानि च (३७) आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसुग्रैवेयकेषु विजयादिषुसर्वार्थ सिद्धे च (३८) अपरापल्योपममधिकं च (३९) सागरोपमे (४०) अधिके च (४१) परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनंतरा (४२) नारकाणां च द्वितीयादिषु (४३) दश वर्षसहस्त्राणि प्रथमायाम् (४४) भवनेषुच (४५) व्यन्तराणांच

(४६) परापल्योपमम् (४७) ज्योतिष्काणामधिकम् (४८) ग्रहाणामेकम् (४९) नक्षत्राणामर्धम् (५०) तारकाणां चतुर्भागः (५१) जघन्यास्त्वष्टभागः (५२) चतुर्भागः शेषाणाम् (५३)

॥ इतिचतुर्थोऽध्यायः ॥

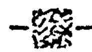
-★-

॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥

अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।१। द्रव्याणिजीवाश्च ।२। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।३। रुपिणः पुद्गलाः ।४। आऽऽकाशादेकद्रव्याणि ।५। निष्क्रियाणिच ।६। असङ्ख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मयोः ।७। जीवस्य च ।८। आकाशस्यानन्ताः ।९। संख्येया संख्येयाश्चपुद्गलानाम् ।१०। नाणोः ।११। लोकाकाशेऽवगाहः ।१२। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।१३। एक प्रदेशादिपुभाज्यः पुद्गलानाम् ।१४। असंख्येयभागादिपुजीवानाम् ।१५। प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यांप्रदीपवत् ।१६। गतिस्थित्युपग्रहोधर्माधर्मयोरुपकारः ।१७। आकाशस्यावगाहः ।१८। शरीरवाङ्मनः प्राणापानाःपुद्गलानाम् ।१९। सुख दुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।२०। परस्परोपग्रहोजीवानाम् ।२१। वर्तना परिणामः क्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्शरसगन्ध वर्णवन्तः

पुद्गलाः ।२३। शब्द बन्ध सौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थान भेदतम-श्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च ।२४। अणवः स्कन्धाश्च ।२५। सङ्घातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते ।२६। भेदादणुः ।२७। भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः ।२८। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।२९। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।३०। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।३१। स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः ।३२। नजघन्यगुणानाम् ।३३। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।३४। द्व्यधिकादिगुणानां तु ।३५। बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ ।३६। गुणपर्यायवद्द्रव्यम् ।३७। कालश्चेत्येके ।३८। सोऽनन्तसमयः ।३९। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।४०। तद्भावः परिणामः ।४१। अनादिरादिमांश्च ।४२। रूपिष्वादिमान् ।४३। योगोपयोगौ जीवेषु ।४४।

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥



॥ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ।१। स आश्रवः ।२। शुभः पुण्यस्य ।३। अशुभः पापस्य ।४। सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ।५। अव्रत-कषाये-न्द्रिय-क्रियाः पञ्चचतुः पञ्चपञ्चविंशति सङ्ख्याः पूर्वस्य भेदाः ।६। तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभाव-

वीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।७। अधिकरणं जीवाजीवाः ।८। आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ।९। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ।१०। तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाताज्ञान दर्शनावरणयोः ।११। दुःख शोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य ।१२। भूतव्रत्यनुकम्पादानंसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमितिसद्वेद्यस्य ।१३। केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१४। वह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः ।१६। मायातैर्यग्योनस्य ।१७। अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवंचमानुषस्य ।१८। निःशीलव्रतत्वंचसर्वेषाम् ।१९। सरागसंयम संय माकाम निर्जरावालतपांसि दैवस्य ।२०। योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नामनः ।२१। विपरीतं शुभस्य ।२२। दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नताशीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी संघ साधु समाधिर्वैयावृत्यकरण मर्हदाचार्य बहुश्रु तप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्ग प्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य ।२३। परात्मनिंदाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।२२। तद्विपर्ययो-नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२५। विघ्नकरणमन्तरायस्य।२६।

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥

※ सप्तमोऽध्यायः ※

हिंसाऽनृतस्तेया ब्रह्म परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥ २ ॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥ हिंसादिष्विहामुत्र चापाया वद्य दर्शनम् ॥४॥ दुःखमेव वा ॥ ५ ॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थानिसत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमानाऽविनेयेषु ॥ ६ ॥ जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् ॥ ७ ॥ प्रमत्त-योगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥ ८ ॥ असदभिधानमनृतम् ॥ ९ ॥ अदत्तादानं स्तेयम् ॥ १० ॥ मैथुनमब्रह्म ॥ ११ ॥ मूर्च्छापरिग्रहः ॥ १२ ॥ निःशल्यो-व्रती ॥१३॥ अगार्यनगरश्च ॥१४॥ अणुव्रतोऽगारी ॥१५॥ दिग्देशानर्थदण्डविरति सामायिक पौषधोपवासोपभोगपरि-भोगातिथि संविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥ १६ ॥ मारणान्तिकीं संलेखना जोषिता ॥ १७ ॥ शङ्काऽऽकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टि-प्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः ॥ १८ ॥ व्रतशीलेषुपञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥१९॥ वन्धवधच्छविच्छेदातिभारारोपणान्न-पाननिरोधाः ॥ २० ॥ मिथ्योपदेशरहस्याऽभ्याख्यान कूटलेखक्रियान्यासापहार साकारमन्यभेदाः ॥ २१ ॥ स्तेन-प्रयोग तदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रति-रूपकव्यवहाराः ॥ २२ ॥ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीताऽपरी-

गृहीतानमनाऽनङ्ग क्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः ॥ २३ ॥ क्षेत्र-वास्तुहिरण्य सुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२४॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तर्धानानि ।२५। आनयनप्रेष्यप्रयोग शब्दरूपानु पातपुद्गलक्षेपाः ॥ २६ ॥ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ।२७ योग दुष्प्रणिधानाऽनादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥ २८ ॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोप क्रमणा ना-दरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥ २९ ॥ सचित्तसम्बद्धसंमिश्राभिप-वदुष्पक्काहाराः ॥ ३० ॥ सचित्तनिक्षेपपिधान परव्यपदेश-मात्सर्यकालातिक्रमाः ॥ ३१ ॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुराग सुखानुबन्धनिदानकरणानि ॥ ३२ ॥ अनुग्रहार्थस्वस्यातिसर्गो-दानम् ॥ ३३ ॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात् तद्विशेषः ॥३४॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥



* अष्टमोऽध्याय *

मिथ्यादर्शनाविरति प्रमाद कषाययोगा वन्ध हेतवः ।१। सकषायत्वा जीवःकर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ।२। सबन्धः ।३। प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः ।४। आद्योज्ञान दर्शनावरणवेदनीय मोहनीयायुष्क नामगोत्रान्तरायाः ।५। पञ्चनवद्व्यष्टाविशतिचतुर्द्वि चत्वारिंशद्विपंचभेदा यथाक्रमम् ।६। मत्यादीनाम् ।७। चक्षुर चक्षुर वधिकेवलानांनिद्रानिद्रानिद्रा प्रचलाप्रचला प्रचलास्त्यानगृद्धि वेदनीयानि च ।८। सदसद्वेद्ये ।६। दर्शन चारित्रमोहनीय कषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्वि-षोडश नवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनो-कषायावनन्तानुबन्ध्य प्रत्याख्यानप्रत्याख्याना वरणसंज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभहास्यरत्यरति शोकभय जुगुप्सा स्त्रीपुंनपुंसकवेदाः ।१०। नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।११। गतिजाति शरीराङ्गोपाङ्ग निर्माणवन्धन संघातसंस्थान संहननस्पर्शरसगन्ध वर्णानुपूर्व्य गुरुलघूपघात पराघातातपोद्-द्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येक शरीरत्रस सुभग सुस्वर-शुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसिसेतराणि—तीर्थकृत्त्वंच ।१२। उच्चैर्नीचैश्च ।१३। दानादीनाम् ।१४। आदितस्तिसृणामन्त-रायस्य च त्रिंशत्सागरोपम कोटीकोट्यः परास्थितिः ।१५।

सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१६। नामगोत्रयोर्विंशतिः ।१७। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्यायुष्कस्य ।१८। अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ।१९। नामगोत्रयोरष्टौ ।२०। शेषाणामन्तर्मुहूर्तम् ।२१। विपाकोऽनुभावः ।२२। सयथानाम् ।२३। ततश्च निर्जरा ।२४। नाम प्रत्ययाः सर्वतोयोगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ।२५। सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरति पुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।२६।

※ इति अष्टमोऽध्यायः ※



॥ नवमोऽध्यायः ॥

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्ति समितिधर्मानुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥ उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्य संयमतपस्त्यागा किञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानु-चिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासा शीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्री-

चर्या निषद्या शय्याऽऽक्रोशवधयाचनालाभरोग तृण स्पर्श मल सत्कार पुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसम्परायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥ १० ॥ एकादश जिने ॥ ११ ॥ वादरसम्पराये सर्वे ॥ १२ ॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारति स्त्रीनिषद्याऽऽक्रोशयाचना सत्कार पुरस्काराः ॥ १५ ॥ वेदनीये शेषाः ॥१६॥ एकादयोभाज्या युगपदेककोनविंशतेः ॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसम्परायथाख्यातानि चारित्रम् ॥ १८ ॥ अनशनावमौदर्यवृत्ति परिसङ्ख्यानरसपरित्यागविविक्त शय्यासनकायक्लेशावाह्यं तपः ॥ १९ ॥ प्रायश्चित्त विनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥ नव चतुर्दशपञ्चद्विभेदं यथाक्रमंप्राग्ध्यानात ॥२१॥ आलोचन प्रतिक्रमण तदुभय विवेकव्युत्सर्ग तपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि ॥२२॥ ज्ञान दर्शन चारित्रोपचारा ॥२३ आचार्योपाध्याय तपस्विशैक्षकऽलानगणकुलसंघसाधुसमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥ वाचनापृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥ वाह्याऽभ्यन्तरोपध्योः ॥ २६ ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्र चिन्तानिरोधोध्यानम् ॥ २७ ॥ आमुहूर्तात ॥२८॥ आर्तरौद्रधर्मशुक्लानि ॥ २९ ॥ परेमोक्षहेतू ॥ ३० ॥ आर्तममनोज्ञानां

सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगायस्मृतिसमन्वाहारः ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ विपरीतं मनोज्ञानाम् ॥ ३३ ॥ निदानं च ॥ ३४॥ तद्विरतदेशविरत प्रमत्तसंयतानाम् ॥ ३५ ॥ हिंसाऽनृतस्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत देशविरतयोः ॥३६॥ आज्ञा-ऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म-मप्रमत्तसंयतस्या ॥ ३७ ॥ उपशान्तक्षीण कषाययोश्च ॥ ३८ ॥ शुक्लेचाद्ये (पूर्वविदः) ॥३९॥ परे केवलिनः ॥४०॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रिया-ऽप्रतिपातिव्यु परतक्रियाऽनिवृत्तीनि ॥ ४१ ॥ तत् त्र्येककाय-योगायोगानाम् ॥ ४२ ॥ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे ॥ ४३ ॥ अविचारं द्वितीयम् ॥४४॥ वितर्कःश्रुतम् ॥४५॥ विचारोऽर्थ व्यञ्जनयोगसङ्क्रान्तिः ॥ ४६ ॥ सम्यग्दृष्टि श्रावकविरता-नन्त वियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशम कोपशान्तमोहक्षपकक्षीण-मोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥ ४७ ॥ पुलाकव-कुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥ ४८ ॥ संयमश्रुतप्रति सेवना तीर्थलिङ्गलेश्योप पातस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४९॥

* इति नवमोऽध्यायः *

—

* दशमोऽध्यायः *

मोहक्षयाज् ज्ञान दर्शनावरणान्तरायक्षयाच्चकेवलम् ।१। बन्धहेत्वभाव निर्जराभ्याम् ।२। कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ।३। औपशमिकादि भव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ।४। तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।५। पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद् बन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः ।६। क्षेत्रकालगतिलिङ्ग तीर्थ चारित्र प्रत्येकबुद्धबोधित ज्ञानावगाहनान्तर संख्याऽल्पबहुत्वतः साध्याः ।७।

* इति दशमोऽध्यायः *

—***—

॥ श्री वीतराग स्तोत्र ॥

॥ कलिकाल–सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य–विरचित ॥

॥ प्रथम—प्रकाश ॥

सः परात्मा परंज्योतिः, परमः परमेष्ठिनाम् ।
आदित्यवर्णं तमसः, परस्तादामनन्ति यम् ।१।
सर्वयेनोदमूल्यन्त, समूलाः क्लेशपादपाः ।
मूर्ध्नायस्मै नमस्यन्ति, सुरासुरनरेश्वराः ।२।
प्रावर्तन्तयतोविद्याः, पुरुषार्थ प्रसाधिकाः ।
यस्य ज्ञानंभवद्भाविभूतभावाऽवभासकृत् ।३।

यस्मिन्विज्ञानमानन्दं, ब्रह्मचैकात्मतां गतम् ।
सश्रद्धेयः स च ध्येयः, प्रपद्ये शरणं च तम् ।४।
तेनस्यां नाथवांस्तस्मै, स्पृहयेयं समाहितः ।
ततः कृतार्थोभूयासं, भवेयं तस्यकिङ्करः ।५।
तत्र स्तोत्रेण कुर्यां, च पवित्रां स्वां सरस्वतीम् ।
इदं हि भवकान्तारे, जन्मिनां जन्मनः फलम् ।६।
क्वाहंपशोरपि पशुर्वीतरागस्तवः क्व च ?
उत्तितीर्षुररण्यानीं, पद्भयां पङ्गुरिवास्म्यतः ।७।
तथापि श्रद्धामुग्धोऽहं, नोपालभ्यस्स्खलन्नपि ।
विश्रृङ्खलापि वाग्वृत्तिः, श्रद्दधानस्यशोभते ।८।
श्रीहेमचन्द्रप्रभवाद्वीतरागस्तवादितः ।
कुमारपालभूपालः, प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ।९।

॥ इति प्रथम प्रकाशः ॥



॥ द्वितीय—प्रकाश ॥

प्रियङ्गुस्फटिकस्वर्ण — पद्मरागाञ्जन प्रभः ।
प्रभो ! तवाधौत शुचिः, कायः कमिवनाक्षिपेत् ।१।

मंदारदामवन्नित्यमवासित सुगन्धिनि ।
तवाङ्गं भृङ्गतां यान्ति, नेत्राणि सुरयोषिताम् ।२।
दिव्यामृतरसास्वाद – पोषप्रतिहताइव ।
समाविशन्ति ते नाथ ! नाङ्गे रोगोरगव्रजाः ।३।
त्वय्यादर्शतलालीन – प्रतिमाप्रतिरूपके ।
क्षरत् स्वेदविलीनत्व–कथाऽपि वपुषः कुतः ।४।
न केवलं रागमुक्तं, वीतराग ! मनस्तव ।
वपुस्थितं रक्तमपि, क्षीरधारासहोदरम् ।५।
जगद्विलक्षणं किंवा, तवान्यद्वक्तु मीश्महे ?
यदविस्त्रमबीभत्सं, शुभ्रं मांसमपि प्रभो ? ।६।
जलस्थल समुद्भूताः, संत्यज्य सुमनः स्त्रजः ।
तव निःश्वास सौरभ्यमनुयान्तिमधुव्रताः ।७।
लोकोत्तर चमत्कार–करी तवभवस्थितिः ।
यतोनाहारनीहारौ, गोचरौ चर्मचक्षुषाम् ।८।

इति द्वितीय प्रकाशः

–✶–

॥ तृतीय—प्रकाश ॥

सर्वाभिमुख्यतो नाथ ! तीर्थकृन्नामकर्मजात ।
सर्वथा सम्मुखीनस्त्वमानन्दयसियत्प्रजाः ॥१॥

यद्योजनप्रमाणेऽपि, धर्मदेशन सद्मनि ।
सम्मान्ति कोटिशस्तिर्यग्नृदेवाः सपरिच्छदाः ॥२॥

तेषामेव स्वस्वभाषा परिणाम मनोहरम् ।
अप्येकरूपं वचनं, यत्ते धर्माव बोधकृत् ॥३॥

साऽग्रेपियोजनशते, पूर्वोत्पन्नागदाम्बुदाः ।
यदञ्जसाविलीयन्ते, त्वद्विहारानिलोर्मिभि ॥४॥

नाविर्भवन्ति यद्भमौ मूषकाः शलभाः शुकाः ।
क्षणेनक्षितिपक्षिप्ता, अनीतय इवेतयः ॥५॥

स्त्रीक्षेत्रपद्रादिभवो, यद्वैराग्निः प्रशाम्यति ।
त्वत्कृपापुष्करावर्त्तवर्षादिव भुवस्तले ॥६॥

त्वत्प्रभावे भुविभ्राम्यत्यशिवोच्छेदडिण्डिमे ।
सम्भवन्ति नयन्नाथ ! मारयोभुवनारयः ॥७॥

कामवर्षिणि लोकानां, त्वयि विश्वैक वत्सले ।
अतिवृष्टिर वृष्टिर्वा, भवेद्यन्नोपतापकृत् ॥८॥

स्वराष्ट्रपरराष्ट्रेभ्यो, यत्क्षुद्रोपद्रवा द्रुतम् ।
विद्रवन्तित्वत्प्रभावात्, सिंहनादादिवद्विपाः ॥९॥
यत्क्षीयते च दुर्भिक्षं, क्षितौ विहरति त्वयि ।
सर्वाद्भुतप्रभावाढ्ये, जङ्गमे कल्पपादपे ॥१०॥
यन्मूर्ध्नःपश्चिमेभागे, जितमार्त्तण्डमण्डलम् ।
माभूद्वपुर्दुरालोक मितीवोत्पिण्डितं महः ॥११॥
स एप योग साम्राज्य—महिमाविश्वविश्रुतः ।
कर्मक्षयोत्थो भगवन्कस्यनाश्चर्यकारणम् ॥१२॥
अनन्त कालप्रचितमनन्तमपि सर्वथा ।
त्वत्तो नान्यः कर्मकक्षमुन्मूलयति मूलतः ॥१३॥
तथोपाये प्रवृत्तस्त्वं, क्रियासमभिहारतः ।
यथानिच्छन्नुपयेस्य, परां श्रियमशिश्रियः ॥१४॥
मैत्रीपवित्रपात्राय, मुदितामोदशालिने ।
कृपोपेक्षाप्रतीक्ष्याय तुभ्यं योगात्मने नमः ॥१५॥

* इति तृतीय प्रकाशः *

* चतुर्थ-प्रकाश *

मिथ्यादृशां युगान्तार्कः, सुदृशाममृताञ्जनम् ।
तिलकं तीर्थ कृल्लक्ष्म्याः, पुरश्चक्रंतवैधते ॥१॥
एकोऽयमेव जगति, स्वामीत्याख्यातुमुच्छ्रिता ।
उच्चै रिन्द्रध्वजव्याजात्तर्जनीजंभविद्विषा ॥२॥
यत्रपादौपदंधत्तस्तव तत्र सुरासुराः ।
मन्ये युगपदाख्यातुं, चतुर्वक्त्रोऽभवद्भवान् ॥३॥
त्वयिदोषत्रयात्त्रातुं, प्रवृत्ते भुवनत्रयीम् ।
प्राकारत्रितयं चक्रुस्त्रयो ऽपित्रिदिवौकसः ।४।
दान शील तपो भाव भेदाद्धर्म्मं चतुर्विधम् ।
मन्येयुगपदाख्यातुं, चतुर्वक्त्रोऽभवद्भवान् ।५।
अधोमुखाः कण्टकाः स्युर्धात्र्यांविहरतस्तव ।
भवेयुः सम्मुखीनाः किंतामसास्तिग्मरोचिषः ।६।
केश रोमनखश्मश्रु, तवावस्थितमित्ययम् ।
बाह्योऽपियोगमहिमा, नाप्तस्तीर्थं करैः परैः ।७।
शब्दरूपरसस्पर्श-गन्धाख्याः पञ्चगोचराः ।
भजन्ति प्रातिकूल्यंन, त्वदग्रे तार्किका इव ।८।
त्वत्पादावृतवः सर्वे, युगपत्पर्युपासते ।
आकाल कृतकन्दर्पसाहायक भयादिव ।९।

सुगन्ध्युदकवर्षेण, दिव्यपुष्पोत्करेण च ।
भावित्वत्पादसंस्पर्शा, पूजयन्ति भुवंसुराः ।१०।

जगत्प्रतीच्य त्वांयान्ति, पक्षिणोऽपिप्रदक्षिणाम् ।
का गतिर्महतां तेषां त्वयि ये वामवृत्तयः ।११।

पञ्चेन्द्रियाणां दौः शील्यंक्वभवेद्भवदन्तिके ? ।
एकेन्द्रियोऽपियन्मुञ्चत्यनिलः प्रतिकूलताम् ।१२।

मूर्ध्नानमन्ति तरवस्त्वन्माहात्म्यचमत्कृताः ।
तत्कृतार्थंशिरस्तेषां, व्यर्थं मिथ्यादृशांपुनः ।१३।

जघन्यतः कोटिसङ्ख्यास्त्वांसेवन्ते सुरासुराः ।
भाग्य सम्भारलभ्येऽर्थे, न मन्दाअप्युदासते ।१४।



॥ पञ्चम–प्रकाश ॥

गायन्निवालिविरुतैर्नृत्यन्निवचलैर्दलैः ।
त्वद्गुणैरिवरक्तोऽसौ, मोदते चैत्यपादपः ।१।

आयोजनंसुमनसोऽधस्तान्निक्षिप्तवन्धनाः ।
जानुदघ्नीः सुमनसो, देशनोर्व्यां किरन्ति ते ।२।

मालवकैशिकीमुख्यग्रामरागपवित्रितः ।
तव दिव्योध्वनिः पीतो। हर्षो-ग्रीवैर्मृगैरपि ।३।

तवेन्दुधामधवला, चकास्ति चमरावली।
हंसालिरिवि वक्त्राब्जपरिचर्यापरायणा ।४।
मृगेन्द्रासनमारुढे, त्वयि . तन्वति देशनाम्।
श्रोतुं मृगास्समायान्ति, मृगेन्द्रमिव सेवितुम् ।५।
भासां चयैः परिवृतो, ज्योत्स्नाभिरिवचन्द्रमाः।
चकोराणामिव दृशां, ददासिपरमां मुदम् ।६।
दुन्दुभिर्विश्व विश्वेश! पुरोव्योम्निप्रतिध्वनन्।
जगत्याप्तेपुते प्राज्यं, साम्राज्यमिवशंसति ।७।
तवोर्ध्वमूर्ध्वं पुण्यर्द्धिक्रमस ब्रह्मचारिणी।
छत्रत्रयीत्रिभुवनप्रभुत्वप्रौढिशंसिनी ।८।
एतां चमत्कारकरीं, प्रातिहार्यश्रियं तव।
चित्रीयन्ते न के दृष्ट्वा, नाथ! मिथ्यादृशोऽपि हि ।९।

॥ षष्ठ–प्रकाश ॥

लावण्यपुण्यवपुषि, त्वयि नेत्रामृताञ्जने।
माध्यस्थ्यमपि दौः स्थ्याय, किम्पुनर्द्वेषविप्लवः ।१।
त्वापि प्रतिपक्षोऽस्ति, सोऽपि कोपादिविप्लुतः।
अनया किंवदन्त्यापि, किं जीवन्ति विवेकिनः ।२।

विपक्षस्ते विरक्तश्चेत्स त्वमेवाथ रागवान् ।
न विपक्षो विपक्षः किं खद्योतो द्युतिमालिनः ? ।३।

स्पृहयन्ति त्वद्योगाय, यत्तेऽपि लवसत्तमाः ।
योगमुद्रादरिद्राणां, परेषां तत्कथैव का ? ।४।

त्वां प्रपद्यामहे नाथ, त्वां स्तुमस्त्वामुपास्महे ।
त्वत्तो हि न परस्त्राता, किम्ब्रूमः किमु कुर्म्महे ।५।

स्वयं मलीमसत्वारैः प्रतारणपरैः परैः ।
वंच्यते जगदप्येतत्कस्य पूत्कूर्महे पुरः ।६।

नित्यमुक्तान् जगज्जन्मक्षेमक्षयकृतोद्यमान् ।
वन्ध्यास्तनन्धयप्रायान्, को देवांश्चेतनः श्रयेत् ।७।

कृतार्थाजठरोपस्थदुःस्थितैरपि दैवतैः ।
भवादृशान्निह्नुवते, हा हा देवास्तिकाः परे ।८।

खपुष्पप्रायमुत्प्रेक्ष्य, किंचिन्मानं प्रकल्प्य च ।
संमान्ति देहे गेहे वा, न गेहे नर्दिनः परे ।९।

कामरागस्नेहरागावीषत्कर निवारणौ ।
दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेदः सतामपि ।१०।

प्रसन्नमास्यं मध्यस्थे, दृशौ लोकम्पृणं वचः ।
इति प्रीतिपदे वाढं, मूढास्त्वय्यप्युदासते ।११।

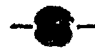
तिष्ठेद्वायुर्द्रवेद् द्रिर्ज्वलेज्जलमपि क्वचित् ।
तथापि ग्रस्तो रागाद्यैर्नाप्तो भवितुमर्हति ।१२।

॥ सप्तम–प्रकाश ॥

धर्माधर्मौ विना नाङ्गं विनाङ्गेन मुखं कुतः ।
मुखाद्विना न वक्तृत्वं तच्छास्तारः परे कथम् ? ।१।
अदेहस्य जगत्सर्गे प्रवृत्तिरपि नोचिता ।
न च प्रयोजनं किंचित्स्वातन्त्र्यान्न पराज्ञया ।२।
क्रीडया चेत्प्रवर्त्तेत रागवान्स्यात्कुमारवत् ।
कृपयाऽथ सृजेत्तर्हि सुख्येव सकलं सृजेत् ।३।
दुःख दौर्गत्य दुर्योनि जन्मादि क्लेश विह्वलम् ।
जनं तु सृजतस्तस्य, कृपालोः का कृपालुता ? ।४।
कर्मापेक्षस्य चेत्तर्हि न स्वतन्त्रोऽस्मदादिवत् ।
कर्मजन्ये च वैचित्र्ये किमनेन शिखण्डिना ? ।५।
अथ स्वभावतो वृत्तिरवितर्क्या महेशितुः ।
परीक्षकाणां तर्ह्येष परीक्षाक्षेपडिण्डिमः ।६।
सर्वभावेषु कर्तृत्वं ज्ञातृत्वं यदिसम्मतम् ।
मतँनः सन्ति सर्व्वज्ञा, मुक्ताः कायभृतोऽपि च ।७।

सृष्टिवाद् कुहेवाकमुन्मुच्येत्यप्रमाणकम् ।
स्वच्छासनेरमन्ते ते येषां नाथ । प्रसीदसि ।८।

॥ इति ॥



॥ अष्टम–प्रकाश ॥

सत्त्वस्यैकान्तनित्यत्वेकृतनाशा कृतागमौ ।
स्यातामेकान्तनाशेऽपि, कृतनाशाकृतागमौ ।१।

आत्मन्यैकान्तनित्ये स्यान्न भोगः सुख दुःखयोः ।
एकान्तानित्यरूपेऽपि न भोगः सुखदुःखयोः ।२।

पुण्यपापे वन्धमोक्षौ, न नित्यैकान्तदर्शने ।
पुण्यपापेवन्धमोक्षौ, नानित्यैकान्तदर्शने ।३।

क्रमाक्रमाभ्यांनित्यानां, युज्यतेऽर्थक्रिया नहि ।
एकान्त क्षणिकत्वेऽपि युज्यतेऽर्थ क्रियानहि ।४।

यदातुनित्यानित्य, स्वरूपतावस्तुनो भवेत् ।
यथात्थभगवन्नैव, तदादोषोऽस्ति कश्चन ।५।

गुडो हि कफहेतुः स्यान्नागरं पित्तकारणम् ।
द्वयात्मनि न दोषोऽस्ति, गुडनागर भेषजे ।६।

द्वयं विरुद्धं नैकत्राऽसत्प्रमाणप्रसिद्धितः ।
विरुद्धवर्ण योगो हि दृष्टो मेचकवस्तुषु ।७।

विज्ञानस्यैकमाकारं, नानाकारकरम्बितम् ।
इच्छंस्तथागतः प्राज्ञो नानेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ।८।

चित्रमेकमनेकंच रूपं, प्रामाणिकँ वदन् ।
योगोवैशेषिको वापि, नानेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ।९।

इच्छन्प्रधानं सत्त्वाद्यै, विरुद्धैर्गुम्फितं गुणैः ।
साङ्ख्यः संख्यावतां मुख्यो नानेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ।१०।

विमतिस्संम्मतिर्वापि, चार्वाकस्य नमृग्यते ।
परलोकात्ममोक्षेषु, यस्य मुह्यति शेमुषी ।११।

तेनोत्पादव्ययस्थेमसम्भिन्नं, गोरसादिवत् ।
त्वदुपज्ञं कृतधियः, प्रपन्नावस्तुतस्तुसत् ।१२।

—•••—

॥ नवम–प्रकाश ॥

यत्राल्पेनापि कालेन, त्वद्भक्तेः फलमाप्यते ।
कलिरेकः स एवास्तु कृतं कृतयुगादिभिः ॥१॥

सुषमातोदुःषमायां, कृपाफलवती तव ।
मेरुतोमरुभूमौ हि श्लाघ्या कल्पतरोः स्थितिः ॥२॥

श्राद्धः श्रोता सुधीर्वक्ता युज्येयातां यदीशतत् ।
त्वच्छासनस्य साम्राज्यमेकच्छत्रं कलावपि ।३।
युगान्तरेऽपि चेन्नाथ ! भवन्त्युच्छृङ्खलाः खलाः ।
वृथैव तर्हि कुप्यामः कलयेवामकेलये ।४।
कल्याणसिद्ध्यै साधीयान्, कलिरेवकषोपलः ।
विनाग्निगन्धमहिमा काकतुण्डस्य नैधते ।५।
निशि दीपोऽम्बुधौ द्वीपं मरौशाखीहिमे शिखी ।
कलौ दुरापःप्राप्तोऽयं, त्वत्पादाब्जरजः कणः ।६।
युगान्तरेषुभ्रान्तोऽस्मि त्वद्दर्शन विनाकृतः ।
नमोऽस्तु कलये यत्र, त्वद्दर्शनमजायत ।७।
बहुदोषो दोषहीनात्त्वत्तः कलिरशोभत ।
विषयुक्तोविषहरात्फणीन्द्र इव रत्नतः ।८।

* दशम–प्रकाश *

मत्प्रसत्तेस्त्वत्प्रसादस्त्वत्प्रसादादियं पुनः ।
इत्यन्योन्याश्रयं भिन्धिप्रसीद भगवन् ! मयि ।१।
निरीक्षितुं रूपलक्ष्मीं, सहस्राक्षोऽपि न क्षमः । स्वामिन् !
सहस्रजिह्वोऽपि शक्तो वक्तुं न ते गुणान् ।२।

संशयान्नाथ ! हरसेऽनुत्तर स्वर्गिणामपि । . .
अतःपरोऽपि किं कोऽपि गुणःस्तुत्योऽस्ति वस्तुतः ।३।
इदं विरुद्धं श्रद्धत्तां कथमश्रद्धधानकः । ...
आनन्द सुख शक्तिश्च, विरक्तिश्च समं त्वयि ।४।
नाथेयं घटयमानापि, दुर्घटा घटतां कथम् ।
उपेक्षा सर्व सत्त्वेषु . परमाचोपकारिता ।५।
द्वयं विरुद्धं भगवंस्तव, नान्यस्य कस्यचित् । .
निर्ग्रन्थता परा या च या चोच्चैश्चक्रवर्त्तिता ।६।
नारका अपि मोदन्ते, यस्य कल्याणपर्वसु ।
पवित्रं तस्य चारित्रं, को वा वर्णयितुं क्षमः ।७।
शमोऽद्भुतोऽद्भुतं रूपं, सर्वात्मसु कृपाद्भुता ।
सर्वाद्भुतनिधीशाय, तुभ्यं भगवते नमः ।८।



※ एकादश-प्रकाश ※

निघ्नन्परीषहचमूमुपसर्गान्प्रतिक्षिपन् ।
प्राप्तोऽसिशमसौहित्यं, महतांकापिवैदुषी ।१।
अरक्तोभुक्तवान्मुक्तिमद्विष्टोहतवान्द्विषः ।
अहो महात्मनांकोऽपि महिमा लोकदुर्लभः ।२।

सर्वथानिर्जिगीपेणभीतभीतेन चागसः ।
त्वया जगत्त्रयंजिग्ये, महतांकापि चातुरी ।३।
दत्तं न किञ्चित्कस्मैचिन्नात्तंकिञ्चित्कुतश्चन ।
प्रभुत्वं ते तथाप्येतत्कला कापिविपश्चिताम् ।४।
यद्देहस्यापि दानेन, सुकृतंनार्जितं परैः ।
उदासीनस्य तन्नाथ ! पादपीठे तवालुठत् ।५।
रागादिषु नृशंसेन, सर्वात्मसु कृपालुना ।
भीमकान्तगुणेनोच्चैः साम्राज्यंसाधितं त्वया ।६।
सर्वे सर्वात्मनाऽन्येषु, दोपास्त्वयि पुनर्गुणाः ।
स्तुतिस्तवेयं चेन्मिथ्या, तत्प्रमाणं सभासदः ।७।
महीयसामपिमहान्महनीयोमहात्मनाम् ।
अहो मे स्तुवतः, स्वामी स्तुतेर्गोचरमागमत् ।८।

-✶-

❋ द्वादश–प्रकाश ❋

पटुवभ्यासादरैः पूर्वं तथा वैराग्यमाहरः ।
यथेह जन्मन्याजन्म तत्सात्मीभावमागमत् ।१।
दुःखहेतेषु वैराग्यं न तथा नाथ ! निस्तुषम् ।
मोक्षोपाय प्रवीणस्य यथाते सुखहेतेषु ।२।

विवेकशाणै र्वैराग्यशस्त्रंशातं त्वया तथा ।
यथा मोक्षेऽपि तत्साक्षादकुण्ठित पराक्रमम् ।३।
यदा मरुन्नरेन्द्र श्रीस्त्वया नाथोपभुज्यते ।
यत्रतत्र रतिर्नाम, विरक्तत्वं तदापि ते ।४।
नित्यं विरक्तः कामेभ्यो यदा योगंप्रपद्यते ।
अलमेभिरितिप्राज्यं तदा वैराग्यमस्तिते ।५।
सुखेदुःखेभवेमोक्षेयदौदासीन्यमीशिषे ।
तदा वैराग्यमेवेति कुत्र नासि विरागवान् ।६।
दुःखगर्भे मोहगर्भे वैराग्येनिष्ठिताः परे ।
ज्ञानगर्भंतुवैराग्यं त्वय्येकायनतां गतम् ।७।
औदासीन्येऽपि सततं विश्व विश्वोपकारिणे ।
नमो वैराग्यनिघ्नाय तायिने परमात्मने ।८।



* त्रयोदश-प्रकाश *

अनाहूतसहायस्त्वं, त्वम कारणवत्सलः ।
अनभ्यर्थितसाधुस्त्वं, त्वमसम्बन्धबान्धव ।१।
अनक्तस्निग्धमनसममृजोज्ज्वलवाक्पथम् ।
अधोतामलशीलं त्वांशरण्यंशरणं श्रये ।२।

अचण्डवीरवृत्तिनाशमिना शमवर्त्तिना ।
त्वया कामम कुट्यन्त कुटिलाः कर्मकण्टकाः ।३।

अभवाय महेशायागदाय नरकच्छिदे ।
अराजसाय ब्रह्मणे कस्मैचिद्भवते नमः ।४।

अनुच्तितफलोदग्राद निपात गरीयसः ।
असङ्कल्पितकल्पद्रोस्त्वत्तःफलमवाप्नुयाम ।५।

असङ्गस्य जनेशस्यनिर्ममस्य कृपात्मनः ।
मध्यस्थस्य जगत्रातुरनङ्कस्तेऽस्मिकिङ्करः ।६।

अगोपिते रत्ननिधावबृते कल्पपादपे ।
अचिन्त्ये चिन्तारत्ने च त्वय्यात्मायंमयार्पितः ।७।

फलानुध्यानवन्ध्योऽहं, फलमात्रतनुर्भवान् ।
प्रसीद् यत्कृत्यविधौ, किंकर्तव्य जडे मयि ।८।



* चतुर्दश-प्रकाश *

मनोवचःकायचेष्टाः कष्टाः संहृत्य सर्वथा ।
श्लथत्वेनैवभवतामनः शल्यं वियोजितम् ।१।

संयतानि न चाक्षाणि नैवोच्छृङ्खलितानि च ।
इति सम्यक्प्रतिपदा त्वयेन्द्रियजयः कृतः ।२।

योगस्याष्टाङ्गता नूनं प्रपञ्चः कथमन्यथा ।
आबालभावतोप्येप तवसात्म्यमुपेयिवान् ।३।
विपयेपुविरामस्ते, चिरंसहचरेष्वपि ।
योगे सात्म्यमदृष्टेऽपि स्वामिन्निदमलौकिकम् ।४।
तथा परेन रज्यन्ते उपकार परे परे ।
यथाऽपकारिणिभवानहो सर्वमलौकिकम् ।५।
हिंसका अप्युपकृता आश्रिता अप्युपेक्षिताः ।
इदं चित्रं चरित्रं ते के वा पर्यनुयुञ्जताम् ।६।
तथा समाधौ परमेत्वयात्माविनिवेशितः ।
सुखीदुःख्यस्मि नास्मीतियथान प्रतिपन्नवान् ।७।
ध्याताध्येयं तथा ध्यानं त्रयमेकात्मतां गतम् ।
इतिते योगमाहात्म्यं कथंश्रद्धीयतां परैः ।

—★—

* पञ्चदश-प्रकाशः *

जगज्जेत्रागुणास्त्रातरन्ये तावत्तवासताम् ।
उदात्तशान्तया जिग्येमुद्रयैव जगत्त्रयी ॥१॥
मेरुस्तृणीकृतोमोहात्पयोधिर्गोष्पदीकृतः ।
गरिष्ठेभ्यो गरिष्ठो यैःपाप्मभिस्त्वमपोहितः ॥२॥

च्युतश्चिन्तामणिः पाणेस्तेषां लब्धा सुधा मुधा ।
यैस्त्वच्छासनसर्वस्वमज्ञानैर्नात्मसात्कृतम् ॥३॥

यस्त्वय्यपि दधौ दृष्टिमुल्मुकाकारधारिणीम् ।
तमाशुशुक्षणिः साक्षादालप्यालमिदं हि वा ॥४॥

त्वच्छासनस्य साम्यं ये मन्यन्ते शासनान्तरैः ।
विषेण तुल्यं पीयूषं, तेषां हन्त हतात्मनाम् ॥५॥

अनेऽमूकाभूया सुस्ते येषां त्वयिमत्सरः ।
शुभोदर्काय वैकल्यमपिपापेषु कर्मसु ॥ ६ ॥

तेभ्यो नमोऽञ्जलिरयं तेषां तान्समुपास्महे ।
त्वच्छासनामृत रसैर्यैरात्माऽसिच्यतान्वहम् ॥७॥

भवे तस्यै नमोयस्यां तव पादनखांशवः ।
चिरं चूडामणीयन्ते ब्रूमहे किमतः परम् ॥८॥

जन्मवानस्मि धन्योऽस्मि कृतकृत्योस्मि यन्मुहुः ।
जातोऽस्मि त्वद् गुण ग्रामरामणीयकलम्पटः ॥९॥



* षोडश-प्रकाश *

त्वन्मतामृतपानोत्थाइतःशमरसोर्मयः ।

पराणयन्तिमां नाथ ! परमानन्दसम्पदम् ॥१॥

इतश्चानादिसंस्कारमूर्च्छितो मूर्च्छयत्यलम् ।

रागोरग विषवेगो हताशः करवाणि किम् ? ॥२॥

रागाहिगरलाघ्रातोऽकार्षमत्कर्मवैशसम् ।

तद्वक्तुमप्यशक्तोऽस्मिधिङ्मेप्रच्छन्नपापताम् ॥३॥

क्षणं सक्तः क्षणं मुक्तः क्षणं क्रुद्धः क्षणं क्षमी ।

मोहाद्यैः क्रीडयैवाहं कारितः कपिचापलम् ॥४॥

प्राप्यापि तव सम्बोधिं मनोवाक्कायकर्मजैः ।

दुश्चेष्टितैर्मया नाथ ! शिरसि ज्वालितोऽनलः ।५।

त्वय्यपि त्रातरि त्रातर्यन्मोहादिमलिम्लुचैः ।

रत्नत्रयं मे ह्रियते हताशो हा हतोऽस्मि तत् ।६॥

भ्रान्तस्तीर्थानि दृष्टस्त्वं मयैकस्तेषु तारकः ।

तत्तवाङ्घ्रौ विलग्नोऽस्मि नाथ ! तारय तारय ।७।

भवत्प्रसादेनैवाहमियतीं प्रापितो भुवम् ।

औदासीन्येन नेदानीं तव युक्तमुपेक्षितुम् ।८।

ज्ञाता तात त्वमेवैकस्त्वत्तो नान्यः कृपापरः ।
नान्योमतः कृपापात्रमेधि यत्कृत्यकर्मठः ॥६॥

* सप्तदश–प्रकाशः *

स्वकृतं दुष्कृतं गर्हन् सुकृतं चानुमोदयन् ।
नाथ ! त्वच्चरणौ यामि शरणं शरणोज्झितः ॥१॥
मनोवाक्कायजे पापे कृतानुमतिकारितैः ।
मिथ्या मे दुष्कृतं भूयादपुनः क्रिययान्वितम् ॥२॥
यत्कृतं सुकृतं किंचिद्रत्नत्रितय गोचरम् ।
तत्सर्वमनुमन्येऽहं मार्गमात्रानुसार्यपि ॥ ३ ॥
सर्वेषामर्हदादीनां यो योऽर्हत्त्वादिको गुणः ।
अनुमोदयामि तं तं सर्वं तेषां महात्मनाम् ॥४॥
त्वां त्वत्फलभूतान्सिद्धांस्त्वच्छासनरतान्मुनीन् ।
त्वच्छासनं च शरणं प्रतिपन्नोऽस्मि भावतः ॥५॥
क्षमयामि सर्वान्सत्त्वान्सर्वेक्षाम्यन्तु ते मयि ।
मैत्र्यस्तु तेषु सर्वेषु त्वदेकशरणस्य मे ॥६॥
एकोऽहं नास्ति मे कश्चिन्न चाहमपि कस्यचित् ।
त्वदङ्घ्रिशरणस्थस्य मम दैन्यं न किञ्चन ॥७॥

यावन्नाप्नोमि पदवीं परां त्वदनुभावजाम् ।
तावन्मयि शरण्यत्वं मा मुञ्च शरणं श्रिते ॥८॥



* अष्टादश-प्रकाशः *

न परं नाममृद्वेव कठोरमपि किञ्चन ।
विशेषज्ञाय विज्ञप्यं स्वामिने स्वान्तशुद्धये ॥ १ ॥
न पक्षिपशुसिंहादिवाहनासीन विग्रहः ।
न नेत्रगात्रवक्त्रादि विकार विकृताकृतिः ॥ २ ॥
न शूलचापचक्रादि शस्त्राङ्कर पल्लवः ।
नाङ्गनाकमनीयाङ्ग परिष्वङ्ग परायणः ॥ ३ ॥
न गर्हणीय चरितप्रकम्पित महाजनः ।
न प्रकोप प्रसादादिविडम्बित नरामरः ॥ ४ ॥
न जगज्जननस्थेमविनाशविहितादरः ।
न लास्य हास्य गीतादिविप्लवोपप्लुतस्थितिः ॥५॥
तदेवं सर्वदेवेभ्यस्सर्वथा त्वंविलक्षणः ।
देवत्वेन प्रतिष्ठाप्यः कथं नाम परीक्षकैः ॥ ६ ॥
अनुश्रोतः सरत्पर्णतृण काष्ठादियुक्तिमत् ।
प्रतिश्रोतः श्रयद्वस्तु कया युक्त्या प्रतीयताम् ॥ ७ ॥

अथवाऽलंमंदबुद्धि परीक्षकपरीक्षणैः ।
ममापि कृतमेतेनवैयात्येन जगत्प्रभो ॥ ८ ॥
यदेव सर्व संसारिजन्तु रूप विलक्षणम् ।
परीक्षन्तां कृतधियस्तदेव तव लक्षणम् ॥ ९ ॥
क्रोधलोभभयाक्रातं जगदस्माद्विलक्षणः ।
न गोचरोमृदुधियांवीतराग ! कथञ्चन ॥ १० ॥

—***—

* एकोनविंशतितम्–प्रकाशः *

तव चेतसि वर्त्तेऽहमिति वार्त्तापि दुर्लभा ।
मच्चित्ते वर्त्तसे चेत्त्वमलमन्येन केनचित् ॥ १ ॥
निगृह्यकोपतः कांश्चित् कांश्चित्तुष्टयाऽनुगृह्य च ।
प्रतार्यन्ते मृदुधियः प्रलम्भन परैः परैः ॥ २ ॥
अप्रसन्नात्कथं प्राप्यं फलमेतदसंगतम् ।
चिंतामण्यादयः किं न फलन्त्यपि विचेतनाः ॥ ३ ॥
वीतराग ! सपर्यायास्तवाज्ञापालनं परम् ।
आज्ञाराद्धाविराद्धा च शिवाय च भवाय च ॥ ४ ॥
आकालमियमाज्ञा ते हेयोपादेय गोचरा ।
आश्रवः सर्वथा हेय उपादेयश्च संवरः ॥ ५ ॥

आश्रवोभवहेतुः स्यात्संवरो मोक्षकारणम्।
इतीय मार्हती मुष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम् ॥ ६ ॥
इत्याज्ञाराधनपरा अनन्ताः परिनिर्वृताः।
निर्वान्ति चान्ये क्वचनानिर्वास्यन्ति तथापरे ॥ ७ ॥
हित्वाप्रसादनादैन्यमेकयैव त्वदाज्ञया।
सर्वथैव विमुच्यन्ते जन्मिनः कर्मपञ्जरात् ॥ ८ ॥

-★-

❋ विंशतितम्-प्रकाशः ❋

पादपीठलुठन्मूर्ध्नि मयि पादरजस्तव।
चिरंनिवसतां पुण्यपरमाणुकणोपमम् ॥ १ ॥
मदृशौ त्वन्मुखा सक्ते, हर्षवाष्पजलोर्मिभिः।
अप्रेक्ष्यप्रेक्षणोद्भूतं क्षणात्क्षालयतांमलम् ॥२॥
त्वत्पुरोलुठनैर्भूयान्मद्भालस्य तपस्विनः।
कृतासेव्यप्रणामस्य प्रायश्चित्तं किणावलिः ॥३॥
ममत्वद्दर्शनोद्भूताश्चिरं रोमाञ्च कण्टकाः।
नुदन्तां चिरकालोत्थामसद्दर्शनवासनाम् ॥ ४ ॥
त्वद्वक्त्रकांतिज्योत्स्नासुनिर्पतासु सुधास्विव।
मदीयैर्लोचनाम्भोजैः प्राप्यतांनिर्निमेषता ॥ ५ ॥

त्वदास्यलासिनी नेत्रे त्वदुपास्तिकरौ करौ ।
त्वद्गुण श्रोतृणी श्रोत्रे भूयास्तां सर्वदा मम ॥ ६ ॥
कुण्ठापियदिसोत्कण्ठा त्वद्गुणग्रहणं प्रति ।
ममैषाभारतीतर्हि स्वस्त्ये तस्यैकिमन्यया ॥ ७ ॥
तव प्रेष्योऽस्मिदासोऽस्मि सेवकोऽस्म्यस्मिकिंकरः ।
ओमितिप्रतिपद्यस्व नाथ ! नातः परं ब्रुवे ॥ ८ ॥
श्री हेमचन्द्र प्रभवाद्वीतरागस्तवादितः ।
कुमारपालभूपालः प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ॥ ९ ॥

—* इति विंशतितम प्रकाशः *—

—*—

॥ श्रीसिन्दूर प्रकरणम् ॥

(सादूर्लविक्रीडित वृत्तम्)

सिंदूर प्रकरस्तपः करि शिरः क्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिनिचयः प्रबोध दिवस प्रारम्भ सूर्योदयः ।
मुक्ति स्त्रीकुच कुम्भकुंकंम रसः श्रेयस्तरोः पल्लव,
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्व प्रभोः पातु वः ।१।
सन्तः सन्तुमम प्रसन्नमनसो वाचां विचारोद्यताः ।
सूतेम्भः कमलानि तत्परिमलं वाताव्रितन्वंति यत् ।

किंनाऽभ्यर्थ नयाऽनया यदि गुणोऽस्त्यासां ततस्ते स्वयं ।
कर्तारः प्रथने न चेदथ यशः प्रत्यर्थिना तेन किम् ? ।२।

(उपजातिवृत्त)

त्रिवर्ग संसाधनमन्तरेण, पशोरिवायुर्विफलं नरस्य ।
तत्रापि धर्मं प्रवरं वदन्ति, न तं विना यद्भवतोऽर्थकामौ ।३।

(इन्द्रवज्रा छन्दः)

यः प्राप्य दुष्प्राप्यमिदं नरत्वं, धर्मं न यत्नेन करोति मूढः ।
क्लेशप्रबंधेन स लब्धमब्धौ, चिंतामणिं पातयति प्रमादात् ।४।

(मन्दाक्रान्तावृतम्)

स्वर्णस्थाले क्षिपति स रजः पादशौचं विधत्ते ।
पीयूषेण प्रवरकरिणं वाहयत्यैन्ध भारम् ।
चिन्तारत्नं विकिरति कराद्वाय सोड्डाय नावं ।
यो दुष्प्रापं गमयति मुधा, मर्त्यं जन्म प्रमत्तः ।५।

(शार्दूलविक्रीडितवृतम्)

ते धत्तूरतरुं वपन्तिभवने प्रोन्मूल्य कल्पद्रुमं ।
चिन्तारत्नमपास्य काचशकलं स्वीकुर्वते ते जडाः ।
विक्रीयद्विरदं गिरीन्द्रसदृशं, क्रीणन्ति ते रासभं ।
ये लब्धं परिहृत्य धर्ममधमा, धावन्ति भोगाशया ।६।

(शिखरिणीवृत्तम्)

अपारे संसारे कथमपि समासाद्य नृभवं ।
न धर्मं यः कुर्याद्विषयसुख तृष्णातरलितः ।
ब्रुडन् पारावारे, प्रवरमपहाय प्रवहणं ।
स मुख्यो मूर्खाणामुपलमुप लब्धुं प्रयतते ॥ ७ ॥

(शार्दूलविक्रीडित वृतम्)

भक्ति तीर्थंकरे गुरौ जिनमते संघे च हिंसानृत-
स्तेयाब्रह्म परिग्रहाद्युपरमं क्रोधाद्यरीणां जयम् ।
सौजन्यं गुणिसंगमिन्द्रियदमं दानं तपोभावनां ।
वैराग्यं च कुरुष्व निवृंतिपदे यद्यस्ति गन्तुं मनः ।८।

पापं लुम्पति दुर्गतिं दलयति, व्यापादयत्यापदं ।
पुण्यं संचिनुते श्रियं वितनुते पुष्णाति नीरोगताम् ।
सौभाग्यं विदधाति पल्लवयति, प्रीतिं प्रसूते यशः ।
स्वर्गं यच्छति निवृंत्तिं च रचय त्यर्चाऽर्हता निर्मिता ।९।

स्वर्गस्तस्य गृहाङ्गणं सहचरी साम्राज्यलक्ष्मीः शुभा ।
सौभाग्यादिगुणावलिर्विलसति, स्वैरं वपुर्वेश्मनि ।
संसारः सुतरः शिवं करतलक्रोडे लुठत्यञ्जसा ।
यः श्रद्धाभरभाजनं जिनपतेः पूजां विधत्ते जनः ।१०।

(शिखरिणीवृतम्)

कदाचिन्नातङ्कः कुपित इव पश्यत्यभिमुखं ।
विदूरे दारिद्रयं चकितमिव नश्यत्यनुदिनम् ।
विरक्ता कान्तेव त्यजति कुगतिः सङ्गमुदयो ।
न मुञ्चत्यभ्यर्णं सुहृदिव जिनार्चां रचयतः ॥११॥

(शार्दूलविक्रीडित वृतम्)

यः पुष्पैर्जिनमर्चति स्मितसुरस्त्री लोचनैः सोऽर्च्यते ।
यस्तं वंदत एकशस्त्रिजगता सोऽहर्निशं वंद्यते ।
यस्तं स्तौति परत्र वत्रदमनस्तोमेन स स्तूयते ।
यस्तं ध्यायति क्लृप्तकर्मनिधनः स ध्यायते योगिभिः ॥१२॥

(वंशस्थ वृतम्)

अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्तते,
प्रवर्तयत्यन्य जनं च निःस्पृहः ।
स एव सेव्या स्वहितैपिणा गुरुः,
स्वयं तरंस्तारयितुं चमः परम् ॥१३॥

(मालिनी वृतम्)

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थं,
सुगति-कुगतिमार्गौ, पुण्य-पापे व्यनक्ति ।

अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
भवजलनिधिपोतस्तं विनानास्तिकश्चित् ॥१४॥

(शिखरिणी वृतम्)

पिता माता भ्राता प्रिय सहचरी सूनुनिवहः ।
सुहृत्स्वामी माद्यत्करिभटरथाश्वः परिकरः ।
निमज्जंतं जन्तुं नरककुहरे रक्षितुमलं ।
गुरोर्धर्माऽधर्म प्रकट न परात्कोऽपि न परः ॥१५॥

(शार्दूल विक्रीडित वृतम्)

किं ध्यानेनभवत्वशेषविषय, त्यागैस्तपोभिः कृतं ।
पूर्णं भावनयाऽलमिन्द्रियदमैः पर्याप्तमाप्तागमैः ।
किन्त्वेकंभवनाशनं कुरु गुरुप्रीत्या गुरोः शासनं ।
सर्वे येन विना विनाथवलवत् स्वार्थाय नालं गुणाः ॥१६॥

(शिखरिणी वृतम्)

न देवं नादेवं न शुभगुरुमेवं न कुगुरुं ।
न धर्मं नाधर्मं न गुणपरिणद्धं न विगुणम् ।
न कृत्यं नाकृत्यं, न हितमहितं नापि निपुणं ।
विलोकन्ते लोका जिनवचन चक्षुर्विरहिताः ॥१७॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

मानुष्यं विफलं वदन्ति हृदयं व्यर्थं वृथा श्रोत्रयो ।
निर्माणं गुण-दोषभेदकलनां, तेषामसंभाविनाम् ।
दुर्वारं नरकांध कूप पतनं, मुक्तिं बुधा दुर्लभां ।
सार्वज्ञः समयो दयारसमयो, येषां न कर्णातिथि ॥१८॥

पीयूषं विषवज्जलं ज्वलनवत्तेजस्तमस्तोमवत् ।
मित्रं शात्रववत् स्त्रजं भुजगवच्चिंतामणिं लोष्टवत् ।
ज्योत्स्नां ग्रीष्मजघर्मवत् स मनुत्ते कारुण्य पण्यापणं ।
जैनेन्द्रं मतमन्यदर्शन समं, यो दुर्मतिर्मन्यते ॥१९॥

धर्म्मं जागरयत्यघं विघटयत्युत्थापयत्युत्पथं ।
भिन्ते मत्सर मुच्छिनत्ति कुनयं, मथ्नाति मिथ्यामतिम् ।
वैराग्यं वितनोति पुष्यति कृपां, मुष्णाति तृष्णां च य-
त्तज्जैनं मतमर्चति प्रथयति, ध्यायत्यधीते कृती ॥२०॥

रत्नानामिव रोहणक्षितिधरः खं तारकाणामिव ।
स्वर्गः कल्पमहीरुहामिव सरः पंकेरुहाणामिव ।
पाथोधिः पयसामिवेन्दुमहसां स्थानं गुणानामसा-
वित्यालोच्य विरच्यतां भगवतः संघस्य पूजा विधिः ॥२१॥

यः संसार निरासलालसमतिर्मुक्त्यर्थमुत्तिष्ठते ।
यं तीर्थं कथयंति पावनतया, येनाऽस्ति नान्यः समः ।
यस्मै तीर्थपतिर्नमस्यति सतां, यस्माच्छुभं जायते ।
स्फूर्त्तिर्यस्य परा वसन्ति च गुणा, यस्मिन् स-
संघोऽर्च्यताम् ॥२२॥

लक्ष्मीस्तं स्वयमभ्युपैति रभसा, कीर्तिस्तमालिंगति ।
प्रीतिस्तं भजते मतिः प्रयतते, तं लब्धुमुत्कंठया ।
स्वः श्री स्तं परिरब्धुमिच्छति, मुहुर्मुक्तिस्तमालोकते ।
यः संघं गुणराशिकेलि सदनं श्रेयो रुचिः सेवते ॥२३॥

यद्भक्तेः फलमर्हदादिपदवी मुख्यं कृषेः सस्यवत् ।
चक्रित्वं त्रिदशेन्द्रतादि तृणवत् प्रासङ्गिकं गीयते ।
शक्तिं यन्महिमस्तुतौ न दधते वाचोऽपि वाचस्पतेः ।
संघः सोऽघहरः पुनातु चरण न्यासैः सतां मंदिरम् ।२४॥

क्रीडाभूः सुकृतस्य दुष्कृतरजः संहारवात्या भवो ।
दन्वन्नौर्व्यसनाग्निमेघपटली, संकेतदूती श्रियाम् ।
निःश्रेणिस्त्रिदिवौकसः प्रियसखी मुक्तेः कुगत्यर्गला ।
सत्त्वेषु क्रियतां कृपैव भवतु क्लेशैरशेषैः परैः ॥२५॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

यदि ग्रावा तोये तरति तरणिर्यद्युद्‌यति ।
प्रतीच्यां सप्तार्चिर्यदि, भजतिशैत्यं कथमपि ।
यदि क्ष्मापीठं स्यादुपरि सकलस्यापि जगतः ।
प्रसूते सत्त्वानां तदपि न वधः क्वाऽपि सुकृतम् ॥२६॥

(मालिनीवृत्तम्)

स कमलवनमग्ने, र्वासरं भास्वदस्ता ।
दमृतमुरगवक्त्रात्, साधुवादं विवादात् ।
रुगपगमम जीर्णा, ज्जीवितं कालकूटा ।
दभिलपति वधाद्यः, प्राणिनां धर्ममिच्छेत् ॥२७॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

आयुर्दीर्घतरंवपुर्वरतरं गोत्रं गरीयस्तरं ।
वित्तंभूरितरं बलं बहुतरं, स्वामित्वमुच्चैस्तरम् ।
आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतरं ।
संसारांबुनिधिकरोति सुतर, चेतः कृपार्द्रांतरम् ।२८॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

विश्वासायतनं विपत्ति दलनं देवैः कृताराधनं ।
मुक्तेः पथ्यदनं जलाग्निशमनं, व्याघ्रोरगस्तंभनम् ।
श्रेयः संवननं समृद्धिजननं सौजन्य संजीवनं ।
कीर्ते केलिवनंप्रभावभवनं सत्यं वचः पावनम् ॥२९॥

(शिखरिणी वृतम्)

यशो यस्माद्भस्मीभवति वनवह्नेरिव वनं ।
निदानं दुःखानां यदवनिरूहाणां जलमिव ।
न यत्र स्याच्छायातप इव तपः संयमकथा ।
कथंचित्तन्मिथ्या वचनमभिधत्ते न मतिमान् ॥३०॥

(वंशस्थ वृतम्)

असत्यमप्रत्य मूल कारणं, कुवासनासद्म समृद्धिवारणम् ।
विपन्निदानं परवंचनोर्जितं, कृतापराधंकृतिभिर्विवर्जितम् ।३१॥

(शार्दूल विक्रीडित वृतम्)

तस्याग्निर्जलमर्णव स्थलमरिर्मित्रं सुराः किङ्कराः,
कान्तारं नगरं गिरिर्गृहमहिर्माल्यं मृगारिर्मृगः ।
पातालं विमलस्त्रमुत्पलदलं व्यालः शृगालो विषं,
पीयूषं विषमंसमं च वचनं सत्याञ्चितं वक्ति यः ॥३२॥

(मालिनी वृतम्)

तमभिलषति सिद्धिस्त वृणीते समृद्धि-
स्तमभिसरति कीर्तिर्मुञ्चते तं भवार्त्तिः ॥
स्पृहयति सुगतिस्तं नेक्षते दुर्गतिस्तं ।
परिहरति विपत्तं यो न गृह्णत्यदत्तम् ॥३३॥

(शिखरिणी वृतम्)

अदत्तं नादत्ते कृतसुकृत कामः किमपि यः ।
शुभश्रेणिस्तस्मिन् वसति कलहंसीव कमले ।

विपत्तस्माद्दूरं व्रजति रजनीवाम्बरमणे।
विनीतं विद्येव त्रिदिव-शिव-लक्ष्मीर्भजति तम् ॥३४॥

(शार्दूल विक्रीडित वृतम्)

यन्निर्वर्त्तितकीर्ति धर्मनिधनं सर्वागसां साधनं,
प्रोन्मीलद्वधबंधनं विरचितक्लिष्टाशयोद्बोधनम्।
दौर्गत्यैकनिबंधनं कृतसुगत्या श्लेष संरोधनं,
प्रोत्सर्पत्प्रधनं जिघृक्षति न तद्धीमानदत्तंधनम् ॥३५॥

(हरिणी वृतम्)

परजनमनः पीडा क्रीडावनं वध भावना—
मन्न जलवनि व्यापि व्यापल्लतावन मण्डलम्।
कुगतिगमने मार्गः स्वर्गापवर्ग पुरार्गलं,
नियतमनुपादेयं स्तेयं नृणां हितकांक्षिणाम् ॥३६॥

(शार्दूल विक्रीडित वृतम्)

कामार्त्तस्त्यजति प्रबोधयति च स्वस्त्रीं परस्त्रीं न यो,
दत्तस्तेन जगत्य कीर्ति पटहो गोत्रे मषीकूर्चक।
श्चारित्रस्य जलाञ्जलिर्गुणगणारामस्य दावानलः,
सङ्केतः सकलापदां शिवपुर द्वारे कपाटो दृढः ॥३७॥

व्याघ्रव्यालजलानलादि विपदस्तेषां व्रजन्ति क्षयं,
कल्याणानि समुल्लसन्ति विबुधाः सान्निध्यमध्यासते।
कीर्तिं स्फूर्तिमियर्त्ति यात्युपचयं धर्मः प्रणश्यत्यघं,
स्वर्निर्वाणसुखानि संनिदधते ये शीलमाबिभ्रते ॥३८॥

(मालिनी वृत्तम्)

हरति कुलकलंकं लुम्पते पापपङ्कं,
सुकृतमुपचिनोति श्लाघ्यतामातनोति।
नमयति सुरवर्गं हन्ति दुर्गोपसर्गं,
रचयति शुचिशीलं स्वर्गमोक्षौ सलीलम् ॥३९॥

(शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्)

तोयत्यग्निरपि स्रजत्यहिरपि व्याघ्रोऽपि सारंगति,
व्यालोऽप्यश्वति पर्वतोऽप्युपलति क्ष्वेडोऽपि पीयूषति।
विघ्नोऽप्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रीडातडागत्यपां-
नाथोऽपि स्वगृहत्यटव्यपि नृणां शीलप्रभावाद्ध्रुवम् ।४०।

कालुष्यं जनयन जडस्य रचयन् धर्म्मद्रुमोन्मूलनं,
क्लिश्यन्नीतिकृपाक्षमाकमलिनीर्लोभांबुद्धिवर्द्धयन्।
मर्यादातटमुद्रुजन् शुभमनोहंसप्रवासंदिशन्,
किं न क्लेशकरः परिग्रहनदीपूरः प्रवृद्धिं गतः? ॥४१॥

(मालिनी वृत्तम्)

कलहकलभविन्ध्यः क्रोधगृध्रश्मशानं,
व्यसन भुजगरन्ध्रं द्वेषदस्युप्रदोषः ।
सुकृत वनदवाग्निर्मार्दवाम्भोदवायु—
र्नयनलिन तुषारोऽत्यर्थमर्थानुरागः ॥४२॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम)

अत्यर्था प्रशमस्य मित्रमधृतेर्मोहस्य विश्रामभूः,
पापानां खनिरापदां पदमसद्ध्यानस्य लीलावनम् ।
व्याक्षेपस्य निधिर्मदस्य सचिवः शोकस्य हेतुः कलेः,
केलिवेश्म परिग्रहः परिहृतेर्योग्यो विविक्तात्मनाम् ॥४३॥

वह्निस्तृप्यति नेन्धनैरिह यथा, नाम्भोभिरम्भो निधि,
स्तद्वल्लोभघनो घनैरपि धनैर्जन्तुर्न संतुष्यति ।
नत्वेवं मनुते विमुच्य विभवं निःशेष मन्यं भवं,
यात्यात्मा तदहं मुधैव विदधाम्ये नांसि भूयांसि किम् ।४४॥

यो मित्रं मधुनो विकार करणे संत्राससंपादने,
सर्पस्य प्रतिबिम्बमङ्ग दहने, सप्तार्चिषः सोदरः ।
चैतन्यस्य निषूदने विषतरोः सब्रह्मचारी चिरं,
सो क्रोधः कुशलाभिलाप कुशलैः प्रोन्मूलमुन्मूल्यताम् ।४५।

(हरिणी वृत्तम्)

कलति कलितश्रेयः श्रेणिप्रसून परम्परः,
प्रशमपयसा सिक्तोमुक्ति तपश्चरणद्रुमः ।
यदि पुनरसौ प्रत्यासत्तिप्रकोपहविर्भुजो,
भजतिलभते भस्मीभावं तदोविफलोदयः ॥४६॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

सन्तापं तनुते भिनत्ति विनय सौहार्दमुत्सादय,
त्युद्वेगं जनयत्यवद्य वचनं, सूते विधत्ते कलिम् ।
कीर्तिं कृंततिदुर्मतिं वितरति व्याहंति पुण्योदयं,
दत्ते यः कुगतिं स हातुमुचितो रोपः सदोषः सताम् ।४७।

योधर्मं दहति द्रुमं दव इवोन्मथ्नाति नीतिं लतां,
दन्तीवेन्दुकलां विधुन्तुद इव क्लिश्नाति कीर्तिं नृणाम् ।
स्वार्थं वायुरिवाम्बुदं विघटयत्युल्लासयत्या पदं,
तृष्णां धर्म इवोचितः कृत कृपालोपः स कोपः कथम् ॥४८॥

(मन्दाक्रान्ता वृत्तम्)

यस्माद्राविर्भवति वितति दुस्तरापन्नदीनां,
यस्मिञ्शिष्टाभिरुचित गुणग्राम नामाऽपि नास्ति ।

यश्च व्याप्तं वहति वधधीभूम्यया क्रोधं दावं,
तं मानाद्रिं परिहर दुरारोह मौचित्यवृत्तेः ॥४६॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

शमालानंभंजन् विमलमतिनाडिं विघटयन्,
किरन् दुर्वाक्पांसूत्करमजयन्नागमसृणिम् ।
भ्रमन्नुर्व्यां स्वैरं विनयनयवीथिं विदलयन्,
जनः कं नानर्थं जनयतिमदांधोद्विपइव ॥५०॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

औचित्याचरणं विलुम्पति पयोवाहं नभस्वानिव,
प्रध्वंसं विनयं नयत्यहिरिव प्राणस्पृशां जीवितम् ।
कीर्तिं कैरविणीं मतङ्गज इव प्रोन्मूलयत्यञ्जसा,
मानो नीच इवोपकार निकरं हंति त्रिवर्गं नृणाम् ॥५१॥

(वसन्ततिलका वृत्तम्)

मुष्णाति यः कृतसमस्त समीहितार्थम्,
संजीवनं विनय जीवितमङ्गभाजाम् ।
जात्यादिमानविषजं विषमं विकारं,
तं मार्दवामृत रसेन नयस्व शान्तिम् ॥५२॥

(मालिनी वृत्तम्)

कुशलजननवन्ध्यां सत्यसूर्यास्तसंध्याम्,
कुगति युवतिमालां मोहमातङ्गशालाम् ॥
शमकमलहिमानीं दुर्यशोराजधानीम्,
व्यसनशतसहायां दूरतोमुञ्चमायाम् ॥५३॥

(उपेन्द्रवज्रा वृत्तम्)

विधायमायां विविधैरुपायैः परस्यये वञ्चनमाचरन्ति ।
ते वंचयन्तित्रिदिवापवर्ग-सुखान्महामोह सखाः स्वमेव ॥५४॥

(इन्द्रवंशा वृत्तम्)

मायामविश्वास विलासमन्दिरं,
दुराशयो यः कुरुते धनाशया ।
सोऽनर्थ सार्थं न पतन्तमीक्षते,
यथाबिडालोलगुडं पयः पिबन् ॥५५॥

(वसन्ततिलका वृत्तम्)

मुग्धप्रतारण परायण मुज्जिहीते,
यत्पाटवंकपट लम्पट चित्तवृत्तेः ।
जीर्यत्युपप्लवमवश्यमिहाप्य कृत्वा,
नापथ्य भोजनमिवामयमायतौतत् ॥५६॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

यद्दुर्गा मटवीमटन्ति विकटं क्रामन्ति देशान्तरं ।
गाहन्ते गहनं समुद्रमतनुक्लेशां कृषिं कुर्वते ॥
सेवन्ते कृपणं पतिं गजघटासंघट्टदुः संचरं ।
सर्पन्ति प्रधनंधनान्धितधियस्तल्लोभविस्फूर्जितम् ।५७।

मूलं मोहविषद्रुमस्य सुकृताम्भोराशिकुम्भोद्भवः ,
क्रोधाग्नेररणिः प्रतापतरणिप्रच्छादने तोयदः ।
क्रीडासद्म कलेर्विवेकशशिनः स्वर्भानुरापन्न दी-
सिन्धुः कीर्तिलताकलापकलभो लोभः पराभूयताम् ।५८।

(वसन्ततिलका वृत्तम्)

निःशेषधर्म वन दाह विजृम्भमाणे ,
दुःखौघभस्मनि विसर्पद कीर्ति धूमे ।
बाढ़धनेन्धन समागम दीयमाने,
लोभान्लेशलभतां लभते गुणौघः ॥५६॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

जातः कल्पतरु पुरः सुरगवी, तेषां प्रविष्टा गृहं ।
चिन्तारत्नमुपस्थितं करतले, प्राप्तो निधिः सन्निधिम् ।
विश्वं वश्यमवश्यमेव सुलभाः, स्वर्गापवर्ग श्रियः ।
ये संतोषमशेषदोष दहनध्वंसाम्बुदं बिभ्रते ॥६०॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

वरं क्षिप्तः पाणिः कुपित फणिनो वक्त्रकुहरे,
वरं झम्पापातो ज्वलदनलकुण्डे विरचितः ।
वरं प्रासप्रान्तः सपदि जठरान्तर्विनिहितो,
न जन्यं दौर्जन्यं तदपि विपदां सद्मविदुषा ॥६१॥

(वसन्ततिलका वृत्तम्)

सौजन्यमेवविदधातियशश्चयं च ,
स्वश्रेयसं च विभवं च भवक्षयं च ।
दौर्जन्यमावहसियत्कुमते तदर्थं,
धान्येऽनलं दिशसि तज्जलसेकसाध्ये ॥६२॥

(पृथ्वी वृत्तम्)

वरं विभववन्ध्यता सुजनभावभाजां नृणा ,
मसाधुचरिताज्जितान पुनरुर्जिताः संपदः ।
कृशत्वमपिशोभते सहजमायतौ सुन्दरं ,
विपाकविरसान तुश्वयथुसंभवा स्थूलता ॥६३॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

न ब्रूते परदूषणं परगुणं वक्त्यल्पमप्यन्वहं,
संतोषं वहते परर्द्धिषु पराबाधासु धत्ते शुचम् ।

स्वश्लाघां न करोति नोज्भति नयं नौचित्यमुल्लंघय-
त्युक्तोऽप्य प्रियमक्षमां न रचयत्येतच्चरित्रं सताम् ॥६४॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

धर्मंध्वस्तदयो यशश्च्युतनयो वित्तं प्रमतः पुमान् ।
काव्यं निष्प्रतिभस्तपः शमदमैः शून्योऽल्पमेधाः श्रुतम् ॥
वस्त्वालोकमलोचनश्चलमना ध्यानं च वांछत्य सौ ।
यः सङ्गं गुणिनां विमुच्य विमतिः कल्याणमाकांक्षति ।६५।

(हिरणी वृत्तम्)

हरति कुमतिभिन्ते मोहं करोतिविवेकितां ।
वितरतिरतिं सूते नीतिं तनोतिगुणावलिम् ॥
प्रथयति यशोधत्ते धर्मं व्यपोहति दुर्गतिं ।
जनयति नृणां किं ना भीष्टं गुणोत्तमसंगमः ॥६६॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

लब्धुं बुद्धिकलापमापदमपाकर्तुं विहर्तुं पथि ।
प्राप्तुं कीर्तिमसाधुतां विधुवितुं धर्मं समासेवितुम् ॥
रोध्धुं पापविपाकमाकलयितुं स्वर्गापवर्गं श्रियं ।
चेत्त्वं चित्त समीहसे गुणवतां संगं तदङ्गीकुरु ॥६७॥

(हरिणी वृत्तम्)

हिमतिमहिमाम्भोजे चंडानिलत्युदयाम्बुदे ।
द्विरदति दया रामे क्षेमक्ष्माभृति वज्रति ॥
समिधति कुमत्यग्नौ कंदत्यनीति लतासु यः ।
किमभिलषता श्रेयः श्रेयः न निर्गुणसंगमः ।६८॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

आत्मानं कुपथेन निर्गमयितुं यः शूकलाश्वायते,
कृत्याकृत्यविवेक जीवित हृतौ यः कृष्णसर्पायते ॥
यः पुण्यद्रुमखंडखंडनविधौ स्फूर्जत्कुठारायते,
तं लुप्तव्रतमुद्रमिन्द्रिय गणं जित्वा शुभंयुर्भव ॥६९॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

प्रतिष्ठांयन्निष्ठां नयति नयनिष्ठां विघटय ।
त्यकृत्येष्वाधत्ते मतिमतपसि प्रेम तनुत्ते ॥
विवेकस्योत्सेकं विदलयति दत्ते च विपदं ।
पदं तद्दोषाणां करणनिकुरम्बं कुरु वशे ॥७०॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

धत्तां मौनमगारमुज्भतु विधिप्रागल्भ्यमभ्यस्यता,
मस्त्वंतर्गणमागमश्रममुपादत्तां तपस्तप्यताम् ।

श्रेयः पुंजनिकुंजभंजन महा वातं न चेदिंद्रिय,
व्रातं जेतुमवैतिमस्मनि हुतं जानीत सर्वं ततः ॥७१॥

धर्मध्वंस धुरीणमभ्रमर सा वारीणमापत्प्रथा,
लंकर्मीणमशर्म निर्मित कला पारीणमे कान्ततः।
सर्वान्नीनमनात्मनीन मनयात्यन्तीन मिष्टे यथा,
कामीनं कुमताध्वनीनमजयन्नर्थौघम क्षेमभाक् ॥७२॥

निम्नं गच्छति निम्नगेवनितरां निद्रेव विष्कंभते,
चैतन्यंमदिरेव पुण्यति मदंधूम्येव धत्तेन्धताम्।
चापल्यं चपलेव चुम्बति दवज्वालेव तृष्णां नय,
त्युल्लासं कुलटांगनेव कमला स्वैरं परिभ्राम्यति ॥७३॥

दायादाः स्पृहयन्ति तस्करगणा मुष्णान्ति भूमिभुजो,
गृह्णन्तिच्छलमाकलय्य हुतभुम्भस्मी करोति क्षणात्।
अम्भः प्लावयति क्षितौ विनिहितं यक्षा हरन्ते हठात्,
दुर्वृत्तास्तनया नयन्ति निधनं धिग् बह्वाधीनंधनम् ।७४॥

नीचस्याऽपि चिरं चटूनि रचयन्त्यायान्ति नीचैर्नतिं,
शत्रोरप्यगुणात्मनोऽपि विदधत्युच्चै-गुणोत्कीर्तनम्।
निर्वेदंनविदन्ति किं चिदकृतज्ञस्याऽपि सेवाक्रमे,
कष्टं किं न मनस्विनोऽपि मनुजाः कुर्वन्ति वित्तार्थिनः।
॥७५॥

लक्ष्मीः सर्पति नीचमर्णवपयः संगादिवाम्भोजिनी,

संसर्गादिव कंटकाकुलपदा न क्वापि धत्ते पदम्।

चैतन्यं विषसन्निधेरिव नृणामुज्जा सयत्यं जसा,

धर्मस्थाननियोजनेन गुणिभिर्ग्राह्यं तदस्याः फलम्।।७६।।

चारित्रं चिनुते धिनोति विनयं ज्ञानंनयत्युन्नतिं,

पुष्णाति प्रशमं तपः प्रबलयत्युल्लासयत्यागमम्।

पुण्यं कंदलयत्यघं दलयति स्वर्गं ददाति क्रमात्,

निर्वाणश्रियमातनोति निहितं पात्रे पवित्रंधनम्।।७७।।

दारिद्रं न तमीक्षते न भजते दौर्भाग्यमालम्बते,

नाऽकीर्तिर्नपराभवोऽभिलषते न व्याधिरास्कंदति।

दैन्यं नाद्रियते दुनोति न दरः क्लिश्नंति नैवापदः,

पात्रेयोवितरत्यनर्थं दलनं दानं निदानं श्रियाम्।।७८।।

लक्ष्मीः कामयते मतिमृगयते कीर्तिस्तमालोकते,

प्रीतिश्चुम्बति सेवते सुभगता नीरोगताऽऽलिङ्गति।

श्रेयः संहतिरभ्युपैति वृणुते स्वर्गोपभोगस्थिति-

मुक्तिर्वाञ्छति यः प्रयच्छति पुमानुपुण्यार्थमर्थं निजम्।७६।

(मन्दाक्रान्ता वृत्तम्)

तस्यासन्नारतिरनुचरी कीर्तिरुत्कंठिता श्रीः,

स्निग्धा बुद्धिः परिचयपरा चक्रवर्तित्वऋद्धिः।

प्राणीग्रामाग्रिदिवकमला कामुकी मुक्तिसंप्रत्,
सप्तक्षेत्र्यां वपति विपुलं वित्तबीजं निजं यः ॥८०॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

यत्पूर्वार्जितकर्म शैलकुलिशं यत्कामदावानल,
ज्वालाजालजलं यदुग्रकरणग्रामाहिमंत्राक्षरम् ।
यत्प्रत्यूतमः समूहदिवसं यल्लब्धिलक्ष्मी लता,
मूलं तद्द्विविधं तपः कुर्वंति वीतस्पृहः ॥८१॥

यस्माद्विघ्नपरम्परा विघटते दास्यंसुराः कुर्वते,
कामः शाम्यति दाम्यतीन्द्रिय गणः कल्याणमुत्सर्पति ।
उन्मीलन्तिमहर्द्धयः कलयति ध्वंसं चयः कर्मणां,
स्वाधीनं त्रिदिवं शिवं च भवति श्लाघ्यं तपस्तन्न किम् ।८२।

कान्तारं न यथेतरो ज्वलयितुं दक्षो दावाग्निं विना,
दावाग्निं न यथेतरः शमयितुं शक्तो विनाम्भं धरम् ।
निष्णातः पवनं विना निरसितुं नान्यो यथाम्भोधरं,
कर्मौघं तपसा विना किमपरं हर्तुं समर्थस्तथा ॥८३॥

(स्रग्धरा वृत्तम्)

संतोष स्थूलमूलः प्रशमपरिकरः स्कन्धब
पंचाक्षीरोभशाखः स्फुरदमयदलः शी

श्रद्धाम्भः-पूरसेकाद्विपुल कुलबलैश्वर्य सौन्दर्य भोगः,
स्वर्गादिप्राप्तिपुष्पः शिवसुख फलदः स्यात्तपः
पादपोऽयम् ॥८४॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

नीरोगे तरुणीकटाक्षितमिव त्याग व्यपेतप्रभौ,
सेवा कष्टमिवोपरोपणमिवाम्भोज जन्मनामश्मनि ।
विष्वग्वर्षमिवोषरक्षितितले दानार्हदर्चातपः-
स्वाध्यायाध्ययनादि निष्फलमनुष्ठानं विना भावनाम् ।८५।

सर्वं झीप्सति पुण्यमिप्सति दयां धित्सत्यघं मित्सति,
क्रोधं दित्सति दानशीलतपसां साफल्यमादित्सति ।
कल्याणोपचयं चिकीर्षति भवाम्भोधेस्तट लिप्सति,
मुक्तिस्त्रीं परिरिप्सते यदि जनस्तद्भावयेद्भावनाम् ।८६।

(पृथ्वी वृत्तम्)

विवेकवनसारिणीं, प्रशमशर्म संजीवनीं,
भवार्णव महातरीं मदनदावमेघावलीम् ।
चलाक्ष मृगवागुरां गुरु कषाय शैलाशनिं,
विमुक्तिपथ वेसरीं भजतभावनां किं परैः ? ।८७॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

धनं दत्तंवित्तं जिनवचनमभ्यस्तमखिलं,
क्रियाकांडं चंडं रचितमवनौ सुप्तमसकृत् ।
तपस्तीव्रं तप्तंचरणमगिजीर्णं चिरतरं,
न चेच्चित्ते भावस्तुषवपनवत्सर्वमफलम् ॥८८॥

(हरिणी वृत्तम्)

यदशुभरजः पाथो दृप्तेन्द्रियद्विरदांकुशं,
कुशलकुसुमोद्यानंमाद्यन्मनः कपि शृङ्खला ।
विरतिरमणीलीलावेश्मस्मरज्वरभेषजं,
शिवपथ रथस्तद्वैराग्यंविमृश्यभवाऽभयः ॥८९॥

(वसन्ततिलका वृत्तम्)

चंडानिलस्फुरित मन्दचयं दवार्चि,–
र्वृक्षव्रजं तिमिरमण्डलमर्कबिम्बम् ।
वज्रं महीध्रनिवहं नयते यथान्तं,
वैराग्यमेकमपि कर्म तथा समग्रम् ॥९०॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

नमस्या देवानां चरणवरिवस्या शुभगुरो–
स्तपस्या निःसीमक्लमपदमुपास्या गुणवताम् ।

निषद्यारण्येस्यात् करणदम विद्या च शिवदा,

विरागःक्रूरागः क्षपणनिपुणोऽन्तः स्फुरतिचेत् ॥९१॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम)

भोगान् कृष्णभुजंग भोग विषमान् राज्यं रजः सन्निभम् ।

बन्धून्बन्धनिबन्धनानि विषयग्रामं विषान्नोपमम् ॥

भूतिभूति सहोदरां तृणमिव स्त्रैणं विदित्वा त्यजन् ।

तेष्वासक्ति मनाविलोविलभते मुक्ति विरक्तः पुमान् ॥९२॥

(उपजाति वृत्तम्)

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्ति, सत्त्वानुकम्पाशुभपात्रदानम् ।

गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्म-वृक्षस्य फलान्यमूनि ॥९३॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

त्रिसन्ध्यं देवार्चांविरचय चयं प्रापय यशः,

श्रियपात्रे वापं जनय नयमार्गं नय मनः ।

स्मरक्रोधाद्यारीन दलयकलय प्राणिषुदयां,

जिनोक्तं सिद्धान्तंशृणुवृणुजवान्मुक्तिकमलाम् ॥९४॥

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

कृत्वाऽर्हत्पदपूजनंयतिजनं नत्वा विदित्वाऽऽगमम्,

हित्वा संगम धर्म कर्मठधियां पात्रेषु दत्वा धनम् ।

गत्वा पद्धतिमुत्तमक्रमजुषां जित्वान्तरारिव्रजम् ,
स्मृत्वा पंचनमस्क्रियां कुरु करक्रोडस्थमिष्टं सुखम् ।९५॥

(हरिणी वृत्तम्)

प्रसिरतियथा कीर्तिर्दिक्षु क्षपाकरसोदरा-
ऽभ्युदय जननीयातिस्फाति यथा गुण सन्ततिः।
फलयति यथा वृद्धिधर्मः कुकर्महतिक्षमः,
कुशलसुलभेन्याये कार्यं तथापथिवर्तनम् ॥९६॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

करेश्लाघ्यस्त्यागः शिरसिगुरुपादप्रणमनं,
मुखे सत्या वाणी श्रुतमधिगतं च श्रावणयोः ।
हृदिस्वेच्छावृत्तिर्विजयिभुजयोः पौरुषमहो,
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतांमंडनमिदम् ॥९७॥

(शिखरिणी वृत्तम्)

भवारण्यंमुक्त्वायदि जिगमिषुर्मुक्ति नगरीं,
तदानीं माकार्षीर्विषयविषवृक्षेषु वसतिम् ।
यतश्छायाप्येषा प्रथयति महामोह मचिरा-
दयं जन्तुर्यस्मात्पदमपि न गंतु प्रभवति ॥९८॥

(उपजाति वृत्तम्)

सोमप्रभाचार्यमभा च यत्र, पुंसां तमः पंकमपाकरोति ।
तदप्यमुष्मिन्नुपदेश लेशे, निशम्यमानेऽनिशमेति नाशम् ।९९॥

(मालिनी वृत्तम्)

अभजदजित देवाचार्य पट्टोदयाद्रि-
द्युमणिविजयसिंहाचार्य पादारविंदे ।
मधुकरसमतां यस्तेन सोमप्रभेण,
व्यरचि मुनि पराज्ञा सूक्तिमुक्तावलीयम् ॥१००॥



* प्रत्याख्यान *

* नवकारसी *

उग्गए सूरे णमुक्कारसहियं मुट्ठिसहियं पच्चखाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तिया-गारेणं वोसिरइ ।

* पोरसी—साढपोरसी *

पोरसीं साढपोरसीं मुट्ठिसहियं पच्चखाइ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्न कालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* पुरिमुड्ड—अवड्ड *

उग्गए सूरे परिमुड्ढंअवड्ढं मुट्ठिसहियं पच्चखाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* विगइओ *

विगइओ पच्चक्खाइ अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* देसावगासिक *

देसावगासियं भोगंपरिभोगं पच्चक्खाइ अएणत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* एगलट्ठाण-एकासण-बियासण और दत्ति *

उग्गए सूरे णमुक्कारसीं पोरसीं साढपोरसीं वा मुट्ठि-सहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अएणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसा-मोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं-एगलठ्ठाणं-एकासणं-बियासणं-दत्ति वा पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अएणत्थणाभोगेणं सहसा-गारेणं सागारियागारेणं आउंट्टणपसारेणं गुरुअब्भुठ्ठाणेणं परिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

[नोट :—एकलठाणे में "आउंट्टणपसारेणं" यह पाठ नहीं कहना; तथा नोकारसी से सिर्फ बिआसणा हो सकता है, अन्य नहीं]

* निव्विगइय *

उग्गए सूरेपोरसीं साढपोरसीं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं-निव्विगइयं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चखाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरइ ।

* आयंबिल *

उग्गए सूरे पोरसीं साढपोरसीं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं — आयंबिलं पच्चक्खाइ

अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं—एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* चौविहार-उपवास *

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* तिविहार-उपवास *

सूरे उग्गएअब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पारिट्ठा-वणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं—पाणहार पोरसीं साढपोरसीं पुरिमुड्ढं अवड्ढं वा मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं वोसिरइ ।

* पाणस्स-लेवेणवा *

पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अत्थेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरइ।

[नोट—"पाणस्सलेवेणवा" का पच्चक्खाण तथा सर्वत्र "पारिट्ठावणियागारेणं" का आगार साधुओं के लिए जानना]

* दिवसचरिमं—चौविहार *

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

* दिवसचरिमं—दुविहार *

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

* दिवसचरिमं—पाणहार *

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

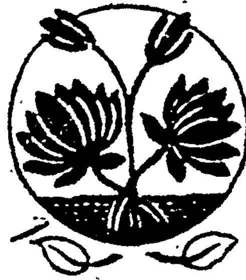
* अभिग्रहादिक *

अभिग्रहं गंठिसहियं मुट्ठिसहियं अंगुट्ठिसहियं वा

पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* भवचरिमं *

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं चउविहंपि आहारं वा असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।



* पच्चक्खाण पारने के पाठ *

[नवकारसी–पोरसी आदि]

नमुक्कारसहियं पोरसींमुट्ठिसहियं (आदि अमुक) पच्चक्खाणकिया चउविहार, पच्चक्खाणपुगा फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(आयंबिल-निविगय-एकलठाणा-एकासणा-बिआसणा-दत्ति-वगैरे) नवकारसीं पोरसीं साढपोरसीं आदि पच्चक्खाण किया चउविहार, आयंबिल, निविगय, एकासणो, बीयासणो, दत्ति, किया तिविहार, पच्चक्खाण पुगाफासिअं पालियं सोहियं, तीरियं, किट्टियं आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

* उपवास *

सूरे उग्गए उपवास किया तिविहार पाणाहार पोरसीं साढपोरसीं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पचक्खाण किया चउविहार, पचक्खाण पुगा-फासिअं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

* पच्चक्खाणों के आगार *

दोचे वणमुक्कारे। आगारा छच्च हुंति पोरसिए। सत्तेवय पुरिमुड्ढे। एगासणेयंमि अट्ठेव ॥१॥ सत्तेगट्ठाणस्स। अट्ठेवय आयंविलंमि आगारा ॥ पंचेव अब्भत्तट्ठे। छप्पाणे चरिमं चत्तारि ॥२॥ पंच चउरो अभिग्गहे। निव्वीए अट्ठ-नवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचउ। हवंति सेसेसु चत्तारि ॥३॥ [नोटः—ये सब आगार गुरुसे विनाके समभना]

* देशावगासिक पच्चक्खाण *

अहन्नंभंते ! तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ–दव्वओणं देसावगासियं खित्तओणं इत्थ वा अण्णच्छवा कालओणं जाव मुहुत्तधारणा पमाणे पच्चक्खामि भावओणं जावगहेणं न गहेज्जामि छलेणं न छलेज्जामि अन्नेण केणवि रोगायंकेण वा एसमे परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अणत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

* पोसह के पच्चक्खाण *

करेमि भंते ! पोसहं आहार पोसहं देसओ सव्वओ वा। सरीर सक्कारपोसहं सव्वओ बंभचेर पोसहं सव्वओ

अव्वावार पोसहं सव्वओ चउविहे पोसहे सावज्जं जोगं पचक्खामिजाव दिवसंवास्तं वा अहोरत्तं वा पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

* चौबीस थंडिला पडिलेहण *

आगाढे आसन्ने उचारे पासवणे अणाहियासे (१) आगाढे मज्झे उचारे पासवणे अणाहियासे (२) आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणाहियासे (३) आगाढे आसन्ने पासवणे अणाहियासे (४) आगाढे मद्ये पासवणे अणाहियासे (५) आगाढे दूरे पासवणे अणाहियासे (६) आगाढे आसन्ने उचारे पासवणे अहियासे (७) आगाढे मज्झे उचारे पासवणे अहियासे (८) आगाढे दूरे उचारे पासवणे अहियासे (६) आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (१०) आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे (११) आगाढे दूरे पासवणे अहियासे (१२) अणागाढे आसन्ने उचारे पासवणे अणाहियासे (१३) अणागाढे मज्जे उचारे पासवणे अणाहियासे (१४) अणागाढे दूरे उचारे पासवणे अणाहियासे (१५) अणागाढे आसन्ने पासवणे अणाहियासे (१६) अणागाढे मज्जे पासवणे अणाहियासे (१७) अणागाढे दूरे पासवणे अणाहियासे (१८) अणागाढे आसन्ने

उच्चारे पासवणे अहियासे (१६) अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे (२०) अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे (२१) अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (२२) अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे (२३) अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे (२४)

* राइसंथारा *

निस्सिही निस्सिही निस्सिही णमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं नवकार—३ तीन करेमि भंते ३ तीन बार-अणुजाणह चिठिज्जा परमगुरु । गुणगण रयणेहिं मंडिय । सरीरावहु पडिपुन्ना । पोरिसि राइसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं । बाहु वहाणेणं वामपासेणं । कुक्कडपाय पसारण । अंतरंत पमज्जएभूमि ॥ २ ॥ संकोइय संडासा । उवट्टंतेय काय पडिलेहा । दव्वाई उवओगं । ऊसास निरुंभणा-लोए ॥३॥ जइमे हुज्ज पमाओ । इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए । आहार मुवहिदेहं । सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥४॥ आसव-कसाय बंधण । कलहाभखाण परपरीवाउ । अरईरई पसुन्नं । मायामोसं च मिच्छत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइं । मुक्खमग्ग संसग्ग विग्घ भूयाइं ॥ दुग्गइ निबंधणाइं । अट्ठारस पावट्ठाणाइं ॥६॥ एगोहं नत्थिमे कोइ । नाहमन्नस्स कस्सवि । एवं अदीण

मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७८॥ एगोमेसासओ अप्पा । नाणदंसण संजुओ । सेसामे बाहिराभावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण । पत्ता दुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं । सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥६॥ अरिहंतो महादेवो । जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मएगहियं ॥१०॥ चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं-साहु मंगलं केवली-पन्नतोधम्मो मंगलं ॥११॥ चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा । साहु लोगुत्तमा-केवली पन्नतोधम्मो लोगुत्तमा ॥१२॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि-अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहु सरणं पवज्जामि केवली पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥१३॥ अरिहंता मंगलं मज्झ । अरिहंता मज्झ देवया । अरिहंता कित्तियत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ १४ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ । सिद्धाय मज्झ देवया । सिद्धाय कित्तियत्ताणं वोसिरामित्ति पावगं ॥ १५ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ । आयरिया मज्झदेवया । आयरिया कित्तियत्ताणं वोसिरामित्तिपावगं ।१६। उवज्झाया मंगलं मज्झ उवज्झाया मज्झ देवया । उवज्झाया कित्तियत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥१७॥ साहुणो मंगलं मज्झ । साहुणो मज्झ देवया । साहुणो कित्तियत्ताणं ।

वोसिरामित्ति पावगं ॥ १८ ॥ पुढवी दग अगणिमारुय। इक्केक्कि सत्तजोणि लक्खाओ। वणपत्तेय अणंते। दस चउदस जोणि लक्खाओ ॥१९॥ विगलिंदिएसु दो दो। चउरो चउरोय नारय सुरेसु। तिरिएसु हुंति चउरो। चउदस लक्खाय मणुएसु ॥२०॥ खामेमि सव्व जीवे। सव्वे जीवा-खमंतु मे। मित्ती मे सव्व भूएसु। वेरं मज्झं न केणइ॥२१॥ एवमहं आलोइअ। निंदय गरहिय दुगंच्छियं सम्मं। तिविहेणं पडि तो। वंदामि जिण चउव्वीसं ॥ २२ ॥ खमिय खमा-विय। मइखमिय सव्वह जीवनिकाय। सिद्धह साख आलो-यणह। मज्झह वेर न भाव ॥२३॥ सव्वे जीवा कम्मवस। चउदह राजभमंतु। ते मे सव्व खमाविया। मज्झवि तेह खमंतु ॥२४॥



(हिन्दी भाषा में)

* पाक्षिक-अतिचार *

"नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि। आयरणं आयारो। एअएसो पंचहाभणिओ" ॥१॥ ज्ञाना-चार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार—इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर

जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

-★-

* ज्ञानाचारे आठ अतिचार *

"काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे। वंजणअत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥१॥" ज्ञान नियमित वक्त में पढ़ा नहीं। अकाल वक्त में पढ़ा। विनय रहित, बहुमान रहित, योगोपधान रहित पढ़ा। ज्ञान जिससे पढ़ा। उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा। देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण सज्भाय पढ़ते गुणते अशुद्ध अक्षर कहा। लगमात्र न्यूनाधिक कहा। सूत्र असत्य कहा, अर्थ अशुद्ध किया। अथवा सूत्र अर्थ दोनों असत्य कहे। पढ़कर भूला। असज्भाई के समय में दशवैकालिक, थविरावली प्रतिक्रमण उपदेश-माला आदि सिद्धान्त पढ़ा। अपवित्र स्थान में पढ़ा या विना साफ किये अपवित्र भूमि पर रखा। ज्ञान के उपकरण तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदि को पैर लगा, थूक लगा अथवा थूक से अक्षर मिटाया ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, अथवा पास में लिए हुए आहार निहार

किया, ज्ञान-द्रव्य भक्षण करने वाले की उपेक्षा की, ज्ञान-द्रव्य की सार संभाल न की, उलटा नुकसान किया, ज्ञानवंत के ऊपर द्वेष किया। ईर्षा की तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढ़ने गुणने में विघ्न डाला, अपने जानपने का मान किया। मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान और केवल ज्ञान, इन पांचों ज्ञानों में श्रद्धा न की गूंगे तोतले की हांसी की। ज्ञान में कुतर्क की, ज्ञान की विपरीत प्ररुपणा की, इत्यादि ज्ञानाचारसंबंधी जोकोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥



* दर्शनाचार के आठ अतिचार *

"निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वित्तिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छलप्प भावणे अट्ठ।" ॥ ३ ॥

देव गुरु धर्म में निःशंक न हुआ। एकांत निश्चय न किया। धर्म सम्बन्धी फल में संदेह किया। साधु साध्वी की जुगुप्सा (नफरत) निंदा की। मिथ्यात्वियों की पूजा प्रभावना देखकर मूढ दृष्टिपना किया, कुचारित्री को देखकर चारित्र वाले पर

भी अभाव हुआ। संघ में गुणवान् की प्रशंसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया। साधर्मी का हित न चाहा। भक्ति न की। अपमान किया। देव द्रव्य, ज्ञान द्रव्य, साधारण द्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति के होते हुए भली प्रकार सार संभाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्म बन्धन किया। मुखकोश बांधे विना भगवत् देव की पूजा की। धूपदानी, खस, कूची, कलश आदिक से प्रतिमाजी को ठपका लगाया। जिन बिंब हाथ से छूटा। श्वासोच्छवास लेते आशातना हुई। मन्दिर तथा पौषधशाला में थूका, तथा श्लेष्म (कफ) किया, हांसी, मश्करी की, कुतूहल किया, जिन मन्दिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाओं में से और गुरू महाराज संबंधी तेतीस आशातनाओं में से कोइ आशातना हुई हो, स्थापनाचार्य हाथ से गिरे हों, या उनकी पडिलेहण न हुई हो, गुरु के वचन को मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानतें लगा हों, वह सब मन वचन काया–कर मिच्छामि दुक्कडं ॥



* चारित्राचार के आठ अतिचार *

"पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ ४ ॥ इर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुप्ति वचन गुप्ति, काय गुप्ति, ये आठ प्रवचन माता सामायिक पौषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं। चरित्राचार संबंधी जो कोइ अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावक धर्म सम्बन्धी श्री सम्यक्त्वमूल बारह व्रत सम्यक्त्व के पांच अतिचार "संका कंखा विगिच्छा" शंका—श्री अरिहंत प्रभु के बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिगुण शाश्वती प्रतिमा, चारित्रवान् के चारित्र में तथा जिनेश्वर देव के वचन में संदेह किया। आकांक्षा-ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड़, गोगा, दिक्पाल, गोत्रदेव, नवग्रह पूजा गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, मसानी आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देखकर शरीर में रोगातंक कष्टादिके आने पर इसलोक पर। लोक के लिए पूजा मानता की। बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी, भगत, लिंगिये, जोगी फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनीयों के मंत्र-यंत्र-चमत्कार को देखकर परमार्थ जाने बिना मोहित

हुआ। कुशास्त्र पढ़ा-सुना। श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखडी पूनम राखी, अजा एकम, प्रेतदूज, गौरी तीज, गणेश चौथ, नाग पंचमी, स्कंदषष्टि, झीलणा छठ, सील सप्तमी, दुर्गा अष्टमी, रामनौमी, विजया दशमी, व्रत एकादशी, वामनद्वादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनंतचौदश, शिवरात्रि, कालीचउदस, अमावस्या, आदित्यवार, उत्तरायण, योग भोगादि किए कराये करते को भला माना। पीपल में पानी डाला डलवाया। कुआ, तालाब, नदी, द्रह, वावडी, समुन्द्र, कुंड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान तथा दान किया कराया अनुमोदन किया। ग्रहण, शनिश्चर, माघमास, नवरात्रि का स्नान किया, नवरात्रि व्रत किया। अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये। वितिगिच्छा—धर्म सम्बन्धी फल में संदेह किया। जिन वीतराग अरिहंत भगवान, धर्म के आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्ष मार्ग दातार, इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की। इस लोक परलोक सम्बन्धी भोगवांछा के लिए पूजा की। रोग आतंक कष्ट के आने पर चीण वचन बोला। मानता मानी। महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निंदा की। मिथ्या दृष्टि की पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की।

प्रीति की ! दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना मिथ्यात्व को धर्म कहा, इत्यादि श्री सम्यक्त्व व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।



पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के ५ अतिचार

" वह बंधछविच्छेए "

द्विपद चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताडन किया, घाव लगाया, जकड़कर बांधा। अधिक बोझ लादा। निर्लांछन कर्म-नासिका बींधवाई, कर्ण छेदन करवाया। खस्सी नपुंसक किया। दाना-घास-पानी के समय सारवार न की, लेने देणे में किसी के बदले किसी को भूखा रखा, पास में खड़े होकर मारपीट करवाई। कैद करवाया॥ सड़े हुए धान को विना साफ किए काम में लिया। अनाज वगैर देखे पिसवाया। धूप में सुखाया। पानी यतना से न छाना इंधन, लकड़ी, उपले, गोहे आदि विना देखे वाले। उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीडी मकोडी आदि जीव का नाश हुआ। किसी जीव को दबाया, दुःख दिया, दुःखी होते जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चील, काग, कबूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया। घोंसले तोड़े। चलते फिरते या अन्य कुछ कामकाज करते निर्दयपना किया। भली प्रकार जीव रक्षा न की। विना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया, कपड़े धोये। यतना पूर्वक काम-काज न किया। चार-

पाई खटोला, पीढा पीढी आदि धूप में रखे। डंडे आदि से झड़काये। जीव जन्तु वाली जमीन को लींपा। दलते, कूटते, लींपते या अन्य कुछ काम-काज करते यतना न की। अष्टमी चौदस आदि तिथि का नियम तोड़ा, धूनी करवाई, इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात् विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अति-चार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—★—

दूसरे स्थूलमृषावादविरमण व्रत के पांच अतिचार

"सहस्सा रहस्स दारे ० "

सहसात्कार बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल (कलंक) दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट किया। किसी को दुःखी करने के लिए खोटी सलाह दी। झूठा लेख लिखा। झूठी साक्षी दी। अमानत में खयानत की। किसी की धरोड़ वस्तु पीछी न दी। कन्या, गौ, भूमि सम्बन्धी लेन देन में लड़ते-झगड़ते वाद विवाद में मोटा झूठ बोला, हाथ-पैर आदि की गाली दी, इत्यादि स्थूल मृषावाद विरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते

अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।



तृतीय स्थूल अदत्तादानविरमणव्रत के ५ अतिचार

"तेनाहडप्पओगे०"

घर बाहिर, खेत, खलों में, विना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की; अथवा विना आज्ञा अपने काम में ली । चौरी की वस्तु ली, चौर को सहायता दी । राज्य विरुद्ध कर्म किया ॥ अच्छी; बुरी, सजीव, निर्जीव, नई, पुरानी वस्तु मिलाकर मेल संभेल किया । जकात की चौरी की । लेते देते तराजू की डंडी चढ़ाई । अथवा देते हुए कमती दिया । लेते हुए अधिक लिया । रिश्वत खाई । विश्वासघात किया ।ठगी की । हिसाब किताब में किसी को धोखा दिया । माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदिकों के साथ ठगी कर किसी को दिया । अथवा पूंजी अलहदी रखी । अमानत रखी हुई वस्तुसे इन्कार किया॥ किसी को हिसाब किताब में ठगा । पड़ी हुई चीज उठाई,

इत्यादि स्थूल अदत्तादानविरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अति-चार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

卐

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत के पांच अतिचार

"अप्परिग्गहियाइत्तर०"

परस्त्री गमन किया। अविवाहिता कुमारी, विधवा वेश्या आदिक से गमन किया। अनंगक्रीड़ा की। काम आदि की विशेष जाग्रति की। अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी चौदस आदि पर्व तिथि का नियम तोड़ा। स्त्री के अंगोपांग देखे तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चितवन किया। पराये नाते जोड़े। गुड्डे गुड्डियों का विवाह किया। कलेवा कराया। अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार स्वप्नांतरे हुआ। कुस्वप्न आया। स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिक से हास्य किया। स्वस्त्री में संतोष न किया, इत्यादि स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो,

वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

—*—

पंचमें स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत के पांचा अतिचार

"धण धन्नखित्तवत्थू०"

धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना, चांदी, वर्तन आदि द्विपद–दास, दासी, नौकर, चतुष्पद–गौ, बैल, घोड़ादि नव प्रकारे परिग्रह का नियम न लिया । लेकर बढाया अथवा अधिक देखकर मूर्छावश माता पिता पुत्र स्त्री के नाम किया ॥ परिग्रह का परिमाण किया नहीं । करके भुलाया । याद न किया । इत्यादि स्थूल परिग्रहण परिमाण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—*—

छट्ठे दिक् परिमाण व्रत के पांच अतिचार

"गमणस्सउपरिमाणे"

ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशि जाने आने के निय-

मित प्रमाण उपरांत भूल से गया। नियम तोडा। प्रमाण उपरांत सांसारिक कार्य के लिए अन्य देश से (स्थान से) वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहां भेजी। नौका जहाज आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षा काल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया। एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा में अधिक गया। इत्यादि छट्ठे दिकपरिमाण व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं॥

—※—

सातमें भोगोपभोग व्रत के भोजन आश्रित पांच और कर्म आश्रित पंद्रा अतिचार

"सच्चित्ते पडिबद्धे"

सचित्त खानपान की वस्तु नियम से अधिक अंगीकार की। सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ औषधि का भक्षण किया। अपक्व आहार दुपक्व आहार किया। कोमल इमली, बूंट, भुट्टे, फलियां आदि वस्तु खाई—" सचित्त १ द्रव्व २ विगई ३, वाणह ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७

बाहण ८ सयण ६ विलेवण १०, बंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ " ॥४॥ यह चौदह नियम लिए नहीं। लेकर भूले। वड़–पीपल, पिलखण, कठु'बर, गूलर, ये पांच फल मदिरा, मांस, शहद, मक्खन, ये चार महा विगई, बरफ, ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रि भोजन, बहुबीजा-फल, अचार, घोल-बड़े-द्विदल बैंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनंत-काय, ये बाईस अभक्ष्य, चूरन-जमीकंद, कच्ची हलदी, सता–वरी, कच्चा कचूर, अदरक, कुवांर पाठा, थोर गिलोह, लसन गाजर, गड्डा-प्याज, गांगलु, कोमलफल फूल, पत्र, थेगी, हरा मोत्था, अमृत वेल, मूली पदबहेडा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालु, आदि अनंत काय का भक्षण किया। दिवस अस्त होते हुए भोजन किया। सूर्योदय से पहले भोजन किया। तथा कार्मतः पंद्रह कर्मादान इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाड़ीकम्मे, फोडीकम्मे, ये पांच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्ख-वाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज ये पांच वाणिज्ज। जंत पिल्लण कम्म, निल्लंछनकम्म, दवग्गिदाव-णिया, सरदहतलावसोरुणया, असइपोरुणया, ये पांच सामा-न्य, एवं कुल कर्मादान महा आरम्भ किए, कराये, करते को अच्छा समझा। श्वान, बिल्ली आदि पोपे पाले। महासावद्य

पापकारी कठोर काम किया। इत्यादि सातमे भोगोपभोग व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥



आठमे अनर्थदंड के पांचा अतिचार

"कंदप्पेकुक्कुइए०"

कंदर्प-कामाधीन होकर नट, विट, वेश्या, आदिक से हास्य-खेल क्रीडा कुतूहल किया। स्त्री पुरुष के हावभाव, रूप शृंगार सम्बन्धी वार्ता की। विषयरस पोषक कथा की। स्त्री कथा, देशकथा, भक्तकथा, राजकथा, ये चार विकथाएं की। पराइ भांजघड़ की। किसीकी चुगलखोरी की। आर्त्तध्यान, रौद्र-ध्यान ध्याया। खांडा, कटार, कशि, कुहाडी, रथ, उखल, मूसल, अग्नि, चक्की, आदिक वस्तु दाक्षिण्यता वश से किसी को मांगी दी। पापोपदेश दिया। अष्टमी-चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा। मूर्खता से असम्बद्ध वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी तेल, दूध, दही, गुड,

छाछ, आदि का भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिका नाश हुआ। बासी मक्खन रखा और तपाया। न्हाते धोते, दातण करते, जीव आकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर, डंगर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा। किचकिची ली। ताडना तर्जना की। मत्सरता धारण की। शाप दिया। भैंसा, सांड, मेंढा, मुरगा, कुत्ते आदिक लड़वाये या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान् की ऋद्धि देख ईर्ष्या की। मिट्टी, नमक, धान, बिनोले बिना कारण मसले। हरी वनस्पति खुंदी। शस्त्रादिक बनवाये राग द्वेष के वश से एक का भला चाहा, एक का बुरा चाहा। मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेरे, चकोर आदि पक्षियों को पींजरे में डाला, इत्यादि आठमें अनर्थ दंड विरमण व्रत संबंधी, जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

-★-

नवमे सामायिक व्रत के पांच अतिचार

"तिविहे दुप्पणिहाणे०"

सामायिक में संकल्प-विकल्प किया। चित्त स्थिर न रक्खा। सावद्य वचन बोला। प्रमार्जन किए बिना शरीर हलाया, इधर उधर किया। शक्ति के होते हुए सामायिक न किया। सामायिक में खुले मुंह बोला। नींद ली। विकथा की। घर सम्बन्धी विचार किया। दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा। सचित्त वस्तु का संघट्टा हुआ। मुहपत्ति संघट्टी। सामायिक अधूरा पारा। बिना पारे उठा, इत्यादि नवमे सामायिक व्रत सम्बन्धी जो कोइ अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—★—

दशमे देशावकाशिक व्रत के पांच अतिचार

"आणवणे पेसवणे०"

आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ रुवाणुवाई बहिया

पुग्गलपक्खेवे"-नियमित भूमि में बाहिर से वस्तु मंगवाई। अपने पास से अन्यत्र भिजवाई। खुंखारा आदि शब्द करके रूप देखा के या कंकर आदि फैंककर अपना होना मालूम किया, इत्यादि दशमें देशावकाशिक व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—*—

ग्यारहवें पौषधोपवास व्रत के पांच अतिचार

संथारुच्चारविहि०

"अप्पडिलेहिअदुप्पडिलेहिअ-सिज्जा संथारए "अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि" पौषध लेकर सोने की जगह विना पूंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं। लघुनीति बड़ी नीति करने या परठने समय "अणुजाणहजस्सुग्गो" न कहा। परठे बाद तीन बार

"वोसिरेवोसिरे" न कहा। जिन मंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हूए "निसिही और बाहिर निकलते" आवस्सही" तीन बार न कही। वस्त्र आदि उपधि की पडिलेहणा न की। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टा हुआ। संथारा पोरिसी पढनी भुलाई। बिना संथारे जमीन पर सोया। पोरसी में नींद ली। पारना आदि की चिंता की। समय पर देववंदन न किया। प्रतिक्रमण न किया। पौषध देरी से लिया और जल्दी पारा। पर्व तिथि को पोसह न लिया; इत्यादि ग्यारहवें पौषध व्रत संबंधी जो कोइ अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥



बारहवें अतिथिसंविभाग व्रत के पांच अतिचार

"सचित्ते निक्खिवणे•"

सचित्त वस्तु के संघट्टवाला अकल्पनीय आहार पानी

साधु साध्वी को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कहा, देने की इच्छा से पराई वस्तु अपनी कही, न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कहा, न देने की इच्छा से अपनी वस्तु पराई कही। गौचरी के वक्त इधर उधर हो गया। गौचरी का समय टाला। बेवक्त साधुमहाराज को प्रार्थना की। आये हुए गुणवान् की भक्ति न की। शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को गिरता देख मदद न की। दीन दुःखीकी अनुकंपा न की इत्यादि बारहवें अतिथि संविभाग व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—※—

संलेषणा के पांच अतिचार

"इहलोए परलोए०"

इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे" कामभोगसंसप्पओगे। धर्मके प्रभावसे इसलोक

सम्बन्धी राजऋद्धि भोगादि की वांछा की। परलोक में देव देवेन्द्र, चक्रवर्त्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की वांछा की। कामभोग की इच्छा की; इत्यादि संलेषणा व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥



तपाचार के बारह भेदः छः बाह्य छः अभ्यंतर

"अणसणमुणोअरिया०"

अनशन-शक्ति के होते हुए पर्व तिथि को उपवास आदि तप न किया, ऊनोदरी-दो-चार ग्रास कम न खाये। वृत्ति संक्षेप द्रव्य-खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया। रस विगय त्याग न किया। कायक्लेश-लोच आदि कष्ट न किया। संलीनता अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाण तोडा। भोजन

करते समय एकासणा आंबिलप्रमुख में चौकी, पटडा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण पारना भूला। बैठते नवकार न पढ़ा, उठते पच्चक्खाण न किया। निविआंबिल उपवास आदि तप में कचा पानी पिया, वमन हुआ; इत्यादि वाह्य तप सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥



अभ्यंतर तप

"पायच्छित्तं विणओ०"

शुद्धांतःकरणपूर्वक गुरुमहाराज से आलोचना न ली। गुरु की दी हुई आलोचना संपूर्ण न की। देव गुरु संघ साधर्मी का विनय न किया। बाल वृद्ध ग्लान तपस्वी आदि की वैयावच न की। वांचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्म ध्यान, शुक्ल

ध्यान ध्याया नहीं। आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया। दुःख क्षय-कर्मक्षय निमित्त दशवीस लोगस्स का काउस्सग्ग न किया; इत्यादि अभ्यंतर तप सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥



वीर्याचार के तीन अतिचार

पढते, गुणते, विनय, वैय्यावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य में मन वचन काया का बलवीर्य पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदन की विधि भली प्रकार न की। अन्यचित्त निरादर से बैठा। देववन्दन प्रतिक्रमण में जल्दी की। इत्यादि वीर्याचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥



"नणाइ अट्ठ पइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु॥ बारस तव विरि अतिगं। चउव्वीसं सय अइयारा

"पडिसिद्धाणं करणे॰"

प्रतिषेध-अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीज भक्षण महारंभ-परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म सामायिकादि छ आवश्यक विनयादिक अरिहंत की भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की, अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा की। तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष कलह, अभ्याख्यान, पैशून्य, रति, अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्यः ये अठारह पाप स्थान किये, कराये, अनुमोदे। दिनकृत्य अतिक्रमण विनय-वैयावृत्य न किया। और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा के विरुद्ध किया, कराया, करते को भला जाना। इन चार प्रकार के अतिचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया

कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

एवं प्रकारे श्रावक धर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रत सम्बन्धी एक सौ चौबीस अतिचारों में से जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

—★—

"शत्रुंजय का रास"

(दोहा)

श्री ऋषहेसर पाय नमी । आणी मन आनंद । रासभणु रलियामणु सेत्रुंजेनुसुखकंद ॥ १ ॥ संवतचार सतोतरे । हुवा धनेसरसूर । तिणशेत्रुंज महातम कियो । शिलादित्य हजूर ॥ ॥ २ ॥ वीर जिणंद समोसरया । सेत्रुंज ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्यो । सेत्रुंजे महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो । नहि छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पाताल में । तीरथ सघला जोय ॥ ४ ॥ नामे नवनिधि संपजे । दीठां

दुरित पुलाय ।भेटतां भवभय टले । सेवतां सुख थाय ॥ ५ ॥
जंबूनामे दीप ए । दक्षिण भरत मझार । सोरठदेश सुहामणो
तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥



"ढाल-पहिली"

(रामगिरि-राग)

सेत्रुंजे ने सी पुंडरीक । सिद्र खेत्र कहुं तहतीक । विम-
लाचल ने करूं परणाम । ए सेत्रुंजे ना एकवीस नाम ॥ १ ॥
सुरगिरि ने महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्वत इंद्रप्रकाश ।
महातीरथ पूखेसुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतोपर्वत ने दृढ
शक्ति। मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति । पुष्फदंत महापदम सुठाम ।
ए०॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्रकेलाश । पातालमूल अकर्मकतास ।
सर्व काम कीजे गुण ग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्री सेत्रुंजेना एक-
वीस नाम। जपेज बेठा अपणे ठाम । सेत्रुंजे जात्रा नो फल लहे।
महावीर भगवंत इम कहे ॥ ५ ॥

(दोहा)

सेत्रु जो पहिले अरे। असीजोयणपरमाण। पिहुलोमूलऊंघे-पण। छव्वीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तर जोयण जाणवो। बीजे अरे विशाल। बीसजोयणऊंचो कह्यो। मुझ वंदण त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे। पिहुलो तीरथराय। सोल जोयण ऊंचो सही। ध्यान धरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण। चौथे अरे मझार। ऊंचो दश जोयण अचल। नित प्रण में नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे। मूलतणो विसतार। दो जोयण ऊंचो अछे। सेत्रु जो तीरथ-सार ॥ ५ ॥ सातहाथ छठे अरे। पिहुलो पर्वत एह। ऊचो होस्ये सोधनुष। सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

-★-

ढाल दूसरी

(जिनवर सुमेरो मन लीणो)

केवलज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर। अनंत सीध इण ठामरे॥
अनंतबली सीध से इण ठामे। तिण करूं नित परणाम रे

॥ १ ॥ सेत्रुं जे साधु अनंता सीधा । सीझसी वलीय अनंतरे । जिण सेत्रुं ज तीरथ नहीं भेट्यो । ते गरमावास कहंत रे । सेत्रुं जा ॥ २ ॥ फागुण शुद्धि आठम ने दिवसे । ऋषभदेव सुखकार रे । रायणरूंख समोसर्या स्वामी । पूरव निनाशं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पूनम दिन । इण सेत्रुं जगिरि आय रे । पांच कोडी सुं पुंडरीक सीधा । तिण पुंड-रीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राज विद्याधर । वे वे कोडी संघात रे । फागुण सुद्दि दसमी दिन सीधा । तिण प्रणमुं परभात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्र मास वदि चउदस ने दिन । नमिपुत्री चौसठि रे । अणसण करी सेत्रुं जे गिरि ऊपर । ए सहुसीधा एकट्ठ रे ॥ से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा । द्राविड ने वारिखिल्ल रे ॥ कार्तिक शुद्धि पूनम दिन सीधा । दस कोडी सुं मुनि शिल्लरे ॥ से० ॥ ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इणगिरि सीधा । नवनारद ऋषिराय रे । संब प्रद्युम गया इहां मुगते । आठे करम खपाय रे ॥ से० ॥ ॥ ८ ॥ नेमि विना तेवीस-तीर्थंकर । समोसरया गिरि शृंग रे । अजित शान्ति-तीर्थंकर वेउं । रह्या चौमासो रंग रे ॥ ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस्र साधुपरिवार संघाते । थावच्चा सुख

साधरे। पांच से साधु सुं सेलग मुनिवर सेत्रुजे शिवसुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंजे सीधा। भरतेसर ने पाटरे। रामअने भरतादिक सीधा। मुक्ति तणी ए घाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमयाली ने उवयाली। प्रमुख साधुनी कोडी रे। साधु अनंता सेत्रुंजे सीधा। प्रणमुं बेकर जोडी रे ॥ से० ॥ १२ ॥



ढाल-तीसरी

(चौपाई)

सेत्रुंजे नाकहुं सोल उद्धार। ते सुणिज्यो सहुको सुविचार। सुणतां आणंद अंग न माय। जनम जनम ना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभ देव अयोध्यापुरी। समवसर्या स्वामी हितकरी। भरत गयो वंदण ने काज। ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहंतदेव। चौसठ इन्द्र करे जसु सेव। तेह थी मोटो संघ कहाय। जेहने प्रणमें जिन-

वर राय ॥ ३ ॥ तेह थी मोटो संघवी कह्यो । भरत सुणी ने मन गहगह्यो भरत कहे ते किम पामिये । प्रभु कहे सेत्रु जे जात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवी पद मुझ । थे आपो हुं अंगज तुझ । इंद्रे आण्या अक्षतवास । प्रभु आपे संघवी पदतास ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल । भरत सुभद्रा बिहुं ने माल । पहिरावी घर सप्रेडिया । सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेव नी प्रतिमा वली । रत्नतणी दीधी मनरली । भरते गणधर घर तेडिया । शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकेत्री मूकी सहु देश । भरत तेडायो संघ अशेष । आयो संघ अयोध्यापुरी । प्रथम थकी रथ जात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भगति कीधी अति घणी । संघ चलायो सेत्रुंजा भणी । गणधर बाहुबल केवली । मुनिवर कोडि साथे-लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तीनी स्त्री सगली रिद्धि । भरत साथे लीधी सिद्धि । हयगय रथ पायक परिवार । तेतो कहतो नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय । मारग चैत्य उधर तो जाय । संघ आयो सेत्रुंजे पास । सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजेराय । मणि माणक मोत्यां सुबधाय । तिन टामे रही महोच्छव कियो । भरते

आणंदपुर वासियो ॥१२॥ संघ सेत्रु जे ऊपर चढ्यो। फरसंता पातिक झड पड्यो । केवल ज्ञानी पगला तिहां 'प्रणम्यारा-यण रूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त । ईशानेंद्र आणी सुपवित्त । नदी सेत्रु जे सोहामणी । भरते दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणो उपदेश । इंद्र वली दीवो आदेस । श्री आदिनाथ तणो देहरो । भरत करायो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग । रतनतणी प्रतिमा मनरंग । भरते श्री आदीसरतणी । प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा भली । माही पूनिम थापि रली । ब्राह्मी सुंदरी प्रमुख प्रासाद । भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्रासाद । भरत कराया गुरु सुप्रासाद । भरत तणो पहिलो उद्धार । सगलो ही जाणे संसार ॥ १८ ॥



"ढाल-चौथी"

(सिधूडो-आसाउरी)

भरततणे पाटे आठमे । दंडवीरज थयो रायो जी । भरत

तणीपर संघ कियो । सेत्रु ज संघवी कहायोजी (सेत्रु जे उद्धार सांभलो-टेक०) ॥ १ ॥ सोल मोटा श्री कारोजी । असंख्यात बीजा वली । तेहनो कहु अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो । सोनानो बिंब सारोजी । मूलगो बिंब भंडारियो । पच्छिम दिशि तिणवारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रु जे नी यात्रा करी । सफल कियो अवतारो जी । दंडवीरज राजा-तणो ए । बीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥४॥ सोसागरोपम व्यतिक्रम्या । दंडवीरज थी जिवारो जी । इशानेंद्र करावीयो । ए-त्रीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥

चोथा देवलोक नो धणी । माहेन्द्र नाम उद्धारो जी । तिण सेत्रु जे नो करावीयो । ए चोथो उद्धारो जी ॥से० ॥६॥ पांचमा देवलोक नो धणी । ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी । तिण सेत्रु जे नो करावियो । ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपति इन्द्र ने कियो ए । छट्ठो उद्धारोजी । चक्रवर्त्ती सागर तणो कियो । ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदनपासे सुण्यो । सेत्रु जे नो अधिकारो जी । व्यंतर इन्द्र

करावियो । ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ चंद्र प्रभु स्वामि नो पोतरो । चंद्रशेखर नाम मल्हारोजी । चंद्र जस राय करावियो । ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांति-नाथ नी सुणीं देशना । शांतिनाथ सुत सुविचारो जी । चक्र-धर राय करावियो । ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जगदीपतो । मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी । श्री रामचन्द्र करावियो । ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥१२॥ पांडव कहे अम्हे पापीया । किम छुटां मोरी मायोजी । कहे कुंती सेत्रुंजतणी । यात्रा कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी । सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी । काष्ट चैत्य बिंब लेपना । ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणीपाषाणनी । प्रतिमा सुंदर सरूपोजी । श्रीसेत्रुंजो संघ करी। थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अट्ठोत्तर सो वरसां गयां । विक्रम नृप थी जिवारोजी । पोरवाड जावड करावियो । ए तेरमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १६ ॥ संवत् बार तिडोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे मुहते करावियो । ए चौदमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत् तेर इकोत्तरे । देसल हर अधिकारो जी । समरे साह करावियो । एप नरमो

उद्धारो जी ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत् पनर सत्यासीये । वैसाख वदि सुभवारो जी । करमें डोसी कराविये । ए सोलमो उद्धारो जी ॥१९॥ संप्रति काले सोलमो । ए वरते छे उद्धारो जी । नितनित कीजे वंदना । पामीये भवपारो जी ॥से०॥२०॥



(दोहा)

वलि सेत्रुंज महातम कहुं । सांभलो जिमछे तेम । सूरि-धनेसर इम कहे । महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी । सेत्रुंजे पूजनिक । भगवंत नो वेस वांदतां । लाभ हुए तहतीक ॥२॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे । चैत्य करावे जेह । दल परमाण समोलहे । पल्योपम सुखतेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो । नवो नीपावे कोय । जिर्णोद्धार करावतां । आठगुणो फल होय ॥४ ॥ सिर उपरी गागर धरी । स्नात्र करावे नार । चक्रवर्त्तीनी स्त्री थइ । शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काति पूनम सेत्रुंजे । चढिने करे उपवास । नारकी सो सागर समो । करे करमनो नाश ॥ ६ ॥ कातिपख मोटोकह्यो । जिहां सिधा

दशक्रोड़ । ब्रह्म स्त्री वालक हत्या । पापथीनाखे छोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी । भोजन पुन्य विशेप । सेत्रु'जे साधु पडिलाभतां । अधिको तेहथी देख ॥८॥



ढाल-पांचमी

(धन धन व अयवंती सुकुमालने—ए देश)

सेत्रु'जे गयां पाप छुटीये । लीजे आलोयण एमो जी । तप जप कीजे तिहां रही 'तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चौरी करी । ए आलोयण तासोजी । चैत्री दिन सेत्रु'जे चढी । एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चौरी करी । सात आंबिल सुध थायो जी । काती सात दिन तप कियां । रतन हरण पाप जायोजी ॥ से० ॥ ३ ॥ कांसी पीतल तांबा रतन नी। चौरी कीधी जेणोजी। सात दिवस पुरमढ करे । तो छुटे गिरि एणो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मू'गीया । जिण चौर्या नर नारोजी । आंबिल करी पूजा करे । त्रण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ धान पाणी रस

चोरिया। जे भेठे सिद्ध चेत्रोजी। सेत्रुंज तलहटी साधुने। पडिलाभे सुध चित्तोजी ॥ से०॥ ६॥ वस्त्राभरण जिणें हर्या। ते छुटे इणमेलो जी। आदिनाथ नी पूजा करे। प्रह उठी वहुवेलोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरु नो धन जे हरे। ते शुद्ध थाये एमो जी। अधिको द्रव्य खरचे तिहां। पात्र पोपे वहु प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा मही। गजनो चोरणहारोजी। दीये ते वस्तु तीरथे। अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका। तिहां लिखे आपणो नामो जी। छुटे छम्मासी तप कियां। सामायिक तिण ठामोजी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजका। सधव अधव गुरु नारोजी। व्रत भांजे तिणने कह्यो। छम्मासी तप सारो जी ॥से० ॥ ११ ॥गौ विप्र स्त्री वालकन्नपि। एहनो घातक जेहोजी। प्रतिमा आगे आलोवतां। छूटे तप करी तेहो जी ॥ से० ॥ १२॥

ढाल-छट्ठी

(कुंमर भले आवीयो-ए देशी)

संप्रतिकाले सोलमो ए। ए वरते छे उद्धार। सेत्रुंजयात्रा करूं ए सफल करूं अवतार ॥ से० ॥ १ ॥ छहरीपालतां चालिये ए। सेत्रुंज केरीवाट ॥से०॥ पालीताणे पोहच्चिये ए। संघ मिल्या बहु थाट ॥से०॥२॥ ललित सरोवर पेषीये ए। वली सत्तानी वाव ॥ से० ॥ तिहां विसरामो लीजियेजी। वडने चौतरे आय ॥ से० ॥३॥ पालीताणे पाजडी ए। चढिये ऊठी परभात। ॥ से० ॥ सेत्रुंज नदीय सोहामणी ए। दूर थकी देखंत ॥ से ॥ ४ ॥ चढ़िये हिंगुलाजने हडे ए। कलिकुंड नमीये पास ॥ से० ॥ बारी मांहे पेसीये ए। आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ॥ ५ ॥ मरुदेवी टूंक मनोहरू ए। गज चढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिन सोलमाए। प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडे परगडो ए। सोमजी साह मल्हार ॥ से० ॥ रूपजी संघवी कराविये ऐ। चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ चौमुख प्रतिमा चरविये ए। भमती मांहि भला बिंब। पांचे पांडव पूजियो ए। अद्भुत आदि प्रलंब ॥ से० ॥ ॥ ८ ॥ खरतखसही खां तिसुए। बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमीनाथ चवरी नमुं ए। टालूं अलग उद्वेग

॥से०॥६॥ धरमदुवार मांहेती सरू ए। कुगति करू अति दूर ॥ से० ॥ आगु आदिनाथ देहरे ए। करम करू चकचूर ॥से०॥ १० ॥ मूल नायक प्रणमु मुदाए। आदिनाथ भगवंत ॥ से० ॥ देव जुहारू देहरोए । भमति मांहि भमंत ॥ ॥ से० ॥ ११ ॥

सेत्रु जे ऊपर कीजिये ए । पांचे ठाम सनात्र ॥ से० ॥ कलश अठोत्तर सोकरिए। निरमल नीरसु गात्र ॥से०॥१२॥ ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए । पुंडरीक गण-धार ॥ से० ॥ रायण तल पगला नमुं ए। चौमुख प्रतिमा चार ॥ से० ॥ वीज भूमि विवावलि ए। पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरज कुंड निहालिये ए। अति भली उलका झोल ॥ से० ॥ चेलणा तलाई सिद्व सिलाए। अंग-फरसुं उल्लोल ॥से०॥१५॥ आदिपुर पाजे उतरूं ए। सिद्ध-वडलुं विसराम ॥ से० ॥ चैत्य प्रवाह इण परि करीए। सीधा वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंज तणीए सफल कियो अवतार ॥ से० ॥ कुसल खेम सुं आवियो ए। संघ सहु परिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंज । रास सोहामणो ए। सांभलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ घर वेठां, भणे भावसुं

ए । तसु जात्रा फल होइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत् सोलवया सीये ए । सावण वदि सुखकार ॥ से० ॥ रास भण्यो सेत्रुंज तणो ए । नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १६॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए । श्री जिनचंद सूरीस ॥ से० ॥ प्रथम शिष्य श्री पूजनाए । सकल चन्द सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ तास सीस जग जाणिये ए । समय सुन्दर उवज्झाय ॥ से० ॥ रास रच्योतिण रूवडोए । सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥



श्री गौतम स्वामी का रास

वीर जिणेसर चरणकमल कमलाकय वासो । पणम-विपभणिसु साम साल गौतम गुरु रासो । मणतणु वयणेएकंत करविनिसुणहु भो भविया । जिमनिवसे तुम देह गेह गुण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिभरहखित्त खोणी तल मंडण मगह देस सेणिय नरेस रिउदल बल खंडण । धणवर गुव्वर

ग़ाम नाम जिहां गुण गण सज्जा । विप्प वसे वसु भूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्र सिरि इन्द भूइ भूवलय पसिद्धो । चवदह विज्जा विविह रूप नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर । सात हात सुप्रमाण देह रुवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि पंकज जल पाडिय । तेजहिं ताराचंद सूरिआकास भमाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय । धीरम मेरूगंभीर सींधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखविनिरूवम रूवजास जण जंपे किंचिय । एकाकी किल भीत्त इच्छ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय । रंभा पउमागवरी गंग रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध-नव गुरू कविण कोय जसु आगल रहियो । पंचसया गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो । करय निरन्तर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय । अणचल होसे चरण नाण दंसणह विसोहिय ॥६॥ (वस्तु) जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि खोणी तल मंडण । मगह देस सेणिय नरेसर वरगुव्वर गाम तिहां विप्प वसेवसभुइ । सुन्दर तसु पुहवि भज्जा सयल गुणगण रुवनिहाण । ताण पुत्त विज्जानिलो गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ (भास) चरम जिणेसर केवलनाणी । चोविह संघ पइठ्ठा जाणी। पावा पुर सामी संपत्तो । चउविह देव निकायहि जुत्तो ॥ ८ ॥

देवहि समवसरण तिहां कीजे । जिण दीठे मिथ्या मत छीजे । त्रिभुवन गुरू सिंहासन बैठा । ततखिण मोह दिगंत पइठ्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा । जाये नाठ्ठा जिम दिन चौरा । देव दुंदुभी आगासे वाजी । धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १०॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा । चउसठ इन्द्रज मागे सेवा । चामर छत्र शिरोवरि सोहे । रूवहिजिन वर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रस भर वर वरसंता । जोजनवाणि वखाण करंता । जाणवि वर्द्धमान जिण पाया । सुरनर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जल हलकंता । गयण विमाणहि रणरणकंता । पेखवि इन्दभूइमन चिंते । सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम तेवहिता । समवसरण पुहता गहगहिता । तो अभिमाने गोयम जंपे । इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४॥ मूढालोक अजाणयु बोले । सुर जाणंता इम कांइ डोले । मोह आगल कोइ जाण भणीजे । मेरू अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ ॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीर जिणवर नाण सम्पन्न पावापुर सुरमहिय । पत्तनाह संसारतारण तिहि देवइ निम्महिय । समवसरण बहु सुक्खकारण जिणवर जग उज्जोय करे । तेजहि कर दिन

कर सिहासन सामी ठव्यो हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ (भाम) तो चढियो घणमाण गजे इन्द भूय भूय देवतो । हूँकारो कर संचरिय कवणसु जिणवर देवतो । जोजन भूमि समवसरण पेखवि प्रथमारंभतो । दह दिशि देखे विबुधवधु आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज कोसीसे नवघाट तो । वयर विवर्जित जंतुगण प्रातिहारिज आठतो । सुरनर किन्नर असुरवर इन्द्र इन्द्राणी राय तो । चित्त चमकिय चितव ए । सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीर जिण पेखिअरूपविसालतो । एह असंभव संभव ए । सांचो ए इन्द्रजाल तो । तो बोलावइ त्रिजग गुरू । इन्द्र भूइ नामेण तो । श्री मुख संसा सामि सवे । फेडे वेद पाएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे । भगतहि नाम्यो सीस तो । पंच सयासु व्रत लियो ए । गोयम पहिलो सीस तो । बंधव संजम सुणवि करे । आगनि भूइ आवेय तो । नाम लेई आभास करे । ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण थाप्या वीर इग्यार तो । तो उपदेशे भुवन गुरू संयमसुव्रत वार तो । बिहुं उपवासे पारणो ए । आपणपे विरहंत तो । गोयम संयम जग सयल । जयजयकार करंत तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहुमान ।

हुँकारो करि कंपतो । समवसरण पहुँतो तुरंतते । जे जे संसा-
सामि सवे । चरमनाह फेडे फुरंततो । वोधवीज सज्जायमने ।
गोयमभवहि विरत्त।दिक्ख छेई सिक्खा सही। गणहर पय संपत्त
॥ २२ ॥ (भास) आज हुओ सुविहाण । आज पचेलिमां
पुण्य भरो । दीठा गोयम सामि। जोनिय नयणे अमिय झरो।
समवसरण मझार । जे जे संसा ऊपजे ए । ते ते पर उपगार
कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजे दीख ।
तीहां तीहां केवल उपजे ए । आप कने अणहुँत । गोयम दीजे
दान इम । गुरु उपर गुरु भक्ति । सामि गोयम ऊपनिये। अण-
षल केवल नाण । रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा-
पद सेल । वंदे चढ चउवीस जिण । आतम लब्धि वसेण ।
चरम सरीरी सोज मुनि । इय देसणा निसुणेह । गोयम गण-
धर संचरिय तापस पन्नरसएण । जो मुनि दीठो आवतो ए
॥ २५ ॥ तप सोसिय नियअंग । अम्हां सगति न उपजे ए ।
किम चढसे दृढ काय । गजजिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए
अभिमान । तापस जो मन चिंतवेए । तो मुनि चढियो वेग ।
आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचन मणि निप्पन्न ।

दंड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमाणंद । जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाणें । चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पणमवि मन उल्लास । गोयम गणहर तिहां । वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव। तिर्यकजृंभक देव तिहां। प्रतिबोध्या पुंडरीक । कुंडरीक अध्ययन भणी । वलता गोयम सामि । सवि तापस प्रतिबोध करे । लेई आपणसाथ । चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण । अमिय वूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र करावे पारणों सवे । पंचसयां शुभ भाव । उज्जल भरियो खीर मिसे । सांचा गुरु संयोग । कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंच सया जिणनाह । समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोय करे । जाणे जणवि पीयूप । गाजंती घन मेघ जिम । जिनवाणी निसुणेवि । नाणी हुवा पंचसया ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण । पन्नरेसे उपन्न परिवरिय । हरिदुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवी जगगुरु वयण । तिहिं नाण अप्पाण निंदइ । चरम जिनेसर इम भणे । गोयम म करिस खेव । छेह जाय आपण सही । होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ (भास) सामियो ए वीर जिणंद । पूनमचंद

जिम उल्लासिय । विहरियो ए भरहवासंमि । वरस बहुत्तर संवरिय । ठवतो ए कणय पउमेण । पापकमल संघे सहिय । आवियो ए नयणाणंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोध करे । आपणो ए त्रिसलादेवि। नंदन पुहतो परमपए ।वलतो ए देव आकाश। पेखवि जाणयो जिणसमे ए । तो मुनि ए मन विखवाद । नादभेद जिम उपनों ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामियदेखी आपकनासु टालियो ए । जाण तो एतिहुअण नाह लोक विवहार न पालियो ए । अति भलो ए कीधलो सामि जाणयो केवल मांग से ए । चिंतव्यो ए वालक जेम अहवा केडे लाग से ए ॥३४॥ हुँ किम ए वीर जिणंद भगतहि भोले भोलव्यो ए । आपणो ए उंचलो नेह नाह न संपे सांचव्यो ए । सांचो ए ए वीतराग नेह नहेजे लालीयो ए । तिण समे ए गोयम चित्त राग वैरागेवालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट रहितो रागे साहियो ए । केवल ए नाण उप्पन्न गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअण ए जयजयकार केवल महिमा सुर करे ए । गणधरूं ए करय वखाण भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ (वस्तु) पढम गणहर पढम गण-

हर वरस पचास गिहवासे संवसिय तीस वरस संजम विभूसिय सिरे केवलनाण पुण वार वरस तिहुअण नमंसिय राजगृही नयरी ठव्यो वाणु वइ वरसाउ सामी गोयम गुणनिलो होसे सिवपुर टाउ ॥ ३७ ॥ (भास) जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमावन परिमल महके जिम चंदन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहिरयां लहके जिम कणयाचल तेजे झलके तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा । जिम सुरतरुवर कणयवतंसा जिम महुयर राजीववने । जिम रयणायर रयणे विलसे जिम अम्बर तारागण विकसे । तिम गोयम गुरुकेल वने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे । सुरतरु महिमा जिम जंग माहे पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम गिरिवर राजे नरवइ घरे जिम मेघल गाजे । तिम जिन शासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे शाखा । जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा जिम वन केतहिं महमहे ए । जिम भूमिपति भुयवल चमके जिम जिन मन्दिर घंटा रणके । गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणिकर चढियो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज । कामकुंभ सहुवशि हुआ ए । कामगवी पूरे मनकामी अष्टमहा–

सिद्धि आवे थामी । सामी गोयम अणुसरीए ॥ ४२ ॥ पण-
वक्खर पहिलो पभणीजे माया बीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमति
सोभा संभवेए । देवांधुर अरिहंत नमीजे विनय पहु उवज्झाय
थुणीजे । इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां
काय करीजे । देस देशांतर काय भमिजे कवण काज आभास
करो । प्रह उठी गोयम समरीजे । काज समग्गल ततखिण
सीझे नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदय सयबा-
रोत्तर वरसे । गोयम गणहर केवल दिवसे कियो कवित्त
उपगार परो । आदहि मंगल एम भणीजे । परम महोच्छव
पहिलो दीजे । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो । ॥ ४५ ॥ धन
माता जिण उयरे धरियो धन्य पिता जिण कुल अवतरियो
धन्य सुगुरु जिणदीक्खियो ए । विनयवंत विद्या भण्डार ।
तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार वड जिन साखा विस्तरो ए ।
गोयम स्वामी नो रास भणीजे । चउविह संघरलियायत कीजे
रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडो दिव-
रावो माणक मोतीना चोक पूरावो । रयणसिंहासण बेसणोए
तिहां बैठी गुरु देशना देसी भविक जीवना काज सरेसी ।

नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥



–० श्री गौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवन ०–

(दूहा)—वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात ।
पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥
नारंगे अणहिलपुरे अहमदावादे पास। गौडीनो धणी जागतो,
सहुनी पुरे आस ॥ २ ॥ शुभवेल शुभदिन वडी, मुहुरत एक
मण्डाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्टा जाण ॥ ३ ॥
(ढाल) ॥—गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत
साचोजी । धणकण कंचन मणि माणक दे, गौडीनो धणी
जाचोजी (गु०) ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा,
तुरक तणेघर हुँती जी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी
वालि विगूती जी (गु०) ॥ ५ ॥ जागंतो जक्ष जेहनें कहियें
सुहणो तुरकनें आपेजी । पासजिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक
तुझ संतापेजी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेवा

गोठी ने देजे जी । अधिक मलेजे ओछो मलेजे, टका पांच सै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरडीस, मोरबंध बंधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लाछि धणी घर जास्यै जी (गु०) ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझने मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चढेया, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥ ९ ॥ दूहा—मनसुं बीहनो तुरकडो माने वचन प्रमाण, बीबी ने सुहणा तणो, संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने बड़ा देव है कोय । अवसताव प्रकट करो । नहीतर मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछली रात परोडीयै, पहेली बांधै पाज । सुहणा मांहे से ने, संभलावै जच्च राज ॥ १२ ॥ (ढाल)—एम कहीं जच्च आयो राते, सारथवाहने सुहणैं जी । पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०) ॥१३॥ पांच सै टक्का-तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहुँ-चाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारै जी (एम०) ॥ १४ ॥ तुझ ने होसी बहुफलदायक, भाई गोठी ने सुणजै जी । पूजीस प्रण-मीश तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजें जी (एम०) ॥ १५ ॥ सुहणी देईने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुँतो जी । पाटण

मांहे सारथवाह, हींडे तुरक ने जोतो जी (एम०) ॥ १६ ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडै जी। संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु लाडै जी (एम०) ॥ १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझने आपु', पास जिनेसर केरी जी। पांच से टका जो मुझ आपै, मौल न मांगु फेरी जी (एम०) ॥ १८ ॥ नाणोदेई प्रतिमा लेई, थानक पहुँतो रंगेजी। केसर चन्दन मृगमद घोली, विधिसु' पूजा रंगें जी (एम०) ॥१९॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्या परिकर मांहें, श्रीसंघ ने सुर साखै जी (एम०) ॥२०॥ उच्छव दिन दिन अधिका थावे, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम ठाम ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (एम०) ॥ २१ ॥

(दोहा)—एक दिन देखे अवधि सु', परिकर पुरनो भङ्ग। जतन करू' प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेटने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्यैं अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुँचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां अछै तुमने मुझने जाणि। संका छोडी काम करि, करतो मकरि

संकाणि ॥ २४ ॥ (ढाल)—पास मनोरथ पुरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरे । परिकरथी परियाणो करै. एक थल चढि बीजो उतरे ॥ २५ ॥ च्यार कोस आव्या जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतलें । गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावु सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यैं किहां सिला-वटो किम आवे इहां । चिन्तातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी ने कहे ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारी ने ठाणि, पाहण तणी उल्लटस्यैं खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जल नीसरसी कूओ । खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छैं नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै, कोढ पराभवियो किमसिसे । तिहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो सिलावट ने सुहणो दियो । रोग गमीने परूं आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो ते वैण, हेम वरण । गोठी मनह मनोरथ हुवा, सिलावट ने गया

तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड, घृत चूरमो । घडैं घाट करैं कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंम थंम कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्ग मण्डप रलियामणों रसै, जोतां मानव नो मन वसै॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास। दिवस विचारी इंडो घंड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बेठा श्रीपास । महिमा मोटी मेरू समान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं सांभली, लवन मांहि सूधी सांकली । गोटी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परणे पछैं ॥ ३८ ॥ (दोहा)—विघन विडारन यच्छ जगि, तेहनो अकल सरूप। प्रीत करे श्रीसंघ ने, देखाडै निज रूप ॥ ३६ ॥ गिहओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । संनिध करैं श्रीसंघ ने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणैं नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल)—वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने

धरि धननो गुन. आपे अपुत्रीया ने पुत्र। कायर ने सुगापण धरें. पार उतारें लच्छी वरें ॥ ४३ ॥ दो भागीन दे सोभाग. पग विहूणा ने आपे पग । ठाम नहीं तेहने द्यें ठाम, मन-वंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार. भव-सागर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरें ध्यान ते लहें सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्यो सहाय दीये यक्षराज, तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगा मैं दे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखिया ने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार । बंधन तूटे बेडी तणा, श्री पार्श्वनाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥

(दूहा)—

श्री पार्श्वनाम अक्षर जपें, विश्वानर विक-राल । हस्ति जूथ दूरे टले, दुद्धर सिंह सियाल ॥४८॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार । विषधरनो विष ऊतरे संग्रामें जय जयकार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानीचाल)—उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग

व्यंतर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं०)॥५१॥ दुद्धरा रोग सोग जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते ।गर्भवन्धन वणं सर्प,विच्छू,विपं, चालिका वालमेवा भ्रखंते(उं.)॥५२॥ सारणी डाइणी रोहिणी रंकिणी, फोटका मोटका दोंप हूंते। दाढ उंदरतणी कोल,नोला तणी,श्वान सीयाल विकरालदंते(ॐ.)॥५३॥ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतै लखमी लीला मिलैं सुजस वेला उलैं, सयल आस्या फलैं मन हसंतै (ॐ०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरैं कान्न पीडा-टलै, उतरै सूल सीसग भणंते । वदन वर प्रीत सुं प्रीतिविमल प्रभु, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै ॥ (उंजितु) ॥ ५५ ॥

—※—

॥ पद्मावती-आलोयण स्तवन ॥

हिवे राणी पदमावती । जीवराशि खमावे । जाण पणुं जग ते भलुं । इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं । अरिहंत नी साख । जे मैं जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणां । साते अपकाय । सात लाख तेऊ काय ना । साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥

दश प्रत्येक वनस्पति । चउदह साधार ॥ बीती चउरिंद्रिय जीवना । बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी । चार चार प्रकासी । चउदह लाख मनुष्यना । ए लाख चउरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥

इणभव परभव सेवियां । जे पाप अढार । त्रिविध त्रिविधकरी परिहरुं । दुरगति ना दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी । बोल्या मृषावाद । दोपअदत्तादानना । मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो । किधा क्रोध विशेष । मान माया लोभ मैं किया । वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८॥ कलह करी जीव दूहव्यां । दिधां कूडा कलंक । निंदाकिधी पारकी । रति अरति निःशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी खाधी चोंतरे । किधो थापण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकी ने भवे मैं किया । जीवना वधघात । चिडीमार भवे चिडकलां । मार्या दिन रात ॥ ते० ॥ ॥ ११ ॥ माछीगर भवे माछलां । झाल्या जलवास । धीवर भील कोली भवे । मृग मार्या पास ॥ ते०॥ ॥ १२ ॥ काजी मुल्ला ने भवे । पढी मन्त्र कठोर । जीव अनेक जवै किया । किधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोट-

वाल ने भवे मैं किया । आकरा कर दंड । वंदीवान मरविया कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामी ने भवे । दीधां नारकी दुक्ख । छेदन भेदन वेदना । ताडना अति तिक्ख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभार ने भवे मैं किया । निम्माह पचाव्या ॥ तेली भव तिल पिलीया । पापे पेट भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली ने भव हल खेडिया । फाड्यां पृथिवीना पेट । सूड निदान घणां कियां । दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ माली ने भवे रोपियां । नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूलनां। लाग्या पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाइ याने भवे । भर्या अधिका भार । पोठी ऊंट कीडा पड्या । दया नावी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतर्या । कीधां रंगण पास । अगनि आरम्भ किया घणा । धातुर्वाद अभ्यास॥ते०॥ ॥ २० ॥ सूरपणे रण झूंझता । मार्यां माणस वृंद । मदिरा मांस मच्छ्या घणां । खाधा मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी । पाणी ऊलंच्या । आरम्भ कीधा अति घणां । पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥२२॥ अंगार कर्म किया वली । घर में दव दीधां । सुंस लेई वीतरागना । कूडा को राज पिधा ॥ ते० ॥२३॥ बिल्ली भव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे । मैं जूं लीख मारी ॥ते०॥२४॥

भाडभूंजा तणे भवे । एकेन्द्रिय जीव । ज्वारी चिणा गहुँ सेकिया । पाड़ंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना । आरम्भ अनेक । रांधण इंधण अगनि । किया पाप उद्वेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार किधी वली । सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग कराविया । रोदन विषवाद ॥ते०॥२७॥ साधु अने श्रावक तणां । व्रत लेई भांग्यां । मूल अने उत्तर तणा । दूषण मुझ लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विच्छु सिंह चीतरा, शिकरा ने शमली । हिंसक जीव तणे भवे । हिंसा किधी सबली ॥ ते० ॥ २६ ॥ सूआ वडे दूषण घणां । वली गरभ गलाव्यां । जीवाणी ढोल्यां घणां । शीलव्रत भंजाव्यां ॥ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां । किधां कुटुम्ब संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं । तिणसुं प्रतिबन्ध ॥ते०॥३१॥ भव अनंत भमतां थकां । किधां परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं । तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ इण भव परभव इण परे । किधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं । करूं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३३ ॥ राग वैराडी जे सुणें । ए त्रीजी ढाल । समय सुंदर कहे पाप थी । छूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३४ ॥

—*—

श्री दादासा जिनदत्त सूरि अष्टकम्

नमाम्यहं श्री जिनदत्तसूरिं गुणाकरं किन्नर पूज्यपादम् ।
यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं लावण्यगात्र बहुसौख्यकारम् ॥१॥

भूपानरा ये प्रणमंति नित्यं तेषां मनीषां सफली करोतिः।
लक्ष्मीर्यशो राज्यरतिं प्रसूते विद्यावरं श्री ललना सुखानि ॥२॥

भक्त्या नरा ये तव पादसेवां कुर्वन्ति सत्पुत्र लभंत एव ।
न दुःख दौर्भाग्यभयं न मारिः स्मरंति ये श्री जिनदत्तसूरिम्
॥ ३ ॥

कविः स्वबुद्ध्या गुरुसंनिभोपि कस्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थः ।
तथापि त्वद्भक्तिरतो मुनींद्र करोमि किंचिद् गुण वर्णनं ते ॥४॥

महार्णवे भूधरमस्तकेपि स्मरंति ये श्री जिनदत्त सूरिम् ।
सुखैः सहायांति जनाः स्वधाम्नि ततोभदंतं प्रणमामि कामम् ।
॥ ५ ॥

जैनाब्ज संबोधन पूर्णचन्द्रः सत्सेवकेकामित कल्पवृक्षः ।
युगप्रधानं स्तुतसाधु सूरिं सूरीश्वरं श्री जिनदत्त सूरिम् । ॥६॥

न रोग शोकारिपु भूतयक्षाः न वा ग्रहाः राक्षस देव रोषाः ।
न पीडयंते तवनाम मंत्रा त्तस्मान्नराणां शिवदायकस्त्वम् ॥७॥

इदं गुरोरष्टकमुत्तमं यः प्रभातकाले पठते सदैव ।
किं दुर्लभं तस्य जगत्त्रयेपि सिध्यन्ति सर्वाणिसमीहितानि ॥८॥

श्री कुशल गुरुदेव-स्तुतिः

सुखं सर्वा संपद् वसति पदयोर्यस्य वदने।
विनिद्रा वागीशा हृदयकमले संविदधिकम् ॥
विरागः सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद् भक्तिरनिशम्।
समृद्धयर्थं वंदे कुशलगुरु देवस्य चरणौ ॥१॥

निशिस्वापाधीनं निशदिनमधीनौ समयीनां।
परंवाणी लंच्म्यो निलियम पितद्दाननिपुणौ ॥
सदायौ वर्त्तेते जयत इव पाथोज युगुलं।
समृद्धयर्थं वंदे कुशलगुरु देवस्य चरणौ ॥२॥

क्षिपंतौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यौ मृदुलयो।
जंपापुष्पा भासोः किशलय जिताशेष महसोः ॥
लसल्लेखा लक्ष्म प्रकटितपरा श्री सदनयोः।
समृद्धयर्थंवंदे ॥ ३ ॥

सुरेभ्यः स्वस्थेभ्यः कतिपय दिनैर्यः फलमथो।
कदाचिद्दतद्राकश्रिय मपिदरिद्राय परमाम् ॥
सुरद्रु त्यत्कोपास तइति वुधौ यौ श्रुविगतौ,
समृद्धयर्थं वंदे ॥ ४ ॥

सुरैरास्वाद्यंते परमगुरु धर्मोपदिशतः ।
सदा कामं पीता मृत रस वरां शैरपिगिरः ॥
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपिदिशंतिस्थिरधियां,
समृद्धयर्थंवंदे ॥ ५ ॥

निधिस्सर्वाश्रीणा मनधिकरणौ सर्वविपदाम् ।
मृदुस्निग्धौशौणाद्युपचित नखोगूढ घुटिकौ ॥
समानौ श्रोत्तु ंगप्रपदपद शाखाविलसितौ,
समृद्धयर्थंवंदे ॥ ६ ॥

ययोरर्चा सूते धनसुख धराधाम रमणिः ।
शरीरारोग्यत्वं विनयनय विद्यानिपुणताम्
गुणानौदार्या दीनपितनय लक्ष्मीः श्रितनृणां,
समृद्धयर्थंवंदे ॥ ७ ॥

भयंकारागारा मयसमर पारींद्रकरण ।
भृन्महापारावारः द्विरदवन वैश्वानरभवम् ॥
नडाकिन्या द्युग्रग्रह गरल जंयन्स मृरणतः ।
समृद्धयर्थं वंदे ॥ ८ ॥

इत्थं श्री जिनपद्म सूरि रचितं दिव्याष्टकं सद्गुरोः ।
पुण्यं मंत्रमयं मनोज्ञ फलदंपापोघविध्वंसनम् ॥
भक्त्या यः पठति प्रभात समये सर्वत्र तस्य ध्रुवं ।
वश्या भूपतयो भवंति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥९॥

गच्छाधिपति श्रीमान् सुखसागरजी महाराज साहब की स्तुति

यथागाणा नराधारास्तथैव सुख सागरः ।
नित्यं नमामि नाथत्वं त्वमेव शरणं मम ॥ १ ॥

चरचानदुष्टकर्माणि, दिव्य ज्ञान दिवाकर ।
चारित्र रत्न भण्डार, दर्शनं विमलं कृतम् ॥ २ ॥

दान शील तपो भाव, अष्ट मातृपरायणः ।
आबालब्रह्मचारीच, भाविता भावना सदा ॥ ३ ॥

कषाय मदनिद्रादिपञ्चेन्द्रियाणि शेषतः ।
जितानि हास्य जिज्ञूनं वैरिणी विकथाजिता ॥ ४ ॥

निर्जितौकाम मोहौच रागद्वेष विवर्जितः ।
धौतसकल मिथ्यात्वं सम्यक्त्वरागरंगितः ॥ ५ ॥

नयनिक्षेप संवेत्ता गुणस्थानं विशेषतः ।
विजानोसि गुणग्राहिन स्याद्वादञ्च महारसम् ॥ ६ ॥

पवित्रनाम जापेन, ज्ञानादि सकलं फलं ।
लभन्ते सर्वधीमन्तेः नैवात्र कोपि संशय ॥ ७ ॥

त्वमेव प्राणकाधारः त्वमेवहितकारकः ।
त्वमेव सुख सौन्दर्यः त्वमेव भवतारकः ॥ ८ ॥

त्रैलोक्य सिन्धो भवतापहर्तु गुरोः प्रसाद प्रभुतांकितांतः ।
तस्यैव सानन्द सुखाम्बु राशे पादौ सदानन्द रसेन नौमि॥९॥

अथ लघुशान्ति

शान्तीं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ।१।। ओमिति निश्चतवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ।।२।। सकलातिशेषक-महासम्पत्तिसमन्विताय शस्याय। त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ।।३।। सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसम्पूजिताय निजिताय। भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ।४।। सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय। दुष्टग्रहभूत-पिशाचशाकिनीनां प्रमथनाय ।।५।। यस्येति नाममंत्र प्रधान-वाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ।।६।। भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये ! परापरैरजिते !।। अपराजिते ! जगत्यां, जयतीलि जयावहे भवति ।।७।। सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याण मङ्गलप्रददे। साधूनां च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ।८। भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्तिनिर्वाण जननि ! सत्वानाम्। अभयप्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ।६। भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि !। सम्यग्दृष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ।।१०।। जिनशासननिरतानां, शान्ति-

नतानां च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो-वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ।। ११ ।। सलिलानलविषविषधर-दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी-चौरेविश्वापदादिभ्यः ।।१२।। अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति । तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ।।१३।। भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति, तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रां, ह्रीं ह्रूँ ह्रः य क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ।।१४।। एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ।।१५।। इति पूर्वसूरिदर्शित-मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शान्ते । सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ।।१६।। यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स हि शान्तिपदं यायात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ।।१७।। उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।१८।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।१९।। इति ।।

—***—

"प्रस्तुत पुस्तक श्री........................संग्रह में जिन महानुभावों ने द्रव्य-सहायता प्रदान की उनकी शुभ नामावली"

५०१	श्रीमान् रामचन्द्र जी भुरा की	धर्मपत्नि	श्रीमति सौ.	मीरावाई	सिवनी
२०१	श्रीमान् देवीचंद जी मालू की	,,	श्रीमति सौ.	वदनवाई	,,
२१५	,, छोटमल जी भंसाली की	,,	,, ,,	चम्पावाई	नागपुर
२०१	,, खेतमल जी नाहटा की	,,	,, ,,	जेठीवाई	अमलनेर
२०१	,, स्व. धर्नीलालजी नाहटा की	,,	,, ,,	रतनीवाई	सिवनी
२०१	,, स्व. रतन चद जी भूरा की	,,	,, ,,	श्री कवर वाई	,,
२०१	,, नथमल जी भंसाली की	,,	,, ,,	इचरजवाई	नागपुर
२०१	,, कानमल जी लोढ़ा की	,,	,, ,,	इचरवाई	,,
२०१	,, त्रिलोक चंदजी गुलेच्छाकी	,,	,, ,,	रतनवाई	,,
२०१	,, मांगी लालजी महवाल की	,,	,, ,,	शान्तिवाई	,,
१०१	,, सत्तिदानजी कोटडिया की	,,	,, ,,	सुगनीवाई	अक्कलकुवा
१०१	,, पुखराज जी पारख की	,,	,, ,,	मंगलावाई	जगदलपुर
१०१	,, रामलाल जी बैद की	,,	,, ,,	रतनवाइ	सोलापुर
१०१	,, गुलाव चंदजी ललवानी की	,,	,, ,,	जीवनीवाई	वेटावद
१०१	,, हीरालाल जी मोठिया की	मातेश्वरी	श्रीमति	गोगावाई	,,
१०१	,, भोगीलाल भाई दोशी की	धर्मपत्नि	श्रीमति सौ.	प्रभावेन	नागपुर
१०१	,, पानमल जी जवेरी की	,,	,, ,,	अचरजवाई	,,
१०१	,, मणीलालभाई दोशी टंकारवालों की	धर्मपत्नि	श्रीमति सौ.	समजुवेन	,,
१०१	,, प्रेमचंद्र भाई शाह की	धर्मपत्नि	श्रीमति सौ.	हीरावेन	,,
१०१	,, कल्याण जी भाई शाह की	,,	,, ,,	पदमावेन	,,
१०१	,, लुणकरणजी धाड़िवाल की	,,	,, ,,	शान्तिवाई	,,
१०१	,, मोहनलालजी तेजमलजी मदनचंदजी की	मातेश्वरी		जतनवाई	मलकापुर

१०१ श्रीमान् स्व. ईश्वर चंदजी मालू की धर्मपत्नि श्रीमती बदामबाई सिवनी
१०१ ,, मान चंदजी सुराणा की ,, ,, चमेलीबाई बारासिवनी
१०१ ,, स्व. कस्तूर चंदजी भूरा की ,, ,, मदनबाई सिवनी
५१ ,, राणुलाल जी चोपडा की ,, ,, सौ. कमलाबाई खेतिया
५१ ,, लाल च. जी कोठारी की ,, ,, ,, डुगीबाई अमलनेर
५१ ,, सुरजमलजी लुनिया की ,, ,, ,, वक्तुबाई रायपुर
५१ ,, धरम चंदजी पारख की ,, ,, ,, रतनबाई ,,
५१ ,, बागमलजी ललवानी की ,, ,, ,, धाफुबाई बेटावत
५१ ,, युगराजकी ललवानी की ,, ,, ,, अनोपीबाई ,,
५१ ,, स्व. कवर लालजी कोठारी की ,, ,, ,, मगनुबाई ,,
५१ ,, गेंदमलजी मोहनलालजी मदन चंदजी ललवानी ,,
५१ ,, किशनलालजी कोचर की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. वसंतीबाई अजलोद
५१ ,, नेमीचंदजी कोठारी की मातेश्वरी श्रीमती श्रीबाई बोडाइचा
५१ ,, माणकचंदजी काकरीया की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. जतनबाई लिजर
५१ ,, मणीलाल भाई पोपट लाल शाह की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. कंचनबेन सि०
५१ ,, जेठाभाई डेडीया की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. राणुबेन धरणगांव
५१ ,, एक गुप्त सद् गृहस्थ नागपुर
५१ ,, स. पन्नालालजी भीखम चंदजी नाहटा की ध. प. श्रीमती इचरजबाई
जतनबाई ,,
५१ ,, नेमीचंदजी मालूकी धर्मपत्नि श्रीमती सौ. चांदबाई सिवनी
५१ ,, श्रीमती गुलाब बाई धाडीवाल नागपुर
४१ ,, स्व. आसकरणजी सचेती की धर्मपत्नि श्रीमती मलकापुर
२५ ,, जेठमलजी भंसाली की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. नाथीबाई खेतिया
२५ ,, एक गुप्त श्राविका अमलनेर
२५ ,, कंवरलालजी सोठीया की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. मीनाबाई ,,
२५ ,, स्व. धनराजजी मुणोत की ,, ,, सायरबाई ,,
२५ ,, स्व. सादुमलजी रोठारी की ,, ,, गेरोबाई ,,
२५ ,, मुकनचंदजी डागा की ,, ,, सौ. पारवतीबाई ,,

२५ ,, बभुतमलजी चोरडिया की ,, ,, ,, शृंगारवाई ,,
२५ ,, रागुलालजी भंसाली की ,, ,, ,, अनोपीबाई अक्कलकुवा
२५ ,, सुरजमलजी भँवर चंदजी कोठारी अमलनेर
२५ ,, रागुलालजी मगलचंदजी ललवानी बेटावद
२५ ,, श्रीमती मानकवर बाई जैन धरणगांव
२५ ,, बाबूसेठ की धर्म पत्ति श्रीमती सौ. अनोपीबाई ,,
२५ ,, लीलाधर जेठाभाई ,,
२५ ,, हस्तीमलजी कोठारी की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. अनोपीबाई ,,
२५ ,, तीलकशी भाई दामजी भाई हेडीया ,,
२५ ,, राजमलजी वच्छावत की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. संपतबाई जोधपुर
२५ ,, नेमीचंदजी बाफना की ,, ,, ,, मूलीबाई कलोदी
२५ ,, स्व. नेमीचंदजी गुलेच्छा की ,, ,, भूरीबाई शाहुलकुवा
२५ ,, सुगनमलजी श्रीश्रीमाल की ,, ,, सौ. रतनबाई सारंगखेडा
२५ ,, केशरी चंदजी पारख की ,, ,, सौ. शान्तिबाई तलोदा
२५ ,, गांगजी वीउमाणी की ,, ,, सौ भारतीबेन बम्बई
२५ ,, जेठाभाई शाह की ,, ,, सौ. मंगलाबेन मलकापुर
२५ ,, गीरधरलाल जयचद वोरा की ,, ,, मुन्नीबेन कलकत्ता
२५ ,, मगनलाल भाई वेचरदास दोशी की धर्मपत्नि श्रीमती नर्बदाबेन ,,
२५ ,, शान्ति भाई वोरा की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. कमलाबेन नागपुर
२५ ,, श्रीमान् यादवचदजी मालू की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. सुरजबाई सिवनी
२५ ,, सुरजमलजी भूरा की ,, ,, ,, गवरजाबाई ,,
२५ ,, सुभागचंदजी मालू की ,, ,, ,, चांदबाई ,,
२५ ,, स्व. कोमलचंदजी मालू की ,, ,, सरोजमाला ,,
२५ ,, स्व. कपूरचंदजी भूरा की ,, ,, बरजीबाई ,,
२५ ,, छगनमलजी जैन ,,
२५ ,, वेचरलाल भाई महत्ता की धर्मपत्नि श्रीमती दिवालीबेन पटना
२५ ,, मनसुखलाल भाई महत्ता की ,, ,, मणीबेन ,,
२५ ,, सौभाग चंद भाई सुमटिया की ,, ,, सौ. जयाबेन नागपुर

२५ ,, जोरावरमलजी भीखम चंदजी लुणावत ,,
२५ ,, एक गुप्त श्राविका रायपुर
२५ ,, भीमराजजी छाजेड की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. गुमानबाई सदर ना०
२५ ,, मानमलजी झाबक की ,, श्रीमती सौ. जतनबाई बग्गी
२५ ,, केशरीचंद जी बद की ,, ,, ,, रतनबाई पाढरकोडा
२५ ,, स्व. बुलाकी चंदजी बाँठिया की ,, ,, चंदनबाई नागपुर
२५ ,, पारसमलजी भंडारी की धर्मपत्नि श्रीमती सौ. कमलाबाई बनारस

